बंदरगाह

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

बंदरगाह

तोफिल मुहम्मद मीरान

अनुवाद
एच. बालसुब्रह्मण्यम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

भूमिका

भारतीय भाषाओं के लिए उपन्यास सही मायने में नई विधा है। इसके उद्भव एवं विकास के कुछ आंतरिक और कुछ बाह्य कारण हैं, जैसे भारतीय भाषाओं में गद्य साहित्य का उदय, मुद्रण-यंत्र का आगमन, यातायात की नई सुविधाएं, अंग्रेजी शिक्षा का प्रचलन, पश्चिम के उपन्यास साहित्य से परिचय, मध्यवर्ग का प्रादुर्भाव, ग्रामीण और शहरी जीवन-शैलियों में अंतर, जीवन-मूल्यों में बदलाव, इससे उत्पन्न सांस्कृतिक सामंजस्य में दुविधाएं, पुनर्जागरण से प्रेरित नए चिंतन का विकास वगैरह।

पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय भाषाओं में उपन्यास विधा का श्रीगणेश हुआ। बंकिमचंद्र-कृत 'दुर्गेशनंदिनी' (1864) भारत का पहला उपन्यास माना जाता है। तमिल के पहले उपन्यासकार मायूरम के मुंसिफ वेदनायकम पिल्लै (1826-1889) हैं। इनका लिखा 'प्रताप मुदलियार चरित्रम्' (1879) तमिल का पहला उपन्यास है। वेदनायकम पिल्लै ईसाई थे और अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मुंसिफ भी। इसलिए स्वाभाविक रूप से वे स्त्री-शिक्षा, उसके समान अधिकार आदि सुधारवादी विचारों से प्रेरित हुए। उपन्यास लिखने से पहले ही अपने इन विचारों को वेदनायकम ने 'नीतिनूल' (1858), 'पेण्मत्तिमालै' (1869), 'समरस कीर्तनै' आदि काव्य-कृतियों द्वारा अभिव्यक्त किया। उसके बाद 'प्रताप मुदलियार चरित्रम्' नामक उपन्यास लिखा गया। उपन्यास-लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए वेदनायकम पिल्लै भूमिका में लिखते हैं, "यह बात प्रायः सर्वमान्य है कि तमिल में गद्य-साहित्य का नितांत अभाव है। इसी अभाव की पूर्ति की दिशा में यह उपन्यास मेरा पहला कदम है। इसके साथ ही, अपनी कविताओं में प्रतिपादित विचारों को मैं उपन्यास के पात्रों के माध्यम से स्पष्ट करना चाहता था।"

प्रारंभिक उपन्यास होने के नाते 'प्रताप मुदलियार चरित्रम्' परंपरा से चली आ रही मौखिक कथा-शैली के प्रभाव से मुक्त नहीं है। आदर्श कथा-पात्र, कहानी में कहानी गूंथने की कला, धर्म और नैतिकता का समर्थन आदि परंपरागत विशेषताएं इसमें मिलती हैं। कहने का आशय यह कि तमिल का पहला उपन्यास प्राचीन कथा-शैली के गर्भ-नाल को पूर्णतः काटकर बाहर आने में असमर्थ रहा।

तमिल का दूसरा उपन्यास राजम अय्यर का 'कमलाम्बाल चरित्रम्' (1896) पहले उपन्यास की खामियों से बहुत हद तक मुक्त था। राजम अय्यर ने इसमें आंखों देखे अग्रहार

(ब्राह्मणवाड़ी) जीवन को—उसके मानव समाज को बिना किसी अतिरंजना के यथातथ्य रूप में चित्रित किया है। लगता है, औपन्यासिक गठन को लेकर भी लेखक के मन में कुछ निश्चित धारणाएं थीं। यही नहीं, कथानक और घटनाक्रम के लिए वेदांती राजम अय्यर द्वारा दी गई यह दार्शनिक व्याख्या कि "मानव की आत्मा दुख और यातना की अग्नि में तप-तप कर ही निर्मल बनती है, और पूर्णता में परिणत होती है"—उपन्यास को गंभीरता प्रदान करती है।

माधवय्या का 'पद्मावती चरित्रम्' (1898) तमिल का तीसरा उपन्यास है। कथा-चरित्रों और घटनाओं के हू-ब-हू चित्रण में राजम अय्यर की तुलना में माधवय्या आगे जाते हैं। ब्राह्मणों द्वारा पुश्तैनी जमींदारी और परंपरागत ग्राम्य-जीवन को छोड़कर नगरों में जा बसने की प्रवृत्ति, रूढ़िबद्ध आचार-विचारों से मुक्त होकर उदारवादी बनने की प्रक्रिया आदि इस उपन्यास में वर्णित है। इस दृष्टि से तत्कालीन समाज इस उपन्यास में ज्यों का त्यों प्रतिफलित हुआ है। उपन्यास यों भी यथार्थवादी साहित्य होता है। वेदनायकम पिल्लै की कलम से यह आदर्श और कल्पना का पुट लेकर निकला; राजम अय्यर की लेखनी से व्यक्ति की आध्यात्मिक व्याख्या के रूप में निर्गत हुआ, लेकिन माधवय्या के पास आकर यह पूर्णतः सामाजिक हो उठा।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में सू.वै. गुरुसामि शर्मा ने 'प्रेमकलावतीयम्' (1893) का प्रणयन किया। तमिल उपन्यास-साहित्य में 'प्रेम' जैसे भावनात्मक घटक का संयोजन इसी उपन्यास से प्रारंभ होता है। यही नहीं, अगले पांच दशक तक तमिल उपन्यास-जगत पर आधिपत्य जमानेवाली 'अनुकूलन-प्रवृत्ति' (ऐडाप्टेशन) की अगुवाई भी इसी उपन्यास ने की। अनुकूलन-प्रवृत्ति का वर्चस्व 1940 तक रहा। इसी दौरान घटिया किस्म के अंग्रेजी उपन्यासों को आधार बनाकर बहुत-से तमिल उपन्यास लिखे गए। एस.एम. नटेश शास्त्री, ति.मु. पोन्नुसामि पिल्लै, वडुवूर दुरैसामी अय्यंगार, जे.आर. रंगराजू, आरणि कुप्पुसामि मुदलियार, कोदैनायकी अम्माल आदि उपन्यासकार इसी कोटि में आते हैं। इसी प्रवृत्ति की एक कड़ी के रूप में 'कल्कि' के उपन्यास भी परिगणित होते हैं।

'कल्कि' का अनुसरण करते हुए अधिसंख्य पाठकों को आकर्षित करती साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप से लिखनेवाले उपन्यासकारों का एक नया वर्ग पैदा हुआ, जिन्होंने आदर्शवाद में प्रणय का मिश्रण करके संवेदनपूर्ण कहानियां लिखीं। एक ही प्रकार के—स्टीरियोटाइप—कथानक को बदल-बदल कर विभिन्न पृष्ठभूमियों में प्रस्तुत किया। इस श्रेणी के उपन्यासकारों में अखिलन, ना. पार्थसारथी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। तमिल उपन्यास-जगत में इनका अंशदान गहरा भले ही न हो, व्यापक अवश्य है। अपनी धारावाहिक कथा-वृत्तियों द्वारा एक विशाल पाठक-वर्ग पैदा करने का श्रेय इन्हीं को जाता है।

इस दौरान अपवाद स्वरूप कुछ उपन्यास लीक से हटकर भी आए। व.रा. के उपन्यास

इसी धारा में आते हैं। विचारक और सुधारक व.रा. ने 'सुंदरी' (1917), 'विजयम्' (1934) आदि उपन्यासों में नारी-मुक्ति--खासकर विधवा-विवाह--को केंद्रबिंदु बनाया। का.सी. वेंकटरमणि के 'मुरुगन् और उषवन् (1928) तथा 'देशभक्तन कन्दन्' (1932) नामक उपन्यास इसी दौर में आए। दोनों उपन्यासों में 'गांव की ओर लौटो' और 'गांव का विकास करो' का संदेश अंतर्नाद के समान मुखरित है। स्वतंत्रता-संग्राम पर केंद्रित ये उपन्यास राष्ट्रीयधारा के प्रारंभिक उपन्यासों की कोटि में आते हैं।

चालीस का दशक तमिल उपन्यास के इतिहास में पुनर्जागरण-काल सिद्ध हुआ। इस दौर में अनेक भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी से अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों के सुंदर अनुवाद प्रकाशित हुए। त.ना. कुमारसामी, कुमुदिनी, अ.कि. जयरामन आदि ने बंगला के प्रसिद्ध उपन्यासों का अनुवाद किया। का.श्री. श्रीनिवासाचार्य ने हिन्दी और मराठी उपन्यासों का तमिल में अनुवाद किया। क.ना. सुब्रह्मण्यम, ति. जानकीरामन आदि ने अनेक अंग्रेजी उपन्यासों का तमिल में अनुवाद किया। इन सफल अनुवादों से तमिल का संवर्धन तो हुआ ही, तमिल में मौलिक रूप से स्तरीय उपन्यासों का सृजन भी संभव हो सका।

शंकर राम का उपन्यास 'मण्णाशै' (1941) तमिल उपन्यास के विकास में एक नया मोड़ माना जाता है। यह उपन्यास 'इच्छा ही दुख का मूल है'--इस तत्व-दर्शन की व्याख्या करता है। इसमें एक किसान की कहानी वर्णित है, जो मिट्टी को अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करता है और इसी कारण जीवन में असह्य कष्टों और यातनाओं का शिकार बनता है। तिरुच्चि जिले की ग्रामीण बोली और मिट्टी के सोंधेपन से भरपूर इस उपन्यास को तमिल में पहले आंचलिक उपन्यास का गौरव प्राप्त है। बोलचाल की भाषा में रचित इस उपन्यास में परवर्ती आंचलिक उपन्यासों का पूर्वाभास मिलता है।

शंकर राम का अनुसरण करते हुए जब आर. षण्मुखसुन्दरम ने कोंगुनाडु (कोयम्बत्तूर) जिला के ग्राम्य-जीवन को चित्रित किया, तो जैसे तमिल उपन्यास में नई आंचलिक कथा प्रवृत्ति का सूत्रपात हो गया। षण्मुखसुन्दरम के उपन्यासों में 'नागम्माल' (1942), 'चट्टिचुट्टु' (1964) उल्लेखनीय हैं।

इस दशक के उपन्यासकारों में क.ना. सुब्रह्मण्यम का नाम भी उल्लेखनीय है, क्योंकि उन्होंने उपन्यास में शिल्पगत नए प्रयोग और परीक्षण किए। 'पशि-भूख' (1942) क.ना. सु. का पहला उपन्यास है। इनके अन्य उपन्यासों में 'पोयूत्तेवु' अर्थात् मिथ्यादेवता (1946), 'ओरु नाल्' अर्थात् एक दिन (1951) और 'असुर गणम्' (1956) विशेष उल्लेखनीय हैं। 'वोयूत्तेवु' बालक सोमू की लंबी जीवन-यात्रा को बताता है कि किस तरह वह बालक बड़ा होकर सोमु मुदलियार बना, किन परिस्थितियों में सोमु पंडारम (फकीर) बना और फिर किस तरह उसकी लाश सड़क किनारे लावारिस पड़ी मिली। व्यक्ति अपने जीवन में न जाने किस-किसको देवता मानता है और उनकी उपासना करता है। एक क्षण में जो उसे

देवता जैसा प्रतिभासित होता है, वही अगले क्षण मिथ्या बन जाता है। फिर नए देवता पैदा होते हैं, पर फिर वही। आखिर मनुष्य यही पाता है कि सबके सब मिथ्या देवता (पोयृत्तेवु) थे। सोमु का चरित इसी जीवन दर्शन को बताता है। मात्र एक दिन की घटनाओं को केंद्र बनाकर रचा गया उपन्यास है 'ओरुनाल्'। दुनिया-भर में घूमने के बाद एक नौजवान एक दिन सुबह-सुबह एक गांव में पहुंचता है और वहां पूरा दिन बिताता है। एक दिन का वह अनुभव जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण और मनोवृत्ति को किस प्रकार बदलता है, यही इस उपन्यास का कथ्य है। 'असुरगणम' में मनुष्य के अवचेतन मन का अंकन हुआ है। इसी उपन्यास से तमिल-उपन्यास का मूलभूत अंतर-बाह्य से अंतर्जगत की ओर यात्रा दिखाई देता है।

शंकर राम, षन्मुखसुन्दरम और क.ना. सुब्रह्मण्यम की उपन्यासकार-त्रयी ने कथ्य और शिल्प में जो नए प्रयोग और परीक्षण किए, उनसे, नई पीढ़ी के कहानीकारों को उत्प्रेरणा मिली। 'मणिक्कोडी' पत्रिका के माध्यम से कहानीकारों के रूप में उभरे कई लेखकों ने पचास के दशक में उपन्यास लिखे और तमिल भाषा को अनेक स्तरीय उपन्यास दिए।

इस दशक में प्रकाशित उपन्यासों में न. चिदम्बर सुब्रह्मण्यम का 'इदय नादम्' अर्थात् हृदयनाद (1952) प्रमुख है।

तमिल उपन्यास-जगत में संगीत के सूक्ष्म विवरणों की पृष्ठभूमि में एक संगीतोपासक के जीवन का यथार्थ चित्रण सर्वप्रथम इसी उपन्यास में मिलता है। संगीत कोई पेशा नहीं है, जीविका और यश कमाने का जरिया भी नहीं है, बल्कि एक पूजनीय कला है, आत्मानुभूति का साधन, नादब्रह्म के साथ--परमात्मा के साथ--सायुज्य पाने का वरेण्य मार्ग है। इसी आदर्श को अपना संबल बनाकर जीनेवाले एक नादोपासक के जीवन का वृत्तांत है। यह उपन्यास कला और उनके कलापरक नैतिक जीवन के बीच का अंतर्द्वंद्व 'हृदयनादम्' में चित्रित है। 'कमलाम्बाल चरित्रम' 'पोयृत्तेवु' की दार्शनिक परंपरा को आगे बढ़ानेवाला एक और उपन्यास है।

इसी प्रसंग में उल्लेखनीय कथाकृति है ति. जानकीरामन का 'मोहमुल्' अर्थात् मोह-रूपी कांटा (1956)। 'इदयनादम' यदि कला और लौकिक व्यवहार के अंतर्विरोध पर बुना गया है तो 'मोहमुल्' कला और मोह के अंतर्विरोध पर आधारित है। किंतु पूर्वोदाहरण के विपरीत यहां पर अंतर्विरोध आमने-सामने की प्रतिद्वंद्विता न होकर युग्मात्मक बनता है। मध्यकालीन शिल्पकला और कामकला जिस प्रकार एकाकार होकर मिल गई है, उसी तरह से इस उपन्यास में कला और मोह का मिलन दर्शित है। 'अम्मा वन्दाल्' अर्थात् मां आई (1966), 'चेम्परुत्ति' अर्थात् जपाकुसुम (1968), 'मलर्मंचम्' अर्थात् पुष्पशय्या (1968), 'मरप्पशु' अर्थात् काठ की गाय (1985) आदि ति. जानकीरामन के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। स्त्री-पुरुष के बीच यौन संबंधों की जटिलताओं को केंद्र में रखते हुए उन्होंने विश्वसनीय ढंग से मनोभावों

को चित्रित किया है। निरीक्षण में गहराई, अनुभव की सचाई, तंजाऊर की आंचलिक बोली, कथोपकथन के माध्यम से कथा को गति देने की नाटकीय शैली आदि विशेषताओं के कारण जानकीरामन ने उपन्यास-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

सि.सु. चेल्लप्पा का उपन्यास 'वाडिवासल' तमिलनाडु के देहातों की वीरतापूर्ण क्रीड़ा 'जल्लिकट्टु'[1] की घटनाओं को फोटोग्राफ की तरह दर्शाता है। 'वाडिवासल' में जिस प्रकार बाह्य दृश्यों का यथातथ्य चित्रण हुआ है, तो 'जीवनांशम्'–निर्वाहधन–अंतर्मन में लगातार घुमड़ते विचारों और प्रलाप का वर्षण करता है।

चेतन-अवचेतन के बीच बारी-बारी डोलते हुए कहानी सुनाने की कला तमिल के लिए नई चीज थी। फ्रॉयड द्वारा अवचेतन को महत्त्व देने के बाद बहिर्मुखी क्रियाकलापों की यथार्थपरक रचना-प्रवृत्ति पर प्रश्नचिह्न लग गया। "बहिर्मुखी संवाद और क्रियाकलाप कृत्रिम होते हैं, अवचेतन का विचार-प्रवाह ही वास्तविक सत्य है"–मनोवैज्ञानिकों के इस नए सिद्धांत ने सत्य संबंधी हमारी धारणा को बदल दिया। इसके फलस्वरूप अवचेतन मन को वीक्षण बिंदु बनाकर उपन्यास लिखे गए। तमिल में क.ना. सुब्रह्मण्यम का 'असुरगणम्' तथा सि.सु. चेल्लप्पा का 'जीवनांशम्' ऐसे ही उपन्यासों में अग्रगामी हैं। इनके बाद ला.सा. रामामृत ने इसी युक्ति को सफलतापूर्वक अपनाते हुए 'पुत्र (1965) और 'अमिता' (1970) की रचना की।

सामाजिक प्रवृत्ति और इतिहास को द्वंद्वात्मकता में समझते हुए सृजन की परंपरा पचास के दशक में प्रारंभ हुई। सोशलिज्म पर आधारित यह यथार्थवाद प्रगतिवाद कहलाया। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद भारत में बाढ़ की तरह आए सोवियत उपन्यास और चलचित्रों ने तमिल सृजन-शिल्पियों का ध्यान खींचा। इससे तमिल में भी ऐसी रचनाओं के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। दूसरे महायुद्ध के बाद बुनकरों के सामने आए आर्थिक संकट को केंद्रबिंदु बनाते हुए रघुनाथन रचित 'पंजुम् पशियुम्' अर्थात् कपास और भूख (1953) प्रगतिवादी उपन्यासों में अग्रगण्य माना जाता है।

गांवों में हो रहे सामाजिक परिवर्तन को केंद्रित करते हुए टी. सेल्वराज का 'मलरुम् सरुगुम्' अर्थात् फूल और सूखे पत्ते (1966) तथा चाय बागान के श्रमिक जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया 'तेनीर्' अर्थात् चाय (1973), कावेरी-तट पर व्यापक रूप से प्रचलित 'बंधक कृषि-मजदूर प्रथा' पर आधृत कु. चिन्नभारती का 'दाहम्' अर्थात् प्यास (1975), खेतिहर मजदूरों की समस्या पर केंद्रित पोन्नीलन् का 'करिसल' अर्थात् काली माटी (1979) वगैरह उपन्यास 'पंजुम् पशियुम्' की परंपरा में लिखित प्रगतिवादी उपन्यास हैं। अलग-थलग

1. हृष्ट-पुष्ट बैलों को अलंकृत करके मैदान में छोड़ा जाता है। ग्रामीण युवक उसे भड़काते हैं और फिर निहत्थे ही उससे भिड़कर वश में करने के लिए होड़ लगाते हैं। यह खेल संक्रांति के पर्व पर होता है। युवतियां जल्लिकट्टु में विजयी युवक का वर्णन करती हैं।

हो छितरे हुए मजदूरों में वर्गबोध का विकास, संगठित रूप में शोषण-विरोधी आवाज उठाते हुए पूंजीपतियों से संघर्ष और टकराव–इन उपन्यासों का प्रमुख वर्ण्य विषय है।

साठ के दशक में तैक्काड से कुछ श्रेष्ठ उपन्यासकारों का उदय हुआ। किसी भी राजनीतिक खेमे में सम्मिलित हुए बिना इन्होंने सामाजिक परिवर्तन का चित्रण किया। इस तबके के उपन्यासकारों में सर्वप्रथम उल्लेखनीय हैं श्रीमती हेब्सिबा जेसुदासन। कन्याकुमारी जिले के पलैविलै नामक छोटे गांव को कथाभूमि बनाकर रचा गया 'पुत्तम वीडु' (1965) नामक इनका उपन्यास सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण करता है। आर. षण्मुखसुन्दरम की तरह एक विशिष्ट अंचल की जीवन-पद्धति और बोली-भाषा को हू-ब-हू उपन्यास में ले आने में हेब्सिबा जेसुदासन को पूर्णतः सफलता मिली है।

इसी दशक में प्रकाशित एक अनोखा उपन्यास है सुंदर रामसामी का 'ओरु पुलिय मरत्तिन् कदै' अर्थात् एक इमली के पेड़ की कहानी (1966)। उपन्यास का प्रमुख पात्र इमली का पेड़ ही है, जिसे साक्षी बनाते हुए, इमली के पेड़, परिसर, तथा समाज–इन तीनों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की चर्चा की गई है।

इस दशक का ही एक अन्य विशिष्ट उपन्यास है 'तलैमुरैगल्' अर्थात् पीढ़ियां (1968)। कन्याकुमारी जिले के इरणियल् चेट्टियारों के पूर्व स्थल और जीवन का वर्णन इसमें मिलता है। कथानक का स्वरूप बताने के लिए इसमें कुछ नहीं है। बस, दैनंदिन जीवन की साधारण घटनाएं हैं। लेकिन इन घटनाओं को देखने वाली दृष्टि और उन्हें प्रस्तुत करने की कला असाधारण है। यही इस उपन्यास की विशेषता है। नृ-विज्ञान के किसी शोधकर्ता की तरह नील. पद्मनाथन इस उपन्यास में समाज के रीति-रिवाजों, विश्वासों, रूढ़ियों और परंपरा आदि को उनकी समग्र व्यापकता और सूक्ष्म विकल्पों के साथ बयान करते हैं। उपन्यास की काल-परिधि–वर्तमान के बीच अतीत की स्मृतियों तक जाते हैं; साथ ही उसकी बारीकियों को उचित प्रधानता देते हैं। यही इनकी विशेषता है। इनके उपन्यासों में 'पल्लिकोण्डपुरम' (1972) और 'उरवुकल्'–संबंध (1975) विशेष उल्लेखनीय हैं।

इसी दशक के एक और उपन्यासकार जयकान्तन हैं। तमिल उपन्यास के लिए उन्होंने अब तक अछूते विषय–झुग्गी-झोंपड़ी निवासियों के जीवन को चित्रित किया। 'उन्नैप् पोल ओरुलन्' अर्थात् तुम्हारी तरह एक (1964) में जयकान्तन बताते हैं कि समाज के निम्नतम स्तर में रहनेवाले व्यक्तियों में भी उच्च चरित्र, सद्गुण और जीवन-मूल्य पाए जाते हैं। 'ओरु मनिदन ओरु वीडु ओरु उलगम्' अर्थात् एक व्यक्ति एक घर एक संसार (1973) एक अलग किस्म का उपन्यास है। स्वत्व-भावना का शिकार हुए बिना मनुष्य और प्रवृत्ति के बीच प्रेम-प्रतीक के रूप में काम करनेवाले एक व्यक्ति-विशेष का प्रेम-काव्य है यह। समकालीन तमिल साहित्य में यह चरित्र एक नए मानव को सामने लाया।

सत्तर के दशक में अनेक नए लेखकों ने नई समस्याओं को लेकर उपन्यास रचे। इस

दृष्टि से नकुलन के उपन्यास उल्लेखनीय हैं। 'निनैवुप् पादै' अर्थात् स्मृति पथ (1972), नाय्कल् अर्थात् कुत्ते (1974), 'निषल्कल्' अर्थात् परछाइयां (1972), 'नवीनन् डायरी' (1978) आदि उनके सभी उपन्यास अकेले व्यक्ति के अनुभवों के दायरे में घूमते हैं। उसके मनोजगत का चित्रण करते और उसे समझने की कोशिश करते हुए ये उपन्यास एक व्यक्ति के आत्मालाप के रूप में सामने आते हैं। इन उपन्यासों में कोई स्थूल कथाक्रम या विचारधारा नहीं है। इस दृष्टि से ये उपन्यास तमिल कथा-साहित्य को एक नई परंपरा, एक नई शैली और एक नया रूप प्रदान करते हैं।

इंदिरा पार्थसारथी का 'तंदिर बूमि' अर्थात् तंत्र भूमि (1963), आदवन का 'कागिद मलर्गल्' अर्थात् कागज के फूल (1974), अशोक मित्रन् का 'तण्णीर' अर्थात् पानी (1973) इत्यादि उपन्यास कुछ नए सवाल उठाते हैं, जैसे—वर्तमान सामाजिक स्थिति में मानव-जीवन का क्या अर्थ है? यदि है, तो उसका स्वरूप क्या है?

वण्णनिलवन् का 'कडल् पुरत्तिल्' अर्थात् समुद्र-तट पर (1977) श्रेष्ठ उपन्यासों में माना जाता है। तिरुनेलवेली जिले के मणप्पाडु नामक समुद्रतटीय ग्राम पर केंद्रित यह उपन्यास मछुआरों के जीवन और उनकी समस्याओं का चित्रण करता है। मछुआरों के जीवन पर लिखा गया यही पहला तमिल उपन्यास है। इस उपन्यास के सभी पात्र प्रेम में ढले हुए हैं; सभी मानवीय प्रेम के धनी हैं। लेकिन आज के प्रेमविहीन वातावरण और उसकी तीक्ष्ण तपिश में ये पात्र किस प्रकार झुलस जाते हैं; यही इस उपन्यास का वर्ण्य विषय है।

पूमणि का 'पिरगु' अर्थात् फिर (1979) तमिल के दलित कथा साहित्य में पूर्वगामी माना जाता है। बदली हुई वर्तमान परिस्थितियों और सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में 'चमार' (अछूत) जाति की आज क्या स्थिति है और ग्रामीण समाज में वे लोग किस प्रकार बन-बिगड़ रहे हैं, इस उपन्यास का वर्ण्य विषय यही है।

'तलैकीष् विहितंगल्' अर्थात् उलटे-पुलटे अनुपात (1977) के लेखन से प्रसिद्ध हुए उपन्यासकार नांजिल् नाडन् लगातार लिख रहे हैं। कन्याकुमारी जिले के वेल्लालर (किसान) लोगों के जीवन की समस्याओं को केंद्र बनाकर लिखे गए, इनके उपन्यासों में गांव का प्राकृतिक सौंदर्य, मुखौटेबाज मनुष्यों की कृत्रिमता, ग्रामीण आचार-विचार, रस्मो-रिवाज, भाषा-शैली आदि को बहुत ही विस्तार और बारीकी से रचा गया है।

कि. राजनारायणन का 'गोपल्ल ग्रामम' (1976) नई तरह का उपन्यास है। आंध्र प्रदेश के कुछ भागों से सदियों पहले तमिलनाडु में आ बसी 'नायक्कर' जाति की पूर्व कथा यहां लोक कथा शैली में कही गई है। कि. राजनारायणन की कृतियों के साथ करिसल (काली माटी का अंचल) साहित्य की नई धारा प्रारंभ होती है। जी. नागराजन का 'नालै मट्रोरु नाले' अर्थात् कल दूसरा एक दिन है (1974) शीर्षक उपन्यास समाज में स्तरहीन समझे

जानेवाले एक व्यक्ति के मानवीय प्रेम को उजागर करता है। इस दृष्टि से यह एक विशिष्ट उपन्यास है।

अस्सी के दशक में नए-पुराने उपन्यासकारों ने अन्यान्य नई प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले अनेक उपन्यास लिखे। उपन्यास के लिए अब व्यवस्थित कथानक या गठन अनिवार्य नहीं है; मनुष्य के मुखौटे-विहीन सहज चेहरों को समकालीन सामाजिक यथार्थ में रखकर कहानी सुनाई जानी चाहिए। यही कहानी सहज तरीके से उपन्यास का रूप अख्तियार कर लेती है। किंतु इस श्रेणी के उपन्यास तमिल के लिए नए थे। अशोक मित्रन का 'ओट्रन' अर्थात् जासूस (1985), चा. कंदसामी का 'अवन् आनदु' अर्थात् वह जो बना (1981), सुब्रभारतिमणियन् का 'मट्रुम् चिलर्' अर्थात् और कुछ लोग (1987), पावण्णन का 'वाषृक्कै ओरू विचारणै' अर्थात् जीवन एक तहकीकात (1987), शंकरनारायणन का 'मानुड संगमम्' अर्थात् मानव-संगम (1986) आदि इस प्रवृत्ति की प्रतिनिधि कथा रचनाएं हैं। ये उन अधिसंख्य पाठकों के 'सौंदर्यबोध की सीमा' में नहीं आतीं, जो कथावस्तु की तलाश करते हैं। प्रायः इन सभी उपन्यासों में कोई 'कथानायक' नहीं है। इसमें ऐसे आम-फहम लोगों का जिक्र है, जिनके सामाजिक जीवन में कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं होती।

नारी-स्वातंत्र्य और उसके अधिकार को महत्त्व देते हुए इस युग की अनेक लेखिकाओं ने कई उपन्यास लिखे। इनमें नारी का यह आक्रोश मुखरित है कि वह आज भी दूसरे स्थान पर है। वह सिर्फ पुरुष की कामेच्छाओं को पूर्ण करती है और उसके लिए बच्चे जननेवाली मशीन हैं। परिवार का बोझ उठाने के बावजूद उसकी पहचान 'लिंग' के आधार पर ही की जाती है। उसे पुरुष जैसी हैसियत वाले मानव-प्राणी के रूप में नहीं देखा जाता। यह नहीं माना जाता कि उसका भी अस्तित्व और व्यक्तित्व है और वह स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने योग्य है।

कावेरी के 'आत्तुक्कु पोगणुम्' अर्थात् घर जाना है (1987), शिवकामी के 'पषैयन कषिदलुम्' अर्थात् पुरानी बातों का बीतना (1989) और 'आनन्ददायी (1992) आदि उपन्यासों को यहां उदाहरण स्वरूप रखा जा सकता है। माना जाता है कि शिवकामी का उपन्यास दलित साहित्य का प्रतिफलन है।

किसी उद्देश्य या पात्र को प्रधानता देकर एक केंद्र विशेष की ओर कहानी को गुंफित करने की परंपरागत उपन्यास-पद्धति के बजाय 'नान्-लीनियर्' (गैर-रेखीय लेखन) प्रणाली आजकल साहित्य का अंग बन रही है। सुंदर रामसामी के उपन्यास 'जे.जे.: चिल कुरिप्पुगल्' अर्थात् 'जे.जे. : कुछ टिप्पणियां'(1981) को इसके सक्षम उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। इसकी विशेषता को कथा-समीक्षक तमिलवन इस तरह रेखांकित करते हैं, ''इस उपन्यास में कहीं कोई केंद्र-बिंदु नहीं है। इसके विभिन्न संघटकों में से कोई भी इसका केंद्र नहीं

बनाता। पारंपरिक उपन्यासों में 'आत्मा' रूप में दर्शित तत्व का इस उपन्यास में सर्वथा अभाव है।"

प्रायः लघु-पत्रिकाओं में लिखते हुए एक समीक्षक के रूप में प्रतिष्ठित तमिलवन के 'एरुकेनवे चोल्लप्पट्ट मनिदर्गल्' अर्थात् पूर्व उल्लिखित लोग (1985) शीर्षक उपन्यास ने उपन्यास संबंधी तमाम पूर्व मान्यताओं, अभिलक्षणों और सीमारेखाओं को मिटाकर उसकी नई परिभाषा लिख दी। इस उपन्यास ने तर्क और यथार्थवाद को ध्वस्त कर दिया। इसमें तमिलनाडु के धुर दक्षिण में बसे एक गांव की तीन पीढ़ियों की कहानी सुरक्षित है। इस उपन्यास की खासियत यह है कि इसके किसी भी हिस्से को स्वतंत्र रूप से पढ़ा जा सकता है और उनका क्रम बदलकर भी पढ़ा जा सकता है। इससे उपन्यास का न सिलसिला भंग होता है, न सरसता। इस उपन्यास का धार परंपरागत या पौराणिक कथा-कथन शैली में कहानी सुनाता चलता है। इस प्रकार इसे 'माथिक यथार्थ' की शैली में रखकर देखा जा सकता है।

साहित्यालोचकों ने माना कि इस उपन्यास के आते ही यथार्थवाद ने अंतिम सांस ले ली और एकल रेखीय धरातल पर कथा-कथन की परंपरा समाप्त हो गई। इसी कोलाहल के बीच यथार्थ की बुलंदियों को छूते हुए मीरान के उपन्यास निकले तो उनका व्यापक स्वागत हुआ और उन्हें अभूतपूर्व प्रशंसा मिली।

तोफिल मुहम्मद मीरान का लिखा पहला उपन्यास 'ओरु कडलोर ग्रामत्तिन् कदै' (1988) एक सागरतटीय गांव की कहानी कहता है। यह पहले 'मुस्लिम मुरसु' पत्रिका में धारावाहिक रूप से निकला। उस समय इसकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। पर बाद में जब पुस्तकाकार निकला तो बहुतों के ध्यान में चढ़ गया। तमिलनाडु के 'कलै इलक्किय पेरुमन्रम्' (कला साहित्य मंच) से इसे सन् 1989 के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का पुरस्कार प्राप्त हुआ। एकाध साल बाद इसका दूसरा संस्करण (1990) आया। फिर तीसरा। उल्लेखनीय है कि तमिल के साहित्यिक परिवेश में बहुसंख्यक पाठकों की रुचि के अनुसार व्यावसायिक पत्रिकाओं के लिए लिखे जानेवाले प्रेम-उपन्यासों के ही अनेक संस्करण निकला करते हैं। इसलिए प्रेम-कथा-प्रसंग से दूर किसी उपन्यास का इस तरह लोकप्रिय होना असाधारण है।

तुरैमुगम् अर्थात् बंदरगाह (1991) मीरान का दूसरा उपन्यास है। यह भी 'मदीना' नामक मुस्लिम पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। अगले दो-एक साल में इसका भी दूसरा संस्करण (1994) निकला। मीरान कहते हैं कि यद्यपि यह मेरे तीसरे उपन्यास के रूप में प्रकाश में आया, पर वास्तव में यही मेरा पहला उपन्यास है। 'चायूक नार्कली' अर्थात् 'आराम कुर्सी' के नाम से इनका एक और उपन्यास निकलने वाला है। इन उपन्यासों के अलावा मीरान के दो कहानी-संग्रह 'अन्लुक्कु मुदुमै इल्लै' अर्थात् प्रेम बूढ़ा नहीं होता

(1990) और 'तंगरासू' (1993) प्रकाशित हैं।

मीरान की कृतियां मुस्लिम धार्मिक पत्रिकाओं में ही अमूमन प्रकाशित होती रही हैं। दीनपरस्त मुस्लिम इलाकों में ये ज्यादा प्रचलित पत्रिकाएं हैं और परंपरागत धार्मिक विचारों की पोषक रही हैं। समीक्षक नुहमान मीरान का मूल्यांकन करते हुए कहते हैं, "साहित्य को धर्म-प्रचार का साधन मानती इन पत्रिकाओं में लिखकर साहित्य को जीवन-दर्शन माननेवाला कोई भी कृतिकार आज तक सर्वमान्य नहीं हुआ। मीरान इसके अपवाद हैं।" नुहमान का यह मूल्यांकन सौ फीसदी सही है।

कन्याकुमारी जिले के उत्तरांचल में केरल की सीमा से लगा एक समुद्रतटीय गांव है तेंगायूपट्टिनम। यहां की आबादी मुस्लिम बहुल है। मीरान की पैदाइश इसी गांव में हुई। बचपन और किशोरावस्था यहीं बीती, जवानी के तूफानी दिनों का साक्षी भी यही गांव रहा। आज तिरुनेलवेली जिले में बसे मीरान के उपन्यासों की कथाभूमि यही गांव है। इस शताब्दी के पूर्वार्ध में यहां जो पीढ़ी रहती थी, वह यहीं जीकर खत्म हो गई—दयनीय और उपहास-योग्य पीढ़ी। 'ओरु कडलोर ग्रामत्तिन् कदै' (एक समुद्रतटीय गांव की कथा) में इसी पीढ़ी का इतिहास अंकित है। 'तुरैमुगम्' (बंदरगाह) इसके इतिहास का उत्तरार्ध है। 'कूनन् तोप्पु' (कुबड़ा बाग) स्वातंत्र्योत्तर काल की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। ईसाइयों और मुसलमानों का झगड़ा इसका वर्ण्य विषय है। झगड़े के मूल कारण, तनातनी के पीछे का वैमनस्य, दोनों वर्गों में टकराव, जानो-माल का नुकसान और फिर ज्वार के बाद भाटा—इस सबका क्रमिक वर्णन करते हुए मीरान कहीं भी संतुलन नहीं खोते। साथ ही उनका मानव-प्रेम सर्वत्र अंतर्धारा की तरह प्रवाहित है।

तमिल उपन्यास सौ साल की आयु पार कर गया, फिर भी उसमें तमिल भाषी मुस्लिम समुदाय का जीवन यथार्थ रूप में चित्रित नहीं हुआ था। मुस्लिम परिवेश के नाम पर लिखे गए इक्के-दुक्के उपन्यास कल्पना के अतिरेक के कारण वास्तविकता से कोसों दूर थे या उनमें समाज-सुधार का खोखला प्रचार मात्र होता था। आशय यह कि मुस्लिम समुदाय के वास्तविक जीवन का बिम्ब तमिल उपन्यासों में उभर नहीं पाया था। मीरान अपने उपन्यासों से इसी शून्य को भर रहे हैं। तमिल उपन्यास को एक नई जमीन और नई जीवन-प्रणाली भेंट कर रहे हैं। मीरान की लोकप्रियता के कारणों में यह एक प्रमुख बात है।

किसी नई कथाभूमि अथवा नई जीवन-प्रणाली के चित्रण मात्र से कोई उपन्यास विशिष्ट नहीं बन जाता। किसी कृति की बुनियादी सफलता का रहस्य जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण और उसमें रचित जीवन-दर्शन में निहित होता है। यह दर्शन केवल उसी कृति में प्रतिपादित जीवन तक सीमित न होकर व्यापक अर्थ में संपूर्ण मानव-जीवन को आवेष्टित करता है। कोई कृति इसी भांति देश-काल को पार करते हुए अमरत्व पाती है। मीरान के उपन्यासों में यद्यपि एक समुदाय-विशेष का जीवन प्रतिफलित होता है, फिर भी इसमें संदेह नहीं कि

उस वातायन के द्वारा समग्र मानव-जीवन का दर्शन प्रतिभासित होने लगता है।

हद दर्जे की ईमानदारी, मानवीय प्रेम, पैनी तर्क-बुद्धि और सुधारवादी दृष्टिकोण के साथ मीरान कथा की स्वयं चुनी गई साधना-भूमि में प्रवृत्त होते हैं। 'तुरैमुगम' में वर्णित समाज अंधविश्वासों और दकियानूसी विचारों से जड़ीभूत समाज है; आर्थिक रूप से ताकतवर जमींदारों और पूंजीपतियों के चंगुल में फंसकर निरंतर घुटन का अनुभव करनेवाला समाज, और नई सभ्यता की रोशनी के लिए अभेद्य उस समाज में जीनेवालों के लिए भूख और फाकामस्ती जिंदगी का अंग बन गई है। मज़हब के नाम पर अंधविश्वास इनका राजा है। कौमी और दीनी नेता गरीबों के शोषण के लिए एक औजार के रूप में मजहब का इस्तेमाल करते हैं।

गरीबों पर जुल्म ढानेवाले प्रवंचकों का समाज स्थायी रूप से ठगी का अपना बाजार नहीं चला सकता। आदमी सदा के लिए अज्ञान और गफलत में डूबा नहीं रह सकता। बाहर की दुनिया की रोशनी—परिवर्तन की प्रकाश-किरणें—इस गांव में भी प्रवेश करती हैं। जीर्ण-शीर्ण हो गए इसी समाज के भीतर से इस घुन को निकाल फेंकनेवाला 'नया मनुष्य' पैदा होता है। यह दूसरों की तरह अरबी में तालीमयाफ्ता नहीं है; अंग्रेजी पढ़ा-लिखा है। मजहब-परस्त अरबी तालीम से सिर्फ दकियानूसी विचार पनप पाते हैं। अंग्रेजी शिक्षा ने रूढ़ियों और दकियानूसी विचारों से जूझकर उन्हें मिटानेवाले एक 'नवमानव' को जन्म दिया। यह नया मानव स्वतंत्रता-संग्राम से भी प्रभावित होता है, जिसने विदेशी हुकूमत को चुनौती दे रखी थी। यह नव मानव गांवों में जमींदारी के खिलाफ फूटे जन-संघर्षों का पक्ष लेता है और अपने गांव में भी अज्ञान और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाता है। इस नए मनुष्य के उत्थान से पूंजीपतियों और जमींदारों के पाषाणी दुर्गों में दरारें पड़ जाती हैं। इस तरह एक समाज-विशेष के मटियामेट होने की संभावना की ओर संकेत करते हुए यह उपन्यास समाप्त हो जाता है। इस उपन्यास में केवल अतीत की कहानी नहीं है, बल्कि उस अतीत से निकले वर्तमान की भी कहानी है। वर्तमान को सुंदर और सार्थक बनाने में अतीत में सीखे गए सबक याद आते हैं। यही इस उपन्यास का अनूठापन है।

और 'तुरैमुगम' में ही क्यों, मीरान के किसी भी उपन्यास में कथानक का स्वरूप बताने के लिए कुछ खास नहीं मिलेगा। घटनाओं की परतें जोड़ते हुए कहानी खींचने में मीरान की कोई रुचि नहीं है। यह तो तीसरे दर्जे के उपन्यासकार का काम होता है। मीरान अपने उपन्यास में कहानी नहीं सुनाते हैं, बल्कि जीवन के यथार्थ को सुनाते हैं। दैनंदिन जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं के सहारे उनके उपन्यास गठित हैं। जीवन और उसके साथ रची-पची प्रकृति की एक-एक परत और उसकी बारीकी को जब वे तफसील से बयान करते हैं, तब पाठक के सामने अनुभव की एक विशाल दुनिया अपनी पूरी सच्चाई के साथ उजागर हो जाती है। मीरान की कृतियों में यथार्थ की जो बुलंदी पाई जाती है, उसका यही रहस्य है।

तमिल उपन्यासों में प्रोन्नत यथार्थ की ऐसी महारत मीरान को कहां से हासिल हुई? मीरान का जन्म केरल की सीमा से सटे एक गांव में हुआ था। मातृभाषा तमिल थी, लेकिन पढ़ाई मलयालम में हुई। इसलिए तमिल साहित्य की अपेक्षा मलयालम साहित्य से इनका परिचय अधिक गहरा हुआ। पृष्ठभूमि की इसी भिन्नता ने मीरान के प्रतिभा-तूणीर में ऐसे अचूक बाण प्रदान किए जो केवल तमिल परिवेश में पले औसत तमिल रचनाकार के लिए सर्वथा दुर्लभ होते। जैसा कि 'कूनन तोप्पु' की भूमिका में सुंदर रामसामि लिखते हैं, ''मीरान के उपन्यासों में दर्शित यथार्थ मलयालम साहित्य से आत्मसात् किया हुआ यथार्थ है।''

आंचलिक तमिल के साथ मलयालम और अरबी-फारसी को मिलाते हुए मीरान ने जो भाषाई संसार रचा है, पहले दौर में पाठक को वह हैरानी में डाल सकता है। जलप्रपात की किसी वेगवान धारा में पहले-पहल सिर देते समय जैसी झनझनाहट होती है, और फिर उसमें सराबोर होने के बाद जैसा सुखमय अनुभव होता है, यही अनुभव और वही एहसास मीरान की भाषा-शैली के संपर्क में आते समय पाठक को होता है।

तमिल उपन्यास-जगत में अब तक अपरिचित एक नई जमीन, एक नई जीवन-शैली को उपन्यासकार मीरान ने यथार्थवादी तरीके से अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। इस नाते तमिल उपन्यास साहित्य के इतिहास में मीरान और उनकी कृतियों का स्थाई एवं विशिष्ट स्थान है।

—अ. मारियप्पन

1

अभी कुछ दिनों में चैत शुरू हो जाएगा।

समुद्री हवा में ठंडक है। मछलियों की भीनी-भीनी महक भी है। हवा में घुल-मिलकर आ रही यह गंध 'मीनपाडु'[1] की पूर्व सूचना है।

पिछले साल समुद्र ने धोखा दे दिया था। कई परिवार बरबादी के कगार पर जा पहुंचे थे और उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था। उम्मीद के फूल खिलने से पहले, कली के रूप में ही मुरझा गए। तब समुद्र अशांत था, हवा में ठंडक नहीं थी; मछलियों की गंध भी नहीं थी।

आज समुद्र बेहद शांत है। विशाल लहरें नहीं उठ रहीं। ऊपर बाज चक्कर काट रहे हैं। आसार अच्छे हैं। मछलियां निश्चय ही तट की ओर सरक रही हैं।

समुद्र-तट के चेहरे पर मुस्कान थिरक रही है, जैसे शिशु के नन्हें-नन्हें कदमों की पहली आहट। सूरज का गोला पश्चिमी आकाश के कूबड़ से नीचे फिसल रहा है। सूर्य देव का स्वागत कर उसे अपने शयन-कक्ष में ले जाने के लिए क्षितिज-सुंदरी अपने हाथों में लाल-लाल जवाकुसुमों का हार लिए खड़ी है। दिन की गर्मी कम हो रही है। लोग अपनी खुली छाती पर सिर्फ अंगोछा लटकाए समुद्र-तट की ओर चले जा रहे हैं। दिनभर रेत से जो तपिश निकलती रही थी, अब वह थम-सी गई है। इस समय उसमें गुनगुनापन है, जो तलवों को अच्छा लग रहा है।

समुद्र तट पर नारियल के पेड़ कतार बांधे खड़े हैं। उनकी छाया में बैठे मछुआरे जालों की मरम्मत के काम में मशगूल हैं। चैत में ये जाल समुद्र में उतारे जाएंगे। धूप की तपिश कम हो जाने पर ये लोग भारी-भारी जालों को कंधे पर उठाकर लाए हैं। अब उनकी जांच-पड़ताल हो रही है। उजली रेत पर बिछाने से साफ नजर आता है कि उनकी कड़ियां कहां-कहां से टूटी हुई हैं। इन्हें पहले ही देख लेना जरूरी है। जहां-तहां नावों की मरम्मत हो रही है। छेनियों की आवाज साफ सुनाई दे रही है। नाव के ऊपर पाल बिछाने के लिए लगे डंडों को ठोंक-पीटकर ठीक से जमाना, पतवार बांधने के लिए मजबूत तीरे बनाना, लोहे की पत्ती लगाकर मोटे-मोटे छेद बंद करना... ऐसे ही छोटे-मोटे काम बड़ी मुस्तैदी से

---

1. मत्स्य पर्व, मछलियों का बहुतायत से होना

चल रहे हैं। चैत के आने से पहले ही उसके स्वागत की ऐसी तैयारियां... हर जगह व्यस्तता... समुद्र तट सज उठा है। मानो उस पर नवजीवन धड़क रहा है।

मीरान पिल्लै समुद्र तट पर आए। अपने हाथ पीछे बांधे हुए हैं। मछुआरे जहां जालों की मरम्मत कर रहे थे, वहां से जरा फासले पर खड़े होकर वे समुद्र को गौर से देखने लगे।

पाल बिछाए तिरती नौकाएं!

समुद्र में ऊंची उठी सीपियां चट्टानों से टकरा टकराकर लहरें बिखेर रही थीं। शांत समुद्र, ठंडी हवा, मछलियों की उड़ती भीनी गंध... इन सबके बावजूद मीरान पिल्लै की मुखमुद्रा में कोई खास बदलाव नहीं दिखाई दिया।

ऐसा कितनी ही बार हो चुका है। समुद्र की शांति, हवा की ठंडक और मछलियों की भीनी गंध... हर बार हृदय में नई उम्मीदें उमड़ आतीं।

किंतु फल कभी अनुकूल नहीं निकलता। हर बार निराशा ही हाथ लगती।

पिछले बरस चैत में नाम मात्र के लिए 'नेत्तिली-पाडु[1]' आया था।

लेकिन वह इतना कम था कि स्थानीय खपत के लिए भी मुश्किल से मछलियां मिलीं। झाबा उठाकर घाट पर मंडराते खुदरा व्यापारियों, टोकरी संभाले घूमती मछुआरिनों और साइकिलवाले खरीदारों में बंट जाने के बाद कोलंबो भेजने लायक कोई खास माल नहीं बचता था। फिर भी उत्साह के चलते दो-एक खेप भेजी गई। कोलंबो में 'नेत्तिली' की मांग थी और दाम भी अच्छे थे। तूत्तुकुडी बंदरगाह तक गट्ठे लारी में लादकर भेजे गए। माल लदाई के बाद लहरों को चीरते हुए जहाज ज्यों ही आगे बढ़ा कि पता चला, कोलंबो में दाम भरभराकर गिर पड़े हैं। खोपड़ी को भन्ना देनेवाली कड़ी धूप में भागादौड़ी करना और समुद्रतटीय बालू में पसीना बहाना... सब बेकार चला गया। तूत्तुकुडी पहुंचने पर बहुत थोड़े पैसे, बतौर कीमत, हाथ में आए। उन्हें गिनते हुए दिल में धुकधुकी होने लगी। पैसे इतने कम थे कि बच्चों की मिठाई के लिए भी पूरे नहीं पड़े।

तपती दोपहर। गंधकवाली जमीन से उठ रही गर्मी लावा-सा उगल रही थी। मीरान पिल्लै की आंखें भाप की तरह तैर रही तपिश पर गड़ी हुई थीं। कोलंबो कमिशन मंडी के तूत्तुकुडीवाले मैनेजर ने उन्हें ढाढस बंधाया, "क्यों काका, क्या सोच रहे हैं? हर बार मुनाफा थोड़े ही मिलता है!"

ठीक बात है, व्यापार में लाभ भी होता है, घाटा भी। हमेशा मुनाफा ही नहीं मिल सकता।

समुद्र-तट के जीवन-स्पंदन को देखते हुए मीरान पिल्लै के मन में पिछले वर्षों की यादें ताजा होने लगीं।

उन्होंने अपनी अंटी से एक बीड़ी निकालकर ओठों पर रखी। फिर दियासलाई

---

1. मछुआरों की भाषा में ऐसा मौसम, जब नेत्तिली किस्म की मछलियां खूब मिलती हैं।

निकालकर रगड़ने लगे। हवा से तीली बुझ गई। फिर रगड़ा, फिर बुझ गई। जरा झुककर एक बार फिर तीली जलाई और हथेली की ओट बनाते हुए बीड़ी सुलगा ली। पूरा दम लगाकर कश खींचा। बीड़ी का धुआं चारों ओर फैल गया। जाल बुननेवालों में से किसी ने इस धुएं को सूंघा। उसने मुड़कर देखा। मीरान पिल्लै मुदलाली[1] खड़े हैं! उनमें से एक उठा और उनके पास पहुंचा, "मुदलाली! आग मिलेगी?"

आवाज सुनकर मीरान पिल्लै ने मुड़कर देखा! तोम्मा पिल्लै!

उन्होंने अपनी बीड़ी तोम्मा पिल्लै की ओर बढ़ाई। तोम्मा ने अपने काम पर रखा चुरुट का एक टुकड़ा निकाला और उसे सुलगा लिया।

"क्यों तोम्मा, कैसे आसार हैं?"

"मेरे सोने-जैसे मालिक, समंदर तो बड़ा अच्छा दिख रहा है। नीली छतरीवाले की किरपा होनी चाहिए, बस!"

"तुम्हारा क्या ख्याल है? चैत से पहले 'नेत्तिली पाडु' आ जाएगा?"

"कुछ कह नहीं सकते मुदलाली! बाल-बच्चों की रच्छा करे समंदर का राजा। हमारे हाथ में क्या धरा है? ऊपरवाला रहम करेगा तो बरक्कत होगी।"

"पिछले साल कोई खास 'नेत्तिली-पाडु' नहीं आया। परसाल भी यही हाल था।"

"ठीक कह रहे हैं मालिक! पर क्या किया जाए। कहीं इंसाफ नहीं रहा। इंसान का ईमान मर गया है। ऐसे में कहां से बरक्कत होती, बोलिए तो।"

"सही बात है तोम्मा! जमाना बदल गया है। इंसाफ और ईमान, नेकी और धरम कुछ भी नहीं बचा।"

"हां... सरकार! यही असलियत है। ऐसे में दूर रहनेवाली मछलियां तट पर कैसे आएंगी?" मीरान पिल्लै से सहमत होते हुए तोम्मा ने कहा, "पर इस बार समंदर धोखा नहीं देगा मुदलाली! रात में तारों को देखने पर मेरा मन यही कह रहा है। आगे वही मालिक है।"

"अच्छा तोम्मा, आजकल किसके साथ काम कर रहे हो?"

"मैं? पूंतुरैवाली है न, उसके आदमी के साथ लगा हूं।"

"अरे, पिछले साल उसी का जाल जल गया था न।"

"हां, सरकार!"

"काफी नुकसान हुआ होगा?"

"चैत में नेत्तिली-पाडु आ जाएगा, यही सोचकर उसने बीवी के गहने गिरवी रखकर यह जाल खरीदा है।"

"अरे ओ तोम्मा, पिल्लै साहब के साथ गपशप करता रहेगा तो अपना काम कब

---

1. व्यापारी, दुकानदार, मालिक। आमतौर पर मुसलिम व्यापारी के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द।

पूरा होगा? जाल नहीं सीना है क्या? चल इधर।"

जाल बुननेवालों ने तोम्मा पिल्लै को आवाज दी।

"तो मैं चलूं मालिक!" तोम्मा ने इजाजत मांगी।

मीरान पिल्लै पीठ पर हाथ बांधे पश्चिम की ओर चले। उनकी नजरें समुद्र की विशाल छाती पर टिकी थीं। नदी का जल-स्तर बढ़ रहा है। बांध तोड़कर फालतू पानी को भी नहीं निकाला गया है। नदी-तट की चट्टानों पर काम करनेवाले मजदूर वापस लौट गए हैं। वे लोग शायद घाट पर नहा-धो रहे हैं। चट्टानों पर कपड़े पटक-पटककर धोने की आवाज आ रही है। पानी में बहाव नहीं है, इसलिए साबुन का झाग ऊपर ही ऊपर तिर रहा है। उस पर डूबते सूरज की किरणें पड़ने से सतरंगी आभा फूट रही है।

मीरान पिल्लै ने देखा, सामने से मीरासा नदी में नहाकर आ रहा है। कमर पर गीला तौलिया लपेटे हुए है, उस पर चमड़े का बेल्ट; और उसमें चाकू खोंस रखा है। गीली लुंगी को उसने दोनों हाथों से सिर पर फैला रखा है, ताकि वह हवा में सूख जाए। हवा में वह फरफरा रही है।

"क्यों मीरासा? कैसे हो?" मीरान पिल्लै ने हालचाल पूछा।

"इस साल नेत्तिली-पाडु आएगा।"

"पिछले साल भी लोग यही कहते थे। पर आया कहां?"

"नेत्तिली-पाडु आएगा, तभी तो घर में अंगीठी जलेगी। समंदर धनी होगा तभी तो देश धनवान होगा।"

"परेशानी और नुकसान क्या हमीं लोगों के लिए है, जो समंदर के भरोसे जी रहे हैं?"

"इस साल चैत धोखा नहीं देगा। हम गट्ठा बांध-बांधकर कोलंबो भेजेंगे काका!"

"मैं भी यही हिसाब लगा रहा हूं। खैर, चैत आने दो।"

"काका अबु पिल्लै ने भी गट्ठा बांधने के लिए बुलाया है। मैंने न हां की है, न ना किया है।"

"मीरासा, देखो हमारा साथ न छोड़ना।"

"कैसे छोड़ूंगा काका! आजकल गट्ठा बांधनेवाले इक्के-दुक्के रह गए हैं। समुद्र-तट से निराश होकर लोग दूसरे कामों की तलाश में इधर-उधर भाग गए हैं।"

"अच्छा, तुम हमारे साथ ही रहना।"

"मरते दम तक मैं आपका ही नौकर रहूंगा काका!"

सिर के ऊपर फहर रही लुंगी को उसने छूकर देखा। अभी वह गीली थी।

"अभी किधर से आ रहे हो?"

"एरमन घाट से। शाम को जो नावें किनारे लगी थीं; उनमें थोड़ी-थोड़ी कोलुवा मछली थी। उन्हें काटने का काम मिला। वहीं से आ रहा हूं। कटाई के चार-पांच रुपए मिले हैं।

बच्चों के लिए मरच्चीनी[1] खरीदनी है। सांझ से पहले पहुंच सका तो हाट में मछली भी मिल सकती है। इजाजत?"

"अच्छा, तुम चलो।"

मीरासा चल पड़ा। पिल्लै उस पर नजर गड़ाए रहे। मीरासा अब कितना दुबला हो गया है। पहले काफी मोटा-तगड़ा था। गठा हुआ बदन, पहलवानों जैसे गठे हुए हाथ और कसरती जांघें! कंधों पर मांस-पेशियों का उभार! हाथों में गजब की ताकत! फुर्ती इतनी कि एक ही सांस में पांच-पांच सौ गट्ठे बांध देता। कहना भी सिर्फ यही होता था कि मीरासा, लारी आ गई है। गट्ठे बंधने हैं।

वह पूछता, "कितने बजे चाहिए?"

"बारह बजे तैयार कर दोगे?"

"पौने बारह बजे लीजिए।"

लट्टू की तरह घूमता रहता। कभी-कभी तो साढ़े ग्यारह तक ही लारी में माल लद जाता और पौने बारह तक तो वह काफी दूर निकल गई होती।

आदमी भरोसेमंद है, बेहद फुर्तीला।

किंतु आज? आज तो मीरासा सूखकर कांटा हो गया है। समुद्र में मछली कम होने पर कई बार फांके की नौबत आ गई है। कभी आधा पेट खाना मिलता, कभी वह भी नहीं। उसके ऊपर बहुत-सी जिम्मेदारियां थीं। चार-पांच बच्चे। गट्ठे बांधनेवालों में से कई लोग इधर-उधर चले गए। कुछ लोग काम की तलाश में कोलंबो चले गए तो कुछ होटल में नौकरी करने लगे या कुलीगिरी करने चले गए।

"काका!"

आवाज सुनकर मीरान पिल्लै ने मुड़कर देखा—नूक्कण्णु खड़ा था।

"अरे तू कब लौटा?" मीरान पिल्लै ने पूछा।

"अभी दो दिन हुए काका!"

"क्यों लौट आया रे?"

मैं चोरी-छुपे लंका गया था न! पांच-छह दिन तो वहां काम करता रहा। फिर किसी ने शिकायत कर दी। पुलिस ने पकड़कर वापस जहाज में चढ़ा दिया। हमारे लोग बड़े काइयां होते हैं, न मरने देते हैं, न जीने। अभी आपको ढूंढते हुए घर गया था। पता चला, आप समुद्र-तट की ओर आए हैं।"

"क्यों? क्या काम है?"

"गुजारा नहीं होता हुजूर! मछली की खरीद के लिए जब आप घाट पर जाएंगे, तो मैं भी चलूंगा आपके साथ। कोई छोटी-मोटी तनख्वाह बांध दें, मेहरबानी होगी।"

---

1. एक लंबा-सा कंद। गरीबों का आहार। (अंग्रेजी) टैपिओका।

"देखेंगे, चैत आने दो।"

"सुना, कोलंबो में नेत्तिली-माछ की बड़ी मांग है।"

"मांग हो या न हो, हमारी किस्मत में जो बदा है, हमें वही मिलेगा।"

"सही फरमाया हुजूर ने। मैं चाहता था समुद्र-तट पर छप्पर छवाकर छोले-मूंग बेचूं। लेकिन छप्पर छवाने के लिए कौड़ी भी नहीं है। आपके पास चला आया।"

"मछली-पर्व मीनपाडु देखने के बाद मैं तुम्हें बुलाने आदमी भेजूंगा, अच्छा?"

"ठीक है काका..."

नूक्कण्णु चला गया, तो मीरान पिल्लै नदी के किनारे-किनारे टहलने लगे। मुंह-हाथ धोया। पानी की गरमाहट कम नहीं हुई थी। फिर भी दिन भर की गर्मी के बाद जब मुंह पर पानी के छींटे पड़े तो थोड़ी राहत मिली। पानी में डुबकी लगाकर नहाने का मन हुआ। दूसरे ही क्षण ख्याल आया, 'नहीं, शाम को नहाने पर जुकाम होने का खतरा है। सर्दी-जुकाम लग जाए तो कई दिनों तक परेशानी रहती है। इसी बीच अगर एकाएक नेत्तिली-पाडु शुरू हो गया तो सब-कुछ गड़बड़ा जाएगा।' यही सब सोचते हुए मीरान पिल्लै ने पूरब की ओर रुख किया।

ढलता हुआ सूरज जब उस जगह पहुंचा, जहां सागर और आकाश आलिंगन करते हैं, तो क्षितिज के गाल लज्जा से लाल हो उठे। मीरान पिल्लै थोड़ी देर तक उसके उस सौंदर्य को खड़े निहारते रहे।

यों एक दिन पूरा हुआ।

2

मम्मात्तिलु जब नींद से जागा, सूरज निकल आया था। दांत मांजने के लिए चुटकी-भर 'उमिक्करी'[1] लेकर वह श्मशान नदी की ओर चल दिया। ठहरा हुआ पानी, काई से ढंका हुआ। किनारे तक फैले शैवाल-जाल को पांव से हटाया। मेंढक के बच्चे अपने शरीर की अपेक्षा लंबी-लंबी पूंछों के साथ तिर रहे थे। देखने में मजा आ रहा था। थोड़ी देर वह इसी दृश्य का आनंद लेता रहा। फिर कुल्ला करने के लिए चुल्लू में पानी भरा। पर उसी के साथ जब हथेली में मेंढक का बच्चा आ गया, तो झट से फेंक दिया। बेचारा वह नन्हा जीव किनारे पर तड़पने लगा। फिर बड़ी सावधानी से उसने उसे दोबारा उठाया और धीरे से पानी में छोड़ दिया। दुम हिलाकर तैरते हुए वह वहीं कहीं पानी में

1. जलकर काली हो गई भूसी। यह राख मंजन के काम आती है।

गुम हो गया।

मम्मात्तिलु ने कुल्ला किया। पानी पर काई का फैलाव। किनारे पर उकडूं बैठकर उसने राख से मंजन किया। मुंह में लार और थूक भर गया तो खंखारकर पानी में थूक दिया। काले मंजन के कारण थूक भी काला-काला था। दुबकी हुई मछलियां तपाक से ऊपर आईं और थूक को घेरकर मंडलाकार खड़ी हो गईं। मम्मात्तिलु को हंसी आई। खंखारकर जरा दूर थूका। वहां भी मछलियां मंडराने लगीं। मछलियों को यों इधर से उधर भागते हुए देखने में उसे मजा आया। इतने में ही उसे थोड़ी दूर पर नारियल के पेड़ से लंबा-घना पत्ता गिरने की आवाज सुनाई दी। उसकी नजर उसी ओर चली गई। उसने यह भी देखा कि सामने से कोई मछुआरिन उसे उठाने के लिए लपक रही है। मम्मात्तिलु भी छोड़नेवाला नहीं था। पूरी ताकत बटोरकर वह भी भागा और दोनों एक साथ पत्ते पर झपट पड़े। मछुआरिन के हाथ में नोकदार सिरा था और मम्मात्तिलु के हाथ में डंठलवाला।

"मैंने पहले उठाया है, छोड़ो!" मछुआरिन अपना दावा जता रही थी।

"अरी, मैंने उठाया है पहले।"

"यह तो सीनाजोरी है। मैंने उठाया था।"

"यह क्या तुम्हारे मियांजी का पत्ता है। देखो तो कैसा हक जमा रही है! छोड़ री!" मम्मात्तिलु ने झटके से पत्ते को खींचा। नोकवाला हिस्सा उसके हाथ से छूट गया।

पत्ते को झटके से खींचते वक्त पत्ते के बीच वाली पैनी तीली मछुआरिन की हथेली को छील गई। उस पर खून छिनक आया। हथेली में टीस भी होने लगी।

"कितना घाव कर दिया रे इस नासपीटे ने! धीरे से खींच लेता!" उसने गाली दी। गुस्से से उसका गला भर्रा आया। मछुआरिन की गाली मम्मात्तिलु से सहन नहीं हुई। वह भी तैश में आ गया और उसे यों घूरने लगा, मानो भस्म कर देगा।

"घूर क्या रहे हो, भस्म कर दोगे क्या?"

"भस्म नहीं करूंगा। दांत तोड़ दूंगा।" मम्मात्तिलु ने धमकाया।

"बड़ा तोड़नेवाला आया दांत! क्या मैं तुम्हें नहीं जानती? नेत्तिलिपाडु आने पर जब दुकान लगाओगे, तब देख लूंगी।"

"हां, हां देख लेना।"

"क्यों नहीं!" छाज पर रखी मछली की टोकरी को उसने सिर पर रख लिया और फिर हथेली पर फूंक मारती हुई अपनी राह चली गई।

मम्मात्तिलु थोड़ी देर तक खड़ा उसी को देखता रहा। फिर बड़बड़ाया, 'बड़ी आई लौंडी, पत्ता लेने!... हुं... यहां तो रतजगा करके पत्ते बटोर रहे हैं।' वह उस पत्ते को कंधे पर रखे हुए आगे बढ़ा। पत्ते का सिरा जमीन तक लटका हुआ था और उससे सर्र-सर्र की

आवाज आ रही थी।

घर के अहाते में रात-भर बटोरे गए पत्तों का ढेर लगा था। उसी में उसने इस पत्ते को पटक दिया।

पत्ता गिरने की आवाज सुनकर अमीना ने रसोई से झांककर देखा।

"कौन है?"

"अरी, मैं ही हूं।"

"आप?"

"उनचास हो गए हैं। ख्याल रखना। नहीं तो बकरा चर जाएगा।"

"वहां उधर शोरगुल कैसा था?"

"पत्ता गिरा था। जब तक मैं जाकर उसे उठाता, एक मछुआरिन आ गई और लगी उठाने। उससे छीनकर लाया हूं। काहे को दूंगा उसे?"

"रात में बटोरे पत्तों को चीरना भी है न?"

"हां, मैं जरा मंजन करके आ जाऊं, तब चीरेंगे।" मम्मात्तिलु फिर नदी-किनारे आ गया। मंजन करके खूब कुल्ला किया। कंधे पर कुट्रालम[1] का तौलिया था। उससे मुंह पोंछा। दुकान का छप्पर छवाने के लिए और पत्ते चाहिए। दो रातें और जागना होगा। गर्मी का मौसम है। पत्ते वैसे ही झड़ जाते हैं।

मम्मात्तिलु ने नदी-तट पर खड़े ऊंचे-ऊंचे नारियल के सिरों पर अपनी दृष्टि दौड़ाई। कई सारे पत्ते नजर आए। दिन में गिरें तो अपन को शायद ही मिल पाएं। कोई राहगीर उठा ले जाएगा। फिर उनके साथ मल्ल युद्ध करना पड़ेगा।

"पीरू...रे!" नदी-तट पर खड़े होकर मम्मात्तिलु ने अपने बेटे को पुकारा। बाप्पा[2] की आवाज सुनकर नन्हा पीरू भागा-भागा आया। उसके हाफ-निक्कर का बटन टूट गया था। सामनेवाली पट्टी को उसने लुंगी की तरह कमर पर खोंस रखा था। वह अभी नींद से उठा था, हाथ-मुंह भी साफ नहीं किया था।

पिता के सामने खड़े पीरू ने अपनी पलकों पर जमा कीचड़ नाखून से खरोंचा। मुंह के दाएं-बांए कुछ सफेद लकीरें दिखाई दे रही थीं। सोते समय मुंह से बहे लार की निशानी, लगता था गालों पर चूने की रेखा खिंची हो।

"मंजन कर लिया रे!"

"नहीं।" उसने सिर हिलाया।

"रहने दो। बाद में कर लेना। अभी यहीं बैठा रह, समझा? देखता नहीं, बहुत सारे पत्ते पके हुए हैं। कभी भी गिर सकते हैं। जैसे ही गिरें, लपककर उठा लेना। किसी को

1. तिरुनेलवेली जिले का एक स्थान। यहां का जलप्रपात प्रसिद्ध है।

2. पिता

देना नहीं।"

पीरू ने सहमति में सिर हिलाया।

गरियल के तने से पीठ लगाकर पीरू आराम से बैठ गया। जमीन पर कच्चे नारियल का सूखा खोल पड़ा था। उसे उठाकर उसने नीचे पटका। फिर एक गीत गुनगुनाया।

बाड़ पर जो किवाड़ लगा हुआ था, उसे खोलते हुए मम्मात्तिलु ने अपनी बीवी को आवाज दी, "अरी ओ पीरू की मां!"

अमीना ने घर के भीतर से झांककर देखा।

"तनिक चाकू लाओ तो, पत्ता चीरूं।" वह रात-भर जमा किए पत्तों के पास बैठा हुआ था। निगाह पत्तों पर। जेब से दियासलाई निकाली। धंसी हुई पेटी को सीधी करके उसे जैसे-तैसे खोला। उसमें से बीड़ी का टुकड़ा निकाला। आखिरी तीली को रगड़कर बीड़ी सुलगाई। फिर थोड़ा-थोड़ा धुआं निकालते हुए अपना मुंड़ा सिर सहलाने लगा, जिस पर छोटे-छोटे बाल उगे हुए थे। जंभाई पर जंभाई निकलने लगी, एक के बाद एक...।

"आंखें निंदिया रही हैं री! जरा चाय का पानी तो चढ़ा दे।" अंदर से चाकू लेकर आई बीवी से वह बोला। चमचमाता चाकू... मम्मात्तिलु उंगली से धार को परखने लगा।

अमीना ने एक सूखे पत्ते का सिरा तोड़ा अंगीठी जलाने के लिए।

"यूं एक-एक करके सिरा तोड़ती जाओगी तो रात में नारियल के पत्ते पर भिड़ाने के लिए सिरा मुझे कहां से मिलेगा? बोल?"

"तब मैं क्या जलाकर चाय बनाऊं? कपड़े जलाऊं अपने?"

"चली जा यहां से। शैतान की बेटी!"

रतजगे की थकान के कारण मम्मात्तिलु बात-बात पर चिड़चिड़ा रहा था। रात को जब सारा गांव सो जाता और पत्तों का हिलना भी बंद हो जाता, तो वह चुपके से पत्ता चुराने के लिए घर से निकलता। कल भी वह इसी अभियान पर निकला था। घर लौटने लगता था, तो मसजिद से सुबह की अजान सुनाई देती थी।

एक लंबा लट्ठ लेकर वह उसके अग्र भाग पर नारियल के पत्ते का सिरा रस्सी से कसकर बांधता। फिर नारियल के पेड़ के नीचे जा खड़ा होता और हरे पत्ते को लठ के अंकुश में फंसा लेता। धीरे-धीरे उसे इस तरह घुमाता कि ताजा पत्ता लट्ठ पर लगे पुराने पत्ते के अंकुश से भिड़ जाता और दोनों आपस में उलझ जाते। उसके बाद झटका दे-देकर खींचने से ताजा पत्ता पेड़ से अलग होकर धड़ाम से नीचे आ जाता। रात में जब तक मुस्कुराती हुई चांदी अंधेरे के कैदखाने में बंद होती तब तक मम्मात्तिलु का यह शिकार जारी रहता।

चैत से पहले-पहले दो सौ पत्ते गिराकर उन्हें चीरना होगा। फिर उन्हें चटाई की तरह बुनना होगा। समुद्र-किनारे चार खंभे खड़े कर उनके ऊपर पत्तों की चटाइयों से छप्पर छवाना

होगा। यही उसकी दुकान होगी। इसी दुकान पर बैठकर उसका व्यापार चलेगा। चैत में मीनपाडु[1] अच्छा रहा तो उसका व्यापार भी खूब चलेगा। उबला मूंग, मरच्चीनी[2] का कंद, कंद से बना पुट्टू[3], सोंठवाली काफी, आप्पम[4], मट्ठा और बीड़ी, चुरुट, पान-सुपारी वगैरह वगैरह...

"अजी सुन रहे हो? चैत का परब अच्छा हो तो घर का छप्पर भी छवाना होगा। बारिश होती है तो बुरी तरह पानी टपकता है। लेटना मुश्किल हो जाता है।"

"देखा जाएगा री, तुमने अच्छी बात कही। किस्मत भी साथ दे तब न!"

"कंद का आटा और चावल कूटना है न?"

"हां।"

"सूखा कंद और अरवा चावल ला दो।"

"पैसा कहां है मेरे पास। अपनी नथ और कान की वाली उतार दे। जाकर गिरवी रखूं। तभी तो पैसा मिलेगा।"

"दोनों गहने उतार दूं। मेरे नाक और कान सूने नहीं लगेंगे?"

"शैतान की बच्ची! कहना मानती है या नहीं? कह तो रहा हूं, चैत के बाद छुड़वा दूंगा।"

"तुम्हारे साथ रहते मुझे भी दस-पंद्रह साल हो गए हैं। है कि नहीं? बोलो, तुमने कभी कोई गहना बनवाकर दिया है मुझे? जो कुछ हैं, मेरे बाप्पा और उम्मा[5] के बनवाए हैं। हर साल समंदर के किनारे दुकान लगाने के लिए मेरे ही गहने तुम्हारे काम आते हैं।"

"तुम्हारी कसम... तुम्हारे बाप की कसम। अब की चैत में तुम्हारे लिए एक नथ बनवा ही दूंगा, पक्का..."

"हां, बहुत सुन लिया। कहां बनवाया है तुमने! हर साल यही वादा दुहराते हो।"

"अब की बार देख लेना।"

"हां, हां देख लिया!" अमीना आधे मन से रसोई में चली गई। पत्ते का सिरा उसके हाथ में था।

मम्मात्तिलु ने कुट्रालम तौलिया लेकर सिर पर बांध लिया। नारियल का पत्ता लिया, ऊपरवाले 'मडल्' (मोटा तना-सा) को काटकर अलग किया। फिर लंबे पत्ते को दो हिस्सों में चीर डाला। इसके बाद जब वह हर हिस्से के फालतू अंश को काटकर उन्हें बराबर कर

---

1. मीनपाडु नेत्तिली पाडु। नेत्तिली मछलियों का बहुतायत से मिलना।
2. टैपिओका कंद जो आकार में शकरकंद जैसा होता है, किंतु मिठास रहित। यह गरीबों का आहार है।
3. कंद को सुखाकर उसका चूरा बना दिया जाता है। इसे नारियल के साथ भाप में पकाया जाता है।
4. चावल के चूरे का भी 'पुट्टू' बनता है जिसकी आकृति गोल और लंबी होती है।
5. मां। दक्षिण के मुसलमानों की बोली में।

रहा था, दूर पत्ता गिरने की आवाज सुनाई पड़ी। उसी क्षण उसने चाकू फेंका, बाड़ का द्वार खोला और फुर्ती से बाहर की ओर उछला। देखा, उसका अपना लड़का पीरू नारियल के पेड़ के नीचे सोया पड़ा है और फुर्तीला सिरांगु अपने कंधे पर पत्ता लिए जा रहा है। मम्मात्तिलु को अपने नालायक बेटे पर इतना गुस्सा आया, इतना गुस्सा आया कि गुब्बारा अभी फूटा - अभी फूटा जैसी हालत हो गई। दांत पीसते हुए वह उस ओर भागा, जहां पीरू दुहरा-तिहरा हुआ पड़ा था। उसने उसे जोर से हाथ पकड़कर उठाया। डर से कांपते हुए पीरू वाप्पा को ताकने लगा।

"गधे के बच्चे! क्यों बे, तुझे मैंने यहां काहे को बिठाया है? क्या इसीलिए कि तू यहां सोता रहे? उधर सिरांगु नारियल का पत्ता उठाए शान से चला जा रहा है और तू... नालायक कहीं का!" छोकरे की पीठ पर उसने पूरे जोर से चार-पांच घूंसे जड़ दिए।

"वाप्पा मेरे, वाप्पा मेरे! छोड़ दो मुझे। अब नहीं सोऊंगा... ऊंह..." पीरू छटपटाने लगा।

मम्मात्तिलु ने सिर पर बंधे तौलिए को खोलकर हवा में झटका। जब भी उसे गुस्सा आता, वह इसी प्रकार तौलिया झटकता। सारा गुस्सा अब सिरांगु पर केंद्रित हो गया। जी में आया, दौड़कर उसका बनियान पकड़कर झकझोर दे और उसकी मरियल-सी छाती पर दो घूसे जमाए। अब की जब मैं दुकान लगाऊंगा समंदर किनारे, तो देखता हूं, यह सिरांगु का बच्चा कैसे मेरे पास बेशरमी से मुफ्त में बीड़ी मांगने आता है। सिरांगु को कंधे पर पत्ता रखे जाते देखकर मम्मात्तिलु खड़ा-खड़ा यों ताक रहा था, जैसे कोई बहुत बड़ा खजाना हाथ से निकला जा रहा हो। चैत आने में अब ज्यादा दिन नहीं हैं। मम्मात्तिलु ने तौलिए को फिर से पगड़ी की तरह बांध लिया।

"अब सोया तो घर में खाना नहीं मिलेगा, समझा?" पीरू को सावधान करने के बाद मम्मात्तिलु अब घर की ओर चला।

3

उस गांव में सरकारी दफ्तर के नाम पर दो ही संस्थाएं थीं—अस्पताल और डाकघर। डाकघर एक दुकान में चल रहा था। वहां दो ही अमले थे—पोस्टमास्टर और डाकिया। गांव के ज्यादातर लोग व्यापार के सिलसिले में कोलंबो में रहते हैं। इसलिए अधिकतर चिट्ठी-पत्री वहीं से आती हैं।

गांव-भर में पैंटधारी सज्जन दो ही थे—अस्पताल का डॉक्टर और अम्बुरोस डाकिया।

हाथ में बांस का छाता, सिर पर खाकी टोपी, ढीली वर्दी और घुटनों के नीचे तक का लंबा खाकी पैंट पहने नंगे पांव चलनेवाला डाकिया अम्बुरोस गांव में बहुतेरे लोगों की प्रतीक्षा का पात्र है। अम्बुरोस डाकिया गांव के सभी घरों और एक-एक व्यक्ति से भली-भांति परिचित है।

"मेरे नाम की कोई चिट्ठी है सर?"

अम्बुरोस तुरंत रुक जाता और प्रश्नकर्ता को गौर से देखता।

"कल।"

'नहीं' शब्द उसके मुंह से कभी नहीं निकलता। चिट्ठी-पत्री, रजिस्ट्री वगैरह करीने से रखते हुए वह याद कर लेता है कि आज किसके नाम चिट्ठी है और किसके नाम नहीं। किसी भी दिन उसने गलत हाथों में डाक दे दी हो, ऐसा कभी नहीं हुआ। कोलंबो से चिट्ठियां आ रही हैं तो उनमें गोपनीय बातें भी जरूर होंगी।

हर घर के दरवाजे पर टाट या कपड़े का पर्दा टंगा रहता है। इन पर्दों के पीछे डाकिए की राह देखती हुई औरतें खड़ी मिलेंगी, इसी उम्मीद में कि कोलंबो से खत या मनीआर्डर आया होगा।

अम्बुरोस को देखते ही पर्दे के पीछे से आवाज आती, "कोई चिट्ठी है?"

अम्बुरोस किसी का चेहरा नहीं देखता। देखने की जरूरत ही क्या है? आवाज से ही उस शख्स को पहचान लेता है।

"हां बीबीजी, पैसा आया है।"

पैसा पानेवाली पर्दे के पीछे तख्ते पर बैठी होती। पर्दे के पीछे से बाएं हाथ का अंगूठा धीरे-से बाहर आता। अम्बुरोस अपनी जेब से एक चौकोर डिब्बी बाहर निकालता, बायां अंगूठा पकड़कर उसे पैड की काली स्याही पर रखकर दाएं-बाएं दबाता। फिर मनीआर्डर फार्म के उचित स्थान पर अंगूठे की छाप लगवा लेता, जमाकर।

अपने अंगूठे-अंगुलियों पर थूक लगाकर नोट गिनता। इत्मीनान से तीन बार पलट-पलटकर गिनता। चाहे जितनी बार गिने, अम्बुरोस को अपनी गिनती पर यकीन न होता। पर्दे के पीछे खड़ी औरतें जब रुपए गिनतीं, तो अम्बुरोस पर्दे के पार दृष्टि गड़ाकर गिनती पर ध्यान देता।

"ठीक है।"

"और एक बार गिन लो बीबीजी!"

बीबियां फिर गिनतीं।

"हां, ठीक है।"

"अच्छा, मैं चलूं?" अम्बुरोस उनसे इजाजत मांगता, लेकिन उठने का नाम नहीं लेता। चलने का अभिनय-भर करते हुए वहीं बैठा रहता।

"यह लीजिए।" कहकर वे चार या आठ चक्रम[1] उसे पेश कर देतीं। इस 'मामूल' का दूसरा नाम है 'चाय के लिए'। अम्बुरोस हाथ बढ़ाकर पैसा ले लेता। उसे आंखों से लगाता और फिर जेब में डाल लेता। यह उसका 'मामूल' है। कुछ लोगों के लिए अम्बुरोस भेजनेवाली चिट्ठी लिखता और आनेवाली चिट्ठी पढ़कर सुनाता। इस सेवा के लिए अलग से 'फीस' देनी होती है। यह मानदेय या तो पैसे के रूप में होता है या चाय की शक्ल में। चिट्ठी में लिखी बात को अम्बुरोस अत्यंत गोपनीय रखता। आखिर तक। लोग लिखी हुई चिट्ठियां भी अम्बुरोस को सौंप देते थे। साढ़े तीन बजे निकलनेवाली 'मरण विलासम मोटर सार्विस'[2] से ही यहां की डाक निकलती। डाकघर और बस स्टैंड के बीच का फासला कुछ अधिक है। बस से डाक का थैला लाना और बस तक पहुंचाना अम्बुरोस की ड्यूटी का अंग है।

मम्मात्तिलु की बीबी अमीना का बाप कोलंबो में था। एक बार की बात है अमीना ने अपने यहां गुड़ की खीर बनाकर यासीन[3] पढ़वाया। उसकी इच्छा थी कि वह अपने बाप को गुड़ की खीर खिलाए। घरवाला जानता तो मना करता। सो उसकी आंख बचाकर एक छोटी-सी हांड़ी में गुड़ की खीर लिए अमीना टाट के पर्दे के पीछे खड़ी रही, अम्बुरोस के इंतजार में। उसकी खाकी टोपी नजर आते ही अमीना ने कपड़े से अपना मुंह ढंक लिया।

"सारे!" (सर जी) अमीना ने आवाज लगाई।

अम्बुरोस उसकी ओर बढ़ा। "यह देखो!" अमीना ने हांड़ीवाला हाथ उठाकर दिखाया। जब अम्बुरोस पर्दे के पास पहुंच गया, तो चारों ओर देखते हुए अमीना धीमी आवाज में बोली, "आज यासीन पढ़वाया था। मनौतीवाली खीर है यह। किसी को बताना नहीं, अच्छा? गुड़ की खीरवाली यह हांड़ी डाकघरवाली पेटी में बड़े ध्यान से डाल देना। वाप्पा को भिजवा देना, अच्छा! मनौती की खीर है न! मेरे वाप्पा भी पी लें जरा।"

अम्बुरोस ने हांडी हाथ में ले ली। चलते समय उसका मन उमंग से नाचने लगा। एकांत स्थान पर पहुंचकर उसने हांडी खोली। इलायची और गुड़ की जायकेदार गंध से उसके नथुने फड़कने लगे। खड़े-खड़े उसने खीर गटागट पी ली और चार-पांच दिन बाद हांडी लौटा दी!

"तुम्हारे 'वाप्पा' ने मनौती की खीर पी ली है। यह लो, हांड़ी भी वापस भेज दी है।"

रिटायर होने के बाद ही अम्बुरोस ने दोस्तों के बीच एक दिन इस रहस्य को खोला। फिर सुनाते-सुनाते खुद भी लोटपोट हो गया।

सुबह तिरूवनंतपुरम् से चलकर करीब दस बजे यहां पहुंचनेवाली बस में डाक का

---

1. पुरानी तिरुवितांकूर रियासत का सिक्का। (चार चक्रम - रुपए का सातवां हिस्सा)
2. तिरुवनन्तपुरम से आनेवाली सरकारी बस। गांववालों द्वारा व्यंग्य में दिया गया नाम।
3. मनौती पूरी करने की एक रस्म।

थैला आता था। अंशी के ढलान में उतरती बस का भोंपू सुनकर मीरान पिल्लै ने अपने कंधे पर अंगोछा डाल लिया।

"कहां जा रहे हो?" कदीजा ने पूछा।

"मेल गाड़ी का भोंपू सुनाई दे रहा है। जरा देख आता हूं, कोलंबो से कोई चिट्ठी-पत्री है कि नहीं। कोलंबो मार्किट के भाव-ताव का भी पता चल जाए।" मीरान पिल्लै घर से निकल पड़े। नदी-किनारे श्मशान घाट से चलते हुए पुल पर पहुंचे। पुल के पासवाली दुकान अरसे से बंद पड़ी थी। पिल्लै उसके धूल भरे बरामदे में बैठ गए।

जंग लगी हजामत की पेटी हाथ में लिए 'आनैविलुंगी ओसा'[1] प्रकट हो गया। "काम करवाना है तंबी?[2] आनैविलुंगी की मोटी तगड़ी मूंछ के नीचे काले होंठ पर दमकती मुस्कान हिलते-डुलते सांप की याद दिला रही थी।

"नहीं, आज नहीं।" मीरान पिल्लै ने सिर और मुंह पर हाथ फेरते हुए जवाव दिया।

उन्होंने पुल की दीवार के नीचे देखा। दीवार से सटकर कटे हुए बाल पड़े थे। ढेर के ढेर बाल! काले, भूरे और पके हुए!

"बाल तो बढ़ गए हैं!" आनैविलुंगी ने याद दिलाया।

"बढ़ने दो भई... वढ़ने दो। दो दिन बाद देखा जाएगा।"

"अंटी में पैसा-वैसा पड़ा हो, देखना मुदलानी चाय पीने के लिए।" आनैविलुंगी ने मीरान पिल्लै की अंटी को गौर से देखते हुए पूछा।

"मैंने कहा, कुछ नहीं है।"

"एक बीड़ी तो देना भैया!"

मीरान पिल्लै ने 'ना' नहीं की। डाकिए की इंतजारी में बैठे-बैठे अगर सुस्ती आ जाए तो उसे दूर करने के लिए घर से चलते वक्त उन्होंने एक बीड़ी अंटी में रख ली थी। उसी को बढ़ा दिया। आनैविलुंगी ने अपनी अंटी से दियासलाई निकाली। उसी में बीड़ी को भी सावधानी से रखा और चलता बना।

आनैविलुंगी के चले जाने पर ही मीरान पिल्लै की जान में जान आई। एक नंबर का चिपकू है। सामने आ जाए तो कुछ न कुछ लिए विना टलेगा नहीं। कुछ भी दीजिए, उसे संतोष नहीं। जब देखो अपनी फटेहाली का रोना रोते हुए हर किसी से मांगता फिरता है।

पिल्लै उसी समय दाढ़ी वनवाते थे, जब सिर के बाल मुंड़वाते। इस बीच दाढ़ी नहीं बनाते थे। अब सिर और चेहरे पर बाल बढ़ गए हैं। हजामत कराने का इरादा भी है। लेकिन हजामत कराते समय डाकिया गुजरता, तो चिट्ठी वहीं पकड़ा देता। चिट्ठी देखते ही, आनैविलुंगी समझ लेता कि कोलंबो से आई है। फिर वह पूरे गांव में ढिंढोरा पीटता

1. गांव का नाई, जिसका नाम आनैविलुंगी था। ओसा - हज्जाम।

2. छोटा भाई

फिरता कि मीरान पिल्लै के नाम कोलंबो से चिट्ठी आई है। यह सुनकर एक-एक करके सभी व्यापारी कोलंबो मार्किट का हालचाल जानने के लिए उनके पास आ जाते। एक आनैविलुंगी काफी है पूरे जंगल में तहलका मचाने के लिए।

मीरान पिल्लै उत्तर की ओर नजर गड़ाए खड़े थे। डाकिये का रास्ता यही है। काले घोड़े जैसे मुखड़े के ऊपर ढीली-ढाली खाकी टोपी दूर से दिखाई पड़ी। मीरान पिल्लै झट से खड़े हुए और जरा हटकर एक ऐसे स्थान पर खड़े हो गए जहां दूसरों की दृष्टि उन पर न पड़े। अम्बुरोस पास में पहुंच गया।

''स् - स्... कोई चिट्ठी है?'' आवाज धीमी करते हुए पूछा।

''है तो!'' अम्बुरोस ने एक लिफाफा आगे बढ़ाया, जिसके छोर पर लाल-नीली लकीरें पड़ी हुई थीं। मीरान पिल्लै ने चारों ओर नजर दौड़ाई, कहीं कोई देख तो नहीं रहा! पूरा मोहल्ला वीरान पड़ा था। लिफाफा लेकर उन्होंने बगल में छिपा लिया। फिर सावधानी से पूरे बदन पर अंगोछा लपेट लिया और पुल से उतरकर श्मशान के रास्ते जल्दी-जल्दी घर की ओर चल पड़े।

''अरी ओ, राहिला की मां! चिट्ठी आई है!'' मीरान पिल्लै ने भीतर जाकर बीवी के कान में कहा। लिफाफा खोला। चिट्ठी बाहर निकालकर फैला ली। महीन-सा कागज। काली स्याही से सुडौल लिखावट। मीरान पिल्लै ने ऊपर-नीचे देखा। एक-एक अक्षर मिलाकर पढ़ने की कोशिश की। पर पढ़ते नहीं बना। इक्के-दुक्के कुछ अक्षर पहचान में आते थे। उनकी साक्षरता का यही हाल था। कदीजा ने भी एक बार चिट्ठी पर झांका, फिर बोली, ''देखो, कैसा कागज है! कुरता सिलवा सकते हैं, है न?''

उनका बेटा कासिम दूरवाले अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने गया है। शाम को चार बजे से पहले नहीं लौटता। तब तक मीरान पिल्लै कैसे सब्र करें? कोलंबो में इस वक्त नेत्तिली का क्या दाम है, इतनी जानकारी मिल जाए तो बहुत। अगर वहां दाम अच्छे हों तो इस बार चैत में काफी सारा माल कोलंबो भेजा जा सकता है। अल्लाह इतना करम करना कि समंदर धोखा न दे।

डाक बाबू के पास चला जाए? नहीं। जब वे पान-सुपारी नहीं खा रहे होते तो गुस्सा उनकी नाक पर होता, किसी भी क्षण फूटने को तैयार। अस्पताल में जाकर डाक्टर साहब से पढ़वाएं? उन्होंने दीवार-घड़ी देखी। साढ़े ग्यारह बज रहे थे। ग्यारह बजे अस्पताल बंद हो जाता था। डॉक्टर साहब साइकिल पर सवार होकर चले गए होंगे।

मीरान पिल्लै बेचैनी से इधर-उधर चहलकदमी करने लगे। अचानक बाहर की ओर देखा तो कासिम बाड़ का दरवाजा खोलते हुए भीतर आ रहा था।

''क्यों रे, आज जल्दी कैसे आ गया?''

''स्कूल की फीस नहीं दी न, इसलिए मास्टरजी ने घर भेज दिया।''

"अरे, हाथ में पैसा हो और हमने स्कूल की फीस देने से इनकार किया हो, तब तो बात भी है। वक्त ही हमारा खराब है। आमदनीवाली सारी जायदाद हाथ से निकल गई। कारोबार में भी बरक्कत नहीं हो रही। गहने-जेवर जो गिरवी रखे थे, छुड़वा नहीं पा रहा। मैं क्या करूं बेटे, भागादौड़ी में मैं कोई कसर नहीं उठाकर रखता। मेहनत-मशक्कत से जी नहीं चुराता। अल्लाह का करम चाहिए। तुम अपनी पढ़ाई यहीं रोक दो। यही बेहतर है। मेरे साथ तुम भी कारोबार में ही लग जाओ।"

"वाप्पा!"

"तुम्हारे दिल को मैं जानता हूं बेटे। पर हमारी ताकत जवाब दे रही है। काफी पढ़ लिया। बंद करो अब अपनी पढ़ाई-वढ़ाई। जरा यह चिट्ठी पढ़कर तो सुनाओ।"

मीरान पिल्लै ने बेटे के आगे चिट्ठी बढ़ा दी। कासिम ने चिट्ठी हाथ में ली। खोली भी। पर जैसे गले में आवाज अटक गई थी, बाहर नहीं निकल रही थी। उसके मन का पंछी स्कूल के इर्द-गिर्द कहीं उड़ रहा था। आंखों के सामने खड़े थे उसके सहपाठी और यार-दोस्त! दिल को भारी सदमा लगा था। दोस्तों से हमेशा-हमेशा के लिए बिछुड़ने का अफसोस हो रहा था। देखते-देखते उसका मन भारी होने लगा। मन की आंखों के सामने एक दृश्य उभर आया। स्कूल के पीछेवाले मैदान में, कटहल के बड़े-बड़े पेड़ों की छाया में 'वाली बॉल' का खेल हो रहा है और वह खुद भी दीन-दुनिया को भूलकर खेल में शामिल है।

"क्यों बे, चिट्ठी पढ़ता क्यों नहीं?"

बाप की डांट सुनकर कासिम चौंक उठा। चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगा—

"मुअजिज मीरान पिल्लै साहब की खिदमत में,

कोलंबो वाले ई.पी.कु. का सलाम-आलेकुम, खैरियत।

अपनी खैरियत की खबर देते रहिएगा। खैर।

परवरदिगार के रहम से अब यहां बाजार में नेत्तिली की अच्छी मांग है। खबर मिली कि हमारे यहां चैत में बहुतायत से नेत्तिली मिलेगी। अल्लाह भला करे। आपसे गुजारिश यह है कि ज्यादा से ज्यादा नेत्तिली करुवाड़[1] खरीद लें और बालू-रेत के बिना गट्ठे बांधकर हमारे नाम भेज दें। हम आपके खासमखास आदमी बनकर यहां काम करेंगे और आपके माल के लिए ज्यादा से ज्यादा कीमत दिलाने की पूरी कोशिश करेंगे। बिक्री होने के साथ ही साथ पैसा और बीजक भेजते रहेंगे। ज्योंही आपका माल हमारी तूत्तुकुडीवाली दुकान पर पहुंच जाएगा, आपकी खिदमत में पेशगी की रकम अदा कर दी जाएगी।

---

1. सूखी मछली

बालू-मिट्टी के बिना अच्छी मडी-नेत्तिली[1] भेजें, उसमें वलै-नेत्तिली[2] न मिली हो। यहां से जानेवाले कारिंदे के हाथ आपके लिए शेर छाप कोलंबो छाता भेज दूंगा।

बाजार की दर :

नेत्तिली-मडी	140 – 160 रु.
नेत्तिली-वलै	115 – 130 रु.
अरुक्कुला[3]	190 – 225 रु.
वेंचिला[3]	160 – 175 रु.
पारै[3]	150 – 165 रु.

खिदमत के लिए लिखें। सलाम।

बाअदब,

ई.पी.कु.

मीरान पिल्लै ने बेटे के हाथ से चिट्ठी ली और उसे दोहरा मोड़कर लिफाफे में ठूंस दिया। फिर बड़ी सावधानी से लकड़ी के बक्से में रखा।

इसके बाद वे आंगन में पड़ी चारपाई पर बैठकर मन-ही-मन कुछ हिसाब लगाते रहे। कोलंबो में कीमत अच्छी है। इस साल अगर समंदर धोखा न दे तो गिरवी रखे बागान और जेवरों को आसानी से छुड़वा सकते हैं। अबकी न छुड़वा सके तो लेवादेवीवाला गहनों की नीलामी कर देगा। बेटी राहिला खरपतवार की तरह बढ़ रही है। उसकी शादी में गहने-जेवर बनाने के लिए इसके सिवा कोई और चारा नहीं। पिछले दो-तीन साल से चैत में मामूली नेत्तिलीपाडु रहा, फिर भी कोलंबो को गट्ठे भेजे गए। लेकिन हर बार नुकसान ही रहा। बीजक में बिक्री का जो हिसाब होता, उसकी दर वह नहीं होती जो पहलेवाले तारों में लिखी होती थी। दरों में एकाएक गिरावट आ जाती। बीजक के साथ नत्थी किए गए पत्र में विस्तार से यह लिखा होता कि मलाबार से क्योंकि बहुत-से गट्ठे पहुंच गए हैं, इस कारण बाजार की दर एकाएक गिर गई। कुछ ऐसी ही वजह हर बार पत्र में बताई जाती।

अपने गांव-बिरादरी का आदमी है। अपनी ही जात और मजहबवाला। इसलिए अमानत में खयानत नहीं करेगा। कोलंबोवाले व्यापारी के लिए इसी तरह का सीधा-सच्चा भरोसा मीरान पिल्लै के दिल में बना रहता था।

"वाप्पा!" कासिम की यह दर्दभरी पुकार सुनकर ही मीरान पिल्लै को होश आया। उन्होंने प्रश्नसूचक दृष्टि से बेटे को ताका।

---

1. बढ़िया किस्म की नेत्तिली।
2. दूसरे नंबर की नेत्तिली।
3. म[illegible]यों की किस्में

"इम्तहान होने में अब दो ही महीने बाकी हैं।" कासिम गिड़गिड़ा रहा था।

'हुम्'—मीरान पिल्लै के कंठ से सिर्फ यही स्वर सुनाई दिया। न वे कासिम की ओर मुखातिब हुए, न और कुछ कहा। हिम्मत ही नहीं थी। चुपचाप सिर झुकाए बैठे रहे। दिल में दर्द का समंदर उमड़ रहा था। जिसे भीतर-ही-भीतर दबाए वे घर की सीढ़ियां उतरने लगे। बाहर आकर कुछ देर रुके और फिर समुद्र की ओर चल पड़े।

4

मुर्गे की मध्य रात्रिकालीन बांग सुनाई दी। कासिम अभी सोया नहीं था। चटाई पर करवट बदल रहा था। बांग सुनकर समझ गया कि अभी आधी रात हुई है। उसे बिल्कुल नींद नहीं आ रही थी। बरामदे में पड़े 'उडम्बरै'[1] पर वह रंगीन चटाई बिछाए लेटा हुआ था। सारी कोशिशों के बावजूद उसे नींद नहीं आ रही थी। उठकर खिड़की खोली। समुद्र की ठंडी हवा आने लगी। वायु के शीतल स्पर्श से रात सुहावनी लगने लगी। उसने फिर अपने मन को किसी एक बिंदु पर एकाग्र करने की असफल कोशिश की। पर मन बेलगाम भटकता रहा। चैन नहीं, उमंग नहीं। उथल-पुथल, आलोड़न और उद्वेलन। स्कूल-परिसर में मंडराती यादें। सहपाठियों की मधुर स्मृतियां। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के लिए केवल दो महीने रह गए हैं। पढ़ाई बंद करने की मजबूरी। परीक्षा दे पाता तो सफलता निश्चित थी। हर बार उसके पेपर अच्छे ही हुए हैं। किसी तरह दो माह और खींच पाते तो कम-से-कम मैट्रिक होने की तसल्ली रहती।

सबेरा होने पर सहपाठियों से यह कैसे कहेगा? कौन-सा मुंह दिखाएगा उन्हें। साथियों के सवालों का जवाब क्या देगा?

मेधावी छात्र होने के कारण इम्तहान के ऐन पहले पढ़ाई छोड़ने की बात से अध्यापकों को भी बुरा लगेगा।

तड़के ही गिरजाघर का घंटा बज उठा। कासिम उठकर बैठ गया। घंटनाद की अनुगूंज जब खत्म हुई तो कुललुपल्लि मसजिद से अजान सुनाई दी। मोहिद्दीन के कंठनाल से निकली वह पुकार प्रातःकालीन खामोशी के सींखचों से छनती हुई पूरे गांव में फैल गई। दीनपरस्त मुसलमानों को सुबह की नमाज का वह बुलावा था। चेट्टिवलाकम के 'मुत्तारम्मन' देवी के मंदिर से आनेवाला घंटनाद भी गांव में पुलक-सी भर रहा था। पुलकती और हुलसती हुई वह स्वरलहरी गांव की कई बार परिक्रमा कर गई।

---

1. काष्ठ-निर्मित आयताकार तख्त। आमतौर पर यह सोने के लिए पलंग की तरह काम आता है।

कुएं में डुबकी लेती बाल्टी का अद्भुत स्वर सुनाई पड़ा। कासिम की मां सिज़दे के लिए जाग गई है। वह भी कुएं के पास गया। बेटे को देखकर खतीजा को अचंभा-सा हुआ। आज तक वह इतने सवेरे कभी नहीं उठा! मां की आंखें खुशी से फैल गईं।

"इतनी जल्दी जग गया रे?"

"नींद ही नहीं आई।"

मां ने आगे कुछ नहीं पूछा। हाथ-मुंह धोने के बाद चुपचाप अंदर जाने लगी। कासिम ने पुकारा, "उम्मा!"

मां ने मुड़कर देखा।

"दो महीने और पढ़ लूं, स्कूल की पढ़ाई पूरी हो जाएगी।" कासिम की आवाज में अप्रत्यक्ष अनुरोध था।

"वाप्पा को क्या यह मालूम नहीं है?"

"मालूम है।"

मां आगे कुछ नहीं बोली। चुपचाप अंदर चली गई। कासिम ने हाथ-मुंह धोया। उनींदेपन से भारी पलकों पर जब ठंडा पानी पड़ा तो आंखों की जलन कुछ कम हुई। मुंह फुला-फुलाकर कुल्ला किया और फिर लुंगी के छोर से मुंह पोंछा।

छत के तीरे से एक रस्सी लटकी हुई थी, ऊंची सीढ़ी पर चढ़ते समय सहारे के लिए। कासिम उसे पकड़ते हुए सीढ़ी पर चढ़ा। फिर पूरब की तरफ देखा। पिछवाड़े की ओर काजू का पेड़ टूटा पड़ा था। उसकी डालों के बीच से देखा तो दूर चट्टानों की शृंखला दिखाई दी। उसके बीच नीलाकाश पर लालिमा दिख रही थी—नील सरोवर में खिले कमल की तरह! उस गांव में रोज सुबह एक लाल फूल खिलता है, लेकिन उसका दर्शन आज पहली बार हुआ! थोड़ी देर तक वह उस सौंदर्य को अपलक निहारता रहा। वह सुंदरता उसके हृदय में नशे की तरह छा गई। निद्राविहीन रात के अत्याचार को भूलकर वह खड़ा रहा। उस ललाई में लावण्यमयी षोडशी के सुपुष्ट गालों का रंग देखकर नयन धन्य हुए। दिल के युवा उछाह ने फिर अंगड़ाई ली, तो उसकी स्मृति फिर स्कूल की ओर जा निकली। वह उसे मधुर लगी। सहपाठियों के चेहरे साफ-साफ दिखाई दिए। साथ पढ़नेवाली लड़कियों की लजीली मुखमुद्रा, उनकी खिलखिलाहट, किलकारियां, मोहक नयनों का जादू, पके आम के समान गाल और उनकी लालिमा!

इन सबको खो देने की तड़प।

शोक-संतप्त उसके हृदय से श्लोक-सम एक पदबंध अस्फुट स्वर में फूट पड़ा—

मधुर मधुमय उषा! स्वर्णिम विहान हो तुम!
सतत यौवन से युत लावण्यमयी
अद्भुत कल्पना महान भावना विधाता की

इसीलिए तो नव चरणों में रमे हैं
विश्व-विश्रुत कवि और मनीषी।

"अच्छा, मैं हो आऊं?" उसने सुना।

वाप्पा विदा ले रहे हैं। वे बिना कालर की कमीज, सिर पर पगड़ी बांधे, छतरी को जमीन पर टेके चारपाई पर बैठे थे। कहीं दूर जाना हो, तभी वाप्पा छतरी लेते थे। बगल में कागजों का एक पुलिंदा है। घर का दस्तावेज।

"जाकर देखता हूं।"

मीरान पिल्लै की वाणी में संशय का मिश्रण था। सिर उठाकर देखा। चौखट पर उम्मा के पास कासिम खड़ा है।

"क्यों रे, अभी से जाग गया है?"

कासिम ने कोई उत्तर नहीं दिया। चुपचाप खड़ा रहा।

"अच्छा, मैं चलता हूं।" मीरान पिल्लै सीढ़ी से उतरे। लुंगी के निचले भाग को उठाकर उन्होंने दुहरा करके बांधा। बगल में दबाए कागजों को हाथ में थामा और छतरी को बगल में दबा लिया। रास्ते को देखकर ऐसा लगा, जैसे ठहरे हुए पानी की श्यामलता में भोर की हल्की झिलमिलाती रोशनी घुली हुई हो। वाप्पा आगे बढ़े। चप्पल के एड़ी से टकराने की आवाज क्रम से दूर होती सुनाई दी।

दो मील लंबी सड़क के उस छोर पर स्कूल की इमारत खड़ी है। पहले यह प्राथमिक विद्यालय था। फिर मिडिल स्कूल बना। फर्स्ट फार्म[1] (छटी कक्षा) से प्रारंभ करके यहां अंग्रेजी की शिक्षा दी जाती है। आसपास के ग्रामीण मुस्लिम भाइयों को इसका पता नहीं है। ऐसे ही साल पर साल बीतते रहे। फिर विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। थर्ड फार्म की वार्षिक परीक्षा में बहुत-से लड़के उत्तीर्ण हुए। आगे पढ़ने के लिए हाई स्कूल काफी दूर था। बस की सुविधा भी नहीं थी। इतनी दूर जाकर पढ़ना आसान नहीं था। ऐसी स्थिति में जनता की मांग पर वही मिडिल स्कूल हाई स्कूल में बदला। हाई स्कूल बनते ही उस साल फोर्थ फार्म में दाखिला लेनेवाला एकमात्र मुस्लिम छात्र कासिम था।

"बेटा पढ़ रहा है न?" एक बार जब मीरान पिल्लै सूखी मछली तोल रहे थे, ग्राहक अमृतम ने पूछा। मीरान पिल्लै को यह नापसंद सवाल था।

"हां, पोथी लेकर जाता तो है।" मीरान पिल्लै ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा।

"इस साल जीता?"[2]

"जीता कि हारा, कौन जाने?"

---

1. तिरुवितांकूर रियासत की शिक्षा-प्रणाली में पांचवीं के बाद फर्स्ट फार्म शुरू होता और छठे फार्म तक चलता। इसके बाद स्कूली शिक्षा खत्म होती।

2. परीक्षा में सफल हुआ।

"अजीब आदमी हो! तुम्हारा अपना बेटा इम्तहान में पास हुआ या नहीं, यह भी पता नहीं! अब कौन-सी क्लास में आया है?"

"कौन-सी क्लास है, मुझे नहीं पता।"

"शरम नहीं आती? कैसे बाप हो तुम? कुछ भी पता नहीं!"

"मुझे यही पता है कि वह नायर साहब के स्कूल में पढ़ता है। स्कूल भेजने के लिए इसलिए राजी हुआ था कि घर में वह ऊधम मचाता है। या तो घर के पिछवाड़े काजू के पेड़ पर चढ़ता-उतरता है या दिनभर नदी में नहाता रहता है। काजू-फल से निकलता चिपचिपा लेस लुंगी पर दाग छोड़ जाता है। पेड़ पर नहीं चढ़ा तो अपनी छोटी बहन को बेवजह पीटता रहता है। इन्हीं सब झंझटों से बचने के लिए उसे अपनी मर्जी पर छोड़ दिया।"

कासिम कौन-सी क्लास में पढ़ रहा है? वह 'जीत' रहा है या 'हार' रहा है, मीरान पिल्लै को कुछ भी पता नहीं था। जानने की इच्छा भी नहीं थी। बेटा जिस स्कूल में पढ़ता है, वहां कभी कदम तक नहीं रखा।

थर्ड फार्म की वार्षिक परीक्षा से पहले हेडमास्टर ने सभी अभिभावकों को बुलवाया–एक सर्टिफिकेट पर दस्तखत कराने के लिए। सभी छात्र अपने-अपने पिता को बुला लाए। प्रधान अध्यापक के सामने उन सबने सर्टिफिकेट बुक पर दस्तखत किए। कासिम के घर से कोई नहीं गया।

"कासिम! कल तक दस्तखत हो जाने चाहिए। अपने बाप को बुला लाओ। वरना तुम इम्तहान नहीं दे सकते!" प्रधानाध्यापक ने उसे बुलाकर चेतावनी दी।

कोलंबो को जो मछली भेजी थी, उसका हिसाब आया था। मीरान पिल्लै उसे देखते हुए कुछ मिलान कर रहे थे। माल भेजते समय पेशगी की जो रकम मिली थी, बिक्री से उतना भी पैसा नहीं बन पाया। ब्यौरे के साथ एक चिट्ठी थी। चिट्ठी की आखिरी पंक्ति मीरान पिल्लै के होंठों पर चिपक गई–

'इस तरह आपके नाम पर छह हजार तीन सौ उनतीस रुपए, दस चक्रम चढ़े हैं। इस रकम को जल्दी ही हमारी तूतुक्कुडी दुकान के मैनेजर के नाम अदा करें।

उस रोज दिन में हुई बारिश का पानी आंगन में जमा था। वह नेत्र कोटरों में भरे पानी के समान चमक रहा था, या ठेठ दुपहरी में निचोड़े गए पसीने की तरह लग रहा था। उसी पानी में नजर गड़ाए बैठे थे मीरान पिल्लै।

"वाप्पा!" पीछे से कासिम ने पुकारा।

"उम्!" मीरान पिल्लै बिना मुड़े ही पतली आवाज में बोले।

"प्रमाणपत्र पर दस्तखत करने हैं।"

"दस्तखत?"

"हां"।

"किसलिए रे?"

"तभी मैं परीक्षा दे सकूंगा।"

"तुम्हें कोई परीक्षा देने की जरूरत नहीं है। कोई जरूरत नहीं कि तुम पढ़-लिखकर लाट साहब बनो और हमें खिलाओ - पिलाओ।"

कासिम फिर कुछ नहीं बोला। मन में एक निश्चय-सा कर लिया। अगले दिन स्कूल जाते समय देखा, मीरासा सामने से आ रहा है।

"मामा!" मीरासा को वह इसी संबोधन से पुकारता है।

"क्यों बेटे?"

"मेरे साथ स्कूल चलोगे?"

"किसलिए?"

"दस्तखत करने के लिए।"

"दस्तखत करने के लिए? मैं नहीं चलूंगा। मेरे पास नारियल के तीन पेड़ और एक छोटा-सा घर है। मैं किसी भी कागज पर दस्तखत नहीं करूंगा। हरगिज नहीं।" मीरासा रुके बिना चलता बना। कासिम की समझ में नहीं आया, क्या करे। थोड़ी देर वहीं खड़ा रहा।

आनैविलुंगी ओसा को बुलाऊं? मुमकिन है, वह भी दस्तखत करने से कतरा जाए। कासिम सोच में पड गया। तभी, उसे एकाएक नागूर साहब की याद आई, जो कल बड़ी मस्जिद में आए थे। कासिम बड़ी मस्जिद की ओर चला। सामनेवाले काले पत्थर पर लंबी दाढ़ी और हरी टोपी में सजे बैठे थे नागूर साहब।

"जनाब!"

"क्या बेटे!" नागूर साहब ने सिर उठाया। उनके सफेद दांतों पर हंसी कीड़े की तरह रेंगती लगी।

"मेरे स्कूल में आएंगे?"

"जरूर बेटे!"

"एक दस्तखत करना है।"

"एक क्यों, सौ दस्तखत करूंगा।" नागूर साहब काले पत्थर से उठे और कासिम के साथ चल पड़े।

"पूछने पर कहेंगे कि आप मेरे पिता हैं। आपका नाम पूछें तो 'मीरान पिल्लै' कहेंगे।"

"अच्छा, यही बताऊंगा।"

कासिम ने प्रधानाध्यापक के कमरे के बाहर खड़े होकर आवाज दी–

"सर!"

"कौन है?"

"कासिम!"

"तुम्हारे बाप साथ में हैं क्या?"

"हां, सर!"

कासिम और नागूर साहब दोनों प्रधानाध्यापक के कमरे में दाखिल हुए। हेडमास्टर ने अपनी मोटी ऐनक से कासिम के वाप्पा को देखा, तो शीशे के अंदर उनकी पुतलियां फैल गईं।

कासिम कांप उठा। नागूर साहब भी सिहर उठे।

"नाम?"

"मीरान पिल्लै।" नागूर साहब के मुंह से थूक का फव्वारा! कुर्ते से पसीने की बदबू! हेडमास्टर ने अपना मुंह दूसरी ओर कर लिया। थोड़ा पीछे हटकर बैठ गए। सर्टिफिकेट-बुक खोलकर सामने रखी और छड़ी से वह स्थान दिखाया, जहां दस्तखत होने थे। नागूर साहब ने नाम लिखकर हस्ताक्षर किए–

"साहिब मीरान पिल्लै" और हेडमास्टर साहब के कमरे से बाहर निकलने पर ही दोनों की जान में जान आई।

थर्ड फार्म में कासिम अच्छे नंबरों से पास हुआ। फिर चौथे फार्म में दाखिला लिया। चौथे और पांचवें फार्म में भी अच्छे नंबरों से पास हुआ और इस साल फाइनल परीक्षा में भी उसे अच्छे नंबरों की उम्मीद थी।

इंतजार की नाव में बैठकर वह दिन-रूपी सागर को पार कर रहा था, तभी एक दिन नौका डूब गई। डूबी नहीं, बल्कि डुबाई गई थी। चंद हफ्ते पहले वामनपुरम् से एक मौलवी साहब पधारे थे। उनके व्याख्यान से आग के कुछ गोले निकले। इन्हीं लाल गोलों से वह नौका डुबाई गई।

5

बड़े तड़के घर से निकले मीरान पिल्लै नदी-किनारे श्मशान से होकर दक्षिण दिशा की ओर चले। फिर पूरब का रुख किया और कुरुसडी[1] पहुंचे। उसके आगे रेत का वह टीला आया, जहां जाल सुखाए जाते हैं। सघन रेतीला पथ, इसलिए जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाना मुश्किल हो रहा था। फिर बढ़ी हुई उम्र। पहले जैसा चला नहीं जाता। एक जमाना था जब बिना रुके, लगातार दस-बारह मील चले जाते थे, सो भी पैरों में फफोले डाल देनेवाली कड़ी धूप

---

1. वह स्थान, जहां एक बड़ा-सा सलीब बना है।

में! आज यह हालत है कि दो-तीन मील भी चलना दूभर है। थकान चढ़ जाती है।

चप्पल उतारकर हाथ में ले ली। कोलंबो छतरी को टेढ़ी मूठ के सहारे कंधे पर लटका लिया। इस सबके बावजूद रेत पर चल नहीं पा रहे थे। घुटनों में दर्द। पांव धंसे जा रहे थे। पुरानी ताकत कहां चली गई? ठंडी रेत पर बैठ गए। थोड़ी देर विश्राम किया।

फिर चलने लगे। आज उनकी मंजिल है, समुद्र किनारे दूर पर बसा एक छोटा-सा गांव, जहां बस या कोई अन्य गाड़ी नहीं जाती। लाल मिट्टीवाली पगडंडी। पैदल चलना ही होगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं। दोपहर से पहले लौटना भी है। धूप तेज हो गई तो रेत तपकर शीशे की बालू जैसी हो जाएगी।

मीरान पिल्लै के मन में सूरज का एक कल्पना-चित्र उभरा कि वह आसमान पर बैठा आग फूंक रहा है और जमीन को कड़ाही में डालकर भून रहा है। इस कल्पना से उनका दिल दहल उठा। रास्ते में चाय की एक दुकान दिखी तो उसमें घुस गए। बॉयलर[1] गर्म हुआ। फिर उस पर ठोंक देकर राख गिराने की आवाज। कड़क चाय बनी थी, गर्मागर्म। फूंक-फूंककर पी। बोहनी की चाय थी, पीकर शरीर में गजब की चुस्ती और ताजगी आ गई। उठकर आगे चले। दिन के नन्हें-नन्हें पांव जमीन पर पड़ने लगे। मीरान पिल्लै कहीं रुके नहीं; सीधे चलते गए। पश्चिम से पीछा कर रही परछाईं की लंबाई के सहारे उन्होंने समय का अनुमान लगाया।

मीरान पिल्लै जब उस गांव में पहुंचे, तो सुबह के आठ बज चुके थे। घाट के ठेकेदार हैदरूस मुदलाली[2] इसी गांव में रहते हैं। मीरान उन्हीं से मिलने आए थे। कोल्लंगोडु से लेकर कोवलम तक के घाटों से थोक भाव में मछली खरीदनेवाले बड़े व्यापारी हैं। कोठी के बाहर द्वार के खंभों के आजू-बाजू दो सिंह-मूर्तियां हैं, जो शान से सिर उठाए हुए हैं। अहाते के अंदर विशाल 'नालुकेट्टु'[3]। यही हैदरूस मुदलाली की कोठी है। चार-चार घाटों से माल उठानेवाले ठेकेदार। कोलंबो के साथ उनका बड़े पैमाने पर कारोबार चल रहा है। दूर-दूर तक लोग उनके नाम से वाकिफ हैं।

मदद मांगने आए लोगों को मुदलाली ने आज तक कभी निराश नहीं किया। परसाल ईद पर उन्होंने जो 'जकात' बांटी थी, उसकी महिमामय कहानियां आज भी लोगों के होठों पर हैं।

द्वार बंद था। मीरान पिल्लै ने बीचवाली झिरी से गौर से देखा। बांस से बनी कुर्सी पर बैठे हैं मुदलाली। बाएं घुटने पर दाईं टांग रखे पान चबा रहे हैं। उनके गोरे-चिट्टे विशाल

---

1. दक्षिण भारत के गांवों में आज भी कहीं-कहीं चाय का पानी गर्म करने के लिए बायलर का उपयोग होता है।

2. दुकान या कारोबार का मालिक। मुस्लिम व्यापारी का सम्माननीय नाम।

3. केरलीय शैली में बना विशाल घर, जिसके बीच में आंगन होता है।

वक्षस्थल पर रोमराजि विराज रही है। मीरान पिल्लै के मन में शीतल झरना प्रवाहित हुआ।

कंधे पर लटकाई छतरी हाथ में ले ली। चप्पल पैर में पहन ली। लुंगी-कमीज ठीक कर ली। तांबे की मोटी-मोटी कीलोंवाले दरवाजे को धीरे-से धकेलते हुए अंदर प्रवेश किया। हैदरूस मुदलाली ने सिर उठाकर देखा।

"अरे, यह कौन है?... रास्ता तो नहीं भूल गए!" हैदरूस मुदलाली ने मीरान पिल्लै का स्वागत किया। मीरान पिल्लै के सूखे होंठों पर बड़ी मुश्किल से मुस्कुराहट उभरी।

"रास्ता भूला नहीं, आप ही से मिलने आया हूं।" मीरान पिल्लै के शुष्क कंठ से धीमी आवाज निकली।

"बैठिए", सामने पड़ी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए हैदरूस बोले, "लगता है, ईद का चांद निकल आया! बहुत दिनों बाद मिले भई! बताइए, कैसे आए?"

"नौबत ऐसी ही आ गई है।"

"चित्तिर पाडु[1] कैसा है आपके यहां?"

"सुनते हैं, अच्छा रहेगा।"

"कैसा भी रहे, उससे क्या होगा?" हैदरूस मुदलाली के स्वर में पराजय की गूंज थी। थोड़ी देर तक खामोश बैठे रहे। फिर सिर उठाकर मीरान पिल्लै को देखा। पूछा—

"धंधा कैसा चल रहा है? ठीक-ठाक?"

मीरान पिल्लै हिचक रहे थे। जवाब नहीं सूझ रहा। मुदलाली के चेहरे पर दृष्टि गड़ाए बैठे रहे। उस चेहरे पर वह पुरानी मौज-मस्ती नहीं है। आंखों में वह चमक नहीं है। दृष्टि में वह कांति नहीं है। वाणी में वह गांभीर्य नहीं है। यह कैसे हुआ? मीरान पिल्लै की समझ में नहीं आ रहा था।

"जैसे-तैसे चल रहा है।" मीरान पिल्लै ने धीमे स्वर में कहा। उस स्वर में अपने धंधे के प्रति नफरत-जैसी थी। आंगन में उगी घास, बीच में खिले रंग-बिरंगे फूल! कलियों और फूलों पर मंडराती मधु-मक्खियां! हैदरूस मुदलाली ने बीड़ी का जो टोंटा फेंका था, उससे अब भी हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था। घास में सिर धंसाए दो-तीन मुर्गियां केंचुए के लिए चोंच मार रही हैं। हैदरूस मुदलाली आंगन में नजर गड़ाए खोए से बैठे हैं। उनकी मुखमुद्रा बता रही है कि वे भारी उधेड़बुन में हैं। फिर उन्होंने इस तरह प्रश्न किया, जैसे नींद से जागे हों—

"क्या कह रहे थे? जैसे-तैसे चल रहा है। यही न?"

"जी!"

"कोई बचत-वचत भी है?"

"बचत? खाया हुआ खाना और पढ़ा हुआ फातिहा। बस यही।"

---

1. चैत महीने में मछलियों का मिलना; मछली का मौसम।

हैदरूस मुदलाली फिर खामोश हो गए। मीरान पिल्लै उनके चेहरे को ताकते रहे अपलक। मौन के पैरों-तले कुचले कुछ पल यों ही बीत गए। हैदरूस मुदलाली आंगन में चुगती फिरती मुर्गियों को देखते रहे।

"धूप चढ़ने से पहले लौटना भी है।" मीरान पिल्लै ने खामोशी के बाड़े को खोला।

"फरमाइए!" मुदलाली ने ऐसे कहा, जैसे सपने से जगे हों।

"आपसे एक मदद मांगने आया हूं।"

"कैसी मदद?"

मीरान पिल्लै की जीभ इस बार उठी ही नहीं। संकोच ने जैसे उस पर कील ठोंक दी हो। गला एकदम सूख गया। कहां से शुरू करें, कैसे अर्ज करें, इसी पशोपेश में फंस गए मीरान पिल्लै। आज तक किसी भी व्यक्ति से कोई मदद नहीं मांगी। अब सब तरफ से हार गए, कोई रास्ता नहीं मिला, तो इधर चले आए। हैदरूस मुदलाली की दरियादिली के बारे में काफी सुन रखा था, इसलिए मन में बड़ी आशा संजोए घर से निकले थे। गिरवी रखने योग्य जितने गहने घर में थे, सारे रख चुके थे। सेठ के यहां ब्याज पर ब्याज चढ़ा जा रहा था। आमदनी वाले बागान भी व्यापार में जब तब हुए घाटे की भरपाई के लिए थोक व्यापारी के नाम लिख दिए। इनमें से कुछ तो उनके नाम ही हो गए। मछली के व्यापार को छोड़कर और कोई धंधा आता नहीं था।

"कैसी मदद चाहिए?" हैदरूस मुदलाली ने याद दिलाया। मीरान पिल्लै की चेतना फिर लौटी।

बड़ी हिचक के साथ उन्होंने कागज का पुलिंदा हैदरूस मुदलाली की ओर बढ़ाया। उन्होंने उसे हाथ में लिया और खोलकर देखा। मकान का दस्तावेज!

"यह दस्तावेज किसलिए?"

"इसे अपने पास रखकर पांच हजार रुपए दीजिएगा। चित्तिरपाडु के फौरन बाद लौटा दूंगा। तब तक जो नारियल पकते रहेंगे, उन्हें ले सकते हैं।"

हैदरूस मुदलाली ने मकान के कागजों को कुर्सी के हत्थे पर रखा। मुस्कुराए। उस मुस्कुराहट में निहित निराशा को मीरान पिल्लै पढ़ नहीं पाए। असल में वह अबूझ मुस्कान थी। दिल की सतह पर जो घाव बना हुआ था, यह मुस्कान उसी के लिए पर्दे का काम कर रही थी।

जवाब के लिए मीरान पिल्लै हैदरूस मुदलाली का मुंह ताक रहे थे। मुदलाली की नजर कहीं और टिकी थी अथवा शून्य में कहीं किसी चिंता-भूमि में भटक रही थी। कई मिनट तक खामोशी छाई रही, ऐसी खामोशी जो सब कुछ भुला देती है। इस दौरान मुदलाली कुर्सी के उस हत्थे पर कन्नी ऊंगली से ताल ठोंकते रहे, जिस पर दस्तावेज रखा था। मुखमुद्रा ऐसी हो उठी, जैसे कुछ कहना चाहते हों, किंतु कोई ताकत है जो उनकी जीभ को भीतर

की ओर खींच रही थी। वे फिर एक बार मीरान पिल्लै को देखकर मुस्कुराए। यह मुस्कान पहली मुस्कान से भी ज्यादा रहस्यमय थी, और ज्यादा अर्थपूर्ण। सूखे ओठों पर जीभ फेरकर उन्होंने उन्हें तर किया। फिर प्रयत्न करके बोले–

"मुझे गलत न समझें। मेरी हालत अब पहले जैसी नहीं है। अब मेरी कुल जायदाद यह मकान है। एक साल से कारोबार बंद है।"

"कोल्लंगोडु से लेकर कोवलम तक मछली खरीदकर कोलंबो भेजते थे न?"

"हां, भेजता था," मुदलाली ने झट से विराम दिया और थोड़ी देर की खामोशी के बाद फिर कहा, "बिलकुल जमीन में गाड़ दिया है उसने।" हैदरूस मुदलाली फिर खामोश हो गए और दूर खड़े नारियल के शीर्ष पर उन्होंने अपनी दृष्टि गड़ा ली।

मीरान पिल्लै को यद्यपि उनकी बातों का पूरा मतलब समझ में नहीं आ रहा था, फिर भी वे समझ जाने वाले अंदाज से सिर हिला रहे थे–

"काफी नुकसान हो गया?"

"नुकसान हुआ नहीं। जान-बूझकर नुकसान पहुंचाया गया। मुझे घर में बिठा दिया निकम्मा करके। उसका गल्ला भरने के लिए हम क्यों मेहनत करें बिना खाए और बिना सोए? उसकी बीवी के गहने-जेवर भारी होते जा रहे हैं और हमारी बीवियों के सेठ की दुकान में गिरवी पड़े हैं।"

"आपका कहना बिलकुल ठीक है।"

"अब समझ में आया भाई! यह तो हमारा खून चूसनेवाला सांप है।"

"अब व्यापार बिलकुल बंद है?"

"हां।"

"ठेका?"

"दूसरी बार रकम का भुगतान नहीं हुआ, इसलिए ठेका भी हाथ से निकल गया।"

"ऐसा घाटा कैसे हो गया?"

"वह एक लंबी कहानी है। सब कुछ रब जानता है। अगर वह मेहरबान है तो जिस तरह मेरा दिल तड़प रहा है, उसी तरह वह भी हमारी आंखों के सामने तड़प-तड़पकर मरेगा।"

"हुआ क्या?"

"तीन साल पहले ईद पर मैंने जकात बांटी थी। अपनी औकात से भी कुछ ज्यादा ही दिया था। जो भी आए, सबको दिया। उस साल ठेके में खासा फायदा हुआ था। उसी साल रमजान में ई.पी. कु.[1] गांव आए थे। ईद पर उन्होंने भी जकात दी थी। जकात मांगने उनके पास गए कुछ लोगों ने उनसे कहा, 'हम लोग हैदरूस मुदलाली के पास गए थे।' ई.पी. कु. ने उनसे पूछा कि हैदरूस साहब ने क्या दिया? उनसे दुगुनी जकात पाने के लालच

1. ई.पी.कु. (ईना पीना कुना) कोलंबो में रहकर मछली का थोक व्यापार करने वाले कमीशन व्यापारी, मूलतः मीरान पिल्लै के गांव के।

में इन लोगों ने कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कहा होगा। अगर कह दें कि दस दिए, तो उनसे बीस मिलेंगे। कहें कि पांच दिए, तो वे दस देंगे। यह इनका लालच था पर यह सुनकर उनके मन में डाह हो गया। उन्होंने मन में ठान लिया, 'अच्छा, उसकी यह हिमाकत! मुझसे होड़ करता है? इस इलाके में कोई भी माई का लाल मुझसे ज्यादा जकात नहीं दे सकता। उसकी इतनी कुव्वत? अगले साल तक उसका वह हाल बना दूंगा कि उसमें जकात बांटने की ताकत ही न रहे!' और वे ऐसा करने में कामयाब भी हो गए। मैंने ढेर के ढेर मछली के गट्ठे भेजे। पर उन्होंने पासा ही पलट दिया। सूचना दी कि उनमें से अरुक्कुला के गट्ठे उन्हें मिले ही नहीं; और जो मिले, उनके हिसाब में गड़बड़ कर दी। लिख भेजा कि दाम गिर गए हैं। चौथाई दाम में बेचना पड़ा है। हिसाब और चिट्ठी देखकर मैं धम से बैठ गया। पांच-छह दिन बाद फिर एक चिट्ठी मिली। उस पर लिखा था—आपने जितनी रकम हमारी दुकान से पाई, उससे आपके माल की बिक्री की रकम घटाने के बाद तीन लाख, तिरपन हजार, छह सौ छियानबे रुपए बाकी निकलते हैं। ये रुपए फौरन हमारी तूत्तुकुडी वाली दुकान को अदा कर दें। यह रकम चुकता करने के बाद ही आगे कारोबार जारी रहेगा। नकद पैसा देने की सहूलियत न हो तो अपनी जायदाद मेरे बड़े लड़के अब्दुल रशीद के नाम लिखकर रजिस्ट्री करवा दें। आप जैसे खुले हाथों जकात बांटनेवाले व्यक्ति के लिए यह कोई बड़ी रकम नहीं है; बहुत ही मामूली है। यह रकम तुरंत जमा करने पर ही आप अब्दुल मजीद के बेटे हैदरूस मुदलाली कहलाएंगे।

आपका,

ई. पी. कु. कोलंबो।

यह चिट्ठी जिस दिन मिली, उसके अगले दिन मैंने अपनी बहुत-सी जायदाद उनके बेटे के नाम लिख दी। शेष जायदाद बेचकर घाट के बकाया कर्जे की भरपाई की। अब बाकी हैं मैं और मेरा यह घर। थोड़ा-सा कर्जा और भी है चुकाने के लिए।"

मीरान पिल्लै ने अपना सिर पकड़ लिया और थोड़ी देर उसी मुद्रा में बैठे रहे। मन के पर्दे पर एक फिल्म-सी चलने लगी। जिसमें हैदरूस मुदलाली की नेकी और रहमदिली, मेहमाननवाजी और दरियादिली की सुनी कहानियों के नजारे साफ उभर उठे। हैदर नामक माकूल शेर-जैसी शाही शख्सियत। आधी रात को भी कोई दस्तक दे तो भी चेहरे पर शिकन नहीं। आनेवाले मेहमान के अनुरूप आवभगत। बोली में इतनी मिठास कि सुननेवाला निहाल हो जाए। अपनी जबान से हैदरूस मुदलाली ने आज तक किसी का दिल नहीं दुखाया। अपनी दौलत और शानो-शौकत का इस्तेमाल करके वे किसी को भी नहीं डराते थे। हां, इस नाम में आज भी एक शाही शान है और नेकी-भरी बहादुरी।

मीरान पिल्लै ने देखा, उनके सामने कुर्सी पर एक शेर बैठा है, एक बूढ़ा शेर जिसके दांत झड़ गए हैं और अंग-अंग ढीला हो गया है। दैदरूस मुदलाली कुर्सी से उठे और खिसकती

हुई लुंगी को संभालकर कमर पर बांधते हुए घर में चले गए।

मुदलाली की इस कहानी ने मीरान पिल्लै को बुरी तरह पस्त कर दिया था। भविष्य उन्हें भयंकर अंधकार से भरा नजर आया। दिन-भर कड़ी धूप में पसीना बहाकर मेहनत की है, इसके बावजूद सारी जायदाद दूसरे के हाथ में चली गई। सारे गहने रेहन चढ़ गए। मेरी भी यही दशा होगी जो आज हैदरूस मुदलाली की है। मेहनत करके देखूंगा। मेहनत के लिए ही तो बने हैं ये हाथ-पैर। देनेवाला रब है। किस्मत में जो है, वही होगा।

हैदरूस मुदलाली घर से बाहर आए। कुर्सी पर बैठे और कुर्सी के हत्थे पर रखा मकान का दस्तावेज मीरान पिल्लै की ओर बढ़ाया, "इसे ले जाइए।"

मीरान पिल्लै ने उसे ले लिया।

"तो मैं चलूं?" मीरान पिल्लै ने इजाजत मांगी। हैदरूस मुदलाली भी कुर्सी से उठे।

"वही पुराना हैदरूस मानकर आप मेरे पास आए हैं। खाली हाथ जाने नहीं दूंगा। आपके व्यापार में बरक्कत आए। यह लीजिए।" मुदलाली ने अपनी अंटी से सोने की माला निकालकर दी। "दस पवुन[1] की माला है। इसे गिरवी रख दें और मिलने वाला पैसा व्यापार में लगा लें। चित्तिरै के बाद लौटा सकते हैं।"

"हे अल्लाह! नहीं मुदलाली, मुझे नहीं चाहिए। मैं किसी तरह बंदोबस्त कर लूंगा।" मीरान पिल्लै दो कदम पीछे हटे और "मैं चलता हूं" कहते हुए सीढ़ी से नीचे उतर गए। अब उनके कदम नारियल पत्तों की छाया पर थे।

सामने पुत्तन नदी के तट पर, जिसका ज्यादातर हिस्सा रेत से पट गया था, चूने का धंधा करनेवाले 'परवर' के गधे कुछ सूंघते हुए चल रहे थे। मीरान पिल्लै ने लुंगी को तह करके बांध लिया। छतरी कंधे पर लटका ली। मछली का झाबा ढोनेवाली मछुआरिनें तेज चाल में लगभग भाग रही थीं। उन्हें वक्त पर हाट पहुंचना था। उनके दौड़ने से हवा के पंखों पर लिपटी मछली की बदबू चारों ओर फैल गई। मीरान पिल्लै इसके आदी थे, इसलिए उन्होंने अपनी नाक अंगोछे से बंद नहीं की। उनके दिल में हैदरूस मुदलाली की शाही शख़्सियत नक्श थी–गोरी देह, सुडौल तोंद और चांद सिर। मीरान पिल्लै को लगा कि आज हिमालय भी एक टीला हो गया है, जिसे उन्होंने अपनी ही आखों से देखा है। दूसरे ही क्षण मीरान पिल्लै ने अपनी गलती सुधारी–हैदरूस मुदलाली सच्चे अर्थों में आज भी हिमालय ही हैं। किसी शख़्स को आंकने का मापदंड दौलत नहीं, बल्कि दिल है। हृदय की विशालता और गांभीर्य। सब कुछ लुट जाने पर भी दस पवुन वजन की माला देकर मदद करनेवाली दरियादिली! चेहरे पर शिकन तक नहीं! हृदय की उस विशालता में मीरान पिल्लै डूब से गए। विस्मय-विमुग्ध स्थिति में उन्हें लगा मानो हैदरूस मुदलाली अब भी सोने की माला थामे उनके पीछे आ रहे हैं। मीरान पिल्लै ने बार-बार पीछे मुड़कर देखा। कतार-दर-कतार

---

1. सोने की एक तोल। एक पवुन में आठ ग्राम सोना होता है।

नारियल के पेड़ खड़े हुए थे। मीरान पिल्लै जब जाल सुखानेवाले टीले के पास पहुंचे तो आकाश के विशाल वक्ष पर बैठा सूरज तप रहा था।

6

पिछली रात को शुरू हुआ पानी झड़ी लगाकर बरसता रहा। काले कजरारे बादलों में आकाश की नीलिमा छिप गई थी। कल सुबह से ही आसमान पर अंधेरा छाया हुआ था। साथ में कड़ाके की ठंडी हवा चल रही थी। दोपहर को शुरू हुई बारिश अगली सुबह तक निरंतर होती रही। बीच-बीच में बिजली की कौंध और मेघों का घनघोर गर्जन। जब बिजली कौंधती, मीरासा भयभीत हो जाता, कि कहीं अपने और बच्चों के सिर पर अपना ही घर टूटकर न गिर जाए। थर-थर कांपते बच्चों को वह अपने सीने से लगाए बैठा रहा।

छप्पर छवाए कई साल हो गए। इसलिए घर में कई जगह छत से पानी टपक रहा था। कच्ची मिट्टी की दीवार पर पानी के पतले पनाले बह रहे थे। फर्श पर जगह-जगह मिट्टी-पानी के मेल से कीचड़-सा बन गया था।

जहां-जहां पानी टपक रहा था, मीरासा की बीवी सलमा ने वहां-वहां घर के छोटे-बड़े बर्तन रख छोड़े थे। जब वे भर जाते, तो पानी को बाहर फेंक देती। सब के सब रात-भर बैठे रहे। सोने के लिए जगह कहां थी, वे लोग सुरक्षित स्थानों पर दुबके बैठे थे, घुटनों से सीना सटाए। ठंडी हवा आती तो चिबुक की हड्डियां ऊपरी जबड़े से टकराकर बज उठतीं। हाथ पथरा गए थे और पैर सुन्न हो गए। उस ठंडी और भयानक रात्रि की क्रूरता उषा के आगमन के साथ ही थमी। सूरज की पहली किरणें जैसे मुस्कुराते हुए धरती पर उतरीं और घास की उन उजली नोंकों को चूमने लगीं, जिन पर वर्षा की बूंदें चमक रही थीं। किरणों के स्पर्श से वातावरण में सतरंगी छटा छा गई। प्रभात मोतियों की आभा बिखेरने लगा।

मीरासा आंगन में आया। घुटनों तक पानी जमा था। वह उसमें लुंगी ऊपर उठाए चलने लगा। इधर-उधर हर छोटे-बड़े गड्ढे में पानी भरा था। एक-एक करके लोग बसस्टैंड पर पहुंचे और चाय की दुकान के सामने पड़ी बेंचों पर अड्डा जमा लिया। कई मकानों के गिर जाने की खबर उड़ी। यह खबर भी फैली कि कई मकानों के छप्पर तूफान में पंख फैलाए उड़ गए हैं। गांववालों ने आसमान को देखा। पूरब दिशा में सूर्य-पिंड जल रहा था, लेकिन उसकी रोशनी में कोई खास गरमाहट नहीं थी। नकली धूप! कुछ लोगों ने नारियल के शीर्ष के बीच से देखा कि पश्चिमी आकाश में कालिमा छा गई है, जैसे सैकड़ों हाथियों

का झुंड नाच रहा हो!

"अभी और पानी बरसेगा!" यह किसी बुजुर्ग की गणना थी।

'और पानी बरसेगा', यह भविष्यवाणी सुनकर मीरासा का दिल दहल उठा। पानी अगर लगातार बरसा तो चैत में नेत्तिली मछलियां नहीं मिलेंगी। नेत्तिली मिल भी जाएं, तो धूप के अभाव में उन्हें 'करुवाडु' (सूखी मछली) नहीं बना पाएंगे। करुवाडु नहीं बनी, तो गट्ठे नहीं बनेंगे। गट्ठे नहीं बने तो परिवार भूखा रहेगा। इतने फाके काफी नहीं हैं क्या?

कानों को मफलर या गमछे से कसकर बांधे हुए लोग बस स्टैंड पर आ जमा हुए। चाय की दुकान के सामने भीड़ बढ़ने लगी। गरम चाय पीकर ठंड भगाने आए लोगों ने बॉयलर को आसभरी नजरों से देखा। उसमें से भाप उड़ रही थी। इधर सर्दी में ओठ कांप रहे थे। कल की जोरदार वर्षा की खबर सुर्खियों पर थी। भीड़ में से एक संवाददाता ने सूचना दी कि तूफान में एक पेड़ धड़ाम से गिरा, जिससे बिजली का तार टूट गया। टूटे तार पर किसी बच्चे ने पांव रख दिया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। चाय की दुकान के सामने जमा भीड़ ने इस खबर को बड़ी दिलचस्पी से सुना।

नदी में उमड़-घुमड़कर मटमैला पानी बह रहा था। इससे लोगों ने सहज अनुमान लगाया कि उत्तर के गांवों में भी भारी वर्षा हो रही है।

"छिः, सारी दुनिया में बारिश है!" घृणा भरे स्वर में मीरासा ने कहा। वह बेंच पर बैठकर अपने हाथ से घुटनों की मालिश कर रहा था। "रात पलक तक नहीं झपकी। सारा घर चू रहा है। कहां जाकर लेटें? बैठने के लिए भी तो जगह नहीं। यह नासपीटी बरसात ...?"

"काहे को कोस रहे हो? बारिश तो अल्लाहताला की देन है। बारिश न हो तो पता चल जाए!" नाव खेनेवाले मम्माली ने मीरासा को झिड़का और बीड़ी का लंबा कश लेकर धुआं छोड़ा।

"मान लिया भई, पर बरसने की भी कोई हद होनी चाहिए! यों बेहिसाब बरसेगा, तो कहां जाएंगे गरीब लोग? गुजारा कैसे करेंगे?" कहते हुए मीरासा वहां से उठा और मरच्चीनी कंद के ठीए की ओर चला।

सारा मरच्चीनी पर मिट्टी, कीचड़ चिपका हुआ था। तिपाई के ऊपर एक पुराने तराजू पर कंद तौला जा रहा था। जर्जर तराजू, पलड़ों में छेद हो गए थे। बारिश की वजह से दाम दुगुना-तिगुना। ऊपर से व्यापारी तंगराजु अपने पैर का अंगूठा बाटवाले पलड़े के ठीक नीचे धरे हुए! मीरासा ने इसे देखा, लेकिन मुंह नहीं खोला। मरच्चीनी खरीदने के लिए औरतों का खासा जमघट लगा था। कंद की एक ही गाड़ी आई है। यों उधेड़बुन में खड़ा रहा तो सारा कंद बिक जाएगा। मीरासा ने मरच्चीनी खरीदा। मिट्टी-कीचड़ से भरे कंद को हाथ में लिए घर की ओर चल दिया। रात जबरन फाका करना पड़ा। पानी की वजह

से अंगीठी जल ही नहीं रही थी। सामने से एक युवा मछुआरिन मरच्चीनी खरीदने के लिए तेजी से भागी आ रही थी।

"क्यों गुड्डी? टोकरी में 'करुवाडु' है क्या?" मीरासा ने सिर पर धरी टो- - -
से टटोली।

"किछु नाहीं सोना भैया!" उसने टोकरी उलटाकर दिखाई।

"मिट्टी ही खा लें लोग—काट काटकर!" बड़बड़ाता हुआ मीरासा आगे बढ़ा। अभी घर में घुसने ही वाला था कि दूर से उनकी मंझली लड़की रुक्किया भागती आई—

"वाप्पा! छोटू को बुखार है। बदन बुरी तरह तप रहा है।"

मीरासा लपककर घर में घुसा। कच्चा फर्श कीचड़ से भरा था। बच्चों के लिए लाई मरच्चीनी नीचे पटक दी। देखा, उत्तरी दरवाजे की चौखट से लगी सलमा बैठी हुई है। बीमार छोटू उसकी गोद में है।

"मेरे बच्चे को क्या हो गया छोटू की मां?"

"देखो, एकाएक बुखार चढ़ गया।"

"अदरख पीसकर दिया?"

"घर में अदरक नहीं था। अभी वैद्य जी को दिखाना होगा। देखो, कैसे कराह रहा है।"

मीरासा ने सलमा का जर्द चेहरा देखा। झुककर बच्चे के माथे पर हथेली रखी। तवे की तरह जल रहा था। फिर बगल में हाथ रखकर देखा। बुखार बहुत तेज है। अब देर नहीं करनी चाहिए।

मीरासा ने झुककर आवाज दी, "बेटे, मेरे लाल!"

छोटू आंखें नहीं खोल रहा था।

"एक शीशी निकालो।"

मीरासा ने बच्चे को कंधे पर लिटा लिया। अंगोछा लेकर सिर ढंक दिया। धूप से बचाने के लिए छतरी भी ले ली। हाथ में दवाई की शीशी। घर से निकला। काफी दूर चलना होगा वैद्यजी के यहां पहुंचने के लिए। श्मशानवाली नदी और टेढ़े आम के आगे जाल सुखानेवाला रेतीला टीला है। उसके आगे जाने पर उण्डबिट्टान की चट्टान आएगी। उस पर चढ़कर उतरो तो आगे थोड़ी दूर पर वैद्यजी का मकान मिलेगा।

क्या वैद्यजी घर पर मिलेंगे?

मीरासा की चाल तेज हो गई। बीच-बीच में छोटू के मुंह को गौर से देखा। उसकी गर्म सांस मीरासा के कंधे को रगड़ते हुए पीछे जा रही थी। लगातार गर्म सांस से उसे लगा, जैसे कंधे पर फफोला पड़ जाएगा। बुखार की तेजी से छोटू रह-रहकर कराहता। जिगर के टुकड़े की आह सुनकर मीरासा के दिल की दीवारें फटकर चूर होने लगीं। बड़ी मुश्किल

से अपने को संभाले वह भागा चला जा रहा था, ताकि जल्दी से जल्दी वैद्य को दिखा सके।

खुशकिस्मती से चेल्लप्पन वैद्य घर पर मिल गए।

"मीरासा, तुम्हारे बच्चे को क्या हुआ?"

"बुखार चढ़ा है वैद्य जी!"

वैद्य ने बच्चे की नब्ज को परखा। उसकी मुंदी हुई पलकों को खोलकर देखा। उसके पेट को दबाकर जांच की।

"टट्टी हुई?"

"पता नहीं जी!"

"बुखार कब से है?"

"आज ही शुरू हुआ है। कल तो यह एकदम चंगा था, चुस्त दुरुस्त।"

चेल्लप्पन वैद्य के सहज स्वच्छ चेहरे पर अब उलझन की बदलियां नजर आईं। मीरासा ने देखा, उस चेहरे पर संशय के काले धागे जाल-सा बुन रहे हैं। वे कुछ कहना चाहते हैं, पर कोई हिचक उन्हें रोक रही है। वैद्यजी ने दुबारा नाड़ी का परीक्षण किया। फिर मीरासा के चेहरे को गौर से देखा। पाया कि उन आंखों में सूखे पेड़ के ठूंठ जैसी इंतजारी है। मीरासा कुछ पूछना चाहता है। जीभ उठती नहीं। गले के भीतर कोई अदृश्य शक्ति जीभ को पीछे खींच रही है। मीरासा ने कुछ ऐसी भावुक नजर से, जो शब्दों से व्यक्त नहीं हो सकती, वैद्यजी को ताका। पलभर के लिए दोनों की आंखें टकराईं और पीछे हट गईं।

"मेरे बेटे को क्या हो गया है वैद्य जी?"

"कुछ नहीं हुआ है मीरासा! कफ बढ़ गया है, बस। दवाई दे रहा हूं। इसे जल्दी घर ले जाओ।"

"वैद्य जी!"

"डर की कोई बात नहीं है।"

वैद्य जी का दिया तेल लेकर मीरासा सीढ़ियां उतरने लगा।

'इसे जल्दी घर ले जाओ!' वैद्यजी ने ऐसा क्यों कहा? मेरे बेटे को क्या हो गया है?

"मेरे सोना बेटे!"

छोटू की गर्म सांस उस समय भी कंधे को रगड़ते हुए पीछे जा रही थी।

मीरासा उण्डबिट्टान की चट्टान पर चढ़ा और इस पार उतरा। जाल सुखानेवाले टीले के नीचे रेत में नमी थी। उस पर मीरासा के कदमों के साफ निशान थे और अब पीछे की ओर सफर कर रहे थे।

"लल्ला को को क्या हुआ मालिक?" श्मशान वाली नदी पर मंजन कर रही एक मछुआरिन ने पूछा।

"बुखार है।"

"मुई बारिश, अच्छे-भले बच्चों को बीमार करने को कहां से आ गई नासपीटी? क्या बताऊं, मेरी नातिन भी बीमार है मालिक! गौरमिन्ट के अस्पताल में ले जाकर आप 'राक्कुटर' को दिखाते। सुई लगाएंगे न?"

"चेल्लप्पन वैद्य को दिखा दिया है।"

"अच्छा किया मालिक! वैदजी बड़े गुनी हैं। दूर-दूर तक नाम है उनका। उनके हाथ में 'पुन्न' है। परहेज रखना है मालिक!"

मीरासा तेज चाल से आगे बढ़ा।

"बेटे, मेरे राजा बेटे!"

कोई जवाब नहीं।

अब गर्म सांस कंधे को चीरती जा रही है। उसे महसूस हुआ, जैसे आग में तपाया कोई पतला तार उसके शरीर के आर-पार जा रहा है।

देखा, आकाश के पश्चिमी छोर पर कालिमा छा रही है। रह-रहकर बिजली की कौंध। बादलों का घोर गर्जन। पानी बरसा तो इस बीमार बच्चे को कहां लिटाऊंगा? घर में पैर धरने को भी सूखी जगह नहीं है। सारा फर्श कीचड़ से भरा हुआ है। घर की देहरी पर सलमा और दूसरे बच्चे चिंता के बुत बने बैठे थे। सलमा आंगन में उतर आई। उसने छोटू को बाहों में भरकर सीने से लगा लिया।

"तीन बार के लिए तेल दिया है। अदरख के रस में घोलकर देना होगा।"

मीरासा ने और कुछ नहीं कहा। सलमा से नजर भी नहीं मिलाई। डबडबाई आंखों को छिपाने के लिए वह कुएं पर चला गया। वैद्यजी की वह बात कानों में गूंज रही थी। दिमाग में गूंज रही थी। आसमान के हर कोने से वही आवाज सुनाई दे रही थी।

मीरासा फफक-फफककर रोया।

मेरे राजा बेटे! अब तू यहां कितनी देर का मेहमान है? चंद पल? मिनट? या घंटे?

"लाल मेरे!" कुएं की जगत पर बैठे मीरासा का दिल दहाड़ उठा। स्वयं को भूलकर आवाज बाहर निकल गई। भागा हुआ घर की ओर गया। लाल के चेहरे को गौर से देखा। आंखें मुंदी हुई थीं। सांस एक लय में चल रही थी। सारा शरीर झुलस रहा था।

मीरासा जो मरच्चीनी लाया था, वह उसी जगह पड़ी थी। भूख ने चूहे के पंजे की तरह पेट को कुरेदा तो बड़े बच्चे मरच्चीनी को कच्चा ही खा गए थे और कुछ छिलके भी इधर-उधर बिखरे पड़े थे। सलमा ने छोटू के माथे को चूम लिया।

"राजा बेटे! तुम्हें क्या हो गया?"

मीरासा काली कॉफी खरीद लाने के लिए एल्यूमिनियम की हांडी लेकर निकला। सरकारी अस्पताल के सामने लोगों की भीड़ थी। अस्पताल के सामनेवाली दुकान के बरामदे पर बैठा मम्मात्तिलु ऊंचे स्वर में 'नगरा गीत' गा रहा था। मम्मात्तिलु का कंठ सुरीला है।

लोगों के अनुरोध पर वह अकसर समंदर के किनारे गाना सुनाता है। लोग उसके चारों ओर बैठकर अपनी जांघ पर ताल देते हुए उसके गीतों का आस्वादन करते हैं। तगरा गीत, 'तबलीक गीत' जो लोगों को सुबह की नमाज के लिए जगाने को गाया जाता है, जिन द्वारा शहजादी को उड़ा लेने का कथा-गीत, 'पदरुप्पडै गीत' वगैरह, वगैरह। समुद्रतट पर कहीं से भी मम्मात्तिलु के गाने की आवाज सुनाई देती तो मीरासा भागकर वहां पहुंच जाता।

दुकान के बरामदे में बैठकर गाते हुए मम्मात्तिलु ने देखा, मीरासा तेज कदमों से कहीं जा रहा है। मीरासा को क्या हो गया! इस ओर मुड़कर देखा तक नहीं। मम्मात्तिलु बीच में ही उठकर मीरासा के पीछे भागने लगा।

"मीरासा काका! ठहरो तो। क्या बात है?"

"बच्चे की तबीयत ठीक नहीं है।" कहते-कहते मीरासा का गला भर्रा आया।

मम्मात्तिलु बोला, "निगोड़ी बारिश की वजह से मेरा भी घर तालाब बन गया भई! रात में एक मिनट के लिए भी नहीं सोया। सुबह की अजान सुनते ही इधर आ गया, दुकान के बरामदे में लेटकर जरा पीठ सीधी कर ली। कल नारियल के पत्ते चुनने भी नहीं गया।"

मीरासा को इसमें से एक भी शब्द सुनाई नहीं दिया। वह एल्यूमिनियम की हांडी में कॉफी लेकर लौटा। सामने से उसकी छोटी बेटी रुक्किया भागी आ रही थी।

"क्या है बेटी?"

"छोटू..." वह फूट-फूटकर रोने लगी।

मीरासा भागा। उसके पीछे रुक्किया और रुक्किया के पीछे मम्मात्तिलु था।

7

उस दिन जाल में दूर-दूर तक एक भी मछली नहीं फंसी। समंदर में मछली नहीं मिली, इसलिए शाम को लगनेवाली हाट में भी मछली नहीं आई। मछली न मिलने से गांववालों को चिंता हुई। दोपहर के खाने में मछली-करी नहीं रही, इसलिए किसी को स्वाद नहीं आया। खाने में मछली की गंध इनके लिए जरूरी है।

आनैविलुंगी ओसा, मम्मात्तिलु, मीरान पिल्लै... और भी कई लोग 'कट्टुमरम्'[1] पर

1. पेड़ के लंबे-लंबे तने मिलाकर रस्सी से बांधते हैं और बेड़ा बनाते हैं। कट्टुमरम् पर सवार होकर मछुआरे मछ..ी पकड़ने जाते हैं। (मरम् - लकड़ी; कट्टु - बांधना)

आनेवाली मछली खरीदने के लिए हाट में पहुंच गए। सूरज अभी डूबा नहीं था। मम्मात्तिलु ने अपनी बेल्ट में खोंसा हुआ छह नंबर का चाकू निकाला और पांव के नाखून काटने में मशगूल हो गया। आनैविलुंगी एक दुकान की पटरी से पीठ लगाए बैठा था। पटरी से पीठ रगड़-रगड़कर खुजली मिटा रहा था। मीरान पिल्लै जहां बैठे थे, वहीं नीचे एक बुझी हुई तीली पड़ी हुई थी, जिससे वे जमीन पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींच रहे थे। इन सभी की नजरें रह-रहकर दक्खिन की ओर उठ जातीं।

उन दिनों पुदुक्कडै 'जयश्री' थिएटर में आर्यमाला फिल्म लगी थी। मैटनी शो के लिए बस के इंतजार में खड़ा था मरिय अंतोणी। मम्मात्तिलु ने अंतोणी से पूछा–

"कुम्बारी![1] कट्टुमरम् में कुछ मिला?"

"हां... छोटे घाट पर कट्टुमरम् में 'कोलुवा'[2] मिला है।"

कोलुवा का नाम सुनते ही आनैविलुंगी के मुंह में पानी भर आया। पटरी से पीठ हटा ली।

लाल मिर्च के मसाले में बनी कोलुवा मछली की करी मरच्चीनी के साथ मिल जाए तो इत्ता सारा खा सकते हैं–गले तक। मुंह में भर आए पानी को उसने निगल लिया।

बरामदे से आनैविलुंगी नीचे उतर आया। मीरान पिल्लै अब भी जमीन पर लकीरें खींचते हुए बैठे थे। वे किसी सोच-विचार में डूबे हुए थे। आनैविलुंगी पास पहुंचा। सिर खुजलाते हुए बोला–

"मालिक! देखिए तो, कमीज की जेब में कुछ पड़ा है? बच्चों के लिए 'दो चक्रम' की मछली खरीद लूं। मछली खाए दस दिन हो गए।" मीरान पिल्लै ने सिर उठाकर देखा।

आनैविलुंगी का मुंड़ा सिर, पतला अधरोष्ठ घनी मूंछों में छिपा है, काले पड़े निचले ओठ पर नकली मुस्कान–काले कनखजूरे की तरह टेढ़ी-मेढ़ी। बाएं हाथ में हजामत की पेटी। सिर खुजलाने के लिए उठा हुआ हाथ और बगल से बहते पसीने का पनाला!

मीरान पिल्लै की नजर इस घिनौने दृश्य को सहन नहीं कर सकी। उन्होंने मुंह दूसरी ओर मोड़ लिया। कंधे पर पड़े अंगोछे से अपनी नाक बंद कर ली।

"कहा न, कुछ नहीं है। जब देखो यही रोना। कभी तो शरम करो।"

"चेण्डपल्ली की कसम, आत्तुपल्ली मसजिद की कसम, कल दिनभर और रात में भी कुछ नहीं खाया।"

"तो मैं क्या करूं? मेरे पास कुछ भी नहीं है।" मीरान पिल्लै खीझ उठे थे। आनैविलुंगी को उन्होंने घूरकर देखा।

"रहने दो मालिक, कुछ भी नहीं है तो छोड़ दो। क्या होगा? आज भी फाका रहेगा,

---

1. अरे यार!
2. मछली की एक किस्म।

बस!"

आनैविलुंगी पीठ के नीचे आसनवाले भाग को खुजलाने लगा।

सूरज वलियपल्ली मसजिद की ओर ढलने लगा। दक्खिन से कोई मछुआरिन आती नजर नहीं आई। हाट का समय हो रहा था। नाडात्ती[1] औरतें चटाई बिछाकर सब्जियां सजाने लगीं। अभी-अभी छीले नारियलों को डोरी में लटकाए नाडार[2] भी आने लगे। कुछ औरतें आम के पत्ते पर चिपकाई इमली हाथों में लिए हाट में खड़ी थीं। वातावरण में गरमागरम करुप्पट्टी[3] की भीनी सुगंध फैल रही थी। एक परत्ती[4] चूने की टोकरी उतारकर एक जगह बैठ गई। जब वह पैर पसारकर बैठी तो उसकी रंगीन लुंगी घुटने छिपानेभर को ही थी। कानों में षट्कोण के आकार का भारी-सा 'पाम्बड़म्'[5] लटक रहा था। सभी की आंखें दक्खिन की ओर थीं, सभी को मछली की लालसा थी। एकाएक उत्तर दिशा से गाड़ी की भोंपू-ध्वनि! बस का शोर। मैटनी शो देखने के लिए पुदुक्कड़े जानेवालों की भीड़। धक्का-मुक्की करते हुए बस में चढ़ना होगा। सबने लुंगी को दुहराकर घुटनों के ऊपर बांध लिया। धुली हुई कमीज पहने लोगों ने कमीज उतारकर हाथों में ले ली। इसलिए कि बिना कमीज पहने यात्रा करनेवालों की देह का पसीना और गंदगी कमीज पर न चिपक जाए।

उत्तर से आई बस से 'पोप्... पो... पोप्" की आवाज। फिर वह पूरब की ओर मुड़ी। उसी समय 'पु...र् र् र्' का चीखता सा स्वर। फिर वह मोटर दक्खिन ओर पीठ किए खड़ी हो गई। तब एक और 'कु... र् र् र्।'

"देखो तो, यह कैसी आवाज है! मैंने सोचा था ऐसी आवाज तो इंसान ही निकाल सकता है। मोटर को भी यह बीमारी है क्या?" एक मछुआरे ने मजाक में यह टिप्पणी की। यह गंदा मजाक सुनकर कुछ लोग हंस पड़े। औरतें शरमा गईं। लोग धक्का-मुक्की की तैयारी करने लगे। कुछेक ने अपनी हथेली पर थूक लिया और दोनों हथेलियों से उसे रगड़ लिया। माना जाता है कि इससे बस के डंडे को कसकर पकड़ सकते हैं।

'मरण विलासम मोटर सर्विस' से लोग जल्दी-जल्दी उतरे। इसी बस से मम्मदु हाजी उस दिन पहली बार उस बस्ती में उतरे। लंबे खिचड़ी बाल। कंधे पर लटकते हुए। सिर पर लाल टोपी। गंदा लिबास। बगल में एक गठरी। जरा-सा कूबड़ है पीठ पर। यह बुढ़ापे का कूबड़ नहीं है। छोटे कद के हैं। हाथ में चांदी की मूठवाली एक छड़ी। टेककर चलने

---

1. नाडार जाति की स्त्री, जो ज्यादातर सब्जियां बेचती है।
2. नाडात्ती का पुल्लिंग। नारियल के पेड़ों पर चढ़कर नारियल तोड़ने का धंधा करते हैं।
3. ताड़ का गुड़।
4. 'परव' जाति की स्त्री। चूना बनाकर बेचना इनका धंधा है।
5. बड़ा-सा कर्णफूल जिसके वजन से कानों का छेद बड़ा होता जाता है।

के लिए नहीं। उस तिराहे पर उतरकर ममदाजी[1] जरा संशय के साथ खड़े रहे। नई जगह! पता नहीं चल रहा था कि किस ओर चलें। चारों ओर नजर दौड़ाई।

उस परदेशी पर पहले-पहल आनैविलुंगी की नजर पड़ी। सोचा, 'क्या इस आदमी के गांव में कोई ओसा[2] नहीं है?' फिर सीधे उनके पास पहुंच गया।

"किस गांव के हो?"

परदेशी ने आनैविलुंगी को देखा।

"किस गांव के हो?" उसने दुबारा पूछा

"कांजिरपल्ली।"

"अच्छा, उत्तर के हो? मलयाली?"

परदेसी ने सहमति में सिर हिलाया।

"सिर मुंड़वाना है?"

इस पर उन्होंने आनैविलुंगी को ऊपर से नीचे तक देखा।

"हमारी बस्ती में बाल नहीं रखते।"

"ये सुन्नत के बाल हैं भई!"

"इस मोहल्ले के कानून के मुताबिक बाल बढ़ाना मना है।"

"ऐसी बात है?"

"लंबे बालोंवाला कोई परदेशी यदि आए तो उसे पकड़कर जबरन सिर मुंड़वा देते हैं। यही फरमान है मुहल्ला समिति का।"

"ऐसा?"

"देखो, मेरे पास जर्मनी उस्तरा है। काम बढ़िया होगा। दो पैसे मिलेंगे। बच्चों के लिए मरच्चीनी खरीद लूंगा।"

"मस्जिद किस तरफ है?"

"इधर से जाना होगा..." उसने दक्खिन की ओर संकेत किया। ममदाजी उसी तरफ बढ़े।

"सुनिए... सिर नहीं मुंड़वाना है?"

"नहीं!" उन्होंने हाथ के इशारे से कहा और फिर रुके नहीं। सीधे आगे बढ़ गए।

"बड़ा मनहूस निकला! एक भी पैसा दिए बिना निकल गया!" आनैविलुंगी मायूसी में खड़ा रहा। ममदाजी कूबड़ की वजह से झुकते हुए झुके-झुके चले। मिट्टी-कंकड़ भरा रास्ता, बगैर कोलतार का। चमड़े की चप्पल हर कदम पर एंड़ी से टकराकर आवाज करती। छोटा पुल पार किया। आगे सुनार की दुकान थी। बरामदे में रोज की तरह लोगों का जमावड़ा।

---

1. मुहम्मद हाजी का अपभ्रंश।

2. हज्जाम, नाई।

सबने ममदाजी को गौर से देखा।

"कौन-सा गांव है?" बरामदे में बैठे पल्लि मम्मनु ने कड़ककर पूछा।

ममदाजी ने रुककर जवाब दिया, "कांजिरपल्ली।"

सबकी नजर ममदाजी के लंबे बालों पर केंद्रित हुई।

"सुनिए... सिर पर क्या है?"

"टोपी।"

"टोपी के नीचे क्या है?"

"बाल!"

"इस बस्ती में कोई भी मुसलमान बाल बढ़ाए नहीं घूम सकता, समझे?"

ममदाजी कुछ नहीं बोले, चुपचाप खड़े ताकते रहे।

पल्ली मम्मनु ने अपने सिर पर बंधा हुआ लाल कपड़ा खोला, "सिर ऐसा होना चाहिए।" उसने अपना सिर दिखाया, जो सफाचट था।

"दीन-उल-इस्लाम की निशानी है सफाचट सिर, समझे? बाल बढ़ाकर घूमना तुम्हारी कांजिरपल्ली में चलेगा, यहां नहीं, हां!"

ममदाजी ने कोई जवाब नहीं दिया। कोई जवाब था भी नहीं। नए लोग, नई जगह। अभी-अभी आए हैं। सुना था कि यहां के मुसलमान बहुत दीनपरस्त हैं। अजनबी लोगों से बहस क्यों की जाए?

ममदाजी पल्लि मम्मनु को देखकर मुस्कुराए। उस मुस्कान में एक अजीब आकर्षण था, सामनेवाले व्यक्ति को बांध लेनेवाला। उनकी निगाह में मुहब्बत भरी थी। मम्मदाजी की मधुर हंसी और प्यार भरी निगाह ने पल्लि मम्मनु के जोश और जुनून को लगाम लगा दी। मम्मनु ने अपने सिर पर फिर से लाल कपड़ा बांध लिया और बाहों में घुटने बांधकर चुपचाप बरामदे में जा बैठा।

"मस्जिद दूर है?"

"यहीं पास में है।" मम्मनु ने रास्ता बताया। ममदाजी आगे बढ़े। दाईं ओर गली में मुड़े। सामने वलियपल्ली (बड़ी मस्जिद) अजान का मंच और नगाड़ा सब कुछ दिखाई दिया। रास्ते-भर लोग ममदाजी को घूर-घूरकर देखते रहे। औरतों ने दांतों तले उंगली दबा ली। रास्ते में जो भी मर्द मिला, ममदाजी ने उसी से कहा, 'अस्सलाम आलेकुम'। लेकिन लोगों के जवाब में कोई जोश नहीं था। सबकी निगाहें टिकी थीं ममदाजी के सिर पर। उनके ओठों पर मुस्कान खिल उठी।

मस्जिद के बाहर वह काला पत्थर पड़ा हुआ था, जिसकी शोहरत दूर-दूर तक फैली हुई थी। ममदाजी ने उस पर अपनी पोटली रख दी। पास में चांदी की मूठवाली छड़ी भी रखी। सिर से टोपी उतारी और पत्थर पर बैठ गए। थोड़ी ठंडक महसूस हुई। शरीर से

पसीना छूट रहा था, इसलिए कुरता उतार दिया। बनियाइन के अंदर फूंक मारने लगे।

"कौनो गांव?" कड़कदार आवाज सुनी तो ममदाजी ने कांपते हुए घूमकर देखा। मस्जिद के अंदर से मोदीनार चला आ रहा था।

"कांजिरपल्ली।"

"तंगल हैं या मोयलियार?"[1]

"मामूली आदमी। मुसाफिर हूं।"

"सिर पर क्या है?" मोदीनार ने थानेदार की तरह जिरह शुरू की। हाजी ने सिर पर हाथ फेर लिया। प्रश्न की गंभीरता समझ में आ रही थी।

"ये सुन्नत के बाल हैं।"

"यहां पर किसी भी तरह के बाल रखना मना है।"

"ये इस्लाम में मंजूर किए गए बाल हैं। सुन्नत के बाल।"

"सुन्नत-वुन्नत हम कुछ नहीं जानते। इस मुहल्ले में मुसलमानों के सिर सफाचट रहते हैं।"

हाजी ने सिर झुका लिया। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दिया जाए। बड़े अदब के साथ मोदीनार को देखा।

"यह इज्जतदार तंगल और मोयलियारों की बस्ती है। यह बेहूदगी अपने पांगा में चलाओ, यहां नहीं। अगर यहां रहना चाहते हो तो कल सुबह पहला काम यही करोगे कि अपने बाल मुंड़वा दोगे और 'वलियार' नदी में जाकर नहाओगे। वरना पहली बस से अपना रास्ता नाप लोगे। आई बात समझ में? सारे के सारे मुदलाली अभी असर की नमाज के लिए आनेवाले हैं। उनके सामने अपना यह सिर मत दिखाना। आई बात समझ में?"

ममदाजी हैरान थे। 'कमाल है, यहां के लोग कितने दीनपरस्त हैं!' हाजी को अपने आप पर शर्म आ गई। टोपी को सिर पर औंधा लिया और बालों को टोपी के अंदर छिपाया। जेब से एक बीड़ी निकाली। माचिस निकालकर बीड़ी सुलगाई। धुआं मोदीनार की नाक तक पहुंचा। उनके होंठ फड़के। फड़कन में बीड़ी की तलब थी!

"बीड़ी और है? एक इधर बढ़ाना। हम भी दम मारेंगे..."

हाजी ने एक बीड़ी दी। मोदीनार ने भी धुआं छोड़ा।

"बढ़िया किस्म की है। कौन-सी बीड़ी है?"

"तोषिलाली।"

"आपका नाम?"

"मुहम्मद हसन हाजी।"

---

1. तंगाल और मोयलियार (मुसलियार) मुसलमानों में ऊंचे तबके के माने जाते हैं, जैसे शेख, पठान, सैयद वगैरह।

"सुभान अल्लाह! हाजी हैं आप? और हाजी के सिर पर बाल? बाल रखना हराम है न?"

एक बीड़ी पाने के बाद मोदीनार की आवाज में थोड़ी नरमी आ गई थी।

"नहीं, मैंने वैसे ही बाल रखे हैं जैसे पैगंबर साहब रखते थे, यह हराम नहीं है।"

"मुझे क्या पता कि पैगंबर साहब के बाल कैसे थे? हमारी बस्ती में तो जिसके सिर पर बाल होंगे, उसके घर में शादी और गमी पर कोई नहीं जाएगा। यहां कोई भी बाल नहीं बढ़ाता। जिसने बढ़ाए उसे पकड़कर हमने मुंड़वा दिया। कल सुबह आप भी मुंड़वा लें।"

हाजी खामोश रहे। काले पत्थर पर आसन जमाया और स्थिर होकर बैठ गए। बीड़ी का टोंटा, जो उनके हाथ में था, बुझ गया था। कंधे पर अंगोछा पड़ा था। उसे उठाकर उन्होंने बालों को छिपाते हुए टोपी के ऊपर पगड़ी की तरह बांध लिया। मदरसे के बच्चे हाजी को अचरज से देखने लगे। हाजी मुहब्बत भरी निगाह से उन्हें देखकर मुस्कुराए।

उस रात हाजी मस्जिद में ही सोए। अगली सुबह और मोहल्ले के लोगों के बारे में सोचते हुए रात की पंखुड़ियों को एक-एक कर तोड़ते रहे।

8

बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट के साथ तीन-चार दिन लगातार भारी वर्षा हुई। पहाड़ पर भी भारी वर्षा। पहाड़ी नाले के प्रवाह से कुषित्तुरै नदी में बाढ़ आ गई। दोनों किनारों को काटती हुई नदी उमड़-घुमड़कर बह रही थी। जल-प्रवाह का शोर सुनकर नदी किनारे झोंपड़ियों में रहनेवाले लोग भयभीत हो उठे। सबकी आंखें नदी के मटमैले पानी पर गड़ी थीं। नदी के उस पार से रह-रहकर लालटेन की रोशनी फेंकी जाती और इस पार के लोग चिल्लाकर कहते कि हम जागे हुए हैं, सावधान हैं। इसके उत्तर में उस पारवाले भी चिल्लाते और यही सिलसिला चलता रहता।

शोर-शराबे के साथ पल-पल बढ़नेवाले जल-प्रवाह से दोनों किनारे दम छोड़ने लगे। प्रवाह को रोकने में वे असमर्थ हो रहे थे। उद्वेलित पानी चक्कर काटने लगा। आगे बढ़कर बांध तोड़ने की हिम्मत किसी में नहीं थी। आखिर अपने आप रास्ता बनाती हुई नदी की धारा अरब सागर की ओर लपक उठी। उस उछल-कूद में मृत्यु का आवेग था। नील राशि अरब सागर के तट पर बरसाती पानी की वह धारा थोड़ी दूर तक दिखाई दी और फिर सागर में समा गई।

समंदर उफन रहा था। उसकी उत्तुंग लहरें गुत्थमगुत्था हो रही थीं। कोई भी नाव या कट्टुमरम् पानी में नहीं उतरा। दूर क्षितिज पर, जहां आकाश सागर-जल को चूमता था, धुआं उड़ेलते एक जहाज सरक रहा था। देखने में वह दियासलाई जैसा लग रहा था।

कल जो कट्टुमरम् समंदर में गए थे, उनके इंतजार में लोग किनारे पर खड़े थे। बड़ी प्रतीक्षा के बाद एक कट्टुमरम् नजर आया। तट पर खड़े मछुआरों ने अपने-अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और परमेश्वर से दुआ मांगी, "हे परम पिता! रच्छा करो!"

तट की ओर बढ़ रहा वह कट्टुमरम् उफनते सागर की नाचती लहरों पर डूबने-उतराने लगा और एक भीषण लहर की चपेट में आकर उलट गया! उस पर सवार मछुआरे लहरों से जूझने लगे, पर उनकी पकड़ ढीली नहीं हुई। कट्टुमरम् ऊपर नीचे हो रहा था। एक बार मौके का फायदा उठाकर किसी तरह मछुआरों ने उसे सीधा कर लिया और फिर शोर मचाती एक लहर के सहारे उसे किनारे की ओर खेया। किनारे पर खड़े मछुआरे भागकर आगे आए और कट्टुमरम् को किनारे लगा दिया। दोनों मछुआरे—फ्रांचीस और मिक्केल—थककर जमीन पर बैठ गए। वे बुरी तरह हांफ रहे थे। सीना तेजी से ऊपर-नीचे हो रहा था। नाक और मुंह दोनों से सांस ले रहे थे। लहरों से लड़ते-लड़ते उनकी ताकत जवाब दे चुकी थी। वे कुछ भी कहने की हालत में नहीं थे। ओठ सूख रहे थे। पेट रीढ़ से जा लगा था।

मछली खरीदनेवाले लोग बोली लगाने के लिए भागे आए। टोकरियों और साइकिलों पर लादकर हाट में मछली पहुंचानेवाले भी आ गए। कट्टुमरम् के साथ ताड़ के पत्तों से बुनी टोकरी बंधी थी। सबकी नजरें उसी टोकरी पर थीं। लेकिन टोकरी को खाली देखकर वे लोग तितर-बितर हो गए।

अपना चाकू पीछे की ओर छिपाए मीरासा बड़ी आश लेकर समुद्र तट की ओर आया। दूर से ही उसने कट्टुमरम् को घेरे खड़े लोगों को देखा। देखते ही देखते लोग वहां से हट गए—खाली हाथ। उसे पता चल गया—आगे जाने का कोई मतलब नहीं है। थका-हारा वह नारियल की छाया में खड़ा हो गया। मार्किन के बनियाइन से सीने के बाल बाहर झांक रहे थे। समुद्री हवा के जोर से वे हिलोरें लेने लगे।

बच्चे को गुजरे तीन दिन हो गए थे। तीनों दिन मीरासा काम पर नहीं गया। घर में पूरा फाका था। बच्चे पुराने चिथड़ों की तरह जमीन से लगे हुए थे। कर्ज लेकर बच्चे का शरीर मस्जिद की दाईं ओर मीठे नीम के नीचे मिट्टी को सौंप दिया था। आज तीसरे दिन का फातिहा है। चढ़ावे के लिए कोई मीठी चीज बनवानी है।

मस्जिद से मोदीन को बुलाकर यासीन पढ़वाना है। लब्बे (मौलवी) के लिए भी पैसा चाहिए। तीन दिन से पेट की आग ढोते, भटकते बच्चे आज जमीन पर गिर गए हैं। आज रात कुछ नहीं तो कम से कम उन्हें मरच्चीनी जरूर खिलानी है। नहीं तो भूख का जहरीला

दांत इन नन्हीं जानों को भी डंस लेगा।

समुद्र-तट पर उठते शोर-शराबे से मीरासा को भान हुआ था कि कोई कट्टुमरम् किनारे लगा है। छप्पर पर खोंसा चाकू निकालकर इस ओर भागा आया था। चाकू की धार में जंग लगा था। पत्थर पर रगड़कर उसे पैना कर लिया था।

''ओ-रे, सिरजनहार!'' मीरासा ने लंबी सांस ली, ''सचमुच तुम गरीबों की कड़ी परीक्षा ले रहे हो।''

चाकू उसने जमीन पर फेंक दिया और हताश भाव से समुद्र-तट की उजली रेत पर बैठ गया। मन हुआ फफक-फफककर रोया जाए। लेकिन रोना नहीं आया। चुपचाप रो-रोकर आंखें अश्रुहीन हो गई थीं और दिल थक-हार गया था।

बड़े-बड़े गुनाहगारों का गोश्त खाकर तगड़ी हुई मिट्टी मेरे नन्हें का मांस खाकर मोटी नहीं हो गई होगी। पर इस मिट्टी की यह भूख क्या कभी मिटनेवाली है? यही मिट्टी और बहुत-से लोगों को पैदा करेगी—पापियों और दुष्टों को, धोखेबाजों और हत्यारों को। मौत के बाद क्या उनका पाप फातिहा और चढ़ावे से धुल सकेगा? इनका चढ़ावा—घी, चावल और गोश्त—यह सब, रब के पास पहुंच पाएगा ?

नहीं, हरगिज नहीं।

मेरे बच्चे के लिए अब न तीसरे दिन के फातिहे की जरूरत है, न चढ़ावे की। भूख से तड़प रहे, मृत्यु के कगार पर खड़े अपने और बच्चों की देखभाल करूंगा, उनकी रक्षा करूंगा।

मीरासा उठा, चाकू हाथ में ले लिया। दिल रो रहा था। मेरे ही बिंद से पैदा मेरे लाडलों के फाके का आज तीसरा दिन है। काम करनेवाले मेरे चाकू को काम नहीं मिल रहा है। समंदर हमारे साथ ठगी कर रहा है।

चैत आने में अब थोड़े ही दिन बाकी हैं। वह भी धोखा देगा? अब अगर पानी बरसेगा तो छप्पर टपकेगा। दीवारें ढह जाएंगी। जीर्ण-जर्जर तीरे-छप्पर के नीचे कुछ लाशें पड़ी होंगी—भूख द्वारा चबाकर उगली गई लाशें। चींटियां उन्हें तिल-तिल करके खा रही होंगी।

पहले कोलंबो से लौटते हुए मीरासा डेढ़ फुट लंबा, इंग्लैंड में बना चाकू ले आया था। मूठ सींग की बनी थी। उसने जमीन पर पड़े चाकू को दोनों हाथों से उठाया। जब मैं एक दिन भूख से परेशान था तो इसी चाकू ने मुझे मजदूर बनाया था। इसी ने उस दिन मुझे भूख से बचाया। आज मेरे बच्चों को भूख से बचाने की शक्ति इसमें नहीं है। मछली का गोश्त खाकर और उसका रक्त पी-पीकर यह तृप्त हो गया है। लेकिन मेहनत करते-करते मैं नहीं छका। मैं मेहनत करता रहूंगा। तब तक करता रहूंगा, जब तक मेरे बच्चे बड़े नहीं हो जाते—जब तक मेरी बोटी-बोटी सूख नहीं जातीं—जब तक मेरी नसें चिपक नहीं जातीं—जब तक रगों में खून का बहाव बंद नहीं होता—जब तक मेरे हाथों में कंपन नहीं आता नहीं,

हमेशा-हमेशा, आंखों के मुंद जाने तक!

समंदर के किनारे पैदा हुए लोगों के लिए ही रब ने यह समंदर बख्शा है। आज इसी के लिए यहां के लोग अवांछित हो गए हैं। इसने उन्हें सहारा देना छोड़ दिया। समंदर के अलावा किसी और दुनिया से हम परिचित नहीं हैं। इस उजली रेत पर पले हम लोग ऐसे कछुए हैं, जिन्हें बाहरी दुनिया के बारे में कुछ पता नहीं!

मीरासा चाकू को सीधे पकड़कर चलने लगा और राजकीय प्राथमिक पाठशाला के सामनेवाली तंग गली से होकर आगे बढ़ा। पूरी गली में घी-चावल और गोश्त करी की सुगंध भरी हुई थी। नासापुट रूपी फाटक को धकेलते हुए वह खुशबू मीरासा के पेट तक पहुंची और भूख की आग को भड़काने लगी। मीरासा ने सिर पर बंधा अंगोछा खोलकर उसके एक छोर से नाक बंद की, ताकि वह खुशबू उसे तंग न करे।

तभी मीरासा को याद आया, आज 'नालुकट्टु[1] के पवरु पिल्लै का 'कत्तनालू' (मृतात्मा की तृप्ति के लिए पूरी की जानेवाली रस्म) है। अपनी तीनों बीवियों और सारे बच्चों को घर से निकालकर सारी जायदाद को भतीजों के नाम लिखनेवाला परम कंजूस था पवरु पिल्लै। उसे वलियपल्ली मस्जिद के दक्खिन में चहारदीवारी के अंदर मिट्टी में गाड़े आज बीस-पच्चीस रोज हो गए हैं। उस कंजूस के बेटे आज न जाने कहां-कहां मजूरी करके पेट पाल रहे हैं। उसी के 'कत्तम' (धार्मिक रस्म) पर सोलह बछड़े और सौ सेर चावल! पूरे गांव के लिए घी-चावल की दावत! चालीस कत्तम (पवित्र कुरआन का संपूर्ण पारायण) पढ़ने के लिए चालीस लब्बे (मौलवी)!

अपने ही जिस्म की साथी बीवियों को बेसहारा करने और अपने ही खून से पैदा संतानों को अनाथ बनानेवाले गुनहगार के गुनाह को धोकर साफ किया जा रहा है! उसी का पाप आज रसोईघर से उड़ती भाप औ: धुएं में गायब हो रहा है!

मीरासा ने देखा, पवरु पिल्लै के 'नालुकट्टु' घर से जरा हटकर किसी सायेदार जगह में आलथी-पालथी मारे बैठा मम्मात्तिलु 'पट्टु पड़े' गीत गा रहा है और लोग उसे घेरकर खड़े ताली बजा रहे थे। चाकू के साथ आनेवाले मीरासा को देखकर लोग रास्ता छोड़कर खड़े हो गए। मम्मात्तिलु ने गाना रोक दिया।

मीरासा जब आगे निकल गया, मम्मात्तिलु उठकर पीछे-पीछे भागा।

"काका! अब 'वेलप्पम्'[2] शुरू हो जाएगा। जा कहां रहे हैं?" मम्मात्तिलु ने पूछा।

"छिः, चल हट! मैं इसका 'कत्तम्'–भात खाने थोड़े ही आया हूं!"

मीरासा आगे बढ़ा! मम्मात्तिलु पीछे दौड़ा–

"ठहरिए!"

---

1. आंगन के चारों ओर बना हुआ विशाल मकान।

2. भोज।

"क्या बात है?" मीरासा रुक गया।

"चाकू लेकर इतनी तेजी से कहां जा रहे हैं?"

"मेरे सारे बच्चे भूखे हैं।"

"तो क्या हुआ? पवरु पिल्लै का कत्तम्-खाना खाने के लिए सब को इधर ले आइए न?"

" मम्मात्तिलु," मीरासा चीख उठा, "मेरे हाथ में क्या है, देखा? बेकार की बातें करेगा तो तेरा सिर काटकर रख दूंगा! अपने बच्चों को मैंने 'कत्तम-भात' खाने के लिए नहीं पाला है। मैंने उन्हें मेहनत से पाला है। आगे भी मेहनत करूंगा।"

मीरासा तेजी से चला। सीधे घर पहुंचा। बच्चे जमीन पर उसी तरह पड़े हुए थे। उन्हें महसूस हुआ, अभी उसके दिल के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। पर अपनी भावनाओं को जब्त कर लिया। आवाज लगाई, "रुक्किया!"

जमीन पर लेटे-लेटे रुक्किया कराह उठी।

"टोकरी ला दे बेटी, वाप्पा अभी मरच्चीनी ले आता है।"

रुक्किया एक टोकरी लाई।

"पैसे हैं वाप्पा?" उसने पूछा।

"हां, बेटी!"

सुनकर रुक्किया का चेहरा खिल उठा। मीरासा चल पड़ा। हाट में पहुंचा। चाय के दुकानदार की मेज पर इंग्लैंड में बना अपना चाकू रखा।

"आपने एक बार मुझसे चाकू मांगा था। लीजिए, यह चाकू रख लीजिए। मुझे पैसे दे दीजिए।"

"क्या दाम लोगे?"

"इसका दाम पूछ रहे हैं? दाम वही है जो मेरे प्राणों का है, मेरे बच्चों की जान का है। मैं उतनी रकम नहीं मांगूंगा। आप अपनी मर्जी से जो देना चाहें, दीजिए।" दुकानदार ने चाकू उलट-पलटकर देखा, धार पर अंगूठा रखकर परखा।

"मैं अपनी ओर से कुछ नहीं मांगूंगा। ऐसा करूंगा तो अपनी जान का मोल लगाने जैसा हो जाएगा। बच्चों के प्राणों का दाम लगाने जैसा होगा। इसलिए आप जो भी देंगे, मुझे मंजूर होगा।"

"यह पुराना चाकू है। धार घिस गई है। देखो, मूठ भी घिस गई है।"

"ठीक है भई! मेरे पास वक्त नहीं है। बच्चों की जान निकले, उससे पहले कुछ भी दाम दे दो अपनी मर्जी से। मुझे बच्चों के लिए मरच्चीनी खरीदनी है।"

चाय की दुकान के मालिक ने दो रुपए का नोट निकालकर मेज पर रखा। मीरासा कुछ नहीं बोला। नोट हाथ में लेकर मरच्चीनी की दुकान पर गया और कंद लेकर सीधे

घर की राह ली। देखा, घर के दरवाजे पर स्टीफन खड़ा है।

"क्या बात है स्टीफन?"

"कट्टुमरम् में हांगर मछली (शार्क) मिली है। निलामी होनी है। जल्दी आइए।"

मीरासा को लगा, धरती फट गई है और वह नीचे धंसा जा रहा है।

9

जनश्रुति है कि इस्लाम धर्म कबूल करने के बाद चेरमान पेरुमाल[1] ने एक फरमान निकाला। उसके अनुसार मालिक इब्नुद्दीन ने चालीस सफेद हाथियों के काफिले को साथ लेकर रातों-रात पूरे मालावार-तट पर चालीस मस्जिदें बनवाईं। लोक मान्यता है कि इन सभी में सबसे अधिक भव्य और सभी खूबियों से भरपूर यहीं की 'बड़ी मस्जिद' है। रात को सभी लोग सोने चले गए। गांव के चारों ओर अंधेरे के सिवा और कुछ भी नहीं था। लेकिन पौ फटते ही गांव वालों को एक हैरतअंगेज नजारा दिखाई दिया। पश्चिम की ओर, समुद्र के उत्तर में, वलियार नदी के पूरब में मजबूत काले पत्थरों से बनी एक मस्जिद खड़ी है ! इस बड़ी मस्जिद की यह अनलिखी कहानी तभी से, दस-बारह शताब्दियों से, लोगों की मुंह-जुबानी, कानों-कान सफर करते हुए आज तक चली आई है। इसलिए यह मस्जिद पूरे इलाके के लोगों के लिए शान और गौरव की निशानी है।

चेरमान पेरुमाल के राज्य-काल से पहले ही इस पूरे इलाके में मुसलमानों का वजूद था। यहां के नारियल बागानों को सहलाते हुए चलनेवाली हवा ने इस छोटे-से गांव का नाम और शोहरत दूर-दूर तक फैला दी थी। यों भी यह मस्जिद बहुत-से लोगों की जानकारी में आ गई। मालिक इब्नुद्दीन द्वारा सफेद हाथियों से काले पत्थर उठवाकर रातों-रात बनाई गई मस्जिद को देखने के लिए दूर-दूर के गांवों और नगरों से मौलवी और तंगल जन आने लगे। मौलवी-मुल्ला, पीर-दरवेश जो भी आते, गांव के लोग उनकी आवभगत करते और नसीहतें सुनते। प्रवचन की यह परंपरा दस-बारह शताब्दियों से अटूट चलती रही। इसी सिलसिले में वामनपुरम से तशरीफ लाए एक मौलवी ने जुम्मे की नमाज के बाद दीने इस्लाम पर तकरीर की। जोश से भरी, दिल को छू जानेवाली तकरीर।

"ए इस्लाम के नेक बंदो, मेरे भाइयो ! कयामत आने में अब ज्यादा देर नहीं है, क्योंकि उसके आसार अभी से हमारी-आपकी नजरों के सामने दिख रहे हैं। जमाना ऐसा आ गया है कि आज हरेक औरत बिना सिर ढके घूमने की जुर्रत करने लगी है। अरे, मैं पूछता हूं

---

1. केरल का एक प्राचीन राजा।

कि क्या तुम लोग पाक परवरदिगार के हुक्म को भूल गए? अल्लाह ताला का फरमान है, नेक औरतों को चाहिए कि वे अपने चेहरे और हाथों के अगले हिस्से को छोड़कर पूरे बदन को कपड़े से ढकें। जो भी औरत इस हुक्म की तामील नहीं करती, कल महशर[1] में अल्लाह ताला उन्हें सजा देगा, उन्हें धधकती हुई आतिश का लिबास पहनाया जाएगा। काफिरों की तरह बाल बनाकर अकड़ते चलने वाले ऐ नौजवान, तू भूल रहा है! बेकार के गरूर में फूल रहा है ! कल को पछताएगा। सोच के देख। महशर में तेरे एक-एक बाल को अंगार झुलसाएगा। खौफनाक जहरीले सांपों से तेरे एक-एक बाल को रब्ब नुचवाएगा। आज के नौजवान नस्रानियों की जबान[2] पढ़ते हैं। बालों को कटवा लेते हैं, क्या नाम है उसका, 'क्रॉप' कट करवाते हैं। इस्लाम को भूलकर घूमते हैं। दीनपरस्त मुसलमानों के लिए नस्रानियों की इंग्रेजी सीखने की मनाही है। बच्चों के गुनाह के लिए रब्ब उनके मां-बाप को सजा देगा। पैर में पतलून, सिर पर 'क्रॉप कट' और मुंह में नस्रानी जबान के साथ घूमनेवालो ! तुम लोगों को दोजख मिलेगा, दोजख ! अल्लाह तुम लोगों को दोजख में डालेगा, अंगार खाने को मजबूर करेगा !"

वामनपुरम मुसलियार ने गाने की तरह आलाप खींचकर यह तकरीर दी। बीच में जब भी वे भावावेश में आते तो गद्‌गद्‌ हो उठते, रोने-रोने को हो जाते। मुसलियार का गला रुंध जाता तो श्रोताओं की आंखें भी भींग आतीं।

मीरान पिल्लै की आंखें भी तर हुईं। वामनपुरम मुसलियार की तकरीर से लोग बहुत ही प्रभावित हुए। उनके भाषण और अभिनय से लोगों के सामने जन्नत की रौनक और दोजख के खौफनाक नजारे हू-ब-हू खिंच गए।

उस दिन शाम को गांव से निकली 'मरण विलासम बस सर्विस' में मुसलियार को विदा करने के लिए गांव के सारे लोग इकट्ठे हो गए। एक बड़ी रकम उन्हें भेंट की गई। बस चलने लगी, तो लोगों ने नारे बुलंद किए : 'नारा-ए-तकबीर ! अल्लाहो-अकबर!'

उस रात इशा (रात की नमाज) के लिए वलियपल्ली (बड़ी मस्जिद) में लोग काफी तादाद में जमा हुए। नमाज के बाद सरपंच ने कहा, "खानदानी साहबान मेहरबानी करके रुकें, बाकी लोग जा सकते हैं।"

अमीर और मालदार मुसलमान और जमीन की मालगुजारी अदा करनेवाले लोग जो दूसरों के मुकाबले गोरी चमड़ी के थे, ऊंचे तबके के लगते थे, मस्जिद के बड़े हॉल में बैठे रहे। बाकी सब बाहर निकल गए।

सरपंच फरीद पिल्लै ने कहा, "मेरा तो कोई बाल-बच्चा नहीं है, जिसकी वजह से मुझे दोजख में जाना पड़े। आपसे गुजारिश है कि मेरी बात पर मेहरबानी करके गौर फरमाएं।

---

1. परलोक
2. अंग्रेजी भाषा।

हम यह उसूल बना लें कि हमारे गांव में कोई भी आदमी या बच्चा बालों का 'क्रॉप' न कटवाए। कोई भी बच्चा नायर के स्कूल में जाकर न पढ़े। दीन की पढ़ाई ही बहुत है। मुसलियार की बातें आप लोग सुन चुके हैं, उन्हें दोहराने की मैं जरूरत नहीं समझता। अपने बाल-बच्चों को काफिरों जैसा न बनाएं।"

सदर-ए-गांव की बात की सबने ताईद की। किसी ने भी उनकी बात नहीं काटी। अगले जुम्मे की नमाज में नगाड़ा बजाकर मोहल्ला कमेटी का यह फैसला सुनाया गया।

अगले दिन से 'क्रॉप' वाले लोगों ने अपने आप सिर मुंड़वा लिया। आनाकानी करनेवालों को जबरन पकड़कर मुंड़वाया गया। उन्हें पकड़ने और काबू में रखने के लिए चार मुस्टंडे तैनात कर दिए गए थे। रोज तीन बार खाना और मेहनताना उन्हें मुहल्ला कमेटी की ओर से मिलता था। बाल बढ़ाए लोगों के गिरफ्त में आते ही उसी जगह उनका मुंडन करने के लिए आनैविलुंगी पीछे-पीछे चलता था।

जुम्मे की नमाज में नगाड़ा बजाकर जब यह फरमान सुनाया गया तो मीरान पिल्लै ने शर्म से सिर झुका लिया। मोहल्ले-भर में नायर के स्कूल में अंग्रेजी पढ़नेवाला एकमात्र लड़का उन्हीं का है !

मस्जिद में सभी लोगों ने मुड़-मुड़कर मीरान पिल्लै को देखा। चारों ओर से लोगों की नजरें तेज शूलों की तरह दिल में चुभ गई थीं। उन नजरों में धिक्कार भरी नफरत थी, मानो मीरान पिल्लै ने बहुत बड़ा गुनाह किया हो ! सदमे का बोझ उठाए वे अपमान से धरती को गड़े जा रहे थे। उनके कानों में अब भी वामनपुरम मुसलियार की तकरीर गूंज रही थी—'बच्चों के गुनाह के लिए रब उनके मां-बाप को सजा देगा।' पिल्लै ने जुम्मे की नमाज अदा तो की पर उनका मन सजदे में नहीं लगा। पंख फैलाकर वह जाने कहां-कहां उड़ता रहा। वे मानो यंत्रवत् नमाज पढ़ रहे थे। नमाज की आयतों का आखिरी कलाम सुनाई पड़ा, तभी वे चौंके। अपने आपसे पूछा कि पूरी नमाज का उच्चारण किया या नहीं। पर याद नहीं आ रहा था।

वे मस्जिद से बाहर निकले, पर अपने सिर से कपड़ा नहीं हटाया और सब लोगों की नजर बचाकर सिर झुकाए घर की ओर चल पड़े।

घर लौटने के बाद भी उन्होंने किसी से बात नहीं की। मौन की भूलभुलैया में फंस गए। चारपाई पर जा बैठे और खिड़की से बाहर देखने लगे। एक बीड़ी सुलगाई, ताबड़तोड़ कश लगाए और बाहर फेंक दिया। खिड़की के जंग लगे सींखचे चौखट से अलग हो रहे थे। ठेठ दुपहरी की चिलचिलाती धूप में आंगन तप रहा था। हवा में हिलते-डुलते नारियल पत्तों के साये जमीन पर भूतिया नृत्य कर रहे थे।

लोग मुझे क्यों घूर रहे थे? इसलिए न कि मैं नायर के स्कूल में अंग्रेजी सीखनेवाले कासिम का बाप हूं। यही बात हो सकती है। लेकिन इसमें मेरा क्या कसूर है? मैंने

जान-बूझकर तो उसे उस स्कूल में नहीं भेजा। पर इस सचाई को कौन जाने? वह अपनी मर्जी से पढ़ रहा है। उसने खुद जाकर नाम लिखा लिया है। हां, पढ़ने से मैंने उसे नहीं रोका। खामोश रहा कि कोलंबो से जो चिट्ठियां और तार आते हैं, उन्हें पढ़वाने के लिए दूसरों का मुंहताज नहीं रहना पड़ेगा। नायर के स्कूल में पढ़ना अगर 'हराम' हो तो अभी, आज ही उसकी पढ़ाई बंद कर दूंगा।

"क्या बात है? क्यों गुमसुम बैठे हैं? खाना तो खाइए।"

मीरान पिल्लै ने आंख उठाकर अपनी बीवी को देखा और नजरें हटा लीं। फिर गली की ओर देखने लगे।

"क्या सोच रहे हैं? उठिए, खाना खा लीजिए।" बीबी ने फिर कहा। मीरान पिल्लै उठे और खाने पर जा बैठे।

"आप क्यों इस तरह मायूस बैठे हैं? बात क्या है? मुझे नहीं बताएंगे?"

"कुछ नहीं है।"

"फिर गुमसुम क्यों बैठे हैं?"

"जुम्मे के दिन मस्जिद में वामनपुरम मुसलियार ने तकरीर दी थी। उनका कहना है कि अंग्रेजी पढ़ना हराम है और 'क्रॉप' कटवाना भी गुनाह है।"

"बच्चा सिर पर बाल लिए पैदा होता है, वह भी हराम है क्या?" कदीजा ने सवाल उठाया।

मीरान पिल्लै के पास इसका कोई जवाब नहीं था । पर इतना समझ गए कि सवाल में दम है। लेकिन मैं यह सवाल किससे करूं?

"अपने बेटे से कह देना कि कल से वह नायर के स्कूल में न जाए।"

"क्या पढ़ाई करना हराम है?"

"कुरआन पढ़ सकते हैं, अंग्रेजी पढ़ना हराम है।"

"यह पढ़ो, या वह। दोनों पढ़ना ही तो है !"

"गुड्डी, तुम भी अहमक की तरह बात करती हो। अरबी अल्लाह की जबान है। अंग्रेजी नसानी की। मुसलियार ने सोच-समझकर ही तो कहा होगा।"

कदीजा को अभी पता चला कि अरबी अल्लाह की जबान है। हां, यह वह पहले से जानती थी कि यहूदी नसानी पैगम्बर साहब के दुश्मन हैं।

"तब...अंग्रेजी नसानी की जबान है !"

अंग्रेजी पढ़ना किसलिए हराम है, यह बात अब उसकी समझ में आ गई।

कासिम उस दिन स्कूल से लौटा तो घड़ी में पांच बज चुके थे।

मीरान पिल्लै अमूमन दोपहर का खाना खाने के बाद समुद्र-तट पर चले जाते थे। मछली मिले या न मिले, समुद्र से आए कट्टुमरम् और जाल के पास वे बराबर घूमते रहते।

सूरज डूबने तक वहीं रहते। सामने आए मछुआरों से चैत की नेत्तिली फसल के बारे में पूछताछ करते। लेकिन उस दिन वे समुद्र-तट पर नहीं गए।

"इधर आ रे !"

कासिम वाप्पा के पास चला गया।

"आज से तुम नायर के स्कूल में पढ़ने नहीं जाओगे, समझे?"

"वाप्पा !"

"तुम अंग्रेजी पढ़ रहे हो? इसके लिए कौन दोजख में जाएगा, पता है तुझे? मुझे ही जाना पड़ेगा!"

"अंग्रेजी पढ़ने पर दोजख क्यों जाना होगा?"

"हराम है, इसलिए।"

भारत की आजादी के लिए लड़े थे मौलाना मुहम्मद अली। अंग्रेजी सीखने के गुनाह में क्या उन्हें दोजख जाना होगा? बिग दाग-उल और युसुफ अली ने कुरआन का सबसे पहला अंग्रेजी तर्जुमा पेश किया था। क्या उन्हें भी दोजख मिलेगा? कासिम के मन में हजारों सवाल उठे। किसी मुसलियार की गलत-सलत बातें सुनकर वाप्पा ने यह पक्का इरादा किया है। अब मेरी पढ़ाई बंद करके ही मानेंगे। अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी कायम करने पर सर सैयद अहमद खां को 'काफिर' का खिताब मिला ! यूरोपीय तर्ज पर 'क्रॉप' कटवाकर फरटिदार अंग्रेजी बोलने के गुनाह में मुहम्मद अली जिन्ना भी काफिर कहलाए। जुम्मा मस्जिद में आए मुसलियार भी जरूर मजहबी अंधे होंगे। माना कि मौलवियों ने अंग्रेजी की पढ़ाई को किसी खास संदर्भ में हराम करार दिया। लेकिन आज के मौलवी, जो तोते की तरह उसी बात को रटते हैं, यह सोचने की जरूरत नहीं समझते कि किन हालात से मजबूर होकर ऐसी बंदिश लगाई होगी और इसके पीछे उसकी मंशा क्या थी। बस, किसी की बात सुनी, उसे ज्यों का त्यों माना और दूसरों पर थोपने लगे। इन्हीं की सारहीन बातों ने हमारे समाज को शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे फेंक दिया है। यह तो मजहब के नाम पर अज्ञान का प्रचार है। मैं इस अज्ञान के सामने बलि का बकरा नहीं बनूंगा।

"वाप्पा, मैं तो स्कूल जाऊंगा।"

"पाप लगेगा।"

"नहीं वाप्पा ! अब दो ही महीने बाकी हैं...।"

मीरान पिल्लै खामोश खड़े रहे।

कासिम हाथ-मुंह धोकर घर से निकला। उसके मन में चैन नहीं था। जिसके पास सदियों पुरानी दकियानूसी मान्यताएं हैं, क्या यह समुदाय कभी नए जमाने का सूर्योदय देख पाएगा?

श्मशान नदी के किनारेवाली उजली रेत पर कोहनी टेककर लेटे-लेटे कासिम इन्हीं खयालों में डूब गया।

काफी देर के बाद उसे होश आया तो देखा मछुआरिनें हाट से लौट रही हैं। चट्टानों के बीच ताड़-वृक्षों के शीर्ष पर विश्राम कर रही पीली धूप भी छिप गई।

कोहनियों पर चिपकी रेत को झाड़कर कासिम उठा। नदी के पानी में उतरकर हाथ-मुंह धोया और आगे चल पड़ा। कुलत्तुपल्ली मस्जिद के सामने पश्चिम की तरफ लोगों की भीड़ देखी। कासिम तेजी से उसी ओर चला। मुहल्लेवालों द्वारा तैनात चार मुस्टंडे और आनैविलुंगी वहां पर थे। चारों पहलवान किसी को घेरे खड़े थे। बीच में बैठा था परसों ही कोलंबो से लौटा युसुफ। 'क्रॉप' वाले अपने सिर को मुंड़वाने के लिए वह तैयार नहीं था। पहलवान उसकी बात क्यों सुनने लगे ! पकड़कर बिठा दिया। आनैविलुंगी अपना काम कर रहा था।

कासिम ने दांत पीस लिए। दाएं हाथ की मुट्ठी को बाएं हाथ की मुट्ठी पर मारा। मन-ही-मन चीखा—'अरे कुत्ते ! जन्नत के लिए रास्ता ठीक कर रहे हो ?'

भीड़ को देखकर वह चिल्लाया, "कल मालिक लोगों की बेटियों से शादी करने के लिए नौजवान आएंगे, पहले उनका सिर मुंड़वाओ। फिर निकाह पढ़वाओ।"

"कौन है रे, जो मालिकों के बारे में बोल रहा है?"

"यह मैं हूं, मीरान पिल्लै का बेटा कासिम। अपने मालिकों से जाकर कहो।"

10

सोने के जेवर गिरवी रखने के लिए सुबह-सुबह ही पुदुक्काड गए मीरान पिल्लै देर रात तक नहीं लौटे। मस्जिद से 'इशा' की नमाज की अजान सुनाई पड़ी। नमाज अदा हुई, फिर 'रातीब' भी पूरा हो गया। सारे गांव में सन्नाटा छा गया। यहां तक कि हवा का चलना भी बंद हो गया। घरों से छिटककर गली में पड़नेवाली धुंधली रोशनियां भी बुझ गईं। गली-कूचों में अंधेरा छा गया और समूचा गांव उसकी कोख में समा गया। कदीजा अपने पति के इंतजार में उदास बैठी थी। घर में किसी ने रात को खाना नहीं खाया था। कदीजा खामोश थी। उम्मा की खामोशी का कारण राहिला की समझ में आया। खिड़की खुली थी और कदीजा की आंखें पिशाच-नृत्य करनेवाले अंधकार पर गड़ी हुई थीं। राहिला भी खिड़की के रास्ते गली को घूर रही थी। मीरान पिल्लै चाहे कहीं भी चले जाएं, 'इशा' (रात की नमाज) से पहले घर वापस आ जाते थे। आज इतनी देर क्यों हो रही है? मां-बेटे इसी

उधेड़बुन में थे।

कासिम भी अभी तक नहीं लौटा है। इन दिनों वह रात में बड़ी देर से घर आता है। वह कहां जा रहा है, किसलिए जा रहा है, कुछ पता नहीं चलता। इस बारे में वह किसी से खुलकर बात भी नहीं करता। घर में घुसते ही कोई किताब लेकर पढ़ने बैठ जाता है। सबके सोने के बाद भी वह पढ़ता रहता है। कब सोता है, यह भी मालूम नहीं होता। आजकल उसकी चाल-ढाल और बात करने के तरीके में बदलाव तो साफ नजर आता है। पर इस बदलाव के माने हैं, यह ताड़ने की समझ किसी में नहीं है।

"ओ गुड्डी !" मीरान पिल्लै ने आवाज दी।

कदीजा मीरान पिल्लै के सामने आई। उन्होंने अपनी घरवाली को एड़ी से चोटी तक देखा। कदीजा के होंठों पर भोली-भाली हंसी फैली थी। उस गोरी देह पर कोई गहना शेष नहीं था। हाथों, कानों और कमर में जितने जेवर-गहने थे, उन्हें जब-तब रेहन रख दिया गया था और उनमें से किसी को भी अभी तक छुड़ा नहीं पाए। इनमें से कुछ लेवादेवी वाले के पास मोल में चले गए। वजह यही कि वे उन्हें छुड़ाने को रुपए नहीं जुटा पाए। कारोबार में जब-तब होनेवाले नुकसान मीरान पिल्लै की कमर तोड़े जा रहे थे।

"किसलिए बुलाया?"

उन्होंने बीवी के गले को बड़ी हसरत से देखा। तीस साल पहले, गैस लैम्प की भरी रोशनी में, बहुत-सी चहचहाती हुई लड़कियों के बीच, जिनकी आंखें आनंद और उल्लास से विस्फारित थीं, लाज से झुकी बैठी थी कदीजा। उसकी गर्दन से जरीदार चुन्नी हटाकर उन्होंने सुहागी माला पहनाई थी। वही माला आज ज्यादा चमकदार दिखाई दे रही थी, बिल्कुल शादी वाली रात की तरह !

"कैजा !" (कदीजा !)

"कहिए !"

"सुन रही हो? कोई रास्ता नहीं सूझ रहा। सब लोग कहते हैं कि इस बार चित्तिरप्पाडु अच्छा रहेगा। हाथ एकदम तंग है। तुम..."

उन्होंने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। लेकिन अधूरे वाक्य को वे कैसे पूरा करनेवाले हैं, कदीजा ने इसका अंदाजा लगा लिया। उसने माला पर अपना हाथ रखा।

"यही चाहते हैं न?" थरथराती आवाज में कदीजा ने पूछा। मीरान पिल्लै ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। उनका हृदय अपराध-बोध से दबा जा रहा था।

कदीजा की आंखें डबडबा आईं, बरसी नहीं।

"इसे भी उतारकर दे दूं तो कल बिटिया के लिए...?"

इस सवाल से मीरान पिल्लै की आंखों में अंधकार की लहरें उठीं। यौवन के पर्वतशिखर पर खड़ी राहिला अब उनके सामने प्रश्न-चिह्न जैसी दिखाई देने लगी। उसके बारे में सोचते

हुए हृदय में न जाने कहां-कहां से तीखी कीलें आकर धंसने लगीं। मीरान पिल्लै ने सिर झुका लिया और खिड़की के पास पड़ी चारपाई पर आकर बैठ गए।

खिड़की पर एक नन्हीं चिड़िया आकर बैठ गई, पूंछवाली चिड़िया। पहले जी भरकर उल्लास से चहचहाई, फिर कहीं उड़ गई। उसके उल्लास ने उन्हें सोचने के लिए विवश किया। इतने लंबे समय से मैंने जो मेहनत की, उसका मतलब क्या हुआ? क्या मैं चैन से जीवन जी सका? जान लिए भटकता रहा, बस। भटकन को छोड़कर जिंदगी में मैंने क्या पाया? बच्चों के लिए क्या कर सका? जो कुछ हाथ में था, उसे एक-एक करके खोने के अलावा कुछ नहीं पाया। पिता की हैसियत से उनको मैंने क्या दिया? महज खाना-कपड़ा देने से ही क्या बाप का फर्ज पूरा हो जाएगा? इनके आगे भी तो कुछ फर्ज होते हैं। एक वर्ग के लोग खून-पसीना बहाकर तिल-तिलकर मर रहे हैं, जबकि चंद लोग मालामाल हो रहे हैं। दूसरों की भूख, उनके पसीने पर वे लोग अपना महल खड़ा कर रहे हैं। गरीबों की बरबादी की नींव पर अमीरों का एक तबका उठ रहा है और मेहनतकश वर्ग को नफरत से देख रहा है। उसको अपने पैरों तले कुचल रहा है। मैं इस वक्त उसी दर्द से गुजर रहा हूं।

मीरान पिल्लै की चुप्पी की गहराई में, उनके दिल के समुंदर में उठती लहरों की आवाज उनकी बीवी ने सुनी। उसकी नीरव धड़कनों को महसूस किया। अभावों से भरी जिंदगी के बावजूद जूही के फूल की तरह हंसते-मुस्कुराते बिताए तीस साल की स्मृतियां मन में घुमड़ने लगीं। उन यादों के आईने में झलकी पति की हार्दिक निश्छलता के आगे कदीजा हार गई और जैसे अपराध-बोध से भरी पति के पास आकर खड़ी हो गई। फिर उसने धीरे से अपनी गर्दन उनके सामने झुकाई, "आपने ही सुहाग की यह माला पहनाई थी, अपने ही हाथों उतार लीजिए।"

"नहीं...इस एक चीज को राहिला के लिए ही रहने दो।"

"रब और देगा। मैं कहती हूं, आप इसे उतार ले जाइए और रेहन रखिए।"

"नहीं !" उन्होंने रोका।

"तब मैं ही उतारकर देती हूं।" और कदीजा ने अपनी गरदन से सुहाग की माला उतारकर पति के हाथों में रख दी। कांपते हुए हाथों ने जैसे मशीन की तरह, उसे संभाला। थोड़ी देर तक मीरान पिल्लै की मौन, मूक दृष्टि शून्य में गड़ी रही।

उसी सुहाग-माला को लेकर वे पुदुक्कड़ै गए हैं। धूप जब धीमी हो रही थी, उस वक्त चले थे। चलते समय इस बात की एहतियात बरती कि गांव में कोई भी यह न भांप ले कि वे कहीं बाहर जा रहे हैं। हाथ में छतरी नहीं ली। कंधे पर सिर्फ एक अंगोछा डालकर निकले थे। बस स्टैंड से वे गाड़ी में भी सवार नहीं हुए, क्योंकि रास्ते-भर सामने आनेवालों की पूछताछ को झेलना पड़ता, 'कहां जा रहे हैं?'

ऐसे में झूठ बोलने की मजबूरी होगी। अगर वे पुदुक्कडै का नाम लेंगे तो लोग भांप जाएंगे कि कोई गहना रेहन रखने जा रहे हैं। इससे बचने के लिए वे बस स्टैंड से उत्तर दिशा में जानेवाली सड़क पर चल पड़े और धुआं उड़ाती आ रही मरण विलासम मोटर सर्विस को हाथ दिखाकर रोका।

फिर गाड़ी में सवार हो गए।

उन्होंने देखा कि सड़क-किनारेवाले घर, पेड़ और मनुष्य दक्षिण की ओर भाग रहे हैं। मीरान पिल्लै को आश्चर्य-सा हुआ। बाद में पता चला, असल में दौड़नेवाली चीजें पेड़-पौधे और घर नहीं हैं ! अपने अज्ञान पर शर्मिंदा होकर वे सिर खुजलाने लगे।

अंटी से जेवर निकालकर चेट्टियार के हाथ में देते हुए उनके हाथ कांप रहे थे।

"अरे, हाथ क्यों कांप रहे हैं?" चेट्टियार ने पूछा।

होंठ सूख गए थे, इसलिए मीरान पिल्लै ने कोई जवाब नहीं दिया।

"चैत आने से पहले ही आपके गांव में ढेरों गहने आ गए !" चेट्टियार ने बातचीत शुरू की।

"मैंने यह जो रेहन रखा है, किसी से कहिएगा नहीं। यह मेरी बीवी की सुहागी माला है।"

"सच? आपकी बीवी की?" चेट्टियार के माथे पर शिकन पड़ी।

"और कोई बात नहीं है।"

चेट्टियार द्वारा बढ़ाए गए सौ-सौ रुपयों के नोट हाथ में लेकर उन्होंने अंटी में बांध लिए। कमर पर बंधी काली डोरी को ऊपर करके लुंगी के ऊपर कस लिया, ताकि लुंगी न खिसके। वहां से निकलते हुए उन्हें रात हो गई थी।

खपरैल की छतवाले दफ्तर के सामने आकर वे बस का इंतजार करने लगे। जो बस उत्तर की ओर गई थी, देर तक वापस नहीं आई। केवल वही बस थी जो उस गांव को बाहर की दुनिया से जोड़नेवाली कड़ी थी।

मालिक इब्नुद्दीन की बनाई मसजिद के पास से बस निकलती तो नौ महीने की गाभिन भैंस की तरह उसकी सांस फूल जाती।..सू..सू करके सरकती। धुआं उगलती, रेंगती रास्ते में पानी देखते ही रुक जाती। रेडियेटर का पेट भरने के बाद फिर निकल पड़ती और पुदुक्कडै की हाट के सामने आकर आसमान से गिरे मेढक की तरह पसर जाती। तब उसकी सारी पेशियां थकान से चूर-चूर हो चुकी होतीं। फिर कभी धक्का खाकर और कभी बिना धक्के के निकलती हुई वह बस तोडुवट्टी पहुंचने पर वापस घूमकर खड़ी होती। उस समय वहां का सारा वातावरण काले धुएं से भर जाता। तोडुवट्टी के बाशिंदों और तोडुवट्टी हाट में आने-जानेवाले लोगों ने ही उसे यह प्यारा-सा नाम दिया है—'मरण विलासम मोटर सर्विस'! पुदुक्कडै की जनता और मछली ढोनेवालों का दिया गया लाडला नाम है, 'मिट्टी का कनस्तर'।

खड़े-खड़े मीरान पिल्लै के पांव थक गए। देर बहुत हो गई। दुकानें बंद होने लगीं, तभी उन्हें महसूस हुआ कि काफी रात हो गई है। उस ओर से आता कोई साइकिल-सवार यही कहता हुआ निकल गया, "मिट्टी का कनस्तर अंचुकण्णु की पुलिया पर लंगड़ा हुआ पड़ा है।" यह सुनकर मीरान पिल्लै कांप उठे। तब तो इस अंधेरी रात में तीन मील पैदल चलना होगा !

अंटी में पैसा लिए रात के अंधेरे में अकेले राह चलना खतरे से खाली नहीं। ऊबड़-खाबड़ पथरीला रास्ता। सूना है, अनंतमंगलम के पास बरगद के पेड़ों पर भूत-प्रेत रहते हैं। गांव और बस्ती में दहशत फैलाता 'नाक्कन' भूत ! लाल-लाल आंखें और भारी गलमूछें। मीरान पिल्लै के मन की आंखों के सामने घर में उनकी बाट जोहती पत्नी और बच्चे। बंधन तोड़कर चारों दिशाओं पर भागते मन पर उन्होंने अंकुश लगाया।

सड़क किनारे की मामूली दुकान से उन्होंने एक 'चूट्टुकट्टु'[1] खरीदा जो नारियल के 'कोदुम्बु'[2] के लंबे टुकड़ों से बना था। तीन मील पैदल चलने के लिए एक 'चूट्टुकट्टु' काफी नहीं होता। इसलिए चार मोमबत्तियां भी खरीद लीं और एक 'चिरट्टै'[3] भी लिया। फिर उन्हें अंगोछे के छोर में बांध लिया और दक्षिण की ओर चलने लगे। थोड़ी देर चलने के बाद कोदुम्बु का पलीता जला लिया। उसे हिला-हिलाकर आग प्रज्वलित की। उसकी रोशनी में रास्ते के गड्ढों और पत्थरों को पहचानते हुए वे ध्यान से आगे बढ़े। घुप्प अंधेरा मुंह के सामने काला पहाड़ बना खड़ा था। मशाल की रोशनी इन पहाड़ों को बेध रही थी। अब वे घाटी में धड़कते हृदय से आगे बढ़ रहे थे। बरगद के पास पहुंचते हुए दिल की धड़कन बढ़ने लगी। उससे जो जड़ें लटकी हुई हैं, उनके सहारे झूलता-तहलका मचाता माडन[4]! नाक से रक्त चूसनेवाले खून के प्यासे पिशाचगण ! बाहें ऊंची किए खड़े उनके राक्षसी मुंह के दोनों ओर निकली छैनी-जैसी दाढ़ें।

मीरान पिल्लै के हाथ की मशाल बुझ गई।

मुमकिन है, पिशाचों ने फूंककर बुझाई हो ! मीरान पिल्लै पस्त हो गए। पसीना छूटने लगा। पांव पत्थर के हो उठे। सुना है, पलटकर भागना नहीं चाहिए। इसलिए भागे नहीं।

ताड़ी बनाने के लिए ताड़ के पेड़ पर चढ़नेवाले मजदूर शाम को देर रात तक काम करने के बाद लौट रहे थे। उनकी आवाज थोड़ी दूर सुनाई दी। मीरान पिल्लै का हौसला जरा बढ़ गया। उन्होंने कान लगाकर सुना—आवाज धीरे-धीरे उन्हीं की ओर आ रही है।

कमर पर लटके हंसियों की मूठ के टोकरी के टकराने की आवाज आई।

---

1. रात में राह चलते समय मशाल की तरह काम आता है।
2. नारियल के पेड़ पर नारियल के गुच्छों की रक्षा करने वाले पत्ते। ये जलावन के काम भी आते हैं।
3. नारियल को दो टुकड़ों में तोड़कर गरी निकालने के बाद कटोरी के आकार वाले खप्पर।
4. भूत-वर्ग में से एक।

"नाडार !" मीरान पिल्लै ने डरते-डरते पुकारा।

"कौन है रे !"

"मैं हूं ।"

"मैं हूं, माने?"

दो मजदूर मीरान पिल्लै के पास आ गए। मुंह के एकदम सामने आकर घूरा। घुप्प अंधेरे में मुंह दिखाई नहीं दे रहा था।

"पुदुक्कडै गया था। बस नहीं मिली। मशाल भी बुझ गई।"

"कौन आदमी हो, बताओ न?"

"मैं ही हूं।"

"मोयलाली[1] या यामन[2]?"

"मछली व्यापारी मीरान पिल्लै।"

"ओ दक्खिन का मोयलाली?"

"हां।"

"क्या चाहिए, बताओ।"

"जरा इस मोड़ तक मेरा साथ दो। यह चूट्टु (मशाल) जलानी है।"

"बस, इतनी-सी बात ! चलो।" लंबा-सा डंडा कंधे पर रखे वे लोग चलने लगे। मीरान पिल्लै उनके साथ सटकर चले। बरगद की ओर मुड़कर देखने का साहस नहीं था। उसे पार करने के बाद ही जान में जान आई।

"अब कोई डर नहीं है। मैं आगे जा सकता हूं।" मीरान पिल्लै आभारी होने के लहजे में बोले। ताड़ी बनानेवालों ने पलीता भी जला दिया। उसे हाथ में लिए वे आगे बढ़े।

"पिल्लै ! डरना मत। यह अपना इलाका है, अपने लोग हैं, कोई कुछ नहीं कहेगा। बेहिचक चलना।" और फिर दोनों मजदूर दूसरे रास्ते से निकल गए।

हाथ का पलीता पारकोट्टै स्कूल के पास पहुंचने तक जलता रहा, फिर बुझने लगा।

लेकिन उसके बुझने से पहले ही मीरान पिल्लै ने अंगोछे के छोर में बंधी मोमबत्ती निकाल कर जला ली और फिर उसे खप्पर में जमाकर हाथ की ओट देते हुए आगे बढ़े।

गांव आ गया। बस स्टैंड पर सन्नाटा था। घर की ओर मुड़े। नारियल पत्तों के गिरने की आवाज। मीरान पिल्लै रुक गए और उस ओर कान दिया। नारियल के पत्ते लगातार गिर रहे थे, एक के बाद एक। यह मस्जिद का बागान था। मीरान पिल्लै को पता था कि इसकी रखवाली के लिए कोई तैनात नहीं है। एक के बाद एक पत्ता गिरने से पिल्लै ने अंदाज लगा लिया कि कोई गिरा रहा है।

---

1. मुदलाली; मुसलिम व्यापारी।
2. यजमान; कुलीन हिंदू।

"कौन है उधर?" मीरान पिल्लै ने जोर से पूछा।

कोई जवाब नहीं मिला। पत्ते गिरने की आवाज थोड़ी देर के लिए रुक गई। फिर एक पत्ता गिरा।

"पत्ते गिराने वाला कौन है बे?"

"पूछनेवाला कौन है बे?"

मीरान पिल्लै की परिचित आवाज, "अरे, तू मम्मात्तिलु है?"

"जी, आप मीरान पिल्लै काका?"

"हां।"

मम्मात्तिलु सामने आ गया। उसके कंधे पर फंदेवाला डंडा था।

"आधी रात के वक्त कहां से आ रहे हैं?"

"कोलंबो को तार देने गया था। बस जो है, रास्ते में खराब हो गई, अंचुकण्णु की पुलिया पर। वहां से पैदल चला आ रहा हूं।"

"तब तो घर जल्दी पहुंचो।"

"तुम यह काम क्यों कर रहे हो भई? किसी से मांग लेते आठ-दस पत्ते !"

"किससे जाके मांगूं? जिसके पास बगान है, मांगने पर देगा क्या? खरीदने के लिए पैसा नहीं है। चैत आ रहा है न? समुद्र किनारे छप्पर डालके 'करुप्पट्टी कॉफी'[1] की दुकान खोलने की सोच रहा हूं।"

"सो ठीक है। लेकिन यह मसजिद का बागान है न?"

"मैं तो गरीब आदमी हूं। इसलिए रब माफ कर देगा।"

"जैसा तुम ठीक समझो।" मीरान पिल्लै आगे बढ़े।

"ठहरिए", मम्मात्तिलु ने पुकारा, "एक बात बताऊं? इन दिनों आपके बेटे की चाल ठीक नहीं है।"

"क्यों?" मीरान पिल्लै संदेह से खड़े हो गए।

"पेपर पढ़ता है।"

"पेपर? कौन-सा?"

"गांधी और जिन्ना जो कहते हैं कि देश को आजाद कराना है, जेल में जाना है, ऐसी-ऐसी बातें रोज इसमें छपती हैं। देखने में बड़े कागज-जैसा होता है। वही है पेपर।"

"सुभान अल्लाह ! सच !"

"अल्लाह की कसम। अपनी इन आंखों से देखा है। चार-पांच काफिर लड़कों के साथ खड़ा वह पेपर पढ़ रहा था। अभी से उसे मना कर दीजिए। पेपर पढ़नेवाले बच्चे बरबाद हो जाते हैं।"

---

1. ताड़ का गुड़ उबालकर और फिर उसमें कॉफी-पाउडर मिलाकर बनाई जाती है।

और मम्मात्तिलु पलटकर चल पड़ा।

कोषिकोडवाले मुसलियार ने भी जुम्मे की नमाज के बाद कहा था—अखबार पढ़नेवाले मुसलमान गुमराह हो जाते हैं।

सही वक्त पर आगाह करने के लिए मम्मात्तिलु के प्रति उनके दिल ने शुक्रिया अदा किया।

कासिम किसलिए अखबार पढ़ता है? इससे क्या मिलनेवाला है? अखबार से नुकसान ही होता है।

कासिम के बारे में पहले भी कई बार शिकायतें आई थीं कि वह अपने हमउम्र लड़कों को गुमराह करता है और कई मां-बाप ने अपने बच्चों को कासिम की सोहबत में न पड़ने की चेतावनी दी है।

मीरान पिल्लै ने घर का दरवाजा खटखटाया। कदीजा भागी आई और दरवाजा खोला। घर में सभी लोग जाग रहे थे।

"तुम लोग सोए नहीं?" मीरान पिल्लै ने पूछा।

"नींद कैसे आएगी? यह बताओ तुम अब तक कहां थे?"

मीरान पिल्लै ने कोई जवाब नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद उन्होंने पूछा, "कासिम कहां है?"

"कमरे में पढ़ रहा है।"

"कासिम रे!"

कासिम वाप्पा के सामने आया। देखा, उनकी आंखों से अंगार बरस रहे हैं।

"तू क्या कर रहा है?"

"पढ़ रहा हूं।"

"क्या पढ़ रहा है?"

"इम्तहान के लिए।"

"तू पेपर पढ़ता है? सच-सच बोल।"

"हां।"

"किसलिए पढ़ता है?"

"देश की खबरें जानने के लिए।"

"पेपर नहीं पढ़ना चाहिए, समझा!"

यह एक कड़ी चेतावनी थी। उनके स्वर में एक ऐसी कड़क थी जो इससे पहले कभी नहीं रही। कासिम सकपका गया। सिर झुकाकर खड़ा रहा।

11

अरब सागर बेहद शांत था। उसमें ऊंची-ऊंची लहरें नहीं थी। बहाव भी नहीं। आज तो यह विशाल झील-सा नजर आ रहा है। आकाश और सागर जहां गले मिलते हैं, उस निजन में, कतार-के-कतार जहाज, नावें और पाल ताने तिरते जलपोत सरक रहे थे।

अरब सागर के चेहरे पर आज जरा भी क्रोध नहीं है। कभी-कभी उसका 'मिजाज' बिगड़ जाता है। ऐसे में उस पर काबू पाना मुश्किल होता है। चिंघाड़ें और मारधाड़-भरी पुकार। अपनी लंबी जीभ से तट की रेत खींचकर ले जाता। कभी-कभी तो और आगे बढ़कर नारियल के पेड़ों को ही लील लेता। उसके बाद डच फौज की तोपों से क्षत-विक्षत 'उण्डविट्टान चट्टान' के पास पहुंचकर उसे धमकी देता। भरी आंखों खड़ी मछुआरिन युवतियों की सिसकियां, रोना-कलपना, गालों से बहती अश्रु-धाराएं देखने के बाद ही इसका गुस्सा शांत होता; और तट से खींची रेत को फिर से उसी पर उगल जाता।

''संत अंतोणी! रहम करो हम पर। रच्छा करो हमारी, हमारे बच्चों की इन कट्टुमरम् बेड़ों की, जिनसे हमारा पेट पलता है। आमेन!''

झोंपड़ियों के भीतर से ऐसी प्रार्थनाएं दीन स्वर में निकल रही थीं। मछुआरे घुटने टेककर प्रभु ईसा से दुआ मांग रहे थे–सलीब पर ठुके प्रभु से। झोंपड़ों की दीवारों से टकराती समंदर की ठंडी हवा के कानों में वह दर्द घुल-घुल जाता। बेसहारा जनता की हृदय-वेदना को ठंडी हवा अपनी गीली पांखों में लिपटाकर अरब सागर में अदृश्य हो जाती और फिर सर्वशक्तिमान प्रभु के चरणों पर भूखी जनता की वेदना को समर्पित कर देती। घंटों नर्तन करने के बाद थका-हारा समंदर वापस लौटता। इसके बाद लंबी खामोशी, चैत पूरा होने तक।

यों अमूमन चैत से पहले ही 'नेत्तिली' मछली दिखने लगती, लेकिन इस बार अभी तक नहीं मिली। मरम्मत किए गए जालों को समंदर के किनारे जहां-तहां गड्ढा खोदकर गोबर मिले गरम पानी में डाला गया और फिर अब उन्हें सुखाकर तैयार रखा हुआ है। ठोंक-पीटकर मरम्मत की गई नौकाएं सागर-तट पर जम्हाई ले रही हैं।

मम्मात्तिलु ने 'जुम्मा' की नमाज अदा करने के बाद समंदर किनारे 'अरयन तोप्पु' में दुकान बनाने के लिए चार नारियल पेड़ों के बीच डंडे गाड़े। आसपास कुछ और दुकानें उठ आई थीं। कुछ अभी बन रही थीं, कहीं डंडे खड़े थे, तो कहीं डंडों के ऊपर छप्पर डाले गए थे।

मम्मात्तिलु ने जब डंडा गाड़ा तो कपड़े से अपना सिर ढंक लिया था और होठों पर 'बिस्मिल्लाह'।

इस मौके पर यासीन पढ़ने के लिए मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद में अजान लगानेवाले मोदीनार ने अगरबत्ती जलाई और यासीन पढ़ा। 'दुआ' मांगकर उसने हथेली चूमी।

मम्मात्तिलु ने बड़े अदब से अपनी भेंट मोदीनार की हथेली पर रखकर मुट्ठी बंदकर दी। मोदीनार ने उंगलियों के बीच नजर दौड़ाकर उस 'रकम' को देखा, 'चार चक्रम्'[1]।

आसमान के किसी कोने पर सरकते काले बादल का एक टुकड़ा मोदीनार के चेहरे पर फिसल पड़ा।

"सब्र कीजिए लब्बे! गरीब आदमी हूं। समंदर किनारे जब मछली खरीदने आएंगे तो सोंठवाली कॉफी पिलाऊंगा।" मम्मात्तिलु ने मोदीनार के सामने अपनी मुफलिसी जताई।

"ठीक है, मुबारक हो यह दुकान। अच्छा, मैं चलूं? बच्चों के लिए मरच्चीनी खरीदनी है।"

"मुंह मीठा कर लीजिए लब्बे!"

मम्मात्तिलु के हाथ में कागज की पुड़िया थी। उसमें से चुटकी-भर चीनी लेकर मोदीनार ने मुंह में डाल ली।

मम्मात्तिलु को बहुत से बच्चे घेरे खड़े थे—सब के सब मछुआरों के, और चीनी के लिए हाथ फैला रहे थे।

बच्चों के हाथों के बीच में एक बड़ा हाथ आगे बढ़ा।

जुम्मा मस्जिद से निकलनेवाला पहला आदमी 'आनैविलुंगी ओसा' होता है। उसकी चाल भी अजीब होती है, वह उचक-उचककर चलता है। बाहर खड़े होकर मसजिद से निकलनेवालों पर निगाह डालता है। मोदीनार जिस शख्स के पीछे चलता, आनैविलुंगी उसी का पीछा करता। यों वह पीछा करते हुए आज भी यहां पहुंच गया है।

"इधर भी देना भई!" आवाज सुनकर मम्मात्तिलु ने चुटकी-भर चीनी आनैविलुंगी के हाथ पर रख दी।

"अल्लाह की कसम, वाप्पा की कसम, भाई मेरा सिर चक्कर खा रहा है। अभी मैं यहां गिर पडूंगा। दो दिन से पेट में कुछ भी नहीं गया है। चाय बनाने लायक चीनी दे दो।"

मम्मात्तिलु ने एक कप चाय बनाने-भर को शक्कर दी। उसे कागज में बांधकर आनैविलुंगी समुद्र किनारे पश्चिम की ओर उचक-उचककर चलने लगा।

मध्याह्न के मार्तंड ने अपनी ज्वाला में एक मशाल जलाकर धरती पर फेंकी। समुद्र-तट की उजली रेत जल उठी। भाप उड़ने लगी। विजन में वाष्प का तांडव नर्तन।

---

1. पुरानी तिरुवितांकूर रियासत का सवा दो आने मूल्य का सिक्का

उस तपती रेत पर मीरासा की मंझली बेटी रुक्किया चली आ रही थी। टोकरी टोपी का काम दे रही थी। बदन पर कमीज नहीं, नन्हें पैर झुलस रहे थे। रुक्किया ने देखा, दूर एक कट्टुमरम् किनारे लगा है। झाबावालों के साथ वह भी उसी ओर भागी। जाल पर सफेद 'नेत्तोली' मछलियां।

बारीक डोरियों से बुना हुआ जाल। जाल की कड़ियां जरा बड़ी-बड़ी हैं। इनमें 'नेत्तोली' का सिर फंस जाता है।

ज्यों ही कट्टुमरम किनारे लगा, मछुआरे मरम् से नीचे कूद पड़े। सिर के बालों को निचोड़ा और अपने लंगोट को ठीक से बांधा।

मरम् को घेरे खड़े लोगों को देखकर उन्हें गुस्सा आ रहा था।

"बड़ी मछलियां नहीं फंसीं"? एक झाबेवाली ने पूछा।

"अपने शौहर को बुला लाओ, कट्टुमरम् खेने के लिए। बड़ी-बड़ी मछलियां फंसेंगी। चल, हट!" मछुआरे ने उसके झाबे पर हाथ रखकर झाड़ दिया। झाबा नीचे गिर गया।

"सब चले जाओ यहां से, वरना मार पड़ेगी" चारों ओर मछली चुनने के लिए जमा हुए बच्चों को लात मारने के लिए उसने पैर उठाया, "चलो हटो, लातें पड़ेंगी।"

दोनों मछुआरों ने जाल बिछाया और अपना सिर उसमें घुसा दिया। जाल की कड़ियों में फंसी नेत्तोलियों को हाथ से झाड़ा। नेत्तोली मछलियां जाल में जमा हो गईं। हाथ से झाड़ते हुए कुछ नेत्तोलियां जाल के बाहर भी गिर जाती थीं। कुछ लोग उन्हें चुनने लगे। मीरासा की बेटी रुक्किया भी इधर-उधर भागकर नेत्तोली चुनने लगी और अपनी टोकरी में जमा करने लगी। कट्टुमरम् किनारे लग जाने की खबर सुनकर मछुआरों की बीवियां अपने-अपने मर्दों के लिए भात और पकी मरच्चीनी लेकर आईं। मटके में पीने का पानी। बाहर छितराई मछली चुनते बच्चों को मछुआरिन त्रेस्या ने देखा तो दूर से ही गाली देती हुई उस ओर दौड़ी–

"नासपीटो! सुअर की औलादो! समझ क्या रखा है? यह आई मैं, पुरानी झाडू से चेहरे की मरम्मत करने के लिए।" त्रेस्या हाथ हिला-हिलाकर तेजी से जाल के पास जा पहुंची और खाने की टोकरी उतार कर नीचे रखी। सिर पर सुपारी का 'पालै'[1] रखा था, उसे भी हाथ में ले लिया। त्रेस्या को देखकर मछली चुननेवाले सारे बच्चे भाग गए। रुक्किया नहीं भागी। डरकर दुबक गई। उसकी पीठ पर 'पालै' की मार पड़ी।

त्रेस्या का पारा चढ़ा था। उसने रुक्किया के बदन का चिथड़ा पकड़कर, समंदर में फेंकने के लिए खींचा। लेकिन लड़की मजबूती से उस चिथड़े को पकड़े तपती रेत में बैठ गई और जोर-जोर से रोने लगी। त्रेस्या ने दोनों हाथों में मिट्टी भरकर लड़की के सिर पर

---

1. पेड़ पर लगे सुपारी के गुच्छों पर चपटा-मोटा आवरण होता है, जिसे सिर पर झावे के नीचे रखा जाता है इससे पंखा आदि भी वनाया जाता है।

डाली जहां फोड़े निकले हुए थे।

"समंदर में जो जाता है, उसी को तकलीफ का पता होता है। इधर आदमी फाके से है और चोर की यह छोकरी नेत्तिली चुनने आ गई है। कपड़ा उतारके समंदर में फेंक दूंगी, हां! चल, भाग यहां से।" त्रेस्या ने हाथ हिला-हिलाकर चेतावनी दी।

मछली चुननेवालों को सजा देने के लिए उनका कपड़ा उतारकर समुद्र में फेंका जाता था। उनके सिर पर और आंखों में मिट्टी भी फेंकी जाती थी।

भय-कातर रुक्किया वहां से हाथ में टोकरी लिए उठी। रही-सही कसर निकालने के लिए एक मछुआरे ने उसके सिर पर मुक्का मारा, "अरे यह कहां से आ गई? टांग बराबर भी तो नहीं है।" रुक्किया फफक-फफककर रो पड़ी। मुक्का फोड़े पर लगा था। फिर अपने फटे-पुराने कपड़े से आंसू पोंछ लिए। पर आंसू बांध तोड़कर बह रहे थे। वह देर तक सिसकती रही। फिर थोड़ी दूर पर खड़े नारियल के पेड़ के पास चली गई और उसके नीचे बैठकर रोती रही।

मीरान पिल्लै समंदर किनारे आए। उनके बदन पर कमीज नहीं थी। अंगोछे को तह करके वे सिर पर रखे हुए थे।

"क्या मिला?" सामने से आ रही एक झाबेवाली से उन्होंने पूछा।

"वले नेत्तीली!" (जालवाली नेत्तीली)

"काफी तादाद में मिली है?"

"छिः, इत्ती-सी!" उसने अंगूठे के साथ दो उंगलियां जोड़कर संकेत से बताया कि बहुत कम मिली है।

"बुरा हाल है मालिक! समंदर यों ठगी करेगा, तो ऐ रब, दुनिया के मालिक, हम गरीब लोग बच्चे कैसे पालेंगे?" झाबेवाली के दोनों हाथ सीने पर थे और आंखें आसमान की ओर उठी हुई थीं। सातवें आसमान पर बैठे मालिक को वह संबोधित कर रही थी।

उस जाल में फंसी मछलियां खरीदने के लिए मछुआरिनों के बीच होड़ाहोड़ी होने लगी। चार-पांच औरतों ने मिलकर जाल की पूरी मछलियां खरीद लीं और आपस में बांट लीं। शाम की हाट में ले जाकर 'मालिकों' को अच्छी कीमत पर बेचेंगी।

मीरान पिल्लै थकी-हारी नजर से समुद्र की ओर देखने लगे--चुपचाप। उस नजर में आशा भी एक सूखे हुए पेड़ जैसी थी।

सारे जेवर रेहन रखे जा चुके थे। सौ-सौ के कुछ नोट संदूक में हिफाजत से रखे हुए हैं। मछली न मिली तो उसी रुपए से खर्चा चलाना होगा। रखा हुआ धन रोज यों छीजता रहा तो?

आगे वे सोच नहीं सके। भीतर अग्निकुंड धधक रहा है। कोलंबो के कमीशन एजेंट का कर्जा अभी चुका नहीं है। बेचने या रेहन रखने के लिए अब घर में एक भी जेवर नहीं

है। जायदाद भी नहीं है।

समुद्र किनारे जगह-जगह गाड़े गए डंडों को देखा, जिन पर अभी छप्पर नहीं छवाए गए थे।

"क्या कभी सारी प्रतीक्षा चूर-चूर हो जाएगी? या रब!" मीरान पिल्लै की आंखें भक्ति-भाव से ऊपर आसमान की ओर उठीं। हजारों की तादाद में गरीब लोग 'बहर' के आसरे जी रहे हैं। वह उन्हें खाने को देता है। कभी-कभी उनके मन में आग भड़का देता है। पुरखों के मुंह से सुना है, समंदर कभी धोखा नहीं देता। अभी तक तो धोखा नहीं दिया है।

समंदर के ऊपर बाज चक्कर काटने लगे। इससे जरा आशा बंधी। बाजों का चक्कर काटना मछलियां होने का सबूत है। फिर मछलियां क्यों नहीं मिल रहीं? यह एक ऐसा सवाल है, जिसका कहीं जवाब नहीं मिलेगा।

जिंदगी के साथ यों खिलवाड़ करनेवाला कौन है? वह कौन है जो हमारे खाने की थाली में मिट्टी डाल रहा है? सोचते-सोचते लगा कि दिल की दीवार में दरार पड़ जाएगी, इसलिए सोचना बंद कर दिया। सब कुछ अल्लाहताला की मर्जी पर छोड़ दिया।

मीरान पिल्लै ने अपने गंजे सिर पर बचे सफेद बालों के बीच उंगलियां फिराकर खुजलाया। अंगोछा हिला-हिलाकर बगल का पसीना पोंछा। फिर उसे कंधे पर डाल लिया और दोनों हाथ पीछे बांधे चलने लगा। देखा, नारियल पेड़ के नीचे एक लड़की बैठी रो रही है। तभी बाज ने झपट्टा मारा और उसकी टोकरी में से कई नेत्तिली मछलियां चोंच में भर लीं। लड़की ने टोकरी अपनी ओर खींची। पर हाय, उसमें सिर्फ एक मछली बची थी। रुक्किया फफककर रोने लगी। खाली हाथ लौटेगी तो उम्मा मारेगी! 'इतनी देर कहां रही?' उम्मा पूछेगी और गाल में चिउंटी काटेगी, यह सोचते ही वह ज्यादा परेशान हुई।

"बेटी, रो क्यों रही है?" मीरान पिल्लै ने पूछा।

"ऊ... हूं... मैं मछली चुनने आई थी। घाटवाली ने मुझे पीटा।"

"किसकी लड़की है?" मीरान पिल्लै ने पूछा।

"गठरी बांधनेवाले मीरासा की।"

मीरान पिल्लै चकित रह गए। उन्होंने दांतों तले उंगली दबा ली। आग उगलती दुपहरी में मछली चुनने के लिए मजबूर लड़की के पेट और गालों पर गरीबी की लकीरें दिखाई दे रही थीं।

मीरासा का स्वर्णिम अतीत मीरान पिल्लै की आंखों के सामने घूम गया--

कमीज के ऊपर महीन सफेद धोती, उसके ऊपर चौड़े पाट की काली बेल्ट, हाथ में रुमाल और घुंघराले बालों पर पीछे की ओर हाथ फिराते हुए वह मस्ती भरी चाल! उफ! वह भी उसका एक जमाना था। यह उसी मीरासा की बेटी है! मीरान पिल्लै के हृदय के एक कोने से करुणा का सोता फूट पड़ा।

"उठो बेटी!"

रुक्किया उठी।

"रोना नहीं!" मीरान पिल्लै ने अपनी अंटी को खोलकर चांदी का एक सिक्का निकाला और रुक्किया की ओर बढ़ाया, "मच्छी लेके घर चली जाना, अच्छा!"

"मुझे नहीं चाहिए!" कहकर वह तीर की तरह चली, बिना मुड़े। मीरान पिल्लै ने देखा, उसके घुटने और कमर के बीच में बंधा हुआ कपड़ा जगह-जगह फटा हुआ था। उन दुर्वल टांगों पर टिकी देह के ऊपर रीढ़ की हड्डी से चिपकी हुई पसलियां कहीं बिखर न जाएं, मानो इसीलिए मुलायम चमड़ी से ढक दिया गया हो उन्हें! आंखों से ओझल होने तक वे उसी को देखते रहे, "या रब! समंदर किनारे जिंदा लाशों की तरह फिरनेवाले इन बेचारों को जिंदगी दो।" और जैसे मीरान पिल्लै की हृदयरूपी जीभ से निकली इस अर्जी को अपने पंखों में सम्हाले ठंडी हवा सातवें आसमान की ओर उड़ चली।

12

मुहल्ला समिति के सदर फरीद पिल्लै सुबह की नमाज अदा करने के लिए जब घर से चले, तो पौ फटने में देर थी। धुंधलका अभी शुरू नहीं हुआ था। आसमान पर सितारों की चमक अभी बरकरार थीं हवा की ठंडक से बचने के लिए उन्होंने कानों तक पगड़ी बांध रखी थी। हाथों को पीछे बांधकर उंगलियां परस्पर गूंथ ली थीं ताकि हल्की गरमाहट मिल सके।

जोर से चल रही हवा में नारियल के बड़े-बड़े नरम पत्ते एक-दूसरे से रगड़ खाकर 'सर् सर्' की आवाज कर हे थे, मानो प्रकृति ने सुबह की सरगम छेड़ दी हो, रह-रहकर मुर्गों की बांग का स्वर, सामने 'यानै पारै' (चट्टान) की ढलान से उतरा दूधवाला मुत्तु पिल्लै काक्कानकुलम की गली में अतरान की चाय की दुकान की ओर मुड़ गया था। शयप्पन का गधा, जो मात्र हड्डी का ढांचा रह गया था, यंत्रवत् श्मशान की नदी की तरह चला जा रहा था। पीठ पर थी गंदे कपड़ों की भारी गठरी।

दूधवाला मुत्तु पिल्लै, फरीद पिल्लै के पास से निकला तो मिट्टी की गंध से उसके पसीने की बदबू मिल गई। सुबह की हवा घनीभूत होकर जरा देर के लिए बोझिल और असह्य हो उठी। इस हवा में सांस लेने से फरीद पिल्लै साहब को मितली-सी आने लगी वैसे भी वे सुबह मंजन किए बिना घर से निकले थे। सो जबड़ों से लार रिसने लगी, मितली बढ़ गई खंखारकर थूका।

मालिक इब्नुद्दीन द्वारा बनाई गई पत्थर की मस्जिद में लालटेन टिमटिमा रही थी।

धुएं से चिमनी काली पड़ गई थी, फिर भी लंबी बत्ती द्वारा उगली गई मंद रोशनी दहलीज को पार करके सामने के फर्श पर लंबाकार पड़ी हुई थी। इस प्रकाश में फरीद पिल्लै को मस्जिद की सीढ़ी पर चप्पलों का एक जोड़ा दिखाई दिया। फरीद साहब ने गौर से देखा। इससे पहले इस तरह की चप्पलें यहां कभी नहीं देखी थीं।

किसकी होंगी? क्या कोई 'सफरानी' आया है?

हौज के ऊपरवाले मीरे पर 'मिसवाक' (दातून) खुंसे हुए थे। फरीद पिल्लै ने एक दातून उठाया और हौज के पास उकडूं बैठ गए और दातून रगड़-रगड़कर दांतों पर लगे पान के दाग को छुड़ाने लगे। इस उम्र में उनकी उंगलियां आगे-पीछे चलाकर अजीब आवाज पैदा कर रही थीं। फिर उन्होंने खखार-खखारकर थूका।

बजू के बाद वे मस्जिद के अंदर दाखिल हुए। गूदड़ को सिरहाना बनाए बेफिक्र सो रहे ममदाजी दिखाई पड़े। गूदड़ के ऊपर बिखरे पड़े थे ममदाजी के खिचड़ी बाल। बस, फरीद पिल्लै का पारा चढ़ गया।

"ऐ मोदीन!" उन्होंने जोर से पुकारा।

मस्जिद के हर कोने में अगरबत्तियों का धुआं फूंकता फैलाता हुआ मोदीन भागा-भागा आया।

"कौन है यह?"

"सफरानी (मुसाफिर)।"

"इसके सिर पर क्या है?"

"बाल।"

"इसे क्यों घुसने दिया मस्जिद में?"

"जी... मैंने सोचा, सुन्नत के बाल होंगे।"

"कमाल है, तुम्हें पता नहीं किसी भी तरह बाल बढ़ाना हराम है?"

"माफी चाहता हूं।"

"उठाओ इसे।"

मोदीनार ने ममदाजी को जगाया। वे उठकर बैठ गए। एक अंगडाई ली और फिर जम्हाई। काली टोपी उठाकर सिर पर रखी। अंगोछा निकालकर टोपी के चारों ओर बांधा और फिर हड़बड़ाकर सदर की ओर देखा।

"कौन गांव है जी?"

"कांजिरपल्ली।"

"आप नहीं जानते, इस गांव में कोई बाल नहीं बढ़ा सकता।"

"हां, यहां आने पर कल सुना।"

"नाम क्या है?"

"ममदाजी।

"सुभान जल्लजलालहू! हाजी हैं आप? और हाजी के सिर पर बाल! गजब हो गया। कयामत का लच्छन दिख रहा है। फरीद पिल्लै ने दांतों तले उंगली दबाई।

"यहां आने का मकसद?"

"सफर में हूं।"

"सफर-वफर हम कुछ नहीं जानते। सुबह होते ही बाल मुंड़वा लो, समझे? वरना जबरदस्ती पकड़कर हाथ और पैर बांधेंगे और बाल मुंड़वा देंगे। इतना भी नहीं जानते कि बाल रखना हराम है। बाल बढ़ाते हैं काफिर लोग।"

ममदाजी कुछ नहीं बोले। चुपचाप सुनते रहे फिर उठकर संड़ास की ओर चल दिए।

"अरे लब्बे! तुमने बालोंवाले शख्स को मसजिद में आने क्यों दिया? आजकल बड़े ढीठ हो गए हो। देखते रहो, तुम्हारी तनख्वाह से पांच रुपए काट दूंगा। तभी ठिकाने आएगी तुम्हारी अक्ल।"

संड़ास में बैठे ममदाजी फरीद पिल्लै का कुपित स्वर सुन रहे थे। एक मुसाफिर को मस्जिद में रात गुजारने के लिए थोड़ी जगह देने पर जुर्माना? अरे, मस्जिद तो मुसाफिरों को हिफाजत देनेवाली पाक जगह होती है! यह कैसा सदर है जो इस बुनियादी बात से अनजान है। कैसा जमाना आ गया, या रब! अक्लवालों पर जाहिल लोग हुकूमत कर रहे हैं। कहां लिखा है कि सिर के बाल बढ़ाना हराम है? क्या यह जालिलों का डेरा है? मैंने तो सुना था, यह दीनपरस्त और दानी लोगों की बस्ती है। लेकिन यहां तो बदतमीजों से पाला पड़ रहा है। ये तो तहजीब से कोसों दूर हैं।

जो भी हो, बाल नहीं मुंड़वाऊंगा। यहां पर थोड़ा ही समय गुजारना भी है जो आता है, आने दो। हुम्... मजहब के नाम पर इन्सानियत का सौदा करने वाले जाहिल लोग!

ममदाजी ने संड़ास में थू थू करके थूका। फिर उठे।

देखते-देखते सुबह की उजास फैलने लगी, 'यानै पारै' चट्टान के बीच में से फिर सूरज का लाल मुंह उभरा। उससे बिखरी किरणों ने मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद की उजली दीवार पर लाल रोगन उड़ेल दिया। सामने पड़े काले पत्थर पर जब ममदाजी बैठे, तो उसकी शीतलता ने ममदाजी को चोटी तक ठंडक पहुंचाई। गूदड़े खोलकर उन्होंने एक बीड़ी सुलगा ली। अजीब तरह का सुकून मिला। मस्जिद से बाहर आनेवाले और मस्जिद के भीतर जानेवाले लोगों ने पल-भर को ठिठककर ममदाजी को अचरजभरी नजर से देखा। सुबह मदरसे में कुरान शरीफ पढ़ने आए छोटे-छोटे बच्चों को देखकर ममदाजी ने जब मुस्कान बिखेरी तो चांदनी-सी छिटकने लगी। मुस्कुराते हुए ममदाजी ने बच्चों के गालों को लाड़ से थपथपाया।

"मेरे लाड़ले बच्चो, अच्छी तरह सीखो"

यह सुनकर सभी बच्चे एक साथ मुस्कुराए और तब वहां दूध का दरिया बह निकला।

मासूम बच्चों के फूल-से चेहरों में खोए ममदाजी ने मस्जिद की ओर आ रहे आनैविलुंगी और दूसरे लोगों पर ध्यान नहीं दिया। चार-पांच जने ममदाजी के सामने आ खड़े हुए और खंखारकर उनका ध्यान खींचा। सभी अनजान चेहरे थे, फिर भी ममदाजी सहज ढंग से हंसे। आनेवाले बड़ी अदा से ममदाजी को घेरकर खड़े हुए। ममदाजी एक-एक को देखकर मुस्कुराए।

"तशरीफ रखिए।"

उन्होंने एक-एक से कहा कि उनकी बगल में पत्थर पर बैठें।

"हम बैठने के लिए नहीं आए हैं।" आनेवालों में से किसी ने कहा।

"दीन निभाने आए हैं। दूसरे शख्स ने अपनी वात पूरी भी नहीं की थी कि तीसरे ने ममदाजी को बाहों में जकड़ लिया। चौथे ने उनके दोनों पैरों को मिलाकर अंगोछे से कसकर बांध दिया। पांचवें ने उनकी टोपी उतारी।

"छोड़ना नहीं भाइयो! कसकर पकड़े रहो। उत्तर का बंदा है, ताकत का पुतला!" आनैविलुंगी की जंग लगी हजामत की पेटी खुली।

"ऐ, यह क्या कर रहे हो? एक परदेसी के साथ ऐसा बरताव क्यों कर रहे हो, छोड़ दो।" ममदाजी ने उनकी पकड़ से छूटने की नाकाम कोशिश की, ठीक उसी तरह जिस तरह हज के अवसर पर कुर्बानी के लए बंधा हुआ बैल बंधन तोड़ने के लिए बेकार की उछल कूद करता है!

जैसे किसी चोर-उचक्के या पागल आदमी को धर दबोचा हो, पांचों आदमी उन पर हावी हो गए। हाथों को पीछे की ओर ले जाकर कपड़े से कसकर बांध दिया गया। एक मुस्टंडे ने दोनों हाथों से उनका सिर कसकर पकड़ लिया, ताकि वे हिला नहीं सकें।

आनैविलुंगी का काला जर्मन उस्तरा ममदाजी के सिर पर लड़खड़ाने लगा। बच्चे कुछ अचरज और बेहद खौफ से उस नजारे को देखते रहे। सफेद होने को तैयार लंबे खिचड़ी बाल ममदाजी के कंधे और सीने पर फिसलते हुए नीचे गिर रहे थे, जैसे सेंधनी के पेड़ से काले कीड़े गिर रहे हों।

"या अल्लाह, इस 'ओसा' (नाई) के मुंह से भारी बदबू आ रही है। मेहरबानी करके मेरे हाथ खोल दो, तो मैं नाक बंद कर लूं।" ममदाजी गिड़गिड़ाए।

"नहीं" आनैविलुंगी के मुंह से फिचकुर छूटने लगा। उसका उस्तरा ममदाजी के बालों को नोच-नोचकर खींच रहा था। इससे हाजी के सफाचट हो आए सफेद मुंड पर जहां-तहां आड़ी-तिरछी लकीरें खिच गई थीं जिनसे लाल लहू रिस रहा था।

"हाय, मेरा सिर आग की तरह जल रहा है!"

"जलता है? बक रहा है! पता है यह एक नंबर का जर्मन उस्तरा है। सौवें साल[1]

में कोलंबो से लाया गया मेरे दादा का उस्तरा! जिससे मेरे दादा और वाप्पा दोनों ने धंधा किया, वही उस्तरा। तमाम साहबानों के सिर पर चढ़ा-उतरा है यह उस्तरा! कैसे जलेगा बे? कैसा मजाक कर रहा है, देखो तो!"

सारे सिर को नोच-खरोचकर सफाचट कर दिया गया। ममदाजी का सिर संगमरमर की तरह चमक उठा। सुबह का सूरज अब उस पर भी प्रतिबिंबित हो रहा था।

"वाह! इस्लाम का बंदा हो गया न अब!" बंधन खोलकर ममदाजी को आजाद करते हुए उन लोगों ने खुशी जाहिर की। वे लोग अब इस अंदाज से हंसते हुए निकले, जैसे कोई किला फतह कर लिया हो। चलते हुए आनैविलुंगी के साथियों ने नारा लगाया, 'नारा-ए-तकबीर, अल्लाहो-अकबर!'

ममदाजी हक्के-बक्के खड़े थे। मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी। गला सूख गया था। सिर पर उस्तरे के बनाए घावों का दर्द। हाथ-पैरों को खींचकर बांधने से बदन में पीड़ा। ममदाजी ने ऐसे किसी हादसे की कल्पना भी नहीं की थी। उन्हें रोना आ रहा था। बस, रोए नहीं। रुदन को अंदर ही अंदर दबा लिया। थोड़ी देर सिर झुकाए खड़े रहे।

" क्या सोच रहे हो?" कल्लाम्पोत्तै पहाड़ी से लौटे मोदीनार ने पूछा। ममदाजी ने सिर उठाकर देखा।

" पखाना जाना हो तो कल्लाम्पोत्तै की ओर जा सकते हैं। नदी में जाकर नहा सकते हैं।" मोदीनार बोला। ममदाजी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। जमीन पर हाथ टिकाए सिर झुकाकर चुपचाप बैठे रहे। केवल उनके पैर हिल रहे थे।

"जरा एक बीड़ी देंगे?" मोदीनार के ओठों पर आई आश बरगद के पेड़ जैसी फैल चली।

ममदाजी ने जेब से एक बीड़ी निकालकर पत्थर पर रखी।

"चाच का पानी पी लिया? दुकान पास में है। मैं भी चलूंगा। मस्जिद के मोदीन को एक गिलास चाय पिलाएंगे तो जन्नत में खास जगह मिलेगी, हां!"

ममदाजी ने न सिर उठाया, न कोई जवाब दिया। चुपचाप बैठे पैर हिलाते रहे। मदरसे का समय पूरा हो गया और बच्चे बाहर निकले। सारे बच्चे ममदाजी को घेरकर खड़े हो गए।

"उप्पा[1], जबरदस्ती पकड़कर उन लोगों ने आपके बाल क्यों उतारे?"

ममदाजी ने इस तरह हाथ फैलाए कि उन्हें इसका पता नहीं।

"बाल मुंड़वाने पर जन्नत मिलेगी उप्पा?"

ममदाजी ने फिर नकारात्मक ढंग से हाथ फैलाए।

"उप्पा, फिर आपने एतराज क्यों नहीं किया?"

मलयालम (कोल्लम) वर्ष 100 जो ईस्वी सन् 1925 के बराबर है।

ममदाजी ने बच्चों पर हसरत भरी निगाह डाली।

"आपका गांव कौन-सा है?"

ममदाजी ने सिर हिलाया, मेरा गांव नहीं है।

"बेचारे उप्पा! ... उप्पा को पकड़कर जबरदस्ती उनके बाल मुंड़वा दिए!" बच्चे अफसोस जाहिर कर रहे थे।

ममदाजी ने भावनाशून्य दृष्टि से बच्चों को देखा। फिर गुदड़ी हाथ में लेकर उठे। लाली भर सूर्य कि किरणों में चमकती मस्जिद पर नजर दौड़ाई। जिस पत्थर पर बैठे थे, उसकी चमक और सघनता देखी। यह काला पत्थर सदियों की कहानी सुना रहा है। यहीं पर मालिक इब्नुद्दीन आए थे। यहीं पर अरब देश के मुसाफिर आए थे। यहीं पर बड़े-बड़े आलिम, दीनपरस्त लोग रहे। लकिन आज जो यहां जी रहे हैं? ममदाजी कल्लाम्पोत्ते चट्टान का रास्ता पूछते हुए बढ़ चले। बगल में गुदड़ी, हाथ में चांदी की मूठवाली छड़ी, झुकी कमर, झुके-झुके चलते हुए उन्होंने अपने सफाचट सिर को बड़े अफसोस के साथ सहलाया।

13

कासिम को घर छोड़कर गए पूर तीन दिन हो गए। कहां चला गया, किसी को पता नहीं। तीन दिन से पूरे घर में मायूसी और बेचैनी सांप की तरह फन फैलाए खड़ी थी। कासिम की गतिविधियां हमेशा ही गांव वालों की मान्यताओं और विचारों के खिलाफ होती थीं, इसलिए मीरान पिल्लै उस पर नाराज रहा करते थे लकिन इकलौता बेटा ठहरा। मन के किसी कोने में पिता की वात्सल्य भावना रह-रहकर फेनो छोड़ती रहती। इस उद्वेलन से मन चंचल हो उठता। रात-भर नींद नहीं आती। चटाई पर करवटें बदलते रहते।

कासिम की उम्मा खामोशी में सुबुकती रहती। आंखें सदा डबडबाई रहतीं। कोई अरब सागर की झलक देखना चाहता, तो यहां दिख जाती। पति से आमना-सामना होने पर मुंह फेर लेती। उस घर में खामोशी की बिल्ली दबे पांव चल रही थी। घर में तीन जने थे, मगर कोई किसी से बात नहीं करता। दिल में उमड़ते दर्द के ज्वार को तीनों ओठ भींचे अंदर ही अंदर दबाए रहे।

मन में जेठ-आषाढ़ का तूफानी चक्रवात उठा तो मीरान पिल्लै बड़बड़ाए, "वह हरामी, गधा, कहीं भी जाकर मरे, मुझे क्या?" और फिर दोनों घुटनों के बीच मुंह दिए बैठे रहे, आंखों से बरबस बह रहे आंसुओं को चुपचाप घुटनों से पोछा। इस दृश्य को घर में किसी

1 बाबा, दादा

ने नहीं देखा।

चिलचिलाती धूप में आंगन की रेत तप रही थी, बल्कि मानो पिघल रही थी। मीरान पिल्लै आंगन में आए और तपती रेत पर नंगे पांव निकल पड़े। दिल में असह्य वेदना आग की तरह जल रही थी। ऐसे में रेत की वह गर्मी उन्हें शीतल और सुखकर लगी। पीछे की ओर हाथ बांधे हौले-हौले चले। दूर पर आ रहा डाकिया अम्बुरोस दिखाई दिया बल्कि पहले दिखा उसका खाकी पतलून, जो घुटने के नीचे पिंडलियों तक पहुंचता था। मीरान पिल्लै ने अपनी हथेली माथे पर रखकर गौर से देखा कि डाकिया कहीं मुड़ रहा है या सीधे आ रहा है। ना, वह सुनारों की गली की ओर नहीं मुड़ा, सीधे ही आ रहा है! उदुमान पिल्लै के आहाते के बाहर नारियल के पत्तों से जो बाड़ बनी थी, मीरान पिल्लै उसके साथ सिमटकर खड़े हो गए। बाड़ से नारियल की एक तीली उधेड़ ली। उसे काटकर दांत कुरेदने लगे। वैसे दांतों के बीच में कोई अन्न-कण नहीं था जिसे कुरेदा जाए।

अम्बुरोस जब पास में पहुंचा तो पूछा,''कोई चिट्ठी है?''

''ना।''

''किसी और के नाम?''

वे जानना चाहते थे कि कासिम के नाम कोई चिट्ठी है या कासिम का कोई पत्र है।

अम्बुरोस हंसा।

मीरान पिल्लै इस हंसी का मतलब समझ गए। अम्बुरोस इस हंसी से यही कहना चाहता है 'चिट्ठी तो है, पर बताऊंगा नहीं! उसने आज तक किसी की चिट्ठी और को नहीं दी, न उसका जिक्र किया। यही अम्बुरोस की खासियत है। गांव में कई लोग उससे चिट्ठी पढ़वाते हैं, कई उत्तर लिखवाते हैं। इस तरह उसके दिल में गांव वालों के कितने ही राज कूड़े-करकट के अंबार की तरह पड़े हैं।

अम्बुरोस के निकल जाने के बाद भी मीरान पिल्लै थोड़ी देर तक बाड़ की छांह में ही खड़े रहे, उनकी नजर बाड़ के ऊपर बैठे एक गिरगिट पर थी। वे उसे अचरज से देखने लगे। उसकी गरदन से लेकर पेट के नीचे तक का हिस्सा लाल रंग में रंगा था। वे सोचने लगे जरूर इसने नाभि-मार्ग से कोई अदृश्य नली लगाकर मानव-रक्त पिया होगा, इस ललाई की राज यही तो नहीं? अनायास ही उनकी चिंतन-धारा कमिशन दुकान के मालिक की ओर पलट गई। उनके मन में कोलंबोवाले इस मालिक का चित्र उभर आया—ललाई लिए हुए तोंद, सीना और गंजा सिर। थोड़ी देर तक मीरान पिल्लै इसी विचार में डूबे रहे। इधर कासिम के एकाएक गांव छोड़ने की बात सारे गांव में फैल गई। इस पर सभी लोग खुश थे।

एक 'नजीस' मिट गई... ज्यादातर लोगों ने राहत की सांस ली थी। वे इस खयाल से खुश हो रहे थे कि कासिम अब कभी वापस नहीं आएगा। सरपंच फरीद पिल्लै ने मनौतियां

मनाई कि कासिम का यह पलायन अंतिम रहे, वह अब कभी न लौटे। इसके लिए उन्होंने चेण्डपल्ली मस्जिद में घी के गुलगुले चढ़ाने और वाल मस्तान के कब्रिस्तान में मोमबत्ती जलाने की मनौतियां कीं। ये मनौतियां उन्होंने मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद के सामने पड़े ऐतिहासिक काले पत्थर पर आलथी-पालथी लगाकर मनाई थीं। फरीद पिल्लै को पक्का भरोसा था कि चेण्डपल्ली मस्जिद के नाम पर की गई मनौती जरूर पूरी होती है। सदियों पहले दीन-उल-इस्लाम के खिलाफ काम करने वाले एक शख्स को हारकर भागने की नौबत आई। वह यही जगह थी, जहां बारह सौ साल पहले इस्लाम का पैगाम फैलाने के लिए जहाज पर आए मालिक इब्नुद्दीन ने सफेद हाथियों की मदद से मस्जिद बनाई थी। इतनी शोहरतवाली कदीम मस्जिद के सामने पड़ा यह काला पत्थर भी ऐतिहासिक है, इसी के ऊपर मालिक इब्नुद्दीन ने उस रात आराम किया था। उसके बाद इस पर कितने ही पीर-फकीर बैठे हैं, जिनकी गरमाहट अभी तक बरकरार है, फरीद पिल्लै ने अजमत-भरे इसी पत्थर पर पालथी मारकर मनौती की थी।

जिस दिन ममदाजी के हाथ पैर बांधकर मुंडन करके दीनी हक अदा किया गया था, उसी दिन दोपहर को चौराहे पर खड़े होकर कासिम जोर से चिल्लाया था—

"कितने बेहया लोग हैं! एक परदेसी के हाथ-पैर बांधकर सिर मुंड़वाया। मैं पूछता हूं, क्या ये जालिम लोग अपनी मां की कोख से सिर मुंड़वाकर निकले थे? मैं भी बाल बढाऊंगा, यह मेरी चुनौती हैं। देखता हूं, कौन माई का लाल मेरा सिर मुंड़वाएगा। उसी दिन पता चलेगा कि ये लोग कितने पानी में हैं। मेरा साथ देने वाले चार जन भी अगर होते तो मैं आज ही इन लोगों को सबक सिखाता।"

बाजार में मरच्चीनी खरीदते हुए 'कारुवा'[1] ने इसे कान देकर सुना।

उस वक्त तो उसने कासिम की बात की ताईद की, 'सही कहता है,' पर हाट से लौटते ही सरपंच फरीद पिल्लै के कान में कहा,"जनाब, चौराहे पर खड़े होकर उस छोकरे ने जो बातें मुंह से निकालीं, बे सब बयान के बाहर हैं। कहां आपके खानदान की शानो-शौकत और कहां वह सूखी मछली के व्यापारी का छोकरा। पूरा इलाका जानता है, आपके वालिद का नाम दूर-दूर तक फैला है, और आपकी वालिदा बहुत बड़े खानदान से आई हैं। कल के छोकरे की यह हिमाकत! ऐसे-ऐसे सिरफिरे बच्चे जन्मे हैं, तभी तो देश में अकाल पड़ा है और घर-घर में भूखमरी नाच रही है। देखिए साहब, हमने कोई पढ़ाई-लिखाई तो नहीं की। इसके बावजूद हमारा जमाना अच्छा गुजर गया। अपने जमाने में ऐसा अकाल कभी पड़ा था? आज देखिए, मेरे हाथ में जितनी मरच्चीनी है, यह 'चार चक्रम' की है। जब हम छोटे थे, 'चार चक्रम' में 'मन-भर' मरच्चीनी मिलती थी।"

---

1. कारिंदा (मुहल्ला समिति और मस्जिद का कारिंदा)

कारिंदे के जाने के बाद फरीद पिललै से रहा नहीं गया। सिर पर वॉयल की पगड़ी बांधी। छतरी बगल में दबाई और फिर मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद की ओर चल पड़ें मस्जिद के चारों ओर नजर दौड़ाई। बड़ी तकलीफ से सोचा, 'कल यह छोकरा मस्जिद में ताला लगवा देगा। इसे यों छोड़ना ठीक नहीं है! फरीद पिल्लै काले पत्थर पर जा बैठे।'

वहां जो भी आए, सबने यही कहा कि चौराहे पर खड़े होकर कासिम ने सरपंच को गाली दी। सुननेवाले चकित रह गए थे।

"सुभान जल्लजलालहू! सच, मीरान पिल्लै के बेटे की यह हिमाकत!"

"ओह, ऐसी बात है!"

"क्या इस छोकरे की यही मंशा है कि सब लोग बाल बढ़ा लें और काफिर होकर मरें।"

"उ...फ्, हद हो गई!"

"उसे छोड़ना नहीं चाहिए।"

"उसके वाप्पा को बुलाकर समझाएंगे।"

"हां, जरूर समझाना चाहिए।"

"अगर इस छोटे शैतान पर काबू पाना मुश्किल हो तो उसके साथ उसके बाप को भी बिरादरी से निकाल दिया जाए।"

"बजा फरमाया। यही वाजिब है।"

उस रात मीरान पिल्लै सो नहीं पाए। कासिम के घर लौटने तक जागते रहे। आधी रात के करीब कासिम घर लौट रहा था। ओट्टपनै[1] के नीचे पहुंचा तो एक कुत्ता रास्ता काट गया। कासिम कांप उठा। 'ओट्टपनै' का यह स्थान भूतों-प्रेतों का डेरा माना जाता था। इसी जगह नौजवान शाली ने खून की उल्टी करते हुए दम तोड़ा था। मरते वक्त वह सिर्फ बीस साल का था। रात को मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद में कोडुंगल्लूर मौलवी का भाषण सुनकर लौट रही मरियम ने ओट्टपनै के पास किसी शख्स को देखा—सफेद पोशाक और सिर पर पगड़ी, ठीक मौलवी की तरह। वह अनजान शख्स इस तरह मुस्कुराया, जैसे मरियम को पहले से जानता हो। उस नशीली जादुई मुस्कान में पता नहीं क्या करिश्मा था, मरियम घर पहुंचते ही अपने सिर के बाल खोलकर दीवानी की तरह नाचने लगी। इतना नाची कि थकान के मारे चूर-चूर होकर गिर पड़ी और फिर उठी ही नहीं। इस तरह कितनी ही जानों की कुर्बानी ली है ओट्टपनै में बसने वाले भूत-प्रतों ने!

कासिम ने हिम्मत बटोरी। वहीं खड़े होकर देखता रहा। क्या वह सफेद कुत्ता सचमुच आदमी की शक्ल लेगा? नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ। सड़क का मरियल-सा कुत्ता । कुत्ते ने एक जांघ ऊपर उठाकर पत्थर पर पेशाब कर दिया। कासिम को तसल्ली हो गई, वह

अकेला ताड़। ऐसा स्थान जहां कोई दूसरे पेड़ न उगे।

भूत नहीं, कुत्ता ही है। अब वह इत्मीनान से आगे बढ़ा। किताबें पढ़ने से उसकी जानकारी बढ़ी थी, दिमाग सुलझा हुआ था। इसलिए ऐसे बेहूदा खयालों पर विश्वास न करने की कोशिश की। उसके मन में यह विचार आया कि सृष्टि में मानव ही सबसे प्रबुद्ध है, उत्कृष्ट है। वह आगे बढ़ा। गांव सो गया था, सभी फाटक बंद थे। गहरी नींद वहां पर घुंघरू बांधकर घूम रही थी। बंधन में जकड़ी निस्तब्ध। फिर न जाने कहां से डरावनी आहटें सुनाई दीं। वह फिर चौंक उठा। चारों ओर नजर दौड़ाई। देखा, बड़बड़ाती धीमी हवा में सूखे पत्ते ढुलक रहे हैं, यह उसी की आहट है। उसे हंसी आई। वह फिर आगे बढ़ा।

घर के अहाते में पहुंचकर उसने बाड़ का दरवाजा खोला। खिड़की के सीखचों से होते हुए चिराग की मायूस रोशनी धुएं से काली हो गई चिमनी से बाहर आ रही थी। उसी रोशनी में आंगन का रास्ता नजर आ रहा था। देर रात में अगर किसी का इंतजार हो तो वह छोटा चिराग खिड़की पर रखा जाता था।

कासिम ने दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुला। अंदर वाप्पा खड़े थे।

"कहां चला गया था रे?"

"तोडुवट्टी गया था। लौटते हुए बस खराब हो गई।

"हूम्... क्या काम था?"

कासिम ने कोई जवाब नहीं दिया।

"चौराहे पर खड़े होकर तुमने क्या कहा था?"

"क्या कह दिया मैंने?"

"क्या तुमने फरीद पिल्लै को गाली दी थी?"

" हां, दी थी।"

"क्यों?"

"बाहर से आए एक मुसाफिर को बांधकर बाल मुंडवाए गए, क्या वह ठीक था?"

"बाल बढ़ाना क्या हराम नहीं है?"

"नहीं"।

"कासिम!" मीरान पिल्लै की आवाज ऊंची हुई। रात के सन्नाटे में वह आवाज चिंघाड़ बन गई। इस गर्जन से उसकी उम्मा और बहन भी कांप उठीं।

"हराम नहीं है, बिल्कुल नहीं।" कासिम ने दृढ़ता से कहा।

"क्या तुम मोयली (मौलवी) हो?"

"मोयली कहां से आए?"

"मोयलियों की बुराई मत करना, वरना मुंह में कीड़े पड़ जाएंगे।"

"मेरे मुंह में कीड़े नहीं पड़ेंगे वाप्पा, कीड़े तो उन लोगों के मुंह में पड़ेंगे जो इस समाज को अंधेरे में धकेल रहे हैं।

"जबान संभालकर बात कर। तेरी वजह से यह पूरा खानदान बरबाद होने वाला है। तुझे यह भी खयाल नहीं कि घर में शादी के लिए एक लड़की मौजूद है।"

"मेरी वजह से खानदान बरबाद नहीं होगा वाप्पा ! उसी हरामी का खानदान बरबाद होगा, जिसने इस गांव और समाज को अंधेरे खड्ड में गिराया है। ऐसे गद्दारों को मैं हरगिज नहीं छोडूंगा।"

"अरे, तू क्या करेगा?" सन्नाटे भरी उसी रात में मीरान पिल्लै की आवाज तोप की तरह गूंज उठी।

"मैं उनका सामना करूंगा।"

"अरे, तू क्यों मेरे घर में पैदा हुआ? जा, अब मुझे अपना मुंह मत दिखाना। मर जा कहीं जाकर। तू यहां रहेगा, तो हमारा जीना हराम हो जाएगा।"

मीरान पिल्लै अपनी चटाई पर सिमट गए। कासिम ने देखा, भीतरी कमरे के दरवाजे पर उम्मा खड़ी है, आंसुओं का दरिया बह रहा है उसके हाथ में जल रही कुप्पी लाल रोशनी के साथ काला धुआं उगल रही थी और काले धुएं और मद्धिम रोशनी में भी मां के गालों से बहती अश्रुधारा दिखाई दे रही थी।

"कुछ खा लो बेटे!"

"नहीं चाहिए।" ताड़ की बुनी चटाई पर वह भी सिमट गया।

पौ फटी और धीरे-धीरे सुबह की रोशनी फैलने लगी जहां कासिम लेटा हुआ था, वहां अब तह की हुई चटाई थी।

उस दिन सुबह नमाज पर आनेवालों ने देखा, मस्जिद के सामनेवाले काले पत्थर पर, जिस पर कई पीर-फकीर बैठे थे, चाक से कुछ लिखा हुआ है।

सुबह के धुंधलके में लिखावट साफ नहीं दिखाई दे रही थी। मोदीन ने लालटेन की बत्ती बढ़ाई। वहां जो लोग खड़े थे, उनसे वह लिखाई पढ़ी नहीं गई। इस पर क्या लिखा हुआ है? कोई गाली-गलौज? सुना है, हराम खोर लड़के दीवारों पर गाली-गलौज लिखा करते हैं। मोदीन ने वहां से गुजरने वालों को बुला-बुलाकर दिखाया। किसी से पढ़ते नहीं बना। कुछ लोगों को इधर-उधर से एकाध अक्षर समझ में आए।

"यह नई तमिल में है..."

जो पढ़ नहीं पाए, वे इस तरह टिप्पणी करके संतुष्ट हो गए।

"सुबह होने दो।"

सब्र करके लोग नमाज अदा करने चले गए। गांव-भर में एक ही आदमी था जो ताबड़तोड़ तमिल पढ़ सकता था। वह था मम्मात्तिलु। लोग मम्मात्तिलु को बुला लाए। उसने पहले मन-ही-मन पढ़ा। फिर अपने चारों ओर खड़ी भीड़ को देखकर बताया—

"इसे पढ़ना भी हराम है।"

"तोबा कर लेंगे। पढ़कर बताओ तो..." गांववालों ने उसे प्रेरणा दी।

"मैं अपनी जबान से कैसे बोल पाऊंगा। क्या मैं मुसलमान नहीं हूं?"

"उससे क्या? पढ़के बताओ न! क्या यह बैत[1] है?"

"नहीं!" मम्मात्तिलु ने कहा।

"तो तमिल कविता है?"

"वह भी नहीं"। थोड़ी देर खामोश रहने के बाद मम्मात्तिलु ने पूछा, "तो पढ़ दूं?"

"पढ़ो" गांववालों ने जोर से कहा।

"शोर न मचाओ।"

मम्मात्तिलु ने दोनों हाथ उठाकर लोगों को शांत किया। सबकी निगाहें मम्मात्तिलु पर जमी थीं। मम्मात्तिलु के ओठों के स्पंदन को लोग उत्सुकता से देख रहे थे। चारों तरफ सन्नाटा। मलया तंगल की कब्र के पास नारियल के सूखे पत्ते पर बैठे कौए ने 'कांव-कांव' किया। लोगों ने एकजुट होकर उसे भगाया। मम्मात्तिलु जोर से पढने लगा—

"मस्जिद का पैसा लूटनेवाले मुहल्ले के सरपंच! फौरन इस्तिफा दो। अवाम को धोखे में मत रखो। किसी के बाल मुंड़वाकर इस्लाम की खिदमत करने की बनिस्बत बेहतर होगा कि तुम दीन के सही माने समझो, उसके मुताबिक जिंदगी बिताओ।—एक समाज सेवी बनो।"

लोग थोड़ी देर तक बुत की तरह खड़े रहे। फिर एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। कुछ लोग उस पवित्र पत्थर पर लिखे हराम से भरे उन शब्दों को देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाए, इसलिए अपनी दृष्टि दूसरी ओर घुमा ली और कुछ लोग हराम से भरे उन जुमलों को झांककर देखने लगे।

"दखो मत। आंखों को नापाक न करो। कल आगिरम[2] में जन्नत का नजारा इन्हीं आंखों से देखना है।" बुजुर्गों ने लोगों को मना किया। गांववालों ने उन अक्षरों को देखने के गुनाह के लिए तोबा किया।

"अस्तफीरुल्लाहिल अजीम तौबा!" लोगों ने आंखों को इस अंदाज से पोंछा, मानो अक्षरों में लगे ऐब को मिटा रहे हों।

मस्जिद का मोदीन दांतों तले उंगली दबाए दीवार के सहारे बुत की तरह खड़ा रहा। मदरसे के बच्चे जमा हो गए। उस दिन मदरसे की छुट्टी का ऐलान किया गया। दूसरों की नजर से बचाने के लिए काले पत्थर के उस हिस्से को, जिस पर वे जुमले लिखे गए थे, कपड़े से छिपाया गया। लोग फरीद पिल्लै के इंतजार में खड़े थे।

थोड़ी देर में ममदाजी आ पहुंचे। उन्होंने उठाकर देखा। उन्हें कुछ समझ में नहीं आ

1. स्तुति-गान

2. परलोक।

रहा था। उन्होंने देखा, पीर फकीरों ने जिस पत्थर पर आराम किया था, उसे कपड़े से ढंक दिया गया है। गांववाले भारी सदमे से घिरे इधर-उधर बैठे हैं और सिर पर हाथ रखे जैसे दुख के बोझ को उतार रहे हैं। क़ुल मिलाकर यही लग रहा था, जैसे यहां कोई मौत हो गई हो।

"क्या बात है?" ममदाजी ने एक बैंगे से पूछा। बैंगे ने ममदाजी को इस प्रकार घूर कर देखा, मानो अपनी आंखों से उन्हें जला डालेगा लेकिन उसकी आंखें ममदाजी पर जम नहीं रही थी। कारण, उसकी दोनों पुतलियां अलग-अलग दिशाओं में फैली थी।

"अरे, बात क्या है?" ममदाजी ने फिर से पूछा।

"तुम्हारी वजह से आई है यह बला। काहे को तुम यहां आए। बिस्तर बांधो और अपने गांव का रास्ता लो। वरना सब लोग तुम्हें बांधकर समुंदर में डुबो देंगे।"

ममदाजी ने फिर किसी से कोई पूछताछ नहीं की। सीधे पूरब की ओर चलकर एक गली में मुड़ गए। घाट की ओर जानेवाली गली। नदी में भी पानी कम था।

14

जुमेरात का दिन ढल चुका था, जुम्मे की रात में ग्यारहवीं का चांद चमक उठा। कुलत्तुपल्ली मस्जिद में उस रात 'कुतबियत' की तैयारियां हो रही थीं। मुहैद्दीन अब्दुल कादिर जिलानी की तारीफ में बनी 'याक कुतुबा' शायरी पढ़ी जाएगी।

कुतबियत के लिए चढ़ावा खूब आता है। उबले अंडे, घी के गुलगुले, भुने चावल, पुट्टु[1] दूध वगैरह-वगैरह। कोलंबो जाकर घर का रास्ता भूले पतियों की वापसी के लिए, कोलंबो व सिंगापुर में रहनेवाले बेटों से अम्बुरोस के जरिए मनिआर्डर प्राप्ति के लिए, अविवाहित लड़के-लड़कियों के निकाह के लिए, बांझ औरत के औलाद होने के लिए, बेटा और कभी-कभी बेटा पैदा होने के लिए बीमारी दूर होने के लिए और इस तरह की सैकड़ों हाजतें, मिन्नतें। इन मनौतियों के पूरे होने के लिए हर महीने ग्यारहवीं चांद की रात 'कुतबियत' के मौके पर चढ़ावों का अंबार लग जाता है।

ओट्टपनै[2] और सीधी चट्टान के बीच में छप्पर वाली छोटी-छोटी झोंपड़ियों में रहनेवाले गरीबों के लिए अलग से बनाई मस्जिद है कुलत्तुपल्ली। यहां पर 'कुतबियत' पढ़ी जाती है। कुतबियत के दिनों में मगरिब (संध्या की नमाज) और 'इशा' (रात की नमाज) पर

---

1. भुने हुए चावल के चूरे और नारियल को मिलाकर भाप में पकाया जानेवाला व्यंजन।
2. ताड़ का वह वृक्ष जो भूतों का डेरा है।

काफी तादाद में लोग इकट्ठे होते हैं। ओट्टपनै और सीधी चट्टान के पश्चिम में पक्के मकानों और चहारदीवारियों में रहनेवाले खानदानी अमीर तथा पत्थर के पुख्ता मकानों और कोठियों में रहने वाले 'कुरैशी' कुलत्तुपल्ली मस्जिद में कदम नहीं रखते। गरीबों की बस्ती में बनी छोटी मस्जिद के पास भटकने से उनकी शान में बट्टा लग जाता। यह सब 'ऐब' वाली बात है।

ओट्टपनै और सीधी चट्टान के पश्चिम में खानदानी अमीरों की शौकत में चार चांद लगाते हुए शान से खड़ी है मालिक इब्नुद्दीन की बनाई पत्थर की मस्जिद। उसके पिछवाड़े वाली बंजर जमीन पर पुरानी झोंपड़ियों में नरक की जिंदगी बसर करनेवाले 'ओसा' और नाव खेनेवाले लोग कुतबियत वाली रात को अपने काले बदन पर फटा-पुराना अंगोछा डाले धीरे-धीरे पूरब की ओर चलते। हमेशा की तरह कुलत्तुपल्ली की मस्जिद में आज भी आनैविलुंगी ओसा सबसे पहले हाजिर हो गया।

इबादत के अंदाज में सिर ढंककर आनैविलुंगी मस्जिद में दाखिल हुआ। घुसते ही भीतर की बंद हवा तिलचट्टे की बदबू समेत तेजी से बाहर निकली।

चढ़ावे के ढेर पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। उसके पास भक्तिभाव से बैठकर मक्खियों की फौज को भगाने में मशगूल मम्मात्तिलु ने झट से अपनी नाक बंद करके चारों ओर देखा। आनैविलुंगी को भी भी गौर से देखा। इस तरह देखने का मतलब आनैविलुंगी भी समझ गया। उनकी कटार-जैसी मूंछों के नीचे काले कीड़े-जैसे होंठों पर उभरी मुस्कान अपने पीलपांव से नाच उठी।

वह स्याह मुस्कान मम्मात्तिलु की समझ में भी आ गई।

बरसों पहले, ईद की जकात में किसी 'मुदलाली' की दी हुई कमीज पहने आया है आनैविलुंगी। बंद गले वाली लाल रंग की कमीज। कमर पर काली किनारीवाली लुंगी, कंधे पर 'जयकोडी' का तौलिया। इसी वेश में उसने न जाने कितनी ईदों की चोटियां, बेशुमार जुम्मों की दीवारें और अनगिनत कुतबियत निशाओं की गहराइयां लांघी हैं। कहते हैं, अल्लाउद्दीन की तिलिस्मी पोशाक ने कभी पानी नहीं देखा, और इसी तरह आनैविलुंगी की पोशाक ने भी कभी पानी का मुंह नहीं देखा। इस लिबास से तिलचट्टे की ही नहीं उसकी दवाई की बदबू भी आ रही थी। कमीज की तहों और जेब के आसपास तिलचट्टों के अंडों और कीड़ों के अवशेष चिपके हुए थे। कमीज और लुंगी पर जगह जगह छोटे-छोटे छेद भी थे, कीड़ों द्वारा कुतरने से बने छेद।

"क्यों भई, बेहद गंदी बू आ रही है न?"

"अरे क्या बताऊं, बक्से में रखी थी। तिलचट्टे बहुत हैं। दवाई की गोली डाल रखी थी।"

"अरे, एक बार धोबी से धुलवा ले!"

"भाई, यह एकदम नई कमीज है। एक बार भी नहीं धोई। एक बार ईद के मौके पर 'ईना चेना' मालिक ने इसे प्रेम से दिया था। उनको गुजरे आठ-दस साल बीत गए, फिर भी मैंने इसे नया बनाए रखा है। एक बार पानी में धोने से पुरानी हो जाती है ना! इसलिए जस-का-तस रखा है इसे।"

आनैविलुंगी ने कमीज झाड़कर ठीक कर ली। चेहरे पर खुशी का भाव प्रकट हुआ। फिर उसकी नजरें इधर-उधर, चारों ओर चलने लगी। एकाएक उसके काले ओठों पर काली मुसकान नाच उठी। "वाह, पांच-छह टोकरियां आई हैं।" उसने धीमी आवाज में पूछताछ की।

"पुट्टु है।"

"सच!" खुशी उमड़ पड़ी।

"हां"

किसके यहां की मनौती है?"

"मीरान पिल्लै काका के यहां से"

"उसी भगोड़े लड़के की वापसी के लिए?"

"ना भई, 'मीनपाडु' नहीं है न? चैत में मछली होने के लिए मनौती हैं।"

आनैविलुंगी की आंखें खुशी से चमक उठीं। मन में आशा के सौ-सौ फूल खिले।

"मेरे सोना भैया, एक बात मानोगे?"

"क्या?"

"घर में दाना-पानी देखे दो दिए बीत गए। चढ़ावा परोसते वक्त मेरा हिस्सा तो दोगे ही, साथ में बेटी का हिस्सा और नाती-पोतों का हिस्सा भी मिला देना। रब आपको आठों जन्नतें गिन-गिन कर देगा। मस्जिद बनाने का पुन्न मिलेगा। भूखों मर रहे हैं।"

"अच्छा, देखेंगे।"

"एक कश खींच लो।" आनैविलुंगी ने जेब से माचिस निकाली और छोटी उंगली से धकेलकर उसे खोला, उसमें से एक बीड़ी निकालकर मम्मात्तिलु की ओर बढ़ाई, "सुलगा लो।"

इतने में एक लड़की टोकरी में कोई चढ़ावा लाई। मम्मात्तिलु ने उसे लेकर अंबार में पलट दिया। हजारों-लाखों मक्खियां एक साथ उड़ीं और चक्कर काटकर फिर से उसी अंबार पर बैठ गईं। मम्मात्तिलु फिर से बाहर सीढ़ी पर आकर बैठ गया और बीड़ी के कश खींचने लगा। काला धुआं गोल-गोल उड़ता हुआ मस्जिद की छत तक पहुंच गया और पास में खड़ी नारियल की पौध के शीर्ष पर तिरता रहा। धुएं की तेज दुर्गंध में नेफ्थलीन की बदबू दब गई।

आनैविलुंगी के मोटे ओठों पर हवस इमली के पेड़ की तरह फैल गई।

"नीचे नहीं फेंक देना बीड़ी का टुकड़ा, इधर मेरे हाथ में दे दो। आनैविलुंगी का हाथ मम्मात्तिलु के ओठों तक बढ़ा। मम्मात्तिलु ने कसकर कश लगाया तो आग बीड़ी पर बंधे धागे तक आ गई।

"बस, बस!" आनैविलुंगी बेसब्री से बोला। धुआं मम्मात्तिलु के मुंह और नाक से बाहर निकल रहा था। होठों पर उंगलियां रखकर उसने होशियारी से बीड़ी निकाल ली, वरना उंगलियां जल जातीं आनैविलुंगी ने भी सावधानी से टोंटा ले लिया और थूक लगी बीड़ी ओठों पर रख कर वह कहीं भागा, 'अभी आया भई!'

कुतबियत शुरू होनेवाली थी।

आनैविलुंगी तेजी से लौटा। हाथ में टोकरी। साथ में झुग्गी-झोंपड़ी के लड़कों की फौज़। इस फौज में देवी मंदिर के पास रहनेवाले सुनारों-लुहारों के बच्चे थे, रस्सी बुनकरों के अलावा सिलबट्टा खोदनेवाला वेलायुधन भी था। घाट की बूढ़ियां आईं। भूखों-नंगों की यह फौज 'चढ़ावे' का पदार्थ हथियाने आई है। देखते-देखते ओट्टपनै और सीधी चट्टान के पूरब में रहनेवाली पूरी आबादी कुलत्तुपल्ली मस्जिद के सामने इक्ट्ठी हो गई। भूखी पलटन ने वहां परधूल उड़ाई। चढ़ावा बंटने में देर होते देखकर लोगों का धैर्य टूटने लगा। शोरगुल और चिल्ल पों। ऊपर से मम्मात्तिलु का बेटा पीरू बार-बार टोकरी लिए प्रकट होता था और रहस्यमय ढंग से ओझल हो जाता था। जिस कमरे में चढ़ावे का अंबार लगा था, वह उसके दक्षिणवाली खिड़की के पास जाता और फिर वहीं से ओझल हो जाता।

कुतबियत का संकीर्तन खत्म हो गया तो मसजिद के सामने धक्का-मुक्की शुरू हो गई। चढ़ावा बंटने लगा, लोग एक-दूसरे पर गिरने लगे। जिनको एक बार मिल गया, वे भी बार-बार आगे बढ़ रहे थे। कोई जाने का नाम नहीं ले रहा था। आनैविलुंगी ने अपनी कमीज कमर पर बांध ली और भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा और जोर लगाकर तमाम अवरोधों पर हावी हो गया। उसकी चीख-पुकार के सामने सभी आवाजें फीकी पड़ गईं।

"मालिक! मेरी बेटी के लिए..."

"मालिक! मेरी बिटिया के बच्चों के लिए..."

"मेरी पोती के लिए दीजिए न..."

"मेरी बीवी की हालत नाजुक है। दम तोड़ रही है वह। मरने से पहले उसे मुहद्दीन शेख का चढ़ावा खाने दो।"

सदियों पहले मालिक इब्नुद्दीन की क़दमबोसी से जो जमीन पाक बन गई थी, उसी के ऊपर चमकता हुआ चांद इस धक्का-मुक्की को देख रहा था, इस चिल्ल पों को सुन रहा था। ग्यारहवीं के चांद से फिसलती रेशमी लुहारों-सुनारों की बस्ती में फैलने लगी भीड़ छंट गई, मस्जिद के भीतर से भी लोग चले गए। उसका बाहरी फाटक जब बंद हुआ, उस

वक्त रात का पौन बजा था। एकदम बंद। गलियां सुनसान। सड़कों, गलियों पर दूध-सी चांदनी बिखरी हुई थी। चेण्डपल्ली चट्टान से कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई दे रही थी, मानो निद्रालीन गांव के खर्राटे भरने पर कुत्ते की अपनी प्रतिक्रिया जता रहे हों।

ग्यारहवीं रात के चांद ने जिस पथ पर अपनी उजली नीली चादर बिछाई थी, उसी पथ से नीरवता में सोए गांव में एक नया शख्स दाखिल हुआ। यह बात अगले दिन जुम्मे की नमाज के बाद गांववालों को मालूम हुई।

जुम्मे की नमाज के बाद जब लोग बाहर निकलने लगे, तो यह नया शख्स लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए ऊंची आवाज में कुछ बोलने लगा। उसके बोलने के अंदाज से खिंचकर लोग ठिठक गए और एक दूसरे की ओर ताकने लगे।

"सारे मुसलमानों में इत्तिहाद लाने के लिए एक-एक मुस्लिम को शहीद होना चाहिए। हर एक मुसलमान को जिहाद के लिए तैयार होना चाहिए।"

किसी की समझ में कुछ नहीं आया। अपनी-अपनी पगड़ी उतारकर लोग अपने सफाचट सिर खुजलाने लगे।

"क्या फरमा रहे हैं भई! ये कहां के 'मोयली' (मौलवी) हैं?"

हर एक ने हाथ फैलाया 'नहीं पता।'

जिन्ना टोपी पर बना है दूज का चांद घुटने तक झूलता हरा कुर्ता, लाल पायजामा, कंधे पर पीले धागे से कशीदा की गई मक्का शरीफ की शाल सीने तक लंबी दाढ़ी... लाल-लाल आंखें। ऊपरी जबड़े पर दो सुनहले दांत। हरा कुर्ता पसीने में तर हो रहा था। फिर भी वे रुके नहीं, जोश में हाथ ऊंचा उठाए बोल रहे थे। गर्दन के दोनों ओर की नसें फड़ककर उभरी थीं। मुंह से फिचकुर छूट रहा था।

लोग उन्हें घेरकर खड़े हो गए। वे दोनों हाथ उठाए बोले, "बैठो, बैठो!"

मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद में अजान लगाने के लिए बने ऊंचे चबूतरे के नीचे रेतीली जमीन पर लोग पालथी मारकर बैठ गए। कुछ लोग उकडूं बैठे थे। दीवार से सटकर खड़े हुए कुछ लोग दांतों से नाखून कुतर रहे थे।

"बोलो कूलू तकबीर!" अपनी मुट्ठी को ऊंचा उठाते हुए उन्होंने आवाज लगाई, "अल्लाहो-अकबर!"

भीड़ ने एक साथ आवाज उठाई, यह जाने विना कि यह सब माजरा क्या है और ये नारे किसलिए लगाए जा रहे हैं।

मस्जिद के अहाते के चारों ओर दीवारों पर बैठकर बीट कर रहे कौए और दूसरे पंछी इस नारे को सुनकर उड़ गए। मस्जिद के अहाते के चंदन के पेड़ों पर बैठे बाज भी पंख फड़-फड़ाकर उड़ चले। इधर-उधर सोनेवाले लोग भी हड़बड़ाकर उठ बैठे।

बुजुर्गबार का गला सूख गया था। थककर वे काले पत्थर पर बैठ गए।

'पानी-पानी' कहते हुए उन्होंने अपने गले पर हाथ रखा। मीरासा पानी लेने भागा। बुजुर्ग ने पानी पिया। गले में तरी आई।

"आपका नाम?" फरीद पिल्लै ने बड़े अदब से पूछा।

"पहचान नहीं रहे हैं?" वे फरीद पिल्लै को घूरने लगे। लाल आंखों से फिसलती निगाह नर्म लग रही थी फरीद पिल्लै डरे और सहम कर दो कदम पीछे हट गए।

"याद नहीं आ रहा।" फरीद पिल्लै बोले।

वे जोर से हंसे।

"मैं ठेठ तमिल में बोला, इसीलिए नहीं समझे।"

"शायद।"

"यहां पर एक समुंदर था। अब भी है?"

"हां, जी!"

"यहां चेण्डपल्ली की चट्टान थी। अब भी है?"

"हां, है तो।"

"यहां पर एक उण्डविट्टान चट्टान थी। अब अभी है क्या?"

"हां साहब, है।"

"उण्ड़विट्टान चट्टान से जरा दूर पुलिबंगु नाम की एक जगह थी। अभी है क्या?

"हां, है। लेकिन वहां पर कोई नहीं जाता।"

"क्यों?"

"नदी किनारे रहनेवाले राम पणिक्कन ने पुलिवंगु में काजू के पेड़-से फंदा लगाकर खुदकशी कर ली। उसका प्रेत दोपहर के वक्त भी वहां घूमता रहता है।"

"ओह,... ठीक है! उसमें एक नारियल खड़ा था। अभी है क्या?"

"हां जी, है। खूब फलता है। लेकिन उस नारियल को कोई नहीं तोड़ता।"

"क्यों?"

"जो भी उस पेड़ का नारियल खाता है, राम पणिक्कन उसे मार डालता है।"

"अब पूछो मैं कौन हूं।"

"नहीं भाई, पता नहीं चल रहा।"

उन्होंने जोर का ठहाका लगाया। सभी लोग उनकी वह हंसी सुनकर और उन लाल आंखों को देखकर डर गए। फरीद पिल्लै भी।

15

नावों में बैठकर चोरी-छिपे लंका जाने वालों में कुछ लोग अमूमन वापस नहीं आते। कुछ तो वहीं मर भी जाते हैं। मौत की खबर महीनों बाद रिश्तेदारों को मिलती। फातिहा उसके बाद ही अदा होता। बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो घर चिट्ठी लिखते हैं और पैसा भी भेजते हैं। बहुत-से लोग चिट्ठी तक नहीं भेजते। घर-परिवार को भूलकर शहर कोलंबो की किसी गली के कोलाहल में घुल-मिल जाते। सरकारी अमला कभी-कभी मुस्तैदी से काम करता। धर-पकड़ शुरू हो जाती। जो लोग कागज-पत्तर के बिना पकड़े जाते, उन्हें तत्काल जहाज द्वारा वापस भेजा जाता। बदलने के लिए दूसरा कपड़ा तक उनके पास नहीं होता और वे खाली हाथ घर लौटते।

समुद्र के काले चेहरे की झुर्रियों को देखते हुए औरतों को अपनी खोई जवानी याद आती, गए वसंत याद आते। ऐसे में आंखें बरस उठतीं, हृदय में उमड़ते काले बादल आंखों की राह बरस जाते। कोलंबो भागने वालों में ज्यादातर नहीं लौटे, उनमें से अनेक वहीं मिट्टी में मिल गए। इसलिए जो लोग भाग जाते, उनके बारे में लोग चिंता भी नहीं करते। सब यही मान लेते कि कोलंबो गया होगा।

बेवा पात्तुकुट्टी के बेटे अली कण्णु को लोक-स्मृति की भित्ति से गिरे कई साल हो गए। उसके लापता होने से लोग दुखी या परेशान नहीं हुए, बल्कि उन्होंने राहत की सांस ली। गांववालों ने कभी भी उसे अलि कण्णु नाम से नहीं पुकारा। गांव में वह 'कोपप्पुलन'[1] नाम से प्रसिद्ध था। उसकी नाभि औसत आकार से कुछ बड़ी थी, इसलिए बचपन में ही उसे यह नाम दे दिया गया था। केवल उसकी उम्मा ही हैजे से मरने तक उसे प्यार से 'अलि कण्णु' पुकारती थी। उसने अपने लाड़ले को कभी 'कोप्पुलन' नाम से नहीं पुकारा। इसी बात पर वह गांववालों से लड़ पड़ती। पूछती, 'बोल रे, तूने क्या गोदी में लेकर यह नाम रखा है?'

बुढ़िया ने जब आखिरी सांस ली, अपने लाड़ले का नाम लेते हुए ही मरी–'मेरे लाल... अली कण्णु..'

श्री चित्तिरै तिरुनाल महाराजा के सिपाहियों ने चोरी के किसी मामले में पुदुक्कडै हाट पर कोप्पुलन को पकड़ लिया। नारियल के पैने छिलके से उसके सीने को खोद डाला। लेकिन वह रोया बिलकुल नहीं। नाखूनों के बीच में आलपिनें ठोंक दीं, तब भी वह टस से मस नहीं हुआ। अपनी गलती कबूल नहीं की। भगवान अनंत पद्मनाभ की रियासत

1. ऊंची नाभि वाला।

तिरुवितांकूर की सरकार और पुलिस को उसके सामने हार माननी पड़ी।

उसका यह साहस देखकर किसी ने यों ही उड़ाया—'कोप्पुलन के सीने में डबल दिल है !' लोगों ने इसे सच माना।

रोज-रोज लात और घूंसे खाकर भी उसकी सेहत बरकरार रही, बल्कि वह तगड़ा ही होता गया। उसे खांसी क्यों, छींक तक नहीं आई। बुखार तक नहीं आया। सीना चौड़ा होता गया।

कोप्पुलन की सेहत का रहस्य क्या है, इस विषय पर शोध करके पूक्कुंजु ने निष्कर्ष निकाला—'जो खावै वेडलै उसे न होवै घाव'।[1] पुलिवंगु और चेण्डपल्ली चट्टान के पास कच्चे नारियल के छिलकों का अंबार क्यों लग गया था, इसका रहस्य लोगों की समझ में आया।

"ओ हो.. यह बात है ! अब समझे, पुलिवंगु में और नदी किनारे नारियल की चोरी करनेवाला कोप्पुलन ही है !" लोगों ने आश्चर्य के साथ इसका समर्थन किया।

"लेकिन उसके सीने पर दाग तो कोई नहीं पड़ा !" दूधवाले मम्मेली ने शंका प्रकट की।

"उसका सीना रगड़ खाए तभी न दाग पड़ेगा। अरे वह तो औंधे मुंह चढ़ सकता है ताबड़तोड। उसे देखकर नारियल का पेड़ भी झुक जाता है !" पूक्कुंजु अपनी नाक के अंदर चुटकी-भर सुंघनी चढ़ाते हुए बोला।

लोगों को अब इस बात में जरा भी शक नहीं रहा कि पूरे इलाके में हो रही चोरियों के पीछे कोप्पुलन का हाथ है। पेड़ से कच्चे-पके नारियल के गुच्छे, दीवार बेधकर बरतन-भांडों की चोरी, खपरैल हटाकर घर में घुसपैठ—यह सब कोप्पुलन की करामात है।

लोगों की फरियाद का एक नमूना यों है—'आदरणीय थानेदार साहब की खिदमत में, अहमद बस्ती कुरवन विलाकम निवासी अबु पिल्लै के बेटे मुहम्मद नूह की फरियाद। मेरे घर के पिछवाड़े अहाते के अंदर बाहिफाजत रखे कांसे के देग को, जिसकी कीमत पचास रुपए है, चीलांदि विलाकम के आलीसम पिल्लै[2] के अठारह साल के बेटे कोप्पुलन उर्फ अली कण्णु ने चुराया है...'

फरियादों की संख्या बढ़ती गई। थाने की अलमारी फरियादों से भर गई। दस्तावेजों पर धूल जमने लगी। वे धूल में डूब गए। कागजों के अंबार में तिलचट्टों के अंडे और बिच्छू पलने लगे। फरियादों-शिकायतों का टीला बड़ा होता गया। आखिर पुलिसवालों का सब्र टूट गया। जवानों ने गट्ठे के गट्ठे फरियादें फाड़ डालीं और उनमें आग लगा दी। थाने के अहाते से कागज जलने की दुर्गंध उड़कर चारों ओर फैल गई।

---

1. जो कच्ची गरी खाता है, उसे अंदरुनी चोट नहीं लगती।

2. अ[illegible] हसन पिल्लै

"रामकृष्ण पिल्लै !" इंस्पेक्टर ने हेड कांस्टेबल को बुलाया।

"सरकार !"

"बोलो, क्या करना है?"

"हुक्म कीजिए, क्या करना है?"

"इससे तंग आ गए हैं, न?"

"जी हां, साब !"

"तुम्हें कोई रासता सूझ रहा है?"

"वह मर जाए, तभी बला टलेगी।"

"इसके सिवा कोई और चारा?"

"हम लोग यहां से बदली करा लें !" हेड ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

इंस्पेक्टर पेरुमाल चेट्टी मार्क पेंसिल[1] को अपने गाल पर गड़ाए सोच में डूब गया।

पुलिवंगु का यह नारियल बागान सरकार ने उस जमाने में मीरान पिल्लै के दादाजी के नाम लिख दिया था। दीवान पेशकार ने अपने हाथों रजिस्ट्री करा दी थी।

जापानी पापलीन की कमीज के ऊपर बाघ मार्क रुमाल लगाकर जन्नत्तुल फिरदौसी इत्र और रानी चंदन साबुन की सुगंध फैलाते हुए गांव में आनेवाले कोलंबो के व्यापारियों की नजर पुलिवंगु में खड़े हरे-भरे वृक्षों पर पड़ी। सुपुष्ट नारियल-गुच्छों को देखकर ऐसा महसूस होता था, जैसे युवा लड़कियां चमकीले कर्णफूल पहने खड़ी हैं। कुल दस एकड़ तीस सेंट की जमीन पर वह बागान फैला हुआ था। वे लोग तरह-तरह के तोहफे लेकर मीरान पिलै के दादाजी के सामने हाजिर हो जाते—रानी चंदन साबुन, फिरदौसी इत्र, शेर मार्का छतरी।

"जनाब, आपकें सुनहले हाथों से कुछ लिखा पढ़ी होनी है। हम ताजिंदगी शुक्रगुजार रहेंगे।" इतना सुनना होता कि वे पसीज उठते।

"उण्डविट्टान चट्टान के दक्खिन, अरब सागर और सफेद रेत के उत्तर, अनंत विक्टोरिया मार्ताण्डम कनाल नामक पुत्तन नदी के पूरब तथा कुट्टिनाडान बस्ती के पश्चिम में दस एकड़ तीस सेंट के फैलाव वाले पुलिवंगु में पचास सेंट जमीन मय पेड़-पौधों के..."

मुंचिरै की कचहरी में कई बार बाएं हाथ के अंगूठे पर काली स्याही लगी और दस्तावेज पर वह अंगूठा लगा। पुलिवंगु की चारों सीमाएं सिकुड़ती गईं। मीरान पिल्लै के वाप्पा के हाथ में आने के बाद सीमांए फिर सिकुड़ीं। वाप्पा की मौत के बाद मीरान पिल्लै ने इस्लामी कानून के मुताबिक पुलिवंगु पर कब्जा कर लिया तब उनके आधीन जमीन का क्षेत्रफल मात्र साठ सेंट रहा।

---

1. बैंगनी रंग की कापिइंग पेंसिल

किसी साल के जेठ-आषाढ़ के दिन थे। 'चुन्नांबु वाले' मछलियां काफी मिकदार में मिलीं। मीरान पिल्लै ने मछलियां खरीदीं और नमक लगाकर उन्हें सुखाया। कोलंबो में खूब अच्छे दाम मिल रहे थे। उन्होंने उन्हें कोविलपट्टी हाट में नहीं भेजा। तुत्तुक्कुडी बंदरगाह के रास्ते सारा माल कोलंबो भेजा। 'रजूला' जहाज समुंद्र की लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ा—धुआं उगलते, मस्त चाल से।

कोलंबो के 'ईना पीना कूना' व्यापारी के पास से मछलियों की बिक्री के बीजक के इंतजार में मीरान पिल्लै डाकघर की परिक्रमा करते रहे। एक दिन तपती दुपहरी में, जब सूरज जलकर राख हो रहा था, सफेद रेत से भरी राह से आते हुए अम्बुरोस ने एक लंबा लिफाफा उनके हाथ में रखा। अगल-बगल देखकर मीरान पिल्लै ने लिफाफा हाथ में लिया और पसीने से तर बगल में दबा लिया। फिर उसे अंगोछे से ढंका और भूभल जैसी जलती रेत पर नंगे पांव तेजी से घर की ओर चले। मन सरोवर बन गया। उसमें हजारों कमल-कलियां विकसित हो गईं।

"ओ गुड्डी ! बीजक आ गया !" मीरान पिल्लै ने आंगन से ही बीवी को आवाज लगाई।

"सच? मुनाफा हुआ है?"

"और क्या? जरूर हुआ होगा।"

मीरान पिल्लै ने लिफाफा खोला। बीजक बाहर निकाला। उत्सुकता से उस पर नजर दौड़ाई। बिक्री की रकम और खर्च के बाद बाकी रकम को देखा।

"हाय मेरे रब !" मीरान पिल्लै के दिल की गहराई में जैसे किसी चट्टान को बारूद से उड़ा दिया गया हो। वह आवाज पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों की तरह उस गांव के शांत वातावरण में ऊपर उठी और छितराकर नीचे गिर गई।

थोड़ी देर तक समय जैसे पत्थर का हो गया—मौन, निस्पंद पल। दाढ़ी बढ़े चेहरे को बालों की नोक पर आंसुओं की बूंदें ठिठक गईं और भाप में बदलने लगीं। आसमान के बीचों-बीच जलता सूरज भी रेत से भाप को उड़ा रहा था।

"क्या बात है?" बीवी सकपकाई।

"मर गया री !"

"नुकसान हो गया क्या?"

बीमार बच्चे की तरह भावशून्य मुद्रा में सिर हिलाया—"हां।" थोड़ी देर तक खामोशी छाई रही और फिर सूखे होठों से सूखे शब्द ही बाहर निकले, "कोविलपट्टी को माल भेजनेवालों को अच्छा मुनाफा हुआ है।"

उस नुकसान से हुए कर्जे को पूरा करने के लिए उन्होंने पुलिवंगु की साठ सेंट जमीन 'ईना पीना कूना' व्यापारी के नाम पेड़-पौधों समेत लिख दी। मुंचिरै जाने के लिए गोरे बैलों से जुती गाड़ी में चढ़ते वक्त उनके मन में एक तस्वीर खिंच गई—दस एकड़ तीस सेंट जमीन

जब मिली थी तो उस पर घास तक नहीं उगी थी। उसी जमीन पर मेहनत करते हुए एक पीढ़ी ने अपनी हड्डियां और मांस मज्जा गलाकर उसे सरसब्ज कर दिया। आज वही पुलिवंगु उस पीढ़ी की आखिरी कड़ी से छूटा जा रहा है, यह ख्याल आते ही आंखों से 'कुट्रालम'[1] झरना फूट निकला।

'ईना पीना कूना' व्यापारी के पुलिवंगु में नारियल-गुच्छों के कर्णफूल पहने हुए वृक्ष कोप्पुलन को देखकर सिर झुका लेते हैं। सुनसान दुपहर में पुलिवंगु में घुसकर वह कच्चे नारियल तोड़ता, पत्थर पर पटककर उसे छीलता और गटागट उसका मीठा पानी पी जाता। छिलके और खप्पर को वहीं छोड़कर फिर वह चला जाता। रात होने पर नारियल-गुच्छे तोड़ता और चट्टान के बीच पारै[2] गाड़कर उन्हें छील लेता। सुबह की रोशनी फैलने से पहले आनैप्पारै चट्टान लांघकर कीषकुलम नहर पार करता और फिर करुंगल हाट में बेचकर पैसा बटोर लेता।

कोप्पुलन के ऊधम से तंग आकर 'ईना पीना कूना' मालिक ने नदी किनारे झोंपड़ी में रहने वाले राम पणिक्कन को घर बुलाया।

"पणिक्कन ! पुलिवंगु की रखवाली का भार आज से तुझ पर है। वह हरामी का बच्चा इधर पैर भी रखे तो उन्हें काट डालो। फिर जो भी होगा मैं देख लूंगा। थोड़ा पैसा ही तो बहाना पड़ेगा। कोई बात नहीं है।"

"ठीक है, मालिक !"

पणिक्कन हंसिया ऊंचा उठाए पुलिवंगु के चारों ओर घूमता, सिर उठाकर नारियल की चोटी को देखता और बीच-बीच में नारियल-गुच्छों को गिनता।

शुक्रवार की बात है। दोपहर को मुहल्ले के सारे मर्द जुम्मे की नमाज के लिए चले गए। गांव की गलियां एकदम सुनसान।

"मेरे बेटे, तुझे मस्जिद नहीं जाना है क्या? आज जुम्मा है।"

"अरी मां, मुझे भूख लगाती है। खाकर जाऊंगा।"

"उबली मरच्चीनी है, खा ले।"

"लाओ।"

पात्तुकुट्टी ने मुर्गी का ताजा अंडा उबालकर मरच्चीनी के ऊपर रखा और बड़े प्रेम से बेटे को खिलाया।

कोप्पुलन ने मरच्चीनी खाई और अंडा निगल लिया। जोर की डकार ली। कंधे और भुजाओं पर ताल ठोंककर ताकत का जायजा लिया। चौड़े सीने पर पैनी दृष्टि डाली। मुट्ठी बांधकर दोनों हाथ तानकर देखे। बेलनाकार पत्थर को सिर से ऊपर उठाकर घुमाया और

1. तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले का एक प्रसिद्ध जल-प्रपात।

2. नारियल का छिलका उतारने के लिए प्रयुक्त औजार।

कसरत की। फिर दौड़ लगाई पुलिवंगु की ओर। नाटे-से नारियल पर एक ही छलांग में चढ़ गया। चार-पांच कच्चे नारियल गिराए। चट्टान पर पटककर उन्हें छीलने लगा। नारियल को चट्टान पर पटकने की आवाज सुनकर राम पणिक्कन चमचमाता हंसियां लिए भागा आया। कोप्पुलन ने उसे आते हुए देखा। उसका इरादा था कि पणिक्कन पास भी आ जाए तो भी जरा नहीं झिझकेगा। फंस गए तो बस, एक काट, दो टुकड़े।

लेकिन कोप्पुलन भाग खड़ा हुआ। पणिक्कन ने भी नहीं छोड़ा। खदेड़ते हुए पीछा किया। कोप्पुलन चट्टानों पर उछलता हुआ भागा। चट्टानों के बीच की दरारों और खड्डों को लांघा। पणिक्कन हाथ धोकर पीछे पड़ा था। तभी कोप्पुलन की लुंगी उसकी पकड़ में आ गई। कोप्पुलन लुंगी भी छोड़ भागा। चेण्डपल्ली ने चट्टान को पार किया, फिर आनप्पारै चट्टान को, उसके बाद मरच्चीनी की खेती को और आगे ताड़-वृक्षों से भरे उशरत विलै को सभी को अंधाधुंध लांघते और हवा से बातें करता हुआ निकल गया।

"जा, जा...पर जहां भी देखूंगा, काट डालूंगा, काटकर गड्ढे में दफना दूंगा।" पणिक्कन की धमकी कोप्पुलन के कानों में गूंज रही थी।

उस दिन, शुक्रवार की दोपहर को, गांव छोड़कर पूरब की ओर भागे कोप्पुलन ने पूरे चालीस साल बाद उस छोटे-से गांव में कदम रखा—मालिक इब्नुद्दीन की कदमबोसी से उत्फुल्ल गांव में। मस्जिद के सामने खड़ा अबूझ बातें बोलनेवाला मौलवी और कोई नहीं, असल में कोप्पुलन ही था, यह बात गांववालों की समझ में बड़ी देर में आई।

"ओ मां, वह लौट आया !" सुनकर गांववाले कांप उठे।

"अब मैं वह पुराना कोप्पुलन नहीं हूं। अब मेरा नाम है—मुहम्मदलि खां इब्नु आलीसम।" यह बात सुनकर गांववालों की जान में जान आई।

16

'पुन्नमूडु'[1] घाट के उत्तर में नदी का पाट छोटी-छोटी चट्टानों से भरा हुआ है। इस कारण यह स्थान कोच्चत्तु[2] कोना कहलाता है। घाट-किनारे खड़े नारियल भी नाटे कद के हैं। नारियल को लगनेवाले किसी खास वानस्पतिक रोग से ग्रस्त होने के कारण इन वृक्षों के शीर्ष झड़ गए हैं और वे ठूंठ-से खड़े हैं। चट्टानों को दीवार बनाकर वहां एक चात्तान[3]

1. पुन्नै, अर्थात् पुन्नाग वृक्ष, जो औषधिगुणयुक्त है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है।
2. छोटा; कोच्चत्तु कोना, छोटेवाला कोना।
3. शास्ता या अय्यनार, एक ग्राम देवता।

मंदिर उठा है। पास में खड़ा है इमली का एक वृक्ष, जो कि बढ़वार रुक जाने से छोटा और फलहीन है। उसी पेड़ की दक्खिनी डाल पर किसी आदमी की लाश लटकी हुई थी।

नदी-घाट के उथले पानी में उत्ताल[1] गड़ाकर मछली पकड़ रहे लोगों ने उस लाश को देखा। 'उत्ताल' छोड़कर वे चिल्लाते हुए किनारे की ओर भागे। दक्खिनी तट पर खड़े होकर वे उसे गौर से देखने लगे। रस्सी से लटकी वह लाश धीमी हवा में धीरे-धीरे हिल रही थी। पौ फटनेवाली थी। फिर रोशनी फैल चली। नदी किनारे मंजन करने आए लोगों ने उथले पानी में 'उत्ताल' पड़े देखे। अचरज से चारों ओर नजर दौड़ाई तो उत्तालवाले दक्षिणी किनारे पर मिल गए।

सुबह की हल्की सर्दी में चाय की चुस्की लेने के लिए दुकान पर पहुंचे लोगों को भी इस हादसे का पता चला। मस्जिद के भीतर और बाहर रहनेवालों ने भी यह खबर सुनी कि पुन्नमूडु घाट के दक्खिनी तट पर भीड़ लगी है और किसी की लाश इमली के पेड़ से लटकी हुई है। दर्शक दिवंगत व्यक्ति के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए खड़े थे। उसके जीवन का अंतिम अध्याय किन विकट परिस्थितियों ने रचा होगा, इसके बारे में अनुमान लगा रहे थे।

"यह कौन है बेटे?"

"इस 'मुए' को मरने के लिए और कहीं जगह नहीं मिली?"

"मुसलमान है या काफिर?"

"पता नहीं, कौन है, क्या है?"

"मर जाने पर जड़ शरीर को लाश कहते हैं। मुसलमान या काफिर नहीं।"

नदी किनारे नारियल के पेड़ भी गुमसुम थे। सुबह की सर्द हवा में सिर्फ उनके लंबे पत्ते सिहर रहे थे। पूरब में चेण्डपल्ली चट्टान के पेट पर पैर टिकाकर लाल सूरज ने भी झांककर देखा। ठंडी, हल्की धूप रेतीले मार्गों, मकानों की सफेद दीवारों और समय के साथ-साथ काले पड़ गए छप्परों-बाड़ों पर बिखरने लगी थी।

मछली के झाबेवाले पैदल और साइकिल-सवार मुख्य मार्ग से दक्खिन की ओर तेजी से चले जा रहे थे। सागर तट पर शायद मछली आई होगी, यही उम्मीद थी। रात को जाल लेकर कट्टुमरम पर गए मछुआरे जरूर लौटे होंगे।

उस दिन चाय की दुकान में ग्राहक कम थे। सुबह को दूहा गाय का दूध पीतल के बरतनों में रखा था। उसे केले के पत्ते से ढंका गया था। पत्ते के निचले हिस्से पर दूध के झाग लगे थे। दुकान का मालिक चाय बना रहा था। तह करके बांधी लुंगी को कोयले

---

1. कोणाकार बुनी टोकरी जैसी चीज, जिसे उथले पानी में औंधा करके मछली पकड़ते हैं। इसके अंदर बने कक्ष में मछली फंस जाती है।

की कालिख से बचाने के लिए उसने लुंगी के ऊपर अंगोछा बांध रखा था। बहती नाक को उसने उसी अंगोछे से पोंछा। फिर दरवाजे पर आकर आने-जानेवालों को उत्सुकता से ताकने लगा। उसे ग्राहकों का इंतजार था। राहगीरों को देखकर वह बरबस मुस्कुराता। कृत्रिम और व्यापार मे आई मंदी के कारण उदासी से भरी मुस्कान।

कढ़ाई से निकाले गए गरम 'आप्पम'[1] से भाप उड़ रही थी।

देखा, पान की लताओं को पानी देकर सिंगारम लौट रहा है, गीले कपड़े और पसीने से तर-बत्तर बदन। दुकानदार के चेहरे पर मुस्कान। निमंत्रण भरी मुस्कान।

"आप्पम तैयार हैं?" सिंगारम ने पूछा।

"हां खूब गरम है।"

सिंगारम ने कंधे से काक्कोट्टै[2] उतारकर रखा। पानी छंट जाने के लिए उसे औंधा कर दिया। दीवार पर टंगी थीं मक्का-मदीने की तस्वीरें। वह उनके नीचे पड़ी पतली बेंच पर बैठ गया। दुकानदार ने केले का पत्ता निकाला। फिर जिस अंगोछे से नाक पोंछी थी, उसी मैले कपड़े से पत्ते को साफ करके सिंगाराम के सामने बिछाया। उस पर दो आप्पम रखे और ऊपर से चटनी उंड़ेल दी। सिंगारम ने आप्पम के तले हुए छोर को हाथ से तोड़कर मुंह में रखा। स्वाद अच्छा था।

"मोयलाली"[3], सुना आपने?"

"नहीं तो, क्या बात है?"

''ठेकेदार हैदरूस मुदलाली मर गए।''

"अरे, कब?"

"कल। आपको पता नहीं?"

"नहीं तो !"

"हीरा जैसे मोयलाली। जो भी भूखे पेट पहुंच जाए, भर पेट कंजी पिलाते थे।" सिंगारम ने अफसोस प्रकट किया। सिंगारम के दर्द का मुदलाली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उनकी नजर तो सड़क पर थी, ग्राहकों की तलाश में।

"यहां से कोई मुदलाली कब्रिस्तान नहीं गए?"

दुकानदार ने 'पता नहीं' के अंदाज में हाथ फैलाए।

"अभी दो दिन पहले देखे थे, भले-चंगे थे। मैं सुखाई मरच्चीनी और करुप्पट्टी (ताड़ का गुड़) पहुंचाने के लिए बिटिया की ससुराल गया था। वहां पर गाड़ी या बस नहीं जाती न? पैदल ही जाना पड़ा। लौटती बार भूख और थकान से बुरा हाल था। पास में पैसा

---

1. चावल का बना एक पकवान, दोसा जैसा।

2. ताड़ के पत्तों से बुनी गई मश्क-जैसी चीज।

3. मुदलाली (मालिक) सम्मान सूचक शब्द। अमूमन मुसलिम व्यापारियों, दुकानदारों के लिए प्रयुक्त।

नहीं था। सीधे हैदरूस मोयलाली के द्वार पर गया। कूट्टान[1] से भात खिलाया था–भर पेट।"

"तू उन्हें अच्छी तरह से जानता था?"

"बाप-दादा के जमाने से हम लोग उनके खादिम हैं। मेरे पिता ही तो पेड़ पर चढ़कर नारियल गिराते थे।"

"अरे तुमने सुना नहीं, कोच्चत्तु कोने में किसी ने खुदकुशी कर ली। इमली से लटक रही है लाश।"

"ओ मां ! सच?" सिंगारम ने जल्दी-जल्दी आप्पम तोड़कर मुंह में ठूंस लिया।

"चाय पिओगे?"

"पैसा नहीं है, मोयलाली ! जरा-सा पानी पिला दो, बस।"

अंटी में ठुंसा केले के सूखे पत्ते का पुलिंदा खोला। उसमें से दो चक्रम निकालकर दिए। कक्कोट्टै (टोकरी) उठाकर कंधे पर रखी और नदी-तट से होते हुए तेजी से चल पड़ा।

गले में फंदा लगाए जो लटक रहा था, उसे कोई भी पहचान नहीं पाया। इकहरा शरीर, सांवला रंग, काले बाल, दाढ़ी बढ़ा चेहरा, मैली-सी लुंगी।

नदी किनारे रहनेवालों ने अपने-अपने घर बंद कर दिए और मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद की उत्तर दिशा में बने घरों में शरण ली।

"सुना बेटी, वहां कोई लटक रहा है !"

"औरतों ने दांतों तले उंगली दबा ली।

"तड़प-तड़प कर जान निकली होगी न ! अब उसकी रुह भूत बनकर आएगी। उधर जाकर देखना नहीं।" बुजुर्ग महिलाओं ने बच्चों को टोका।

इमली के पेड़ से किसी अभागे के लटकने की खबर मीरान पिल्लै ने सुबह देर से सुनी। पिछले दिन हैदरुस मुदलाली का जनाजा उठा था, मीरान पिल्लै उनके यहां हो आए थे। रात-भर नींद नहीं आई थी। सुबह ही जरा आंख लगी थी।

ठेकेदार हैदरुस मुदलाली की मौत की खबर सुनते ही मीरान पिल्लै की आंखों के सामने मुदलाली का वह रूप खिंच गया–पंद्रह पवुन[2] की सोने की माला हाथ में लिए 'यह लो' कहते हुए पीछा कर रहे मुदलाली ! सब कुछ चले जाने पर भी घर में बचे एकमात्र गहने को देकर मदद करने की दरियादिली ! उस भले आदमी के फरिश्ते-जैसे दयाभाव की याद आते ही मीरान पिल्लै की शोकमग्न आंखें डबडबा आईं। मौत की खबर सुनते ही वे बगल में छतरी दबाकर घर से निकले। श्मशान नदी तट पर नारियलों के साये में चलते हुए आगे बढ़े। उण्डविट्टान चट्टान के खुरदरे रास्ते को पार किया। जाल सुखाने वाले रेतीले मैदान की गर्मी को नंगे पांवों पर झेलते रहे। कूस की तलहटी पार

1. सांभर। दाल के बिना भी बनता है।

2. आठ ग्राम सोना।

करके पूरब की ओर दूर तक बिछी लाल मिट्टी वाली पगडंडी चलते हुए भी मीरान पिल्लै के हृदय में उस मानव-स्नेही की नेकी और उदारता किसी वटवृक्ष की छांह जैसी छाई हुई थी।

जब वे उस गांव में पहुंचे, मिट्टी हो गई देह को मिट्टी में दफन करने की तैयारियां चल रही थीं। लाश को नहलाया गया। लाल रंग की चटाई पर प्रसन्न मुद्रा में सो रहे उस प्रतापी के आखिरी दर्शन के लिए मीरान पिल्लै नीचे झुके। उनकी आंखों से आंसू की एक बूंद मैयत के माथे पर टपकी।

"आपको देने के लिए अब मेरे पास यही बचा है।" मीरान पिल्लै मन ही मन बोले।

अट्ठारह हाथ लंबे सफेद कफन में वह शरीर लपेटा गया। तीन बार लपेटने पर उनकी वह देह एकदम ढंक गई।

दरवाजे पर लटकते पर्दे के उस पार से घनीभूत पीड़ा में डूबी सिसकियां सुनाई दे रही थीं। गोरे गालों पर आंसुओं की एक नदी बह रही थी। कोमल कंठों से निर्गत क्रंदन ने पूरे गांव के वातावरण को निस्पंद कर दिया था। नारियल के पत्ते हवा में हिल नहीं रहे थे; पंछी पंख फड़फड़ाना भूल गए थे। चित्रलिखित-से फूलों पर बैठे भौंरे; ठहरी हुई चींटियां; खामोशी से धुआं छोड़ती अगरबत्तियां, उस धुएं में समाई तेज गंध; गम को भीतर-ही-भीतर समेटे हुए माहौल; और समुद्र की शांत तरंगें।

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहिराजिवून।"

महलनुमा विशाल भवन के हॉल के बीचों-बीच चटाई पर हैदरूस मुदलाली का जड़ शरीर रखा हुआ था। चटाई के चारों कोने पकड़ कर मैयत उठाई गई और फिर उसे आंगन में रखे ताबूत में बंद कर दिया गया।

तपती दुपहरी, मूसलाधार वर्षा, कड़ाकेदार, सर्दी, भयंकर आंधी-तूफान—हर मौसम में समुद्र-तट की दरदरी रेत पर चलकर, दिन-रात पसीना बहाते हुए बड़े प्रेम से बनाई कोठी से हैदरुस मुदलाली सदा के लिए विदा हो रहे हैं—अलविदा। अब वे कभी इस अहाते में नहीं लौटेंगे। उनकी मौत की खबर लेकर जो हवा सुबकती हुई निकली वही दुख और शोक से भरी चारों ओर घूम-घूमकर इस समाचार को हर कान तक पहुंचाती रही। लेकिन अंत में सर्वहारा हो गए उस भलेमानस की अंतिम यात्रा में भाग लेने केवल चार-पांच जने ही पहुंचे।

हैदरुस मुदलाली के सभी खादिम एक-एक करके चले गए थे, लेकिन रुही लूकास परछाईं की तरह आखिर तक उनके साथ बना रहा। उनके अभावग्रस्त दुर्दिनों में भी वह अपने मुदलाली से नहीं बिछुड़ा। अब वह बैठक में पड़ी कुर्सियों की गर्द झाड़ते या शून्य में ताकते हुए दिन काट रहा था।

मुदलाली की मौत ने उसे झकझोर दिया था। सूजी हुई आंखों को बंद किए वह एक

ओर चूर हुआ पड़ा था। जाने क्या-क्या बक रहा था।

मीरान पिल्लै और लूकास ने ताबूत के पिछले पांवों को कंधे पर टिका लिया। फिर वे लोग छोटी मस्जिद की ओर चले।

मैयत को कब्र में उतारा गया।

"मेरे सोने जैसे मालिक, आप जा रहे हैं" लूकास ने जोर-जोर से छाती पीटी और थककर जमीन पर गिर पड़ा। लूकास के सिर को मीरान पिल्लै ने अपनी गोदी में छुपाकर ढांढस बंधाया।

"कोलंबो से एक चिट्ठी आई थी। मोयलाली ने उसे पढ़ा। पढ़ते ही उसे आग लगाकर जला दिया। फिर आराम कुर्सी पर जाकर लेट गए। कहने लगे—छाती में दर्द हो रहा है। बस..." बताते हुए लूकास बेहोश हो गया।

होश आया तो वह फिर फफककर रो पड़ा। बोला, "मेरे मोयलाली चले गए। अब मैं भी नहीं रहूंगा।"

लूकास दीवार पर अपना सिर पटकने लगा।

मीरान पिल्लै जब पुन्नमूडु घाट की ओर चले, उनके मन में हैदरूस मुदलाली का ही चित्र था। साथ ही साथ आ रही थी लूकास की संज्ञाहीन दृष्टि, बिखरे बाल और बहते आंसू...

कल हमारा भी अंत इसी तरह होगा?

क्या ऐसी ही मौतों की नींव पर 'ईना पीना कूना' की शानो-शौकत का महल खड़ा है? मानव-लहू को गाढ़ा करके बनाई हुई ईंटों पर ही पूंजीवाद का महल खड़ा हो सकता है? मीरान पिल्लै ने भीड़ को हटाते हुए कोच्चत्तु कोने पर इमली के पेड़ से लटकते शव को देखा। लगा, उनके शरीर का रक्त-संचार बंद हो गया है।

"लूकास तुम?"

मीरान पिल्लै सिर पर हाथ धरे वहीं जमीन पर बैठ गए।

17

'कोच्ची में मिली नहीं लड़की
कोषिकोड में भी नहीं मिली
वाप्पा ने, अरे मेरे वाप्पा ने
खोज ही ली एक लड़की !'

मम्मात्तिलु के 'मापला गीत' के स्वर आधी रात को चलती समुद्री हवा में घुल-मिलकर कानों तक आए। समुद्र-तट पर बनी अपनी दुकान की रखवाली करते हुए मम्मात्तिलु गीत गा-रहा था। उसका साथ दे रही थी छोटी लालटेन। रात के इस छोर से उस छोर तक गा-गाकर नींद को वह अपने से दूर हटाता रहा। अगर कहीं सो गया तो चोर दुकान के खंभे-तीरे उड़ा ले जाते। रात की ऐसी पहरेदारी में उसे कई दिन हो गए। तभी से रात में नारियल के पत्ते तोड़ने जाना भी बंद हो गया। 'मीनपाडु (मछलियों का मिलना) शुरू न होने के कारण अभी दुकान शुरू नहीं हुई थी और नारियल पत्ते इकट्ठे करने से होने वाली आमदनी भी बंद हो गई। मम्मात्तिलु दुखी था। उसके गाने में दुख की छाया थी।

मम्मात्तिलु के गीत से मीरान पिल्लै की पीड़ा भी घनीभूत हो उठी। उनसे सोया नहीं गया। हैदरुस मुदलाली, जो चार-चार घाटों पर झंडा फहराते राज करते थे, उनका ऐसा दारुण अंत, और उनके खादिम लूकास की ऐसी दर्दनाक मौत...मीरान पिल्लै के दिल में यही सब उथल-पुथल मचाए हुए था। वह बोझिल हो रहा था। ऐसा बोझ, जिसे ढोते हुए वे थके जा रहे हों। ऐसे में नींद कहां से आती? करवट बदलते हुए लेटे रहे। बीच-बीच में कराह उठते, "या मेरे मौला ! तेरा ही सहारा है।" कल अपना क्या हाल होगा, किस-किस तरह से हालत बिगड़ सकती है, इसी तरह की उधेड़बुन बनी रही।

हैदरुस मुदलाली की मौत को क्या स्वाभाविक कहा जा सकता है? लूकास का प्राणत्याग क्या पूर्व नियोजित था? एक तरह से देखा जाए तो दोनों की मृत्यु नहीं हुई, बल्कि हत्या हुई है। खौफनाक खून ! भयंकर और हृदयविदारक हत्या ! चाकू घोंपकर, गोली मारकर या गला घोंटकर प्राण हरने को ही हत्या कहा जा सकता है क्या? किसी के हृदय में घाव करके और फिर उस पर बारंबार वार करते हुए मारने के सुनियोजित दुष्कृत्य को हत्या की संज्ञा न देनेवाली कानून की पोथियां क्या न्यायसम्मत हैं?

हैदरुस मुदलाली के इस अंत की जिम्मेदारी किस पर है? अगर किसी की मौत के लिए जिम्मेवार मुजरिम को सजा-ए-मौत दी जा सकती है, तो इस मौत का जिम्मेवार कोलंबो कमीशन व्यापारी कानून के शिंकजे से कैसे बचा हुआ है? कानून में उसे दंडित करने का प्रावधान कहां है? जब तक हमारा कानून अमीरों और पूंजीपतियों को संरक्षण देता रहेगा, बढ़ावा देता रहेगा, तब तक इस देश में भूखे-नंगे लोगों की पलटन भी बढ़ती रहेगी।

पहले भी कितने ही लोग इस चंबै (मछली) व्यापार में हार गए हैं। उन्हें भारी नुकसान की भरपाई करने के लिए अपने मकान और बागान मुदलाली के नाम लिख देने पड़े हैं। इसी आघात से तो दिल टूटने पर उन्होंने दम तोड़ दिया है। इस वलियारू नदी की भंवर में अपने प्राणों की भेंट देने वालों की भला कोई गिनती है? अरे, कितने ही लोगों को गांव छोड़कर भागना पड़ा है। और फिर पागल होकर भटकनेवालों की गिनती अलग है।

मम्मात्तिलु का वाप्पा भी चंबै व्यापारी ही था। उसके फैलाए जाल में एक बार बेशुमार

मछलियां आईं—नेय्मीन (अरुक्कुला) मछलियां। इस किस्म की मछली की मांग भी बहुत थी, कोलंबो में अच्छे दाम मिलते थे। रात के सन्नाटे को चीरते हुए साइकिल की घंटी बजी। घुप्प अंधेरे को 'टार्च' की रोशनी से चीरते हुए कुषित्तुरै से एक 'मैसेंजर' तार लेकर आया। घर के बाहर घंटी की आवाज सुनकर मम्मात्तिलु का वाप्पा जाग गया।

"तार !"

उसे मालूम था कि तार कोलंबो से ही आया है।

"भैया, जरा पढ़कर सुनाओ।"

मैसेंजर ने तार में दर्ज वाक्य पढ़ा—"अरुक्कुला मछली का बाजार उछला। दर 160 रुपए से 180 रुपए..."

"सच?"

आनंद का पाराबार न रहा। उसने मैसेंजर को इनाम देकर विदा किया।

दिल में खुशियों का सोता फूट रहा था। मन में सपने भरे हुए थे। मलयानिल के झोंकों से झूमनेवाले रंगीन फूलों की मोहक सुगंध !

पौ फट रही थी। हल्की, सुखद सर्दी-भरी सुबह में मुर्गी की बांग सुनाई पड़ी। उसने बीवी को पुकारा—

"अरी, थोड़ी चाय तो बना।"

काली चाय पी ली।

धरती पर अभी धूप नहीं उतरी थी। वह आत्तुपल्ली घाट पहुंच गया। सुलतान को जगाकर नाव उतारने के लिए कहा। सुलतान ठंड से ठिठुर रहा था। ठंडी हवा की छोटी-छोटी लहरों से बुनी साड़ी पहने वलियार नदी की चौड़ी छाती पर तैरती नाव पश्चिम की ओर खिसकी।

सांझ के समय सुलतान की नाव किनारे लगी तो उसमें 'नेय मीन' (अरुक्कुला) का अंबार था। नौका के एक छोर पर मम्मात्तिलु का वाप्पा शान से बैठा सपना देख रहा था। उनके पीछे चार-पांच नावें और, और उनमें भी अरुक्कुला का अंबार।

रात में ही माल लारी में चढ़ गया। वाप्पा भी बैठा। पक्की तंग सड़क पर लारी की उछल-कूद ! फिर धुआं उगलते और चढ़ाई चढ़ते हुए उसका रेंगना। वह कई मोड़ों पर मुड़ी और चीत्कार करती हुई तुत्तिक्कुडी की ओर भाग चली।

मम्मात्तिलु के वाप्पा ने एजेंट से पेशगी ली। पयनीर बस में गांव लौटे। पेशगी में जो रकम मिली थी, कर्जदारों में बंट गई।

सपनों से भरा एक सप्ताह बीत चला और.... आधी रात के सन्नाटे में एक दिन उनके घर के आंगन में फिर साइकिल की घंटी बजी। दरवाजा खोला।

"तार !"

"जरा पढ़कर सुनाओ।"

उसने पढ़ा।

"अरुक्कुला न भेजें। बाजार में मंदी। 100-120 रु. !"

"या मेरे रब !" आधी रात को उनके इस चीत्कार से उन्हीं के सपनों के किले ढह गए।

पंद्रह दिन बाद बीजक का जुलूस ! उसके बाद एक लंबे पत्र की दिग्विजय ! चिट्ठी के आखिर में लिखा था—

'व्यापार में फायदा और नुकसान आम बातें हैं ! अंद्रोत द्वीप से बेशुमार मिकदार में अरुक्कुला बाजार में आ गया था, इसलिए बाजार गिर गया। यह सब रब-उल-अल-अमीनघ के हाथ में है न? रोज पांचों वक्त नमाज पढ़ते हुए इलाही से दुआ मांगिए। परवरदिगार का दिल पसीझेगा। पिघले बिना नहीं रहेगा।

खैर, इस बीजक के मुताबिक जो फालतू रकम आपकी ओर निकलती है, उसकी भरपाई के लिए आपसे जवाब का इंतजार है। तभी हमारा आपस में आगे कारोबार जारी रखना मुमकिन होगा। कर्ज अदा करना हरेक नेक मुसलमान का फर्ज बनता है। आपको जो नुकसान हुआ है, उस पर हमें भी अफसोस है।'

वस्सलाम !

मम्मात्तिलु का वाप्पा खुली हुई चिट्ठी हाथ में लिए खंभे के सहारे लग गया। फिर देर तक खामोशी। बोलचाल बंद। घर से निकलना भी बंद। आंगन में कर्जदारों का जमाव। चारों ओर पान की पीकें। चुरुट का काला धुआं। उसकी तीखी गंध गांव-भर में फैल गई। चुरुट की कितनी ही लाशें जहां-तहां बिखरी पड़ी रहीं।

मुंचिरै के सब-रजिस्ट्रार दफ्तर में वह बाएं हाथ का अंगूठा लुढ़काने भर के लिए बाहर निकला। वही उसका आखिरी निकलना रहा। उसके बाद वह घर में नहीं घुसा। पहने हुए कपड़ों में ही गांव छोड़कर चला गया। दाढ़ी बढ़ाकर फकीर की तरह देशाटन किया। सुनते हैं अजमेर में कहीं उसका इंतकाल हुआ।

ईना पीना कूना मुदलाली के खादिमों और कारिंदों ने आकर घर पर कब्जा कर लिया और बीवी-बच्चों को बाहर निकाल दिया। तभी मम्मात्तिलु की उम्मा और भाई-बहनों को वाप्पा द्वारा की गई घर की रजिस्ट्री का पता चला था।

वे सभी आंगन में खड़े होकर फूट-फूटकर रोए। इतना रोए कि उनका कल्ब[1] चूर-चूर हो गया और पिघल-पिघलकर आंखों के रास्ते बह निकला। उन्हीं आंसुओं में भीगी जमीन पर ईना पीना कूना मुदलाली का दुमंजिला मकान आसमान की ओर देखते हुए उठ खड़ा हुआ।

---

1. हृदय।

मीरान पिल्लै ने इस तरह कई लोगों के बारे में सोचा। कई घटनाओं के बारे में विचार किया। दिनों-दिन मुफलिसी में डूबते जा रहे गांव के बारे में चिंतन किया। पहले तो रमजान के महीने के तीसों दिन मस्जिद में रोजा खोलने की कंजी के खर्च के लिए लोगों में होड़ाहोड़ी रहती थी। आज यह हाल है कि रोजे की कंजी का खर्चा देने के लिए मुश्किल से ही चार-पांच लोग आगे आते हैं। उठे हुए कई हाथ आज थक गए हैं। पिछले साल से रमजान के तीसों दिन रोजा खोलने की कंजी का खर्च ईना पीना कूना मुदलाली स्वयं दे रहे हैं। क्या वह अपनी जेब से यह खर्चा दे रहे हैं? नहीं। कमीशन के बीजक में खर्चेवाले कॉलम में एक आखिरी मद होती है—दान-धर्म। फी गठरी एक चक्रम।

मीरान पिल्लै चटाई पर उठकर बैठ गए। तकिए के नीचे से बीड़ी और माचिस टटोलकर निकाल ली। बीड़ी सुलगाई। कई बार खांसकर थूका।

बिना चिमनी का कुप्पी-लैंप जलाया। मिट्टी के तल का धुआं नाक में घुसा। कुप्पी हाथ में लेकर 'लॉच पेटी'[2] के पास गए। पेटी खोली। जेवर रेहन रखकर पुदुक्कडै से लाए सौ-सौ के बंडलों को हाथ में लेकर गिना। नोट कम होते जा रहे थे। समुद्र इसी तरह ठगी करता रहा तो सारा पैसा खाने-पीने में लग जाएगा।

'या रहीम, मेरे रब ! रास्ता नहीं दिखाओगे?' मीरान पिल्लै ने सोचा। लेकिन ये शब्द अनायास ही जीभ की नोक से फिसलकर बाहर निकले थे।

"वाप्पा, अभी तक नहीं सोए?" नींद से जगकर राहिला ने पूछा।

"नहीं बेटी !...तुम सो जाओ।"

राहिला की भरी जवानी देखकर बाप के दिल में टीस उठी, "तुझे मैं कैसे पार उतारूंगा?"

मीरान पिल्लै फिर चटाई पर आकर बैठ गए। कहीं से बिगुल का लंबा स्वर काक्कानकुलम् अथवा झुके हुए आम के पेड़ के पास से गली के कुत्तों की भौं-भौं। समुद्र की लहरों की धीमी आवाज। रात को मछली पकड़ने के लिए समुद्र में गए मछुआरों की वापसी का शोर। मीरान पिल्लै ने फूंक मारकर कुप्पी बुझाई। चटाई पर लेट गए..."या रब !"

दरवाजे पर दस्तक। कान दिया। फिर से दस्तक।

"कौन है?"

"मैं हूं साहब, मम्मात्तिलु।"

दरवाजा खोला।

"रातवाले जाल में खूब मछली फंसी है। जल्दी चलिए।"

"सच?" उत्तर देने के लिए वहां मम्मात्तिलु नहीं था। सीढ़ी उतरकर वह चला भी गया

---

2. चार पायोंवाला संदूक।

था। अंगोछा उठाकर मीरान पिल्लै ने बदन ढंक लिया।

"ओ गुड्डी...!" उन्होंने बीवी को आवाज दी, "मैं समुद्र किनारे होकर आता हूं। दरवाजा बंद कर ले।"

"पौ फट गई?"...कदीजा जागी।

"नहीं।"

"उजाला हुआ?"

"अभी नहीं।"

"तो जब उजाला हो जाए, तभी निकलना।"

आंगन में फैले अंधेरे का चेचक वाला काला मुंह देखकर वह घबरा गई।

"एक पलीता जला दे।"

"रोशनी होने के बाद जाना ठीक है। इस वक्त रुहानियतें[1] नहाने जा रही होंगी। अभी मत जाओ।"

"घाट में बहुत-सी नेत्तिली लगी है गुड्डी !"

"लगने दो। किसी रुह के सामने होकर बला क्यों मोल ली जाए? उजाला हो जाने पर सभी रुहानियतों को अल्लाह बेड़ी से जकड़ देगा।"

"कुलच्छनी ! अच्छे काम पर जाते समय बुरा शकुन बनाए खड़ी है।"

वे चटाई पर आ बैठे। बीड़ी सुलगाई। घुटनों को हाथ से बांधकर उकडूं बैठे रहे। देखा कि अग्नि का कोई स्फुलिंग आसमान को चीरता हुआ निकल गया।

"देखा? ज्वालामुखी पिशाची अंगार लेकर भाग रही है !" मीरान पिल्लै को लगा, कदीजा की बात में दम है।

तुम्हारी बात सही है गुड्डी !"

मीरान पिल्लै ने अलहमद और कुलहुवल्लाह पढ़कर भूत-प्रेतों को भगाने के लिए सीने पर फूंक मारी।

अजान के इंतार में बैठे रहे। उनका धीरज चुक रहा था।

मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद की ऊंची मीनारों से सुबह की शांति को भंग करते हुए अजान सुनाई दी।

मीरान पिल्लै उठकर भागे। समुद्र-किनारे बहुत-से लोग जमा थे। मीरान पिल्लै ने मन-ही-मन सोचा-नहाने जा रही रुहानियतों ने अपना रास्ता काटने के अपराध में इन सब को क्यों नहीं मारा?

तोम्मा पिल्लै और सिलुवै की नावों में काफी नेत्तिली मछलियां। दूसरे कट्टुमरम भी किनारे लग रहे थे। समुद्र-तट कोलाहल से भर गया।

---

1. मृतात्माएं

"चुक्कु कॉफी !"[1]

कोयले की अंगीठी पर कॉफी का भगोना रखा हुआ था। मम्मात्तिलु चिल्ला रहा था—"अरि मुरुक्कु[2], चुक्कु कॉफी !"

मछुआरों की चीख-पुकार। बारी-बारी से गाली-गलौज।

"मैंने कहा, जाल उधर को फेंको। इस साले ने नीचे खींच लिया। तभी तो माइकोल के जाल में सारी मछलियां फंस गईं !" एक-दूसरे पर आरोप ! मछुआरिनें अलग से झगड़ रही थीं।

"मेरे मापलै[3] ने कहा, पर तेरे मापलै ने कहां माना। तभी तो ऐसा हुआ।" कहा सुनी के बाद वे हाथापाई पर उतर आईं। बीच-बचाव ! चीत्कार और चिल्लाहट ! लहरों के गर्जन पर हावी होने वाली चिल्ल-पों।

"अरि मुरुक्कु, चूडु कॉफी।"[4]

गला फाड़कर उठी मम्मात्तिलु की चीख उस शोरगुल में घुल गई। बड़ी-बड़ी टोकरियों में नेत्तिली भर-भरकर समुद्र-तट पर सूखने के लिए फैलाईं। मीरान पिल्लै हाथों को पीछे बांधे हरेक नाव के पास घूमने लगे। खूब मिली हैं मछलियां।

"या रब ! कम-से-कम अब तो तुमने हमारी दुआ कबूल की। इस बार रहमत दो। अपनी बेटी को पार उतारूं। उसे आठ साल पूरे हो गए।"

सातवें आसमान पर बैठकर सब कुछ देखने-सुनने वाले रब-उल-अल-अमीन से उन्होंने दुआ मांगी।

18

सागर तट पर बसे उस गांव की आंखों में खुशी की चमक। अधरों पर मुस्कान। प्रभातकालीन सूर्य-मंजूषा से निकले पीत वर्णी चूर्ण से मानो किसी नववधू ने अपने गालों को संवार लिया हो। ग्राम-सुंदरी लावण्य से भर उठी हो।

गांव के रेतीले वक्ष पर जनेऊ-जैसी पक्की सड़क। इस सड़क पर इतने सबेरे मछुआरे कहां जा रहे हैं? जरूर ये सब चाय की दुकान को लक्ष्य किए हुए हैं। हां, वे सब दुकान के सामने आकर खड़े हो गए। बॉयलर में पानी उबल रहा है। चाय की आस सबकी आंखों में है। सर्दी से उनका बदन सिहर रहा है, दांत किटकिटा रहे हैं। बाना देखने लायक है।

---

1. सोंठवाली कॉफी।
2. चावल के नमकीन कुरमुरे। कचरी।
3. मर्द, पति।
4. गरम कॉफी।

सिर के बालों से तेल की एकाध बूंद टपक रही है। कमर पर लंगोटी, उसके ऊपर मैला-सा अंगोछा। दुकान के सामने पड़ी बेंच पर जमे हैं और केले के पत्ते पर परोसे गए आप्पम को तोड़-तोड़कर मुंह में रख रहे हैं।

"मछली खूब लगी है?" ताड़ी बेचनेवाले पोन्नन ने पूछा।

"हां भई ! ऊपरवाले ने आखिर रच्छा की। हमारे बाल-बच्चे भूखों मर रहे थे। अब परवरदिगार ने किरपा की।"

गर्म-गर्म आप्पम भूखे पेट मुंह में फटाफट जाने लगा। सूखे गाले में उंड़ेला ठंडा पानी गटागट अंदर चला गया। माइकेल ने अपने कान में खोंसा सिक्का निकालकर मेज पर रखा और फिर उठकर चल पड़ा। रास्ते में मोयदीन की छोटी दुकान से चुरुट खरीदा। उसे सुलगाकर धुआं उड़ाया। कच्ची सुपारी के छिलके को दांतों से काटकर छीला। पके हुए पान की पीठ पर चूना लगाकर मुंह में दबाया, और फिर जब उसे चबाकर थूका तो उसके चेहरे पर जीत चमक उठी। जैसे अखाड़े में उतरा कोई पहलवान पहले दौर की कुश्ती जीतने के बाद अकड़ा खड़ा हो।

यह सुनकर पोन्नन को खुशी हुई कि इस बार खूब मछली लगी है। वह सपनों की दुनिया में पहुंच गया। झुके आम के तले करीने से रखे ताड़ी के मटके। उसके सपने में एल्यूमिनियम के भगोने में उबली मरच्चीनी भी है।

गांव के चौड़े सीने को घेरे खड़े नारियल वृक्षों के पत्तों पर बैठे कौए कांव-कांव करके मेहमानों के आगमन की सूचना देने लगे।

खुशहाली आनेवाली है !

समुद्र पर उड़ते बाज तिरछी आंखों से देखते हुए चक्कर काटने लगे।

सुबह सवेरे समुद्र किनारे लोगों की भीड़ लगी है। पैर टिकाने को जगह नहीं। हर कहीं नेत्तिली सुखाई जा रही है। अभी सर्द हवा चल रही है। नेत्तिली की रखवाली करनेवाली औरतें सर्द हवा से बचने के लिए अपनी साड़ी का आंचल खींचकर कान और सिर ढंके बैठी हैं।

जमीन पर जहां-तहां बिखरी नेत्तिली चुनने के लिए छोटी-छोटी टोकरियों के साथ गरीब बच्चे और भिखमंगे इधर-उधर भाग रहे हैं।

'शर्कर कंजी'[1] का बरतन सिर पर रखे अबु पिल्लै भी पहुंच गए, "ऐ कंजी लो, शर्कर कंजी, बुढ़िया को छोकरी बनानेवाली शर्कर कंजी !"

बांस के डंडे पर चिपचिपाती 'बंबई मिठाई' और हाथ की 'फिरकी' से 'किर-किर' आवाज करते हुए काना परीदु भी आ गया। काने परीदु का गाना भी मजेदार था—

1. गुड़ की पतली खीर

'ले लो मिट्टाय्[1] चीनी मिट्टाय्
हर शक्ल की चीनी मिट्टाय्
बोल मुन्ना बोल मुन्नी
किस शक्ल की चाहो मिट्टाय्
चिरैया लो ततैया लो
हाथी-घोड़ा बिल्ली ले लो
इच्छा है तो 'वाच' ले लो
चाशनी में खिली है मिट्टाय्
पेरिस लंदन घूमी मिट्टाय्
बंबई में आई मिट्टाय्
गोरे की यह प्यारी मिट्टाय्
हर शक्ल की चीनी मिट्टाय्
मुंह में पिघल जाए मिट्टाय्
बच्चों को रिझाए मिट्टाय्
खिलाए मिट्टाय् हंसाए मिट्टाय्...'

मछुआरों के बच्चों ने नेत्तिली लाकर परीदु की थैली भरी। परीदु ने मिठाई को खींच-खींचकर बच्चों की दुबली-पतली काली कलाई में घड़ी की तरह बांधा। जिस बच्चे ने जैसा रूप चाहा, मिठाई उसी शक्ल में मुड़ी, हाथी, घोड़ा, चूहा, कुत्ता, शेर... । बच्चों के हाथ पर लिपटी है मिठाई हर शक्ल में। बच्चे उन्हें देख-देख कर ख़ुश होकर, खिल-खिलाकर हंसते हैं, 'रिस्ट वाच' बचाते हुए उछल-कूद करते हैं। हाथ देखकर समय भी बताते हैं–

"अभी दस बजे हैं !"

धूप से उजली हुई रेत पर सूखती नेत्तिली की आंखें चमचमा रही हैं। इन्हीं गोल-मटोल आंखों के जरिए अम्ली जायका और बढ़िया महक उस माहौल में फैली हुई है। लोगों ने उसे प्रेम से सूंघा।

नेत्तिली करी और मरच्चीनी की सब्जी ! यह ख्याल आते ही लोगों के मुंह में पानी भर आया। आनैविलुंगी ने भी उस हवा को एक बार सूंघा। टोकरी उठाए समुद्र किनारे भागा। उसके पीछे-पीछे बेटे...नाती-नातिनें और पोते...एक छोटी-सी फौज !

मिठाई बेचनेवाले परीदु के सामने आनैविलुंगी ने अपनी एक नातिन को ठेला और याचना की, "ऐ मालिक, देखो इस बच्चे को। इसका बाप नहीं रहा। इसको थोड़ी-सी मिठाई दे दो, यह भी चाट लेगा। तुम्हें आठों जन्नत मिलेंगे। यतीम बच्ची पर रहम करो।"

---

1. मिठाई

"भाग जाओ यहां से। जब देखो यही खटराग। भिखमंगों की तरह मांगते हुए शरम नहीं आती? जाकर अपना काम देखो।" काना परीदु पिंड छुड़ाकर आगे बढ़ गया।

छोटी बच्ची बांस के डंडे पर लिपटी लाल रंग की मिठाई को प्यासी आंखों से देखती रही। बांस पर चिपकी मिठाई के चारों ओर मंडराती अनगिनत मक्खियों को वह अचरज से देख रही थी। उसकी आंखों से रिसे पानी को समुद्री हवा पीकर आगे बढ़ गई। बच्ची के दिल में आया, काश, मैं मक्खी बनकर उड़ सकती और मिठाई पर बैठ सकती।

कोलाहलमय समुद्र-तट !

समुद्र ने लहरों को उछाला। जनता का हृदय समुद्र बना जा रहा था। वहां पर आनंद की लहरें उठने लगीं। उबला हुआ ताड़ का कंद लेकर एक नाडार स्त्री वहां आई। हाथ में मछली खरीदने के लिए ताड़-पत्ते की पट्टी।

मछुआरिनें गर्मी बरसात चैती सूरज के नीचे तपती नेत्तोली की रखवाली कर रही थीं। ताड़ के कंद की सुगंध उनकी नाक में घुसने लगी। होठों पर जीभ फेरकर उन्हें उन्होंने तर कर लिया और कमर पर लटकी थैली से पैसा निकालकर नाडार औरत के हाथ में रखा।

"पैसा नहीं चाहिए कुम्बारी[1], नेत्तिली दे दो।" उसने ताड़-पट्टी आगे बढ़ा दी।

"नेत्तिली ! अच्छा तमाशा है। रात-भर समुद्र पर बिताई है उसने। जान पर खेलकर पहले-पहल लाई गई नेत्तिली तुझे देने के लिए है क्या? बता, पैसा लेना है कि नहीं?"

"नेत्तिली दो।"

"नहीं दूंगी। नीलामी होने से पहले तू कैसे मांग रही है? चली जा रांड़ कहीं की !"

"इधर देख!" नाडार स्त्री का चेहरा तमतमा उठा। गर्दन में पीली डोरी से लटके मंगलसूत्र को हाथ में उठाकर उसने कहा, "मेरा मापलै[2] आसमान छूते ताड़ पर चढ़ने-उतरनेवाला बहादुर है। कुछ भी हो, अशुभ वचन नहीं बोलने चाहिए। अगर तुम्हारे लिए समुद्र देवता है, तो हमारा देवता ताड़ है, समझी? जीभ संभालकर बात करना...वरना...ला पैसा।" और नाडार औरत पैसा लेकर चली गई।

झाबा ढोनेवाले इधर-उधर भागे। वगल में टोकरियां दबाए चंबै (मछली) व्यापारी समुद्र के कृपापूरित दर्शन के लिए उसके किनारे आए। हर जगह प्राणों का स्पंदन, हर जगह चुस्ती।

"चटाई मिलेगी? चटाई मिलेगी?" गंदी नालियों से भरे गांव की बदबूदार गलियों पर चिल्लाते भटक रहे थे। मीम्पिल्लै और सोम कण्णु। मछली बांधने के लिए उन्हें ताड़ पत्ते की चटाइयां चाहिए थीं।

---

1. साथिन

2. मर्द, पति

समुद्र-तट पर जहां सड़कें खत्म हो जाती हैं, साइकिलों की तादाद बढ़ गई। आत्तुपल्ली मस्जिद का गोलक उठाए कुबड़ा लब्बै उचक-उचककर चला। साइकिल पर 'लोड' लेकर जानेवालों के सामने उसने गोलक बढ़ाया, "मस्जिद के लिए पैसा दो।"

मम्मात्तिलु बड़ी तेजी से चल रहा था। उबला हुआ मूंग, गुड़ का पुट्टु, चावल का पुट्टु, मोदक, गुलगुले, मरच्चीनी, छाछ, सोंठवाली कॉफी...सभी चीजें दुकान में तैयार हो गईं।

बिना छप्पर की दुकान चार डंडों के सहारे खड़ी थी। मम्मात्तिलु की जवानी में लिया एक फोटो दुकान में टंगा था। सींगों की तरह मूंछे। उभरा हुआ सीना, फड़कती भुजाएं, भुजदंड पर गोलाकार मांस-पिंड। साहस भरी निगाहें। मोटी-तगड़ी जंघाओं पर लंगोटी। 'बिजली पहलवान' को धराशायी करनेवाले नीग्रो हमीद पहलवान से भिड़ने की तैयारी में खड़ा मम्मात्तिलु ! संभव है, कॉफी पीने के बाद उधार लिखानेवाले ग्राहकों को डराने के इरादे से उसने यह फोटो टांगा हो। भूख से परेशान समुद्र से आनेवाले मछुआरों को वह अपने बासी चुटकुले सुनाकर हंसा रहा था।

उम्मीद से भी अधिक मछलियां लगी थीं। जालों को सुखाने के लिए जगह की तंगी। चार-चार आदमी कंधे पर जाल ढोते हुए धूप की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे। मम्मात्तिलु का छाछवाला मटका खाली हो गया। सोंठ की कॉफीवाले भगोने में तलछट ही बची रही। दो किस्म के पुट्टु बने थे, दोनों ही खाली हो गए तो पीरू रोने लगा।

"वाप्पा, मेरे लिए पुट्टु !" छाछ का मटका और कॉफी का भगोना सिर पर रखे घर लौटते हुए पीरू के धंसे पेट को बिना छुए आंसू नीचे गिरे।"

"पुट्टु क्या खुद खाकर खत्म करेगा? बेचना नहीं है?" मम्मात्तिलु ने बेटे को पीटने के लिए हाथ उठाया। पीरू यह सोचकर घबरा गया कि आज रात को भी फाका ही रहेगा। उसने रहम की भीख मांगते हुए वाप्पा की ओर देखा। डबडबाई लाल आंखों की गहराई में भूख बिल्ली के बच्चे की तरह छटपटा रही थी। यह देखकर भी मम्मात्तिलु ने मुंह फेर लिया।

फिर जब मम्मात्तिलु ने घूमकर देखा तो पीरू खाली टोकरी में शेष बचे नारियल और पुट्टु चूरे को अंगुलियों से निकालकर मुंह में भर रहा था। मम्मात्तिलु ने अब अपनी गरीबी को अपनी आंखों के सामने देखा। लिखते समय सिरजनहार ने जो वर्तनी की भूल की, उसके बारे में सोचकर उसे अफसोस होने लगा। क्या इस दुख का कहीं खात्मा भी होगा या यह कयामत तक यों ही जारी रहेगा? भूख से तड़पते बच्चों के लिए खाना; बारिश में सुरक्षित लेटा जा सके ऐसा छप्पर छवाने के लिए नारियल के पत्ते; पीछे से घिसे, 'बटन' रहित निक्कर की जगह पीरू के लिए एक नया निक्कर। एक इंसान की कम-से-कम जरूरतें भी क्या पूरी नहीं होंगी?

"नेत्तिली का अंबार लग गया?" मीरान पिल्लै ने पूछा।

मम्मात्तिलु जैसे सोते से जाग उठा। बोला, "मीरान पिल्लै काका ! अम्बार लग गया। चार बजे नीलामी होगी। कुरुसडी में।"

मीरान पिल्लै के पीछे बोरी उठाए मीरासा। रेत की गर्मी अभी कम नहीं हुई थी। नारियल के सायों की लंबाई बढ़ती जा रही है।

"ग्यारह रुपए ! ग्यारह-ग्यारह !!" मछली की नीलामी हो रही थी। बगल में फटी-पुरानी डायरी और कान पर पेंसिल का टुकड़ा रखे मुनीम ने बोली लगानी शुरू की। खरीदनेवाले भी बोली लगाने लगे। सिलसिला बढ़ता रहा।

गांव में वह शाम खुशनुमा रही। चैत की हरेक शाम इसी तरह खुशियां लेकर आए, यही प्रार्थना प्रत्येक मछुआरिन के होठों पर थी। ईसा मसीह की तसवीर के सामने घुटनों के बल खड़ी थीं मछुआरिनें। उनका सिर कपड़े से ढंका था।

पीरू ने मोमबत्ती जला ली। उसे सावधानी से हाथों की ओट दिए वह 'कब-रडी'[1] की ओर चला और उसे वहां सो रहे वालै मस्तान साहिब के सिरहाने रख दिया। फिर वह दोनों हाथ उठाए दुआ मांगने लगा, "हे वाप्पा, मेरे लिए एक निच्चर।"

थके-मांदे मछुआरे थकन मिटाने के लिए भुनी हुई मछली को केले के पत्ते पर लपेटे झुके आम की ओर चले और जहां-तहां गोल बनाकर बैठ गए। उनके बीच ताड़ी से भरे मटके रखे थे और साथ में थी उबली हुई मरच्चीनी।

19

इतवार का दिन गया। काम में मंदी। मछली भी नहीं लगी।

चीख-चिल्लाहट नहीं, 'एले लो-एलेसा' का शोरगुल नहीं। समुद्र-तट चैन से कान बंद किए पड़ा है। गाली-गलौज, रगड़ा-झगड़ा, धक्का-मुक्की- इन सबके लिए छुट्टी का दिन। इधर-उधर साए में बैठे मछुआरे जालों की मरम्मत कर रहे थे। जाल की टूटी कड़ियां मिलाने में लगे थे। साथ ही पिछले दिन के कार्य का लेखा-जोखा और मूल्यांकन भी। जाल फेंकते हुए किसने कहां गलती की, इस पर बहस चल पड़ी तो आपस में कहा-सुनी होना सहज बात थी। जगह-जगह अंगीठियों पर गोबर का पानी उबल रहा था, सजाल को उसमें डुबोया जाएगा। उससे भाप उड़ रही थी। भाप में गोबर की बदबू। उस बदबू को झेलते मीरान पिल्लै अपने गोदाम के सामने बैठे उंगलियों पर जोड़-घटाव कर रहे थे। जिन मछुआरों से

---
1. कब्रिस्तान का परिसर।

उस हफ्ते नेत्तिली तोलकर ली थी, उनका हिसाब-किताब हो रहा था। पोरों पर थूक लगाकर नोटों को गिन रहे थे और हिसाब से पैसा चुका रहे थे।

मछुआरे मीरान पिल्लै के चारों ओर रेत पर मंडलाकार बैठे थे।

अनंत विक्टोरिया मातण्डिम् नहर में पानी का बहाव नहीं था, बस, घुटने-भर जमा था। मछुआरों ने जल्दी-जल्दी उस पानी में स्नान किया। हाथों से पीठ को रगड़-रगड़कर नहाए। फिर धुली हुई लुंगी पहन ली। ओढ़ने के लिए 'जयकोडी' मार्का अंगोछा। सभी लोग एक साथ गिरजाघर की ओर चले। पवित्र कन्या मां मरियम और बाल ईशु की मूर्तियों के सामने घुटने टेककर बैठे। अलतार के सामने कन्या-मठ की लड़कियां कोरस में प्रार्थना-गीत गा रही थी।

बलिकाओं के कंठ से प्रवाहित भक्तिगान की मधुर स्वर लहरी में तल्लीन होकर सभी आंखें बंद किए बैठे रहे। अंजलिबद्ध होकर सिर नवाया। मन में ईसा का स्वरूप उभर आया—टीले के ऊपर सलीब पर टंगे ईसा मसीह का वह पवित्र रूप।

सीने पर क्रूस का निशान बनाया-पिता पुत्र और पवित्र आत्मा!

गिरजाघर से बाहर निकलते ही कान के ऊपर खोंसा चुरुट निकाल लिया। उसे सुलगाकर धुंआ छोड़ा। उसके बाद ही वे सब मीरान पिल्लै के गोदाम के सामने हिसाब किताब देखकर पैसा लेने के लिए रेत पर जाकर बैठे। बालों में लगा कच्चा नारियल का तेल माथे पर ढुलक आया। चंबै के हिसाब पर ध्यान देते हुए तेल से चमकते उनके माथे पर झुर्रियां पड़ रही थीं। लेकिन उनका मन झुके आम तले मंडरा रहा था।

जिसका जितना बनता था मीरान पिल्लै ने बाकायदा हिसाब चुकाया, ईमानदारी से एक-एक पैसा चुका दिया। फिर हिसाब की पर्चियों को फाड़ डाला। उठे और उपनी धोती झटककर पहन ली। अ़ब हाथ में एक पाई भी नहीं बची थी।

हो सकता है, कल भी नेत्तिली मिले। खरीदने के लिए पास में पैसा नहीं। चंबै के ये गट्ठे पहले तुत्तुकुडी पहुंच जाएं, तभी पेशगी मिलेगी।

कल?

मन में समस्याओं का झंझावात! मान लो कल बहुतायत से नेत्तिली लग जाए। तब कैसे खरीद सकेंगे? रेहन रखने के लिए सोने के गहने नहीं हैं। बागान भी नहीं हैं। तूत्तुकुडी हो आने में तीन दिन लग जाएंगे। मछली की बहुतायत का पता चल जाए तो पेशगी देने से मुकर भी सकते हैं। ऐसी दशा में कोलंबो में बिक्री होने तक इंतजार करना पड़ेगा। इस बीच यहां मीनपाडु (मछली मिलने का मौसम) ही खत्म हो जाएगा।

किनारे लगनेवाली भारी नावें धूप में सूखने-वाली नेत्तिली और शाम को कुरुसड़ी में हो रही निलामी—इन सबको देखकर आह ही भरनी पड़ेगी। बगल में छतरी दबाए समुद्र तट पर बेकार भटकने का ख्याल आने पर उनके मन ने एक प्रतिप्रश्न उठाया—इतने दिनों

तक व्यापार करके तुमने क्या पाया? उत्तर मांगते हुए यह प्रश्न उनका शिकार करने लगा।

ले-देकर एक ही बेटा है, वह भी कहीं भाग गया। कोई अता-पता नहीं। साथ में रहे, तब भी झंझट।... रोज शिकायतें सुनते-सुनते वे ऊब गए थे। छत को छू रही बेटी की प्यासी निगाहें और खामोशी। केवल हवा में झूमने, सुगंध बिखेरने के लिए खिलते फूल। कोठरी में बंद रहकर यों ही जिंदगी जाया करने की मजबूरी।

इस बेहाली से छुटकारा कब मिलेगा? कब खुली हवा में सांस लेने का मौका मिलेगा? उसकी जिंदगी को अर्थ देनेवाले दिन अब कितनी दूर हैं? बेटे के बिछोह में चुपचाप पर्दे के भीतर अल्लाह से दुआ मांगती बीवी—या रब-रब-उल-अल-अमीन! मेरे बेटे को लौटा दे। दर्द में डूबा उसका चेहरा। थकी हुई चाल। किसी भी काम में मन नहीं लगता।

मीरान पिल्लै ने सिर खुजलाया।

चारों ओर दुख और शोक से भरे चेहरे। मन में भूसे की आग ढोती हुई मानव-पुतलियां। चली-फिरती लाशें, हंसते हुए प्रेत। इस अरब सागर के किनारे बच्चों के 'घरौंदे वाले खेल की तरह लोगों की गृहस्थी चल रही है। सबके सब मिट्टी के घरौंदे हैं। क्षण-भर में ढेर हो जाने वाले घरौंदे। यहां घूमने-फिरने वालों की खुशी कितने दिन टिकेगी? दीए के चारों ओर मंडराते पतंगों की खुशी भी कहीं स्थायी होती है?

लंगड़ाते हुए आ रहे गबरियेल के बदन पर कमीज नहीं थी। उस नंगे बदन पर दरिद्रता के हाथों करीने से रखी गई पसलियों को देखकर, भूख और फाके से कुएं जैसी हो गई आंखों में नमी देखकर मीरान पिल्लै चकित हो गए। उनके मन में गबरियेल की वह छवि उभर आई। गले में सोने की चेन, उंगलियों में अंगूठियां, फिजी रेशम का कुर्ता और ग्लास्को धोती में सजा-संवरा वह बंदरगाह में एक पुलक की तरह घूमा करता था। खपरैल से छवाए गए पत्थर के मकान का मालिक। अपनी नाव और अपना जाल समूचे घाट में गबरियेल ही एकमात्र ऐसा व्यापारी था जो कोलंबो को सीधे माल भेजता था।

मीरान पिल्लै को देखकर गबरियेल खड़ा हो गया। चलने से हो आई थकान मिटाने के लिए नारियल के पेड़ से सटकर खड़ा रहा। दोनों हाथ जोड़कर मीरान पिल्लै को प्रणाम करते समय उसकी आंखें जरूर भर आई होंगी। लेकिन मीरान पिल्लै ने इसे नहीं देखा।

हृदय को छलनी बना रही चिंता को मुस्कान का कवच पहनाते हुए वे गबरियेल के पास आए।

''क्यों, गबरियेल?''

''मोयलाली!''

गबरियेल के मुंह से 'मोयलाली' संबोधन सुनकर मीरान पिल्लै एक क्षण के लिए हैरान रह गए। जिस जीभ ने पहले किसी को 'मुदलाली' कहकर नहीं पुकारा, वही आज बड़े विनम्र भाव से उसका उच्चारण कर रही है। बड़े से बड़े आदमी को भी वह सिर्फ 'पिल्लै'

कहकर बुलाता था या 'ऐ' कहकर। लेकिन उसके लहजे में धिक्कार नहीं होता था और संबोधन में गरूर की बजाय प्रेम ज्यादा रहता था।

गबरियेल ने, जिसका सिर किसी के सामने नहीं झुका था यह कसम खाई थी—ईना पीना कूना व्यापारी को चंबै (मछली) नहीं भेजूंगा। वह हर बार किसी मालाबारी की कमीशन-दुकान के नाम माल भेजता था। ईना पीना कूना ने कई बार उसे चिट्ठी लिखी, फिर भी उन्हें एक 'दाना' तक नहीं भेजा।

"अरे, तुम्हारे मालिक के पास और कोई काम-धंधा नहीं? बार-बार मुझे क्यों चिट्ठी लिखते हैं? मैं उन्हें कभी माल नहीं भेजूंगा। कह देना उन्हें।" एक बार गबरियेल ने तूत्तुकुडी मैनेजर से कहा था।

समुद्री लहरों की पीठ पर सवार होकर यह खबर कोलंबों में ईना पीना कूना के कान तक भी पहुंची।

"पौलोस के बेटे गबरियेल की यह हेंकड़ी!" ईना पीना कूना व्यापारी की आंखों से निकली लपट से कोलंबो की गलियां नहीं जलीं। एक शांत गली के खामोश चेहरे की ओर उंगली उठाते हुए उन्होंने चेतावनी दी,

"अच्छा, मैं देख लूंगा तुझे।"

एक बार समुद्र में 'नेयूमीन' (अरूक्कुला) लगी थीं। गबरियेल ने जिस लारी में अरूक्कुला के गट्ठे लादे, वह आह-कराह करती हुई तुत्तुकुड़ी की ओर चल पड़ी और तुत्तुकुडी में ईना पीना कूना व्यापारी के गोदाम के सामने थककर खड़ी हो गई। नेयूमीन के गट्ठे उनके गोदाम में उतारे गए। अगले दिन उन्हें लारी में चढ़ाकर उस फारवार्डिंग एजेंट के गोदाम में उतारा गया, जिसका पता गबरियेल ने दिया था।

इंतजार की पंखुड़ियां विकसित करते हुए दिन एक-एक कर झड़ते गए। एक ठंडी रात में गबरियेल के खपरैल वाले मकान के सामने साइकिल की घंटी बज उठी।

"तार!"

गबरियेल ने तार हाथ में लिया। फिर वापस देते हुए कहा, "पढ़कर बताओ।"

मैसेंजर ने तार फाड़कर पढ़ा-

"आपके गट्ठों में अरूक्कुला नहीं, नारियल के डंडे थे। पत्रे देखें।"

उस तार को थामे उसके हाथ थर-थर कांप रहे थे। गबरियेल अपने सामने खड़ी रात के स्याह चेहरे और उसके सर्द बदन पर नजर गड़ाए पेड़ की तरह निष्क्रिय खड़ा रहा।

चार दिन बाद उसने अम्बुरोस के भेजे लिफाफे को फाड़ा। चिट्ठी को पढ़ने से पहले उन वाक्यों में समाई स्याही गबरियेल के आंसुओं में ओझल हो गई। मन का समंदर उमड़ उठा। जेठ आषाढ़ में उठने वाली लहरें विलोड़ित होने लगीं और किनारे पर सिर पटकते हुए छितरा गई। लहरों के ज़ोर से किनारे का बुरा हाल हो रहा था। समुद्र में झूमती हुई

चलने वाली नावें और कट्टुमरम क्षुब्ध सागर के नियंत्रण से छूटकर मनमानी दिशा में भागने लगे। नावों को नियंत्रित करना दूभर हो रहा था। उन्हें किनारे लगाने के लिए जूझते नाविकों के भुजदंडों पर मांसपेशियां और नसें उभर आईं। जिंदगी के लिए वह आखिरी संघर्ष था। धुआं उगलता जहाज समुद्र में डूब रहा है। गबरियेल को लगा कि जहाज के साथ खुद उसकी जिंदगी भी डूब रही है। गांव में बना उसका खपरैलवाला पत्थर का मकान, घुंघराले बालों वाली बीवी और बोर्डिंग स्कूल में पढ़ रहे भूरी आंखोंवाले गोरे-चिट्टे बच्चे सब डूब रहे हैं।

"मेरे मसीहा, मेरे यीशु!" गबरियेल ने चीत्कार किया। सामने खड़े खंभे को कसकर पकड़ा। उस पर सिर पटक-पटककर रोया। सिर फूट गया और खून की नदियां उसके चेहरे पर बह निकलीं। घर में रोना कलपना शुरू हो गया। उस रुदन ने चीत्कार करती वायु को चीर दिया। आकाश को फाड़ डाला। फिर वह रुदन न जाने कहां जा समाया। आज भी आसमान के किसी कोने में कई बार वह रुदन सुनाई देता है-

समुद्र-तट को कंपाने वाला रुदन और उसकी प्रतिध्वनि।

"मोयलाली!"

"क्या है?"

कुछ बताना चाहता है गबरियेल।

उसके ओठ हिल रहे हैं, लेकिन शब्द जीभ तक नहीं आ रहे हों।

"क्या है, बोलो?"

मीरान पिल्लै समझ गए कि उसे अभी बोलने में दिक्कत हो रही है। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद गबरियेल ने हाथ से अपने पेट की ओर संकेत किया।

उसका धंसा हुआ पेट रीढ़ का चुंबन ले रहा था। मीरान पिल्लै ने सिर झुका लिया।

इंसान की भूख!

"तुम्हारे बच्चे क्या कर रहे हैं?"

गबरियेल उस तालाब में उतरा, जहां चुप्पी का पानी जमा था। कोलाहल करती लहरों के पार उसकी दृष्टि उस जगह पर जा टिकी, जहां आसमान औंधा होकर समुद्र को छू रहा था। खामोशी भरे भारी पल धीरे-धीरे बीतते गए। गबरियेल ने मीरान पिल्लै को देखा। उसने बोलने की ताकत बटोरी। होंठ हिलने लगे। जीभ भी हिली-

"तीन बच्चे थे, तीनों मर गए। बड़ी लड़की छब्बीस साल की हुई, जिंदगी से आजिज़ आ गई और एक सुबह हमने उसे बिस्तर पर मुर्दा पाया। हम लोग बिलकुल नहीं रोए। मंझली लड़की भी दीदी के पीछे-पीछे चली गई। वह भी जीना नहीं चाहती थी। छोटा लड़का हैजे का शिकार हो गया। बीवी अपने जिगर के टुकड़ों की मौत बर्दाश्त नहीं कर पाई। छाती पीटती रोती रही और इसी शोक में घुल-घुलकर एक दिन मर गई। वे चारों बच निकले। मैं ही अकेला यहां फंसा हुआ हूं। मेरा सब कुछ लुट गया। दुनिया उजड़ गई। फिर भी

मैं नहीं मरूंगा। जिस जालिम ने हमारा खून चूसा है और इस हाल में पहुंचाया है, उसकी मौत देखकर ही मैं मरूंगा। मेरी आंखों की पुतली-जैसे बच्चे और जान से प्यारी बीवी जहां सोई हुई है, उसी जगह एक गड्ढा खोदूंगा और पैर पसारे पड़ा रहूंगा। तब तक मुझे जीना ही होगा। खाने के लिए कुछ मिलेगा?" गबरियेल आंखें पोंछकर, हाथ जोड़कर खड़ा रहा! रो-रोकर थक गई आंखों में आंसू भी सूख गए थे। बस, थोड़ी नमी शेष थी।

इस समुद्र-तट के बलि-पशुओं की कतार में मैं कितने नंबर पर हूं—मीरान पिल्लै इसी सोच में डूब गए।

20

आकाश के विशाल आंगन के बीच से सूरज लगातार आग उगलता रहा। उस आग से गांव की रेतीली मिट्टी भुनकर लाल हो उठी। मिट्टी से भाप उड़ने लगी। नारियल और सुपारी के पेड़... किसी सगे-संबंधी की मौत पर मातम मनाते हुए शोक मग्न खड़े थे। जैसे सिर हिलाना भी भूल गए, हंसी-कहकहे भी नहीं; बस निश्चल भाव से चुपचाप खड़े थें। ये देखकर हवा भी रास्ते में कहीं दुबक गई।

आनैविलुंगी के जर्मन उस्तरे ने जिन सिरों को खल्वाट बना डाला था, उन्हें सूर्योदय होते ही दोपहर महसूस होने लगा। धूप के मारे खोपड़ी के दो टूक हो जाने के डर से चंद लोग घरों में सिमट गए। बाकी जो बाहर निकल आए थे, साया ढूंढकर पड़े रहे—समुद्र-तट की ठंडक में, कल्लाम पोत्तै टीले के साए में।

गांव के लोगों के मन में रह-रहकर जहन्नुम के खौफनाक नजारे घूम जाते हैं। आग उगलते हुए डरावने सांप, विशाल कराहों में उबलता हुआ लावा, हड्डियों तक को भस्म कर देने वाली अंगारों की छड़ें—जहन्नुम जैसे दृश्य उनकी कल्पना में जब भी आते तो वे डरते हुए सिर पर हाथ फेरते यह देखने के लिए कि कहीं बाल ज्यादा तो नहीं बढ़ गए। और जब यह अहसास होता तो आनैविलुंगी की तलाश में भागते। कई बार वह खुद आ खड़ा होता।

आनैविलुंगी के पास इन दिनों न नहाने के लिए वक्त है, न मंजन के लिए फुरसत। चर्मपट्टी पर ताबड़तोड़ उस्तरा रगड़ना और दाढ़ी पर क्यारियां बनाना, यही सिलसिला है। उसकी व्यस्तता बढ़ी हुई है।

उस दिन की सुबह आनैविलुंगी के लिए बड़ी मनहूस साबित हुई। वह तड़के ही उठा। जम्हाई और अंगड़ाई ली। बदन को 'चर पर' 'चर पर' खुजलाया। मुंह में पानी भरकर

चटाई पर बैठे-बैठे कुल्ला किया। फिर अपना बक्सा उठाए घर से निकला। तभी उसकी बीवी ने टोका

"सुनो, दांत साफ कर लो, और जो वासी, कंजी रखी है, थोड़ी-सी पी लो। फिर निकलो काम पर।"

"दांत साफ करने के लिए फुरसत कहां है? कंजी पिऊंगा तो हाथ धोने के लिए भी वक्त चाहिए। मुझे जल्दी है, मैं चला।" और वह आंखों में जमी कीचड़ को दीवार पर पोछते हुए बाहर निकल गया।

"कहना मान जाओ, भूख से चक्कर आएगा, कहीं गिर जाओगे। यह लो उमिक्करि।"[1]

अपनी उम्मा के मापलै[2] को देना। बेवकूफ, गधी कहीं की! आज सत्रह-अटारह लोगों के सिर मुंड़ने हैं। सबके बाल बढ़ गए होंगे। तेरे वाप्पा का दिया उस्तरा जिस दिन से चोरी गया, उसी दिन से बरकत हुई है। हां, उसी दिन 'मोयलियार' ने नसीहत दी थी कि बाल बढ़ाने वाले जहन्नुम में जाएंगे।"

"क्यों मेरे वाप्पा के उस्तरे की बुराई करते हो? लंबे अरसे तक उसी से काम किया है तुमने।"

"जा री शैतान की बच्ची, तेरे नालायक वाप्पा ने तो जंग लगा पुराना उस्तरा दिया था।"

"मेरे वाप्पा को नालायक कहा तो मुझसे बुरी कोई न होगी, हां!" मम्मदी ने धमकी दी।

"अरे भाई, तेरे वाप्पा को मैं कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन तेरे वाप्पा ने दहेज में दो रत्ती सोने का 'करनफूल' देने की बात कही थी। वह कहां दिया?

"हाय रे! बाल बच्चे इतने बड़े हो गए और शादी को चालीस साल बीते और तुम्हें अब याद आ रही है करनफूल की! यह तमाशा नहीं तो और क्या है?" मम्मदी ने दांतों तले उंगली दबाई।

"चली जा यहां से और करनफूल के बिना यहां कदम मत रखना।"

"कहां जाकर मांगूं? कब्रिस्तान में पड़े वाप्पा से जाकर?"

इस सवाल ने आनैविलुंगी की बोलती बंद कर दी। जवाब नहीं सूझा तो चुपचाप बीवी को घूरने लगा।

"मनहूस बाप की बेटी और इतना गरूर! ज्यादा जबान चलाई तो जीभ खींच लूंगा"

"जरा खींचकर दिखाओ। मैं भी तो देखूंगी।"

"अरी नालायक, अब तुझे खदेड़कर ही दम लूंगा"।

"सौत लाने का इरादा है क्या?"

"लाऊंगा। छेल-छबीली बीवी लाऊंगा।"

---

1. जली हुई काले रंग की भूसी जो मंजन के काम आती है।

2. घरवाला।

"सठिया रहे इस बुड्ढे के लिए तोडुवट्टी के हाट में लड़कियों का अंबार लगा है! छैल-छबीली से शादी रचाने वाले की शक्ल तो देखो! दो-दो महीने तक बिना नहाए, बिना मंजन किए घूमनेवाले इस मर्द के साथ मेरे अलावा कौन-सी औरत रह सकती है?"

"धत्..." आनैविलुंगी ने उसे मारने को अपना बक्सा उठाया–इसे पटककर सिर फोड़ दूंगा तेरा! दो रत्ती वजनी करनफूल के बिना इस घर में कदम नहीं रखना" और वह उतरकर चल पड़ा।

"सांझ को घर लौटते हुए तोडुवट्टी के हाट से छैल-छबीली को जरूर ले आना! पुरानी झाडू तैयार रखी है इधर। समझ क्या रखा है, लड़की क्या कोई भेड़-बकरी है?"

आनैविलुंगी बड़बड़ाते हुए चला। गाली भी दे रहा था, "मुंहफट, बंद कर अपना यह बकवास। ज्यादा बोली तो गाल फाड़ दूंगा।"

"मियां-बीवी में झगड़ा चल रहा है?" वलियार से नहाकर लौट रहे मीरासा ने पूछा।

"भाई, इस औरत की हिमाकत तो देखो।"

"खैर, जाने दो। चलकर अपना काम देखो।"

"कहती है, मैं मंजन नहीं करता। तुम्हीं बताओ भाई, इसके पेट पर लात तो नहीं मार सकता न।"

मंजन किया होता, तो काहे को कहती कि मंजन नहीं करते हो?" मीरासा ने पूछा।

"अल्लाह की कसम, वाप्पा की कसम; आत्तुपल्ली मस्जिद की कसम, पिछले जुम्मे के दिन जब घर में गुलगुले बने उस दिन मैंने मंजन किया था।"

मीरासा को हंसी आ गई। बड़ी मुश्किल से सहज होते हुए पूछा, "अरे, क्या बात करते हो? पिछले जुम्मे को तुमने मंजन किया, ठीक है। आज फिर जुमेरात है न? पूरे सात दिन हो गए।"

"मंजन करना हो तो भई उमिक्करि खरीदने के लिए पैसा कहां है मेरे पास?"

"छोड़ो भी, तुमसे बात करने लगे तो आदमी पागल हो जाए।" मीरासा ने थूका–'थू', और वह अपनी राह चला गया।

"अरे मालिक, आप भी ऐसा कहते हैं?" आनैविलुंगी ठिठककर पीछे मुड़ा और अपनी बीवी की ओर तर्जनी उठाते हुए बोला, "आज तुझे देख लूंगा।

रास्ते भर वह बड़बड़ाता रहा, "क्या करनेवाला हूं, देख ना..."

"क्यों भई, क्या बुदबुदा रहे हो?" सुबह सवेरे दुकान खोलने के लिए आ रहे मम्मानिफ़ा ने पूछा।

"नहीं मालिक, मेरी बीवी बड़ी चंठ हो गई है। आज सुबह-सुबह मुझसे लड़ने लगी।"

मम्मानिफ़ा बहस करने के लिए वहां नहीं रुका। बीड़ी फूंकते हुए अपनी राह चल दिया।

"अरे प्यारे, बीड़ी का टोंटा तो इधर फेंकते जाओ।"

आनैविलुंगी उसके पीछे भागा।

मम्मानिफ़ा के दिए बीड़ी के टुकड़े को उंगलियों के सहारे किसी तरह होठों पर रखकर वह धुआं खींचने लगा। मुंह और नाक से धुआं छोड़ा। समुद्रतट पर एक लंबा चक्कर लगाया। मछली नहीं लगी है। मम्मात्तिलु की दुकान में सिर घुसाकर देखा। पीरू काले रंग की बेंच पर सोया हुआ है, अगूंठा मुंह में घुसेड़े हुए है। अंगीठी के भीतर जमी राख पर एक बिल्ली लेटी हुई थी। नारियल के साये पर चलते हुए श्मशान वाली नदी की ओर निकला। वहां पर चौपड़ खेलते लोगों के बाल अभी नहीं बढ़े हैं। कुलत्तुपल्ली मस्जिद वाली गली की ओर जानेवाली सीढ़ियों पर चढ़ा। दुकान के बरामदे में घुटने बांधे बैठे लोगों के सिरों की जांच की। ऊंहूं, बाल बढ़े नहीं हैं। डाकघर, अस्पताल, बसस्टैंड सभी जगह घूमकर देखा, किसी के बाल नहीं बढ़े हैं।

आनैविलुंगी को पक्का यकीन हो गया कि लोगों के सिर के बाल इसलिए नहीं बढ़े, क्योंकि बीवी मम्मदी ने आज सुबह बेकार का टंटा खड़ा किया था। उसने दांत भींचे। मम्मदी को जोर से एक लात जमाने की सोची। फिर याद आया, सुबह नूक्कण्णु की दाढ़ी बनाकर बोहनी की थी। शक हुआ पहली बोहनी का ही तो बुरा सगुन नहीं है यह।

अब वह सीधे पुल के नीचे गया जहां नाडात्ति[1] ने अपने घर के सामने छाज पर उबली मरच्चीनी रखी थी। दूर से देखने में वह पुट्टु[2]-जैसी लगी। उसने मरच्चीनी खरीदी। लाल मिर्च के साथ उसे खाया। मिर्च का तीखापन सिर चढ़ा तो आंखों से पानी बहने लगा। नाक से भी। नाक पोंछकर जोर से नीचे फेंकी। मटका-भर ठंडा पानी पिया, गटागट। फिर एक लंबी डकार!

पलटकर बस स्टैंड पहुंचा तो दोपहर हो गई थी। बिना कुछ कमाए वक्त जाया हो रहा था, इससे मन में कुढ़न हुई। कंधे उचका कर ऊपर देखा। सिर के ठीक ऊपर सूरज। सारे बदन से पसीना छूटने लगा। पसीने और धूल के मिश्रण से बदन में चिपचिपाहट। बरसाती पनाले की तरह बहता पसीना कमर पर बंधी लुंगी के बांध में जमा हुआ। सिर पर बंधे अंगोछे से जब वह अपना बदन पोंछ रहा था, तभी मरण विलासम बस सर्विस का चीत्कार सुनाई दिया। थरथराती-लुढ़कती-लंगड़ाती बस अपने अड्डे की ओर आ रही थी। आनैविलुंगी नए शिकार की तलाश में उत्सुकता से उसे देखने लगा। बस आई। बदस्तूर पूरब की ओर मुड़ी और फिर पीछे मुड़कर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके कराहती -सी खड़ी हो गई।

आनैविलुंगी ने दो-तीन बार आंखें भींच- भींचकर देखा। दृष्टि को बार-बार पैनी किया। बगल में अखबार दबाए और हाथ में बैग लिए उतरनेवाला वह नौजवान कौन है?

---

1. नाडार जाति की स्त्री

2. चावल और नारियल मिलाकर भाप में पकाया जानेवाला खाद्य।

उसका चेहरा जाना-पहचाना लग रहा है।

भागकर पास पहुंचा। फिर पास जाकर देखा।

"वल्लाह! यह कौन है रे! मीरान पिल्लै के भाई का बेटा है न!"

कासिम आनैविलुंगी को देखकर मुस्कुराया।

"क्यों जी!"

"अरे, हुलिया ही बदल गया! सिर पर यह क्या है?"

"बाल!" कासिम ने कहा।

"हराम नहीं है? बाल बढ़ाना गुनाह नहीं है?"

"हराम ही समझो। क्या करें? तुम्हें क्या तकलीफ है?"

"उतरवाकर फेंक दे।"

"जरूर उतरवाएंगे। एक काम करो। अपना उस्तरा फरीद पिल्लै के हाथ में देकर इधर भेजो। वे आकर मूंड दें तब उतरेंगे मेरे बाल।"

"ऐसी बात न करो भैया! वे तो सरपंच हैं।"

"सरपंच?" कासिम ने धिक्कार भरे स्वर में पूछा और आग की लपट की तरह चला। हाथों को आगे-पीछे हिलाते हुए वह फौजी जवान की तरह कदम बढ़ा रहा था। सिर पर बड़े-बडे बाल। मांग निकालकर कंघी किए हुए बाल!

कासिम बीच सड़क पर सीना ताने चला जा रहा था। सड़क के दोनों छोरों पर, दुकानों के बरामदे में खड़े होकर लोगों ने उसे देखा। चाय की दुकान में बैठे लोगों ने बाहर आकर देखा और तब तक देखते रहे जब तक वह आखों से ओझल न हो गया।

सबके आश्चर्य का केंद्र था उसका सिर। कंघी किए बाल! हाथ हिलाते तेज हो रही उसकी चाल।

"इस छोकरे की हिमाकत तो देखो। हराम के बाल रखे हैं और उन्हें कंघी से संवारे तनकर चल रहा है!" लोग हक्के-बक्के थे।

"कल जुम्मे का दिन है। मस्जिद में इसका फैसला हो जाना चाहिए। अपने नाम और शोहरत वाली इस बस्ती में इस्लाम के खिलाफ काम करने वाले इस छोकरे का काफिरों की तरह घूमना गुनाह है न?"

"हां, हुजूर!"

"कल मस्जिद में यह मुद्दा उठाना चाहिए।" लोगों ने तय किया।

"ओ... हो! कितना बड़ा ऐबी है!" कुछ लोगों के लिए यह नजारा बर्दाश्त के बाहर था। वे इसे हजम नहीं कर पर रहे थे। बड़ी शर्म आ रही थी, जैसे उन्हें नंगा कर दिया गया हो।

गांव के लोग कासिम को भूल चुके थे। किसी ने नहीं सोचा था कि वह लौटेगा।

असल में उसके भाग जाने पर लोगों ने राहत की सांस ली थी। सोचा था कि वह हमेशा के लिए चला गया। बला टली—ऐसा समझकर ठीक से सांस लेने लगे थे।

"वही बला फिर से लौट आई?" खबर सुनकर फरीद पिल्लै ने पूछा। समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। सिर खुजाते हुए सोचने लगे। दिमाग काम नहीं कर रहा था।

"नाम और शोहरतवाली हमारी बस्ती को इसने जलील कर दिया।" लोगों ने फरियाद की।

"क्या कर दिया उसने?"

"सभी जात भाइयों के सामने, दिन-दहाड़े लंबे बालों में कंघी किए बस से उतरकर चला जा रहा था। हम लोग शरम से डूबे जा रहे थे, लग रहा था जैसे हमारी खाल उधेड़ दी गई है।"

"सच?"

"हां"

"क्या कहा? उसने बाल रखे हुए हैं?"

"हां हुजूर।"

फरीद पिल्लै मस्जिद के सामने वाले काले पत्थर पर थोड़ी देर बुत की तरह बैठे रहे। सफाचट सिर पर मोती की तरह छलकी पसीने की बूंदों को मलमल की शाल से पोंछा। लोग परेशान थे। खोए-खोए नजर आ रहे थे। उठकर पीछे हाथ बांधे चहलकदमी करने लगे। चलते हुए सोचा। बैठकर सोचा। नांक से सुंधनी खीचते हुए सोचा। बीड़ियां पीकर सोचा। टहलते हुए सोचा।

"इसका क्या अंत है।?" मुहम्मद अलि खां इब्बु आलीसम ने अपनी लंबी दाढ़ी को उंगलियों से सहलाते हुए फरीद पिल्लै की ओर देखा।

"उसके वाप्पा को यहां बुलाकर समझाएंगे।"

"सिर्फ समझाने से काम नहीं चलेगा।"

फरीद पिल्लै ने मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम की लाल-लाल आंखों को देखा। दूसरे लोगों ने भी देखा। सब लोग उन दोनों को घेरकर खड़े हो गए।

"उस सिरफिरे छोकरे को जुम्मा मस्जिद में बुलाया जाए। बस पत्थर पर बिठाकर उसके बाल मुंड़वाए जाएं। चेहरे पर कालिख और लाल धब्बे लगाकर गले में खप्परों की माला डाली जाए। फिर गधे पर बिठाकर गलियों में घुमाया जाए।"

"वाह! उम्दा सुझाव है।" लोगों ने वाहवाही की।

"गजब का दिमाग है!" लोगों ने लाल आंखोंवाले मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम के बेजोड़ दिमाग की तारीफ की—जिन्ना का दिमाग।

इब्नु आलीसम ने तुर्रेदार लाल तुर्की टोपी सिर से उतारी। चमचमाती खोपड़ी को अरब

सागर से आ रही मंद हवा सहलाने लगी।

" अगर वह नहीं आए तो?" कुछ लोगों ने शुबहा किया।

"तो उसे बांधकर लाना चाहिए।" इब्नु आलीसम ने गर्जन किया। दांत भींचे। फरीद पिल्लै की ओर उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए देखा। फरीद पिल्लै ने सिर हिलाया, "हां।"

"आनैविलुंगी कहां है रे?" फरीद पिल्लै ने पूछा।

"मैं हाजिर हूं" आनैविलुंगी आगे आया और अदब से हाथ बांधकर सरपंच के सामने खड़ा हो गया।

"अरे!"

"हुक्म दीजिए।"

"उसने क्या कहा?"

"मालिक अपने मुंह से कैसे बताऊं?" वह अपना सिर खुजलाने लगा।

"बोलो, बताओ क्या कहा" लोगों ने आग्रह किया।

"कहता है, आप मुझसे हजामी बक्सा ले जाएंगे और खुद उसका सिर मुड़वाएंगे!" इतना कहकर आनैविलुंगी ने अपना मुंह बंद कर लिया और डरते हुए पीछे हट गया।

"ऐं!" लोग चौंक उठे। सुननेवालों के सिर शर्म से झुक गए। बड़ी जिल्लत की बात है। छिः, यह कहा उसने!

छोड़ना नहीं चाहिए। छोकरे को यों ही नहीं छोड़ना चाहिए। गांव के सरपंच की बेइज्जती गांव की बेइज्जती है। उसे इसी पत्थर पर बिठाकर उसका सिर मूंड़ना चाहिए। फिर चेहरे पर कालिख पोतकर गले में खप्पर की माला पहनानी चाहिए। उसके बाद गधे पर चढ़ाकर गांव में घुमाना चाहिए।"

मुहम्मद अली इब्नु आलीसम पत्थर से उछलकर उठे। लाल टोपी सिर पर रखी और दोनों हाथ उठाकर जोर से बोले, " हां, ऐसा ही करना चाहिए।"

लोगों ने शोर मचाकर फिर उनका समर्थन किया।

"बोलो नारा-ए-तकबीर..." इब्नु आलीसम ने मुट्ठी बांधकर कहा।

"अल्लाहो अकबर!" लोगों ने जवाब दिया।

21

आनैविलुंगी ने गले में एक गोल ढोलक लटका ली। हाथ में टेढ़ा डंका और टीन का भोंपू। गली-नुक्कड़, चौराहे-तिराहे पर खड़े होकर ढिंढोरा पीटता। उसके बाद जंग लगा भोंपू मुंह

में लगाकर जोर से मुनादी करता, "सलाम आलेकुम! सभी लोगों के लिए एक खबर है। मुहल्ले के कायदे-कानून तोड़नेवाले पंडारविला निवासी चबै व्यापारी मीरान पिल्लै के बेटे को कल जुम्मे के रोज मस्जिद में बुलाया जाएगा। मोहल्ले के लोगों के सामने उसका सिर मुंड़वाया जाएगा, मुंह पर कालिख पोती जाएगी और खप्पर की माला पहनाकर गधे पर घुमाया जाएगा।"

"गधे पर घुमाया जाएगा... आ... आ!" आनैविलुंगी के पीछे पूंछ की तरह बच्चों की एक पलटन थी। बच्चे बड़े उत्साह से अंतिम वाक्य दुहराते। वे इस मुनादी के माने समझे बिना यों ही जुलूस बनाकर उसके पीछे थे। उनका मतलब तो उछल-कूद, हो-हल्ले और कलाबाजी से था! मिट्टी में लुढ़कते और एक-दूसरे से भिड़ते। आनैविलुंगी और बच्चों की इस फौज ने पूरे मोहल्ले में धूल उड़ाई। गलियों में शोरगुल और कोलाहल।

दरवाजे पर लटकते टाट के पर्दों को हटाती हुई औरतों ने गली में झांककर देखा। कान देकर ऐलान को सुना तो उनके चेहरे मुरझा गए।" या रब, यह क्या हो रहा है! वह लड़का नहीं है, हीरा है। नेक और तमीजदार। उसके साथ ऐसा सलूक! जालिम हैं ये लोग।" औरतें इस हैवानियत को हजम नहीं कर पाईं।

"आखिर किसलिए?"

"मुझे क्या पता?"

"जो भी हो, एक नौजवान को यों जलील करना गलत है।" वे आपस में फुसफुसाईं।

आनैविलुंगी और बच्चों की पलटन जिन गलियों से गुजरती, लोगों की भीड़ लग जाती। बच्चे और ज्यादा जुड़ते गए। औरतों ने बाड़ के ऊपर से सिर उठाकर झांका।

लोगों में जोश छा गया।

"अच्छा हुआ, इस छोकरे को ऐसी ही सजा देनी चाहिए। कुछ लोग तर्जनी उठाकर बोले। दूसरों ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"जो अदमी इस्लाम के खिलाफ चले, उसे इतनी सजा जरूर मिलनी चाहिए" कहते हुए पल्ली मुम्मूनु किसी दुकान के बाहर लगी पटरी से उछल पड़ा। सिर पर पगड़ी की तरह बंधे अंगोछे को खोला। उसे एक बार झटकाने के बाद दुबारा सिर पर बांध लिया और फिर पहले की तरह पटरी पर जा बैठा।

कुलत्तुपल्ली और आत्तुपल्ली मस्जिदों के सामने सुनारों की गली के नुक्कड़ पर, डाकघर के बरामदे में, सरकारी अस्पताल के सामने, दुकान के आगे, समुंदर किनारे नारियल के पेड़ों तले हर जगह लोग इकट्ठा हुए।

लोगों के मन में एक ही चित्र था, कासिम को पकड़कर उसका सिर मुंड़वाया जा रहा है। इस कल्पना में उन्हें आनंद आता। गधे वाले जुलूस का नजारा मन में आते ही लोग हंसते।

"छोकरे को अभी अगर नहीं दबाया गया तो वह सारे गांव को काफिर बना डालेगा।"

"हां, सच्ची बात है।"

'उसकी हेकड़ी को काबू करना चाहिए।"

"हां जरूर करना चाहिए।"

"हिमार[1] के ऊपर बैठे देखकर मुर्गे की तरह बांग लगाएंगे।"

"हां लगाएंगे।"

"इसकी ऐसी सजा दूसरों के लिए सबक बन जाएगा। आइंदा कोई भी यहां न बाल रखेगा न पेपर पढ़ेगा।"

"अखबार पढ़कर ही तो वह बरबाद हुआ है।"

"काफिरों के लिखे अखबार को पढ़-पढ़कर यह सरकश हो गया है।"

"इसकी हिमाकत की कोई हद ही नहीं। कहता है, तिरुवितांकूर के महाराजा और उनके दीवान सी.पी. (रामस्वामी अय्यर) को कुर्सी छोड़कर चला जाना चाहिए।"

"अल्ला हो अकबर!" लोगों ने इसे सुनकर तोवा किया।

"तिरुवितांकूर के महाराजा साहब और सी.पी. राज्य से निकल जाए तो राज कौन करेगा? इसका बाप?"

"यही तो मैं भी पूछता हूं।"

"गांधी।"

"गांधी? वह कौन है?" लोगों के माथे पर बल पड़ गए।

"यह तो वही जाने। यहां किसको पता? एक मिनट में तीन सौ बार गांधी-गांधी रटता है!"

आनैविलुंगी और वानरसेना गली-गली में घूमकर ढोलक पीटती। आनैविलुंगी हर जगह खड़े होकर जोर-जोर से ऐलान करता।

बीच-बीच में वह अपने सूखे गले को तर कर लेता।

"जरा-सी कंजी हो तो पिलाओ बहन!" बाड़ के ऊपर से झांकती औरतों से वह कंजी मांगता। बासी कंजी मिलने पर उसमें हाथ डालकर टटोलता। उसमें भात न पाकर कहता-

"दो दाने तो डाल दो।"

भात मिल जाने पर भी मांग जारी रखता, "कंजी के साथ छूने-छवाने के लिए अचार-वचार भी मिलेगा?"

अचार मिलने पर उसके साथ गटागट कंजी पी लेता।

मीरान पिल्लै के दरवाजे तक आने पर उसकी चाल धीमी हो गई। सिर मुंड़े किशोर भी ठहर गए। पर छोटे बच्चों के जोश में कमी नहीं आई। उनकी चिल्लाहट बरकरार रही।

---

1. गधा।

ढोलक बजने पर आनैविलुंगी ने खंखारकर अपना गला ठीक कर लिया। मुंह से भोंपू लगाया।

"...पंडारविला घर में चबै व्यापारी..."

"बस बस..." कासिम अपना हाथ ऊंचा किए भागता हुआ बाहर आया। उसे देखकर तमाम छोकरे चारों ओर बिखर गए।

"या अल्लाह यह तो मारने आ रहा है!"

आनैविलुंगी भाग नहीं पाया। खड़े-खड़े मारे डर के कांप रहा था, "भैया, मैं तो नाई हूं। बाल-बच्चों वाला नाई..."

"हमारे घर पर आकर क्यों चिल्ला रहे हो? मैं अखबार पढ़ रहा था।"

"माफ करो भैया! अखबार तो बुरी बला है। अखबार पढ़ना हराम है। सारी बलाओं की जड़ ये बाल हैं। इन्हें उतरवा दोगे, कोई बला नहीं आएगी।" आनैविलुंगी ने नसीहत दी। सिर खुजलाया।

"ये सारी बलाएं जरूरी हैं। सब बलाओं का एक बार टकराव हो जाए। पानी गंदला जरूर होगा, लेकिन बाद में सब साफ हो जाएगा।" कासिम घर की ओर मुड़ चला। देखा, दरवाजे पर वाप्पा खड़े हैं। उनकी आंखें गुस्से से लाल हैं। कासिम सिर झुकाकर चुपचाप अंदर जाने लगा।

"रुक जा रे", मीरान पिल्लै ने धीमे स्वर में कहा, " अब कोई कसर नहीं रही। कोई जिल्लत बाकी नहीं है। देख, घर में क्वारी लड़की है, भरपूर उमर। अब उसके लिए कौन-सा लड़का आएगा? तूने अपनी जिंदगी बरबाद कर ली साथ में इसकी भी। आए दिन तेरे लिए रोते-रोते तेरी अम्मा भी बीमार हो गई है। वह तो अब दिन ही गिन रही है। मैं भी चलती-फिरती लाश हूं। जहर खरीदने के लिए भी मैं बाहर नहीं निकल सकता। बाहर मुंह दिखाने में शरम आ रही है। हमें जहर खरीदकर दे दे और मार डाल। हम इस दुनिया में रहना नहीं चाहते, कल का नजारा देखने के लिए हम जिंदा नहीं रहना चाहते।"

मीरान पिल्लै की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। पक रही दाढ़ी के बालों में आंसू के मोती उलझे रहे। मुंह फेरे वे चुपचाप अंदर गए और चारपाई पर बैठ गए। फिर खिड़की पर कोहनी लगाकर उस पर सिर टिका लिया। आंत चीरती हुई आवाज निकली, "ओ रहमान!" और वे फफक-फफक कर रो पड़े।

आज तक उनकी आन पर कोई आंच नहीं आई। किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। अब वे किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहे। अब कोई भी उनकी इज्जत नहीं करेगा। पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह दाग बना ही रहेगा। घर की छत छू रही इस लड़की को कैसे पार लगाएं?

"बोल, अब कौन आकर इससे शादी करेगा? हम सबको जीते जी कब्र में दफना दिया न? जालिम कहीं का!" मीरान पिल्लै ने छाती पीट ली। "क्या यही दिन देखने के लिए तुझे स्कूल भिजवाया था?" वे आगे कुछ नहीं बोले सके। मानो पूरी तरह टूट चुके

थे। उन्होंने सिर झुका लिया।

"वाप्पा!" कासिम की आवाज में कोई कंपन नहीं था।

"आइंदा मुझे कभी वाप्पा मत कहना। तेरा वाप्पा मर गया। मैं मैयत हूं मैयत! आंखें खोलकर देख ले, इस घर में तीन मैयतें हैं यहां कोई 'हयात' वाला इंसान नहीं हैं।"

"आप लोग इतनी फिक्र क्यों कर रहे हैं? कुछ नहीं होगा। मैंने गलती नहीं की। मैंने जो बाल बढ़ाए हैं, क्या गुनाह है?"

"गुनाह ही नहीं, हराम है, सबसे बड़ा हराम।"

"तब तो जहन्नुम में जानेवाला मैं ही हूं। गांव-मोहल्ले के लोग तो नहीं? ये लोग क्यों भौंक रहे हैं?"

"तमीज से बात कर, वरना जिंदा गाड़ दूंगा!" मीरान पिल्लै जैसे उछले। मारने को हाथ बढ़ाया। खड़े-खड़े कांपने लगे। कासिम दो कदम पीछे हट गया।

"मार डालूंगा तुझे!" मीरान पिल्लै फिर चीखे। घर के अंदर से सिसकियां उठी। उनकी चीख पर हावी होनेवाली सिसकियां।

"काका!" राहिल्ला बिखरे हुए बालों सहित खड़ी थी, भूतनी-जैसी। कासिम ने बहिन की डबडबाई आंखें देखी। उन आंखों में मानो अरब सागर लहरा रहा था। दुख और वेदना की जोरदार लहरें। एक ऐसा बिंदु, जहां पर जिंदगी के आदि अंत का संगम होता है, या यहीं खत्म हो सकती है। सपनों के रंगीन तारों से सुहागरात की सेज की रेशमी चादर बुननेवाली उन आंखों में रस्ती का रेगिस्तान दिख रहा था। थार और सहारा-जैसा रेगिस्तान। उस विशाल रेगिस्तान में हवा में झूमता तुलसी का पौधा नहीं है, महकता हुआ गुलाब नहीं है, रेत है, खाली रेत... दूर-दूर तक फैली रेत। गर्म तपती रेत।

"इन आंखों से बहते आंसुओं को कैसे पोछूं? वहां पर उम्मीद की अंगूरी बेल कैसे पनपाऊं?"

कासिम का दुख उमड़ पड़ा। उसे ऐसे कायर मां-बाप के यहां पैदा होने का दुख था!

"मेरी वजह से आप लोगों की कभी बेइज्जती नहीं होगी।"

"भैया!" संगमरमर के फर्श पर मानो एक छोटा-सा झरना उछल पड़ा हो।

"तू रोना नहीं मेरी बहना! कुछ नहीं होगा, सब्र करो। तुम वह दिन जरूर देखोगी, जब फरीद पिल्लै हार जाएंगे और मैं सीना तानकर चलूंगा। मैं चाहता हूं, कम से कम आगे आनेवाले बच्चे इस बस्ती में चैन के साथ जिएं। बालों में कंघी करके, हाथों में किताबें थामे स्कूल जाएं। अपनी जानकारी बढ़ाएं। कोई भी अंधविश्वास उस अगली पीढ़ी के जीवन में आड़े नहीं आए। मैं जा रहा हूं।" कासिम सीढ़ियों से उतर पड़ा।

लोगों ने हाथ हिलाते हुए शान से जाते कासिम को देखा। उसके बालों को सहलाते हुए चल रही हवा में सुगंधित तेल की खुशबू भरी थी। लोगों ने उस हवा में सांस ली।

उन्हें महसूस हुआ कि 'हराम' बालों से निकलती खुशबू में सांस लेना भी 'हराम' है। जिन लोगों ने इस हवा में सांस ली, अपनी नाक भींचकर खुशबू को सिनक दिया, फेंक दिया! कुछ लोगों ने उसे सामने से आते देखकर अपनी नाक बंद कर ली।

"वो आया रे! पास में आ गया तो लाश-जैसी बदबू आएगी!" कहते हुए कुछ लोग रास्ते से हट गए।

कासिम सीधे बसस्टैंड की ओर चला। उसे बला जानकर लोग सामने से हट गए। मुंह मोड़ लिया। अच्छी जान-पहचान रखने वाले भी अजनबी बन गए। वह भी इनकी अनदेखी करता हुआ बढ़ चला। दकियानूसी खयालों में डूबे हुए लोग। वह मुस्कुराता हुआ अपनी राह चला। चाय की दुकान के सामने वाली बेंच पर बैठा मम्मात्तिलु मस्ती से गा रहा था। उस गीत की तर्ज पर ताल देते हुए कई लोग उसके चारों ओर खड़े थे। मम्मात्तिलु ने एकाएक गाना बीच में बंद कर दिया।

"अरे, यह कौन है?" मम्मात्तिलु ने कासिम को गौर से देखा। पूछा, "खैरियत?"

"हां।"

"कहां तक?"

"तोडुवट्टी जा रहा हूं।"

"कल..."

"हां, कल जुम्मे का रोज है। मस्जिद में जरूर आऊंगा। गधे पर सवारी करनी है न!"

मम्मात्तिलु बेंच से उठ गया।

"एक जरूरी बात है..." मम्मात्तिलु ने उसे पास आने का इशारा करते हुए कहा। कासिम उसके पास चला गया।

"भैया, तुम कल मस्जिद में न आना।"

"आऊंगा"।

"कहना मानो।"

"नहीं मानूंगा।"

"नहीं मानोगे?"

"नहीं।"

"नहीं, तो तुम्हारी मर्जी। सुना तुमने? ईना पीना कूना ने कहला भेजा है, मैं अपने घर से निकल जाऊं।"

"घर से मत निकलना।" कासिम ने कहा।

"कल मुनीम ने आकर हंगामा मचाया।"

"उसके दांत तोड़ देंगे। आपका अपना घर है। बेहिचक रहिए।"

मरण विलासम् बस मुक्काडु की ढलान उतरकर चली आ रही थी। दूर से ही उसका

भोंपू और आह-कराह सुनाई दी। हवा में उससे उठ रहे धुएं की बदबू थी। मम्मात्तिलु फिर बेंच पर बैठकर गाने लगा।

"गाना बंद करो। अब तुम्हारा गाना यहां कोई नहीं सुनेगा," सैनुल्ला ने टोका, उससे बात क्यों की? उससे बातचीत करना हराम है न?"

"क्यों, नहीं बोलना चाहिए?"

"मोहल्ला समिति का हुक्म है।"

"ओह, यह बात है? उसने कौन-सी गलती की है?"

"लगता है, तुम भी उसके साथ मिल गए हो।"

"उसके साथ मिल गया तो क्या बुराई है? मानता हूं, उसने जो बाल बढ़ाए हैं, गलत बात है पर उसके लिए यह सजा? चालीस साल से मैं ईना पीना कूना के बागान में रहता हूं। वे मुझे वहां से निकालना चाहते हैं। इस अन्याय के लिए कौन-सी सजा देना चाहिए? मेरी गैरहाजिरी में मुनीम ने आकर मेरी घरवाली के सामने बतमीजी के साथ बात की। इस गलती के लिए कौन-सी सजा है? बोलो न...।" वहां इक्ट्ठा हुए लोग चुपचाप खड़े थे। किसी को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। मम्मात्तिलु ने उनकी ओर देखा।

"अब क्यों चुप हो गए? बोलते क्यों नहीं?" लोग खामोशी से खड़े रहे उन्हें कोई जवाब नहीं सूझ रहा था।

"किसी नौजवान ने बाल बढ़ा लिए। उसके लिए इतनी बड़ी सजा देना कहां का इसाफ है? एक पूरी जिंदगी को बरबाद करने वाली सजा! यह दाग कभी मिटाया जा सकता है? बोलो। पता है, गांव में हैजा और महामारी क्यों फैल रही है? यहां जालिम लोग जो रहते हैं इसीलिए।"

मम्मात्तिलु ने गुस्से से दांत पीस लिए।

"हम लोग क्या कर सकते हैं? मस्जिद में जाकर बोलो।" लोगों ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

"बोलूंगा। भले ही मेरी आवाज ऊंची न उठे, मैं जरूर बोलूंगा। पहनावे के कपड़े के बिना यह जो मेरा बेटा घूम रहा है पीरू... कल उसकी आवाज जरूर ऊंची होगी। आज हम लोग भूखे-नंगे हैं, कंगाल हैं। हमारी आवाज के ऊंचा उठने का भी क्या फायदा? यहां कौन सुनता है?"

मम्मात्तिलु ने लुंगी को तहकर घुटने के ऊपर कर लिया और बेंच पर जा बैठा। कंधे पर पड़े अंगोछे को सिर से कसकर बांध लिया–

"आज जमाना हाथी का है। बिल्ली का भी जमाना आएगा।"

22

लोगों ने देखा, चेंडपल्ली चट्टान की तलहटी से ऊंचे उठे जामुन के पेड़ों के बीच से जुम्मे का सूरज उगा। जिन्ना मैदान की उजली रेत पर चादर ओढ़कर बैठे हुए लोग सुबह की धूप का आनंद ले रहे थे। पुत्तनार नदी को छूकर आती हवा और प्रातःकालीन सूरज की हल्की गरमाहट जब बदन से लगी तो एक अजीब-सा आनंद आया।

चेंडपल्ली चट्टान से रिसता स्वच्छ जल स्रोत नीचे झर रहा था। दो चट्टानों के बीच से किसी झरने की तरह। लोग उसमें सिर डाले नहा रहे थे। निर्मल जल। हल्की सर्दी। लोग उस जल-प्रपात के नीचे खड़े होकर आंखें लाल होने तक नहाते रहे।

चट्टानों पर कपड़ों को पटक-पटककर धोने की आवाज घरों में निद्रालीन लोगों के कानों में गूंज उठीं। चादरों में नंगा सोया पड़ा गांव फुर्ती से उठा और अपनी नग्नता को छिपाने लगा। जुम्मे की सुबह इतनी जल्दी आ पहुंची, इस पर लोगों को खुशी हुई।

क़ाफ़िराना 'क्राप' के साथ जमाअत की बेइज्जती करते और सीना तानकर चलते उस सिरफिरे छोकरे-को आज सजा दी जाएगी। उसके सिर के बाल काले-काले गुच्छों में स्याह कीड़ों की तरह जमीन पर गिरेंगे। इसी दृश्य को दिखानेवाले शुभ दिन की शुरुआत हो गई है। सफाचट मुंडी ! उसकी चमकती खोपड़ी और चेहरे पर कालिख से काली और लाल रंग की लकीरें भी खींची जाएगी। दीन के खिलाफ काम करनेवाले उस शैतान के बच्चे के चेहरे को बदसूरत बनाने वाला शुभ दिन। खप्पर की माला ! मारियप्पन का गधा! 'बारात' की तरह उसे गली-गली में ले जाने वाले उत्सव का दिन है आज। यह खयाल आते ही छोटे बालों वाली दाढ़ियों के बीच छिपे ओंठ बिचक उठे। पान खा-खाकर लाल हो गए दांतों के बीच उपहास-भरी हंसी की लहरें ! कासिम को अपमानित करने के नजारे की कल्पना करते हुए लोग खिल-खिलाकर हंसे।

पिछली रात 'पंडारविला'—मीरान पिल्लै का घर—सोया नहीं था। कदीजा और राहिला के तकिए भीगकर भारी हो गए थे। उनमें गरम आंसुओं का खारापन समा गया था।

निस्तब्ध रात की धड़कन की तरह उस चटाई से हल्की सिसकियां सुनाई दे रही थीं। वे छोटे-छोटे गोले बनकर ऊपर उठने लगीं और चहार दीवारी से टकराकर छितरा गईं। घुट-घुटकर वहीं जमती रहीं।

"उम्मा !" राहिला अपनी उम्मा से लिपट गई। उसके बदन पर जवानी घुंघरू बांधे खेल रही थी। उसके दिल की गहराई से बुदबुदे की तरह उठ रही पुकार का आशय उम्मा से छिपा न था। जिन गलियों से उम्मा गुजर आई है, उसकी दहलीज पर खड़ी है राहिला, अकेली और बेसहारा। उसके खानदान ने जिस आन को आज तक बनाए रखा था, वह

आज दोपहर को मिट्टी में मिल जाएगी। किसी का दिल दुखाए बिना, किसी की मिल्कियत छीने बिना स्वाभिमान के जिस किले को आज तक बरकरार रखा था, वह आज, जुम्मे के दिन, धराशायी होने वाला है। जिस क्षण यह किला भरभराकर ढहेगा, वह एक जिंदगी की बरबादी की शुरुआत का क्षण होगा। कदीजा ने अब तक जो सपने बुन रखे थे, उनके रेशों को टूटते देखकर उसके हृदय से एक मौन चीत्कार फूट निकला।

"रोओ मत बिटिया ! मेरी जान ! सब्र करो। इन्साफ करनेवाला रब ऊपर बैठा है। वह देखता है। सब कुछ सुनता है। अगर तुम्हारा भाई गुनहगार है तो जिस कोख से वह पैदा हुआ, उसी कोख से तुम भी पैदा हुई हो। इसी वजह से तुम्हारे लिए भी यह पाप ही होगा। मैं क्या कर सकती हूं, बेटी ! अल्लाह हमारा इम्तिहान ले रहा है।"

"उम्मा !" राहिला इस बार जोर से सुबुकने लगी। चारपाई पर चुपचाप घुटने बांधकर बैठे मीरान पिल्लै के दिल में वे सिसकियां तीखे कांटों की तरह चुभने लगीं। असह्य पीड़ा से बाप का दिल अंदर-ही-अंदर तड़प उठा। दांत भींचकर उन्होंने उस पीड़ा को दबाने की कोशिश की। पर वे कामयाब नहीं हुए। वेदना पहले से भी अधिक तेज होकर उनके सीने पर, दिमाग की धमनियों और शिराओं में फैल गई। बेटी की सिसकी सुनकर मीरान पिल्लै से रहा नहीं गया।

चारपाई से वे एक जिंदा लाश की तरह उठे। लड़खड़ाते पांवों को किसी तरह जमीन पर टिकाकर धीरे-धीरे भीतर की ओर चले। टिमटिमाती लालटेन की बत्ती को ऊपर उठाया।

"बेटी !" मीरान पिल्लै का गला भर आया।

राहिला चटाई पर उठ बैठी। आंसुओं में भीगा तकिया देखकर मीरान पिल्लै का दिन चूर-चूर हो गया। राहिला के सूजे चेहरे पर लाल-लाल आंखें। मीरान पिल्लै वहां खड़े नहीं हो पा रहे थे। आंखें डबडबा आईं। बेटी से आंख बचाकर वे पीछे मुड़े और आंखें पोंछ लीं। फिर अपने कमरे की ओर चल दिए और अपनी चारपाई पर आकर बैठ गए। हाथों से घुटने बांधकर सिर झुका लिया। फिर पछताने लगे, "ऐ रहीम ! मैंने कौन-सा ऐसा गुनाह किया जिसके लिए मुझे ऐसी सज़ा मिल रही है।"

झरने के पास चट्टान पर कपड़े पटककर धोने की आवाज सुनाई दी। मीरान पिल्लै ने सिर उठाया। खिड़की से आंगन को देखा। बाड़ पर सुबह की धूप खिली थी—लाल धूप।

जुम्मे का दिन।

उस परिवार के भविष्य का फैसला करनेवाला दिन। धूप की गर्मी बढ़ गई। आसमान के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर, जहां बदलियां तिर नहीं रही थीं, सूरज अपनी सांकल तोड़कर उछलता गया और करीब बीच आकाश में जा बैठा—मालिक इब्नुद्दीन द्वारा सैकड़ों साल पहले बनवाई पत्थर की मस्जिद के अजान मंच के ऊपर।

सफेद कपड़ों में लैस, तुर्रेदार पगड़ी बांधे मोयदीन ने अपनी छोटी उंगलियां कानों में

घुसेड़ लीं।

"अल्लाहो अकबर...अल्लाहो अकबर..."

मोयदीन के बदन में जैसे नई स्फूर्ति भर गई थी। उसने ऊंची आवाज में लंबी तान ली। मस्जिद के दक्षिण में खड़े चंदन के पेड़ की उसांस उस स्वर को ढोते हुए बस्ती में घूमने लगी—कुलत्तुपल्ली-आत्तुपल्ली के सामने, सुनारों की गली में, डाकघर के बरामदे में, अस्पताल के सामनेवाले बाजारों में और समुद्र-किनारे नारियल के साए में।

धुले हुए कपड़ों में सजे-धजे लोगों का एक हुजूम जुम्मा मस्जिद की ओर आ रहा था। पूरी गली इत्र की महक से भरी थी।

संदूक में बंद कीड़ों द्वारा कुतरी हुई टोपियां लगाए लोग आ रहे थे। अमूमन टोपी न ओढ़ने वाले लोगों के सिर पर भी आज टोपी है। पगड़ी न बांधनेवालों ने भी पगड़ी बांध रखी है। जो लोग मस्जिद का रास्ता भूल गए थे, वे भी आज बड़े उत्साह से मस्जिद की ओर आ रहे हैं। घर के कोनों में लावारिस पड़ी टोपियों से उबकाई लानेवाली दुर्गंध उठ रही थी और यह दुर्गंध गली में फैली इत्र की सुगंध पर हावी हो रही थी।

"देखिए लोगों के चेहरे पर ईमान की रोशनी अब झलकी !" काले पत्थर पर बैठकर तसबीह घुमाते हुए फरीद पिल्लै ने कहा।

"सिर मुंड़े टोपी पहने लोगों को कतार बांधे आते देखकर दिल बाग-बाग हो रहा है। क्या अदब है ! क्या शिफ्त है !" अली खां इब्नु आलीसम ने सिर पर रखी लाल टोपी को उतारकर रुमाल से अपनी चांद पोंछ ली।

"मारियप्पन आ गया?"

"हां, आ गया।"

"हिमार?"

"मस्जिद के अहाते में घास चर रहा है।"

"खप्पर की माला?"

"तैयार है।"

"बाकी चीजें?"

"जी, एकदम तैयार।"

"ठीक है दोस्त ! एक पर शक है। वह हरामी आज मस्जिद ही नहीं आए तो?" फरीद पिल्लै ने संशय के साथ पूछा।

"बिरादरी से अलग कर देंगे। पूरे परिवार का बहिष्कार होगा, उम्मा और वाप्पा का भी।"

अली खां इब्नु आलीसम का सुझाव फरीद पिल्लै को एकदम सही लगा।

मस्जिद में आनेवाले लोगों का स्वागत करके उन्हें यथास्थान बिठाने के लिए स्वयं

फरीद पिल्लै और इब्नु आलीसम उत्साह से भरे मस्जिद के बाहर खड़े थे।

"आज मौत कहां हुई है?" अली खां ने फरीद पिल्लै से पूछा।

"बाड़ बनानेवाले मजदूरों की झोंपड़ी में।" फरीद पिल्लै ने नफरत से कहा।

"ओह ! यह तो रोज-रोज होनेवाली मौत है। हाट की ओर ले जाते हुए मैंने भी देखी।"

"एक औरत मर गई। और भी एक मौत हुई है।"

"ये मौतें अच्छी हैं। जुम्मे के रोज मरने से जन्नत मिलती है।"

"इनको जन्नत नहीं मिलेगी। ये लोग मरे हैं हैजे से....।" फरीद पिल्लै धीमे से उनके कान में फुसफुसाया।

नमाज शुरू होने का वक्त हो आया। फरीद पिल्लै काले पत्थर से उठे। साथ में इब्नु आलीसम भी।

"सफेद टोपी के साथ वही तो नहीं आ रहा है? जरा देखिए तो !"

"वही ऐन नजीस है।"

" . ख़र आ ही गया। यहां आए बिना जाएगा कहां?"

खादी की धोती और कुर्ता। कंघी किए बालों के ऊपर खादी की टोपी। स्वतंत्रता-सेनानी की तरह निडरता भाव से कासिम जुम्मा मस्जिद को लक्ष्य करके चला। रास्ते-भर लोगों ने उसे अचरज से देखा। वह सबके चेहरों को गौर से देखते हुए आगे बढ़ा। मुस्कुराया भी। लेकिन लोगों ने सिर झुका लिया। लोग उससे मुखातिब होने से कतरा रहे थे। वे नादान और अनजान बनने की कोशिश में थे। धीर और निष्कपट हृदय ने कासिम को ढांढस दिया। वह सोचने लगा : 'मैं यहां पर अकेला हूं। फिर भी अकेला नहीं हूं। कई नेक ताकतें मुझे रुहानी अजमत दे रही हैं। यों इस वक्त मैं एक महान शक्ति का विशेष प्रतिनिधित्व कर रहा हूं।' यह आत्मविश्वास आते ही कासिम पूरे हौसले से हाथ हिलाते हुए आगे बढ़ा।

हिंदुस्तान को आजाद करने के लिए गांधीजी के पीछे भारत की जनता इकट्ठी हो गई है। ब्रिटिश हुकूमत की कुर्सी के पाए हिलने लग गए। फिर भी हिंदुस्तान की आजादी से पहले हमें अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता जरूरी है। हमें दकियानूसी खयालात की बेड़ियों को काटना चाहिए। बेड़ी में जकड़े चिंतन को आजाद बनाना चाहिए। समाज को दबोचनेवाले अंधविश्वासों की गठरी को जलाकर भस्म कर देना चाहिए। रोग के कीटाणुओं से भरी गुदड़ियां ! आजाद हिंदुस्तान में एक नई पीढ़ी का जन्म होना चाहिए। उस नई पीढ़ी की चट्टानी नींव पर स्वतंत्र भारत की स्थापना करनी चाहिए। पुराने अंधविश्वासों की लोरी गाकर लोगों को सुलानेवाले रजवाड़ों के शासन और उनके मालिक बरतानवी हुकूमत को इस धरती से उखाड़कर फेंका जाएगा। उसके बाद यहां पर जनतांत्रिक शासन की नींव रखी जाएगी। मैं आज अकेला नहीं हूं। अंधविश्वासों के नाम पर मुझ बेगुनाह को सज़ा

देकर ये लोग जुल्म करेंगे तो इस मिट्टी का एक-एक कण चिनगारी में बदल जाएगा।

कासिम ज्यों ही सीना ताने सिर उठाए मस्जिद के पास पहुंचा, उसने मस्जिद की ओर एक जनाजा आता हुआ देखा और वहीं ठिठक गया।

ममदाजी, मम्मात्तिलु, मीरासा और मरहूम के बेटे—ये चारों एक ताबूत को उठाए ला रहे थे। कासिम उनके पास गया। मरहूम के बेटे के कंधे से ताबूत के अगले पाए को अपने कंधे पर लेते हुए वह मस्जिद की ओर चला। ताबूत से मैयत को उठाकर एक तख्ते पर रखा।

खाली ताबूत उठाकर ममदाजी और मम्मात्तिलु तेजी से चले गए।

"जल्दी आ जाना।" कासिम ने कहा।

कासिम हौल[1] की ओर चला। वजू किया और पैर धोने के बाद मस्जिद में दाखिल हुआ। उसके चेहरे पर गजब का हौसला था। यह देखकर लोग हैरान रह गए।

लोगों के मन में एक ऐसे कासिम का खाका खिंचा था, जो इससे एकदम अलग था। ज़र्द चेहरा, सूखे होंठ और फटी आंखें ! अपने किए पर शर्मिंदा होकर तौबा करता और रहम के लिए गिरगिराता कासिम। लेकिन मस्जिद में वह कासिम नहीं आया, यह तो कोई दूसरा ही शख्स है ! लोगों को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा था। क्या उनकी आंखों पर मकड़ी ने जाले पूर दिए हैं? लोगों ने आंखें भींचकर देखा। नहीं ! वही है, वही हरामी का बच्चा !

कासिम लोगों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा और आगेवाली कतार में जा बैठा। फिर उसने चारों ओर नजर दौड़ाई।

जैसा उसका अंदाज था, सभी आंखें उस पर जमी थीं। कतीफ ने कुतबा पढ़ा। कुतबा पूरा होने से पहले ही दूसरी मैयत मस्जिद के सामने आ गई। जुम्मे की नमाज के पूरा होते ही मुंड़े हुए सिर और चेहरे पर कालिख, खप्पर की माला, गधे की सवारी—कासिम का ऐसा जुलूस निकलते देखने की उत्सुकता लोगों में बढ़ रही थी। इसमें देरी होते देखकर उनका धीरज चुक रहा था।

नमाज पूरी हो गई।

किसी ने भी नहीं सोचा होगा कि कासिम एकाएक अगली पंक्ति से यों उठ खड़ा होगा। उठते ही उसने सबको सलाम किया, "सलाम आलेकुम !"

किसलिए खड़ा हुआ है? क्या कहनेवाला है। लोग चौकन्ना हो गए। माफी मांगनेवाला है? अगर इसकी यही मंशा है तो माफी नहीं देंगे। ऐसे गुनहगार के हिस्से में माफी नहीं है ! लोगों ने मन ही मन तय कर लिया।

---

1. पानी का हौज

कासिम ने अर्ज किया—

"हैजे की महामारी में मरी दो मैयतें मस्जिद में आई हैं। मैयत को इंतजारी में रखना गुनाह है। मेरी गुजारिश है, मुहल्ले के सारे लोग उनकी रूह के सुकून के लिए एक साथ मिलकर इबादत करें और उन्हें कब्र में दफनाने तक सब्र करें। उसके बाद आप लोग मुहल्ले के फैसले के मुताबिक सज़ा तामील करें। इस सज़ा को मैं सिर-आंखों पर कबूल कर लूंगा।"

कासिम रुका। उसने लोगों पर नजर दौड़ाई। चारों ओर हलचल।

"हैजे से हुई मौतें?" लोगों की आंखों में बरगद की तरह खौफ फैल गया। कुछ लोग सिहर उठे, थर-थर कांपने लगे। चारों ओर के दरवाजों और खिड़कियों से कूदकर भागने लगे। मधुमक्खी के छत्ते पर पत्थर गिरने से जो हालत होती है, वही हुई। कासिम ने देखा, फरीद पिल्लै और अली खां इब्नु आलीसम दक्षिणी गली में भागे जा रहे हैं। उसने लोगों से खाली मस्जिद को देखा। पत्थर की बनी मस्जिद के खंभों पर नक्काशी देखी। लटकता फानूस देखा। छत से नीचे लटक रही रंगबिरंगी डोरियां देखीं। दीवार से सटाकर रखी गई चमचमाती तलवार देखी। बारह सौ साल पहले जिंदा रहे इंसानों की कारीगरी के नमूने देखे। उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए उसने कहा—

"अगर तुम्हारे भीतर भी जान होती तो तुम सब भी इन्हीं लोगों की तरह भाग गए होते।"

मस्जिद का अहाता, जहां मारियप्पन का गधा घास की तलाश में घूम रहा था। अहाते के कोने में दो गड्ढे, पास में मिट्टी के दो अंबार। ममदाजी मम्मात्तिलु और मीरासा ने मिलकर इबादत की रस्म अदा की। फिर दोनों लाशों को बाकायदा दफनाने के बाद कासिम बिलख-बिलखकर रोने से थकी-मांदी अपनी उम्मा को दिलासा देने के लिए मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद से उतरकर गांव की गली में घुसा !

मीरासा के लफ्ज़ उसके कानों में गूंज रहे थे, "बेटे, हम गरीब लोग हमेशा तुम्हारा साथ देते रहेंगे।"

23

हैजा एकाएक फैला था। मृत्यु का तांडव शुरू हो गया। रोज आठ-दस मौतें। जहां-तहां लाशें पडी थीं, गली-कूचे में, कुंए की जगत पर, नदी किनारे। उल्टी और दस्त। चारपाई पर डाले अस्पताल ले जाते हुए, अस्पताल के बरामदे में या चारपाई से उठाते वक्त।

अपने लंबे नाखूनों से मौत ने इंसान को पकड़कर घुमाया, वायु-वेग से, तूफान की

तरह ! लोग थर-थर कांपने लगे। मौत के नाखूनों से बचाव के लिए चारों ओर भगदड़ मच गई। मौत उन्हें खदेड़ते हुए पीछे लगी रही। हजार हाथोंवाली मृत्यु ने अपने लंबे हाथ बढ़ाकर उनके पैरों को जकड़ा, घुमाया और अपने नाखूनों पर खड़ा कर लिया। फिर नारियल पानी पीने की तरह उनके प्राण चूस लिए :

लोग भयभीत थे। बचने की कोई राह नहीं। कोई रोक नहीं। जाएं तो जाएं कहां? और कैसे?

अस्पताल में मोटे शीशे पर मिलाकर रखी लाल दवाई खत्म हो गई। गोलियां भी खत्म हो गईं। दम तोड़ते मरीजों को तसल्ली देने के लिए सुई लगाई गई। मरीजों की कातर दृष्टि डाक्टर के चेहरे पर टिकी रहती थी। डाक्टर दम तोड़ रहे मरीजों के चेहरे के अंतिम स्पंदन को पढ़ता था। कितने ही रोगियों के अंतिम क्षणों के साक्षी रहे डाक्टर के चेहरे पर कोई विकार नहीं था।

मरीजों को अस्पताल में दाखिल कराने के बाद उनकी मृत्यु के क्षणों की प्रतीक्षा करते कासिम और मम्मात्तिलु, मीरासा और ममदाजी अस्पताल के अहाते में घूमते रहते थे।

जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करते मरीजों को चारपाई पर उठाकर ले आते थे। उन्हें धीरे-से बरामदे में उतार देते थे। इस बीच जो मर जाते, उन्हें फिर चारपाइयों पर लादकर उनके घरों के आंगन में लिटा आते। उनके पैर पश्चिम की ओर होते, सिर पूरब की ओर।

मैयतों को नहलाने तक के लिए आदमी नहीं मिल रहे थे। लाशों के इर्द-गिर्द चींटियों की कतारें लग जाती थीं, मानो कातमी जुलूस निकाल रही हों।

तपती दोपहरी में जब्बार और उसका बेटा मस्जिद के अहाते में कब्र खोदते रहते। उनकी हथेलियों पर पड़े छालें फूटने लगे। जब्बार थककर चूर हो गया। नीम तले घुटने बांधकर बैठ गया।

'अशहद आन लाइलाह'—कासिम, मीरासा, ममदाजी और मम्मात्तिलु चारों मिलकर वहां एक और मैयत ले आए।

"अब मैं खोद नहीं सकता, यह देखिए !" जब्बार ने अपनी हथेलियां दिखाई। छाले फूटकर घाव-सा बना रहे थे।

"जब्बार काका...!" कासिम ने कहा, "कब्र खोदने के लिए और कोई आदमी कहां मिलेगा? इस मौके पर आप सहारा नहीं देंगे तो लाशें पड़ी रहेंगी। मोहल्ले के सारे मुदलाली गांव छोड़कर भाग गए हैं।"

"मैं क्या करूं भैया ! मेरे हाथ देखो न ! इनसे फावड़ा पकड़ूंगा, तभी तो खोद सकता हूं ! लगातार नब्बे-सौ कब्र खोद चुका हूं।" जब्बार ने अपनी असमर्थता जताई।

"मैयतों को हम कैसे पड़े रहने दें काका?" कासिम ने याचना के स्वर में पूछा।

"मैं क्या करूं? गांव में जाकर कहिए। गड्ढे खोदने के लिए किसी और को बुला लाइए।" जब्बार ने हथेली पर फूंक मारते हुए कहा।

कासिम ने मम्मात्तिलु और मीरासा की ओर घूमकर देखा।

"क्या किया जाए? चार-पांच लाशें और पड़ी हैं।" कासिम ने कहा।

"फरीद पिल्लै को जाकर देखेंगे।"

लाई गई लाशों को दफनाया गया। मम्मात्तिलु गड्ढे में उतरा। मैयत को उसमें उतारने में दो जनों ने मदद की। मैयत को यों रखा कि मरनेवाले का सिर उत्तर की ओर हो और पांव दक्षिण की ओर। फिर उसके चेहरे को किबला[1] की ओर घुमा दिया। मैयत के तीनों बंध खोल दिए।

उसके बाद सबने मिलकर कब्र को मिट्टी से पाट दिया। उस पर एक पौधा लगाकर ऊपर से पानी छिड़क दिया।

और गड्ढे खोदे जाने चाहिए। कल को, और आनेवाले दिनों में कब्र कौन खोदेगा? वह भी हैजे में चल बसे लोगों के लिए। उन लाशों को दफनाने की पहल कौन करेगा?

कासिम और ममदाजी ताबूत उठाकर उन घरों की ओर चले गए, जहां मृत्यु नाच रही थी।

मम्मात्तिलु और मीरासा फरीद पिल्लै की तलाश में दौड़े। पत्थर की चहारदीवारी से घिरा विशाल मकान। आंगन पर जावाकुसुम (चाइना रोज) का पौधा। उस पर खिले लाल-लाल फूल। फलों के गुच्छों से लदे नारियल। सेंधनी के पेड़ पर तारों की तरह उजले सैकड़ों फूल। लंबी हरी सेंधनी की फलियां। पेड़ पर काले-काले चींटे।

मीरासा ने अहाते के मुख्य द्वार पर दस्तक दी। दरवाजा नहीं खुला। सिर ऊपर उठा कर देखा। एक बड़ा-सा ताला लटक रहा था।

"मम्मात्तिलु ! ये तो गांव छोड़कर भाग गए रे...!" दोनों निराश भाव से लौटे। जब्बार ने जो कब्रें खोदी थीं, उनमें तीनों लाशों को दफनाया।

"इस तरह काम नहीं चलेगा। मैं कल सुबह कुषित्तुरै हो आता हूं।" कासिम ने मीरासा से कहा।

"भैया !"

"क्या?"

"तुम चले जाओगे तो यहां लाशें पड़ी रहेंगी। कल क्या कब्र नहीं खोदनी हैं?"

"और क्या करें? हम नेक काम कर रहे हैं। अल्लाह इसकी मजदूरी जरूर देगा। अगर जब्बार से कब्र खोदते नहीं बनता, तो आप तीनों मिलकर यही काम करें। और कोई चारा

1. पश्चिम

नहीं है। मैयतों को दफनाने में देर नहीं करनी चाहिए।"

"मैं कब्र खोद सकता हूं।" ममदाजी आगे आए।

"खैर !"

"हम भी साथ देंगे।" दूसरे लोगों ने बताया।

"यह हुई न बात ! भूखे-नंगे लोगों को मौत के मुंह में धकेलकर पैसेवाले लोग भाग गए। हम कर ही क्या सकते हैं? कुषित्तुरै जाकर हैजा निरोधक सुई लगवाने के लिए आदमी ले आऊंगा। बाकी लोगों को तो बचाएं।"

"सुई लगवानी होगी?"

"सुई लगवाने से हैजे को रोका जा सकता है।"

"या अल्लाह, जिस्म में छेद करना होगा?" मम्मात्तिलु थर-थर कांपने लगा, "मैं नहीं लगवाऊंगा।"

कासिम हंसा।

"मैं सुबह ही जाकर बुला लाता हूं। आप सवेरे जल्दी आकर कुछ कब्रें खोदें। मेरे इंतजार में बैठे न रहें, मैयतों को फौरन दफना दें।"

कासिम तंग गलियों से होकर घर लौटा। गली में फैला अंधेरा। झोंपड़ियों में मिट्टी की टिमटिमाती कुप्पी के पास ढंकी लाश के पास से बीवी-बच्चों की सिसकियां। रोने-कलपने की आवाजें फटी-पुरानी झोंपड़ियों को बेधते हुए बाहर निकलीं और गली में रहीं। घुसने के लिए कोई कान तक नहीं था, इसलिए गली में ही इधर-से-उधर घूमती-टकराती रहीं।

"मेरे सोने-से वाप्पा ! हमें यतीम बनाकर कहां चले गए?" नाव खेनेवाले मुत्तली के घर का एक दिल फूट-फूटकर रो रहा है।

कासिम की आंखें भर आईं। अंधेरे में उसकी चाल धीमी हो गई। कासिम ने उस करुण स्वर को सुना। यतीम बच्चों और बुड्ढों को सहारा देनेवाले नौजवानों को ही अल्लाह बुला रहा है।

'इस्राइल' मुल्क कितनी तेजी से नाच रहा है ! इतनी रूहों को उठाकर ले जाने के लिए कितने हाथ चाहिए। इतने भारी बोझ को एक हाथ में संभाले आकाश-वितान पर तैरते हुए वह किस तरह अल्लाह के पास पहुंचता होगा !

ओह ! सिरजनहार की मर्जी हो तो सब संभव है। नन्हें-नन्हें पंछियों के मुंह में पत्थर देकर उसने फेंकने को कहा था। पंछियों ने पत्थर फेंके। उन पत्थरों से क्या अब्रहाम की हजारों हाथियों की फौज जहां-की-तहां ढेर नहीं हो गई थी? नूढटु नबी के जमाने में अल्लाह ने बेहद गुस्से में आकर बाढ़ आने का हुक्म नहीं दिया था क्या? समंदर में कैसा उफान आ गया था और उस जल-प्रलय में क्या सारी दुनिया नहीं डूब गई थी? 'बाढ़ थम गई या नहीं', यह पता लगाने के लिए नूढटु नबी ने कौए को भेजा। कौए ने

क्या किया, पना है? भूखा तो था ही। बाढ़ के पानी में मरी-उतराती मछलियों को चोंच मारकर खाने लगा। इस पर आग-बबूला होकर नूढटु नबी ने कौए को शाप दे दिया। इसीलिए तो कौए लाश खाते हैं। अल्लाह-चाहे तो क्या नहीं हो सकता? वह तो सर्वशक्तिमान है। सब कुछ कर सकता है। दुश्मनों को नेस्तनाबूद कर सकता है। गुनाहगारों को डुबा सकता है। मगर...

इन बेचारे लोगों ने कौन-सा गुनाह किया, जिसके लिए इतनी बड़ी सजा मिल रही है? समुद्र पार करके ईना पीना कूना को सजा क्यों नहीं देता? उसके मुनीम को दंडित क्यों नहीं करता? मैयत के लिए कफन, अगरबत्ती और तख्ते खरीदने में असमर्थ इन गरीब लोगों और उनके सहारे जीनेवाले लोगों से उल्टी करवाकर, टट्टी करवाकर उनकी सूखी नसों में छटपटाती जान को क्यों ले रहा है? उन्हें क्यों सैनुल्लाह का कर्जदार बना रहा है? ताबूत बनाने के लिए तख्ते बेचकर भारी मुनाफा कमाने और दुमंजिले मकान में सोनेवाले सैनुल्लाह को अल्लाह क्यों सज़ा नहीं देता?

कासिम चिंतन की ऐसी ही कंटीली बाड़ में उलझता रहा और इसी उधेड़बुन में सुबह हो गई। मालिक इब्नुद्दीन की मीनार से फिर नए दिन की शुरुआत सूचित करने वाली अजान ऊपर उठी।

कासिम पहली बस से कुषित्तुरै के लिए चला। स्वास्थ्य निरीक्षक के साथ जब वह गांव पहुंचा, तो दोपहर हो रही थी।

इससे पहले एक बार जब चेचक का प्रकोप हुआ था, चेचक-निरोधक सुई लगाने के लिए यही स्वास्थ्य-निरीक्षक आया था। लोगों ने उसे पहचान लिया। उन्हें याद आया, कांटे-जैसी सुई को बांह पर घुमाते समय बेहद दर्द हुआ था। सुन रखा था कि उस जगह पान का पत्ता रगड़ने से घाव पकेगा नहीं। पान का पत्ता रगड़ा गया। फिर भी घाव पक गया। बुखार चढ़ा। चादर ओढ़े पड़े रहे। दो दिन तक खाना-पीना बंद।

यह ख्याल आते ही हाथ पर सुई लगाने से बने दाग पर नजर पड़ी।

लोग जहां भीड़ लगा खड़े थे, उनके सामने कासिम ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। एक लंबी सुई उसकी चमड़ी पर छेद बनाती हुई भीतर घुसी और मांसपेशी में धंस गई। लोगों ने देखा। देखनेवालों के जिस्म थर-थर कांपने लगे। डर से रोंगटे खड़े हो गए। दर्द महसूस होने लगा। दांत भींचकर उस दर्द पर काबू पाया।

"या रब ! मैं नहीं लगवाऊंगा। एक तरफ चुभोई है तो दूसरी तरफ से निकल रही है ! वल्लाह !" लोग डरकर भाग खड़े हुए।

गांव-भर में जल्दी ही खबर फैल गई कि हाथ में सुई लगानेवाला आया है। यह भी पता चल गया कि उसे लानेवाला कासिम है। यह जानते ही गांववाले कासिम पर नाराज़ हो गए।

"यह अपनी उम्मा और बहिना के हाथ में उस काफिर से सुई क्यों नहीं लगवाता?" औरतें पूछने लगीं। "हम भी देखती हैं कैसे आता है वह सिरफिरा छोकरा हमारे घर उस काफिर को लेकर ! पुरानी झाड़ू रखी है। दोनों को झाड़ दूंगी।" औरतों ने कसम खाई।

"ईमानवाली मुस्लिम औरतों का हाथ पकड़कर सुई लगवाने के लिए कहीं से एक काफिर को पकड़कर लाया है। अच्छी तरकीब है न? सुई लगाते-लगाते उसे भी एकाध बार हाथ छूने को मिल जाएगा, यही इसकी चाल है। देख रहे हो न, हराम के बच्चे की नीयत !" अली खां इब्नु आलीसम ने काले पत्थर पर बैठकर कहा। दोपहर की नमाज पर आए लोगों ने इसे सुना और उस पर विश्वास कर लिया।

"ठीक है, अब समझ में आ रही है उस हरामी की चाल !" वाप्पु कण्णु ने सिर हिलाया।

"देखा न, देस-परदेस घूमने से कितना बड़ा इल्म पाया है ! बताओ, हमें कहां सूझती हैं ऐसी बातें?" पोडिप्पिल्लै ने इब्नु आलीसम के ज्ञान की सराहना की।

"अरे, जिन्ना का दिमाग पाया है !" वाप्पु कण्णु ने भी मान लिया।

गांव में यह बात फैल गई कि मुस्लिम औरतों का हाथ छूकर सुई लगाने के लिए शहर से काफिर आया है। यह सुनकर औरतों ने दरवाजे बंद कर लिए। गलियों में जहां-तहां खेलनेवाले बच्चों को भी ढूंढकर घर में बंद कर दिया गया।

गली में इधर-उधर खड़े लोग भाग खड़े हुए। "जान बच जाए तो घास खाकर जिंदा रहेंगे।" कई लोग मस्जिद में जाकर छिप गए। कुछ लोग समुद्र-तट से होते हुए पश्चिम में पूंतुरै की ओर भागे। कुछ लोग घनी झाड़ियों के बीच छिप गए। गांव की गलियां सूनी पड़ी थीं।

अडिमक्कण्णु की गाय, जिसकी हड्डियां निकली हुई थीं, गली में गोबर छींटते हुए जा रही थी। इसके अलावा कुछेक मुर्गियां और कुछ बकरियां, बस।

कासिम ने एक घर के दरवाजे पर दस्तक दी। अंदर से कोई आवाज नहीं। इंसान की कोई आहट नहीं। पड़ोस के घर में दस्तक दी। वहां से भी कोई आवाज नहीं।

"अरे, तेरे बदन में हो जाएं फुंसी-फोड़े। हमारे पीछे क्यों पड़ा है? अपने घर के लोगों को लगाओ न सुई।"

यह स्वर सुनकर कासिम ने मुंह उठाकर देखा। एक घर से पल्लन की बीवी मम्मेरा ऊंचे स्वर में उसे गाली देते हुए उस पर थूक रही थी। कासिम जरा हटकर खड़ा हो गया।

उसने हर दरवाजे पर दस्तक दी। किसी ने दरवाजा नहीं खोला। घर के भीतर से चुनिंदा गालियां ! कासिम कुछ और आगे बढ़ा तो उसके कंधे पर कोई चीज आकर गिरी। उसने छूकर देखा। गंदगी थी ! कासिम ने उसे झाड़ा और फिर नाक बंद किए आगे बढ़ गया।

एक औरत उसे झाड़ू दिखाते हुए बोली, "थोबड़ा झाड़ दूंगी, हां !"

बंद दरवाजों, निर्जन घरों और सूनी गलियों को देखकर उसने गहरी सांस ली।

"समंदर किनारे चलें। वहां भी हैजा फैला हुआ है। उन गरीब लोगों को बचाएं।" कासिम स्वास्थ्य-निरीक्षक और चपरासी को लेकर समुद्र तट की ओर चला।

उस दिन शाम को मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद के अहाते में बने हदीस मंडप में जमा हुए लोग हंसने लगे।

"छोकरे ने हर तरह से कोशिश की। कुछ नहीं बना। हार गया। गांव में किसी भी आदमी ने सुई लगवाने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। जलील हुआ न? आखिर सुई लगवाने के लिए उसके घरवालों और मम्मात्तिलु के बेटे पीरू के अलावा कोई नहीं मिला।" मैदीन पिच्चै ने कहा। इसे सुनकर अली खां इब्नु आलीसम हंसी से लोट-पोट हो गए।

"हंस-हंसकर पेट में बल पड़ गए रे !" आलीसम अपना पेट सहलाते हुए बोले।

24

सुबह से ही आसमान पर बदलियां छाई हुई थीं। बारिश के आसार दिखाई दे रहे थे। बादलों से ढके आसमान पर सूरज का कहीं पता नहीं चल रहा था। उसके वियोग में दोपहर सर्द पड़ी थी। ठंडी सड़क पर आंखें गड़ाए मीरान पिल्लै खिड़की के पास बैठे थे। उन्हें अम्बुरोस का इंतजार था। वे गौर से यह देख रहे थे कि पतली काली एड़ियों के ऊपर घुटने के नीचे तक की लंबी खाकी वर्दी कब नजर आएगी। उनके मन के किसी कोने में एक अस्पष्ट विचार उठ रहा था कि रोज चकमा देनेवाला अब्बुरोस आज चकमा नहीं देगा। इस विचार की अंतःप्रेरणा से उन्होंने उस दिन पल-भर के लिए भी सड़क से अपनी आंख नहीं हटाई। आज की डाक में कोलंबो की चिट्ठी जरूर रहेगी। उसके साथ बीजक भी होगा। उन्हें बीजक भी नहीं चाहिए। उन्हें तो उसके निचले हिस्से में दिखनेवाली लाल लकीर के ऊपरवाली रकम से मतलब है। कई बार बैठकर हिसाब करने से उन्हें याद हो गया है कि चैत में भेजी नेत्तोली की लागत क्या है। कुल बिक्री की रकम लिखी होगी। उसमें से लागत को घटाने पर जो मिलेगा, वही मुनाफा होगा। अच्छा मुनाफा। लागत और मुनाफे की रकम मिलने पर रेहन रखे सारे जेवर छुड़ाने हैं, ब्याज भी भरना है। ब्याज की रकम भी अच्छी-खासी होगी। इधर-उधर के छोटे-मोटे खर्च भी हैं। उन्हें भी चुकाना है।

पिछली रात को सांपवाला सपना आया था। अजीब किस्म का सांप ! फुफकार मारते हुए आते सांप को देखकर बड़ा डर लगा। डंस लिया तो 'हलाक' ही समझो। फन फैलाकर नाचने लगा। उसका पैना मुंह बहुत डरावना था। दो हिस्सों में बंटी हिलती हुई जीभ। फन पर टेढ़ा निशान। वह सांप सीधे आया, वायु-वेग से। तंग गली है। बचने का कहीं मार्ग

नहीं। फंस गए हैं। अरे, जिस तरफ मुड़ते हैं, सांप ही सांप ! सभी सांप फन फैलाए नाच रहे हैं। अब सभी दिशाओं से आ रहे हैं। सब मिलकर डंसेंगे। मदद के लिए पुकारना चाहते हैं, पर जीभ ही नहीं हिल रही। मौत सामने खड़ी है। मृत्यु का पैना मुंह। मर जाने पर राहिला का निकाह कौन कराएगा? उधर से राहिला भागी आ रही है, 'वाप्पा' पुकारते हुए, वाप्पा की मदद के लिए। कई सारे सांप उसे भी घेर लेते हैं। फन फैलाकर नाचनेवाले सांपों के बीच में राहिला। 'वाप्पा' पुकारते हुए निश्चल खड़ी राहिला।

"बेटी !" बुलाना चाहते हैं मीरान पिल्लै। तभी आंख खुल गई।

सपना था, निरा सपना। यह ख्याल आते ही मन को राहत मिली। सोती हुई राहिला और बीवी। कासिम अपनी चटाई पर नहीं है। वह रात को घर आया ही नहीं।

सुबह होने पर कांपते हृदय से उन्होंने बीवी से सांपवाले सपने का जिक्र किया। सुनकर कदीजा हंस पड़ी। चेहरे पर मुस्कान के फूल खिल उठे। फिर से ऐश्वर्य की शोभा। फूटने लगी। खोई हुई हंसी मानो फिर से लौट आई।

"सांप को सपने में देखना अच्छा होता है। हर किसी के सपने में सांप नहीं दिखाई देता। जब बरकत होनेवाली होती है, तभी सपने में सांप आता है।"

बीवी की बात सुनकर मीरान पिल्लै के हृदय को ठंडक पहुंची।

बरकत किस दिशा से आनेवाली है? कोलंबो से। और कहां से? अम्बुरोस जो लंबा लिफाफा लाएगा, उसी के जरिए बरकत को आना होगा। या फिर कपड़े से बने बीमाशुदा लिफाफे के जरिए, जिसके ऊपर लाख की मुहरें लगी होती हैं।

अम्बुरोस की ढीली खाकी पतलून दिखाई नहीं दी। इंतजार जब ऊब की चरम सीमा पर पहुंचा, तो मीरान पिल्लै ने बीवी को पुकारा–

"गुड्डी, मैं जरा बाहर हो आऊं। देखूं कोई चिट्ठी-पत्री आई है या नहीं। समुद्र-तट से कोई कर्ज वसूलने वाला आए तो बताना, कोलंबो से अभी पैसा नहीं आया है।"

मीरान पिल्लै जयकोडीवाला अंगोछा कंधे पर डाले बाहर निकले। सुनारों की गली पार की तो सामने से आते हुए सवेरियार पिच्चै को देखा।

सवेरियार पिच्चै को एक अच्छी रकम देनी है–इरयुम्मन घाट से नेत्तिली तौलकर लेने के बदले। एक हफ्ते में देने की बात थी। कई हफ्ते बीत गए। तूत्तुकुडी से आनेवाली चिट्ठियों में यही लिखा रहता था कि अभी जहाज नहीं मिला है, अगले जहाज से भेजेंगे। इस तरह के जवाब सुनते-सुनते वे ऊब गए थे।

सवेरियार पिच्चै को क्या जवाब दें?

"कितने चक्कर काट चुका हूं पिल्लै ! पैसा देने का मन नहीं हो रहा क्या? यह कैसा इंसाफ है? मछुआरे मुझे छोड़ेंगे क्या? वे लोग बीवी-बच्चों को बुलाकर बदतमीजी से बात करते हैं। कान बंद किए घर में पड़े रहना मुश्किल हो रहा है।" सवेरियार पिच्चै की बातें

सुनकर मीरान पिल्लै का सिर झुक गया। चुपचाप खड़े रहे।

सवेरियार से आंखें मिलाने का साहस नहीं जुटा पाए। कितनी बार मोहलतें मांग चुके हैं। मोहलत मांगने की भी एक हद होती है। अब क्या जवाब दें?

"सुनो पिच्चै ! कोलंबो से कोई चिट्ठी नहीं आई। यह भी पता नहीं चला कि माल पहुंचा या नहीं। तुत्तुकुडी को चिट्ठी लिखी थी। उसका भी कोई जवाब नहीं। तुमने इतने दिनों तक सब्र किया न? एक हफ्ता और सब्र करो।" मीरान पिल्लै ने डरते-डरते विनम्र स्वर में अनुरोध किया।

मीरान पिल्लै को अदब से जवाब देते सुनकर सवेरियार पिच्चै जरा शांत हुआ।

"हम क्या करें साहब? कर्जा चुकाने के लिए हमारी बीवी-बेटी के पास अब कोई जेवर नहीं है। आपसे लेकर ही मजदूरों को देना है। मीनयाडु के बिना बेचारे भूखों मर रहे हैं। गरीबों के ताड़ीवाले तक का कर्ज चुकाने के लिए एक धेला नहीं...।"

"पैसा आते ही तुम्हारे घर जाकर दे आऊंगा।"

"तो मैं कब आऊं?"

"अगले इतवार को आना। तब तक किसी भी सूरत में पैसा आ ही जाएगा।"

मीरान पिल्लै जाते हुए सवेरियार पिच्चै को गली में खड़े देखते रहे। सड़क-गली में आगे बढ़ने पर और भी तगादा देने वाले टकरा सकते हैं। अगर चार जनों के सामने वे बुरा-भला कहें तो? जलील होना पड़ेगा। दिल पहले से ही दुखी है। अब उसमें आग भी लग गई है। उसके ऊपर तेल क्यों डलवाना? यदि कोई डाक आई होगी, तो अम्बुरोस अपने आप ले आएगा। मीरान पिल्लै पलटकर घर की ओर चल दिए।

घर पहुंचे और उसी जगह घुटनों पर हाथ बांधे बैठ गए, जहां पहले बैठे हुए थे। गली में गड़ी हुई आंखें।

दोपहर की अजान से पहले अम्बुरोस आ जाता है। डाक के थैले दस बजे आते हैं। आते ही डाक छांटकर बंटवारा किया जाता है। दो बजे तक बंटवारे का काम पूरा हो जाना चाहिए। तभी डेढ़ मील चलकर खाना खाने के बाद साढ़े तीन बजे वाली बस से डाक भेजी जा सकती है।

"अम्बुरोस ने आज भी धोखा दे दिया।"

अब आज तो अम्बुरोस नहीं आएगा। यह बात समझ में आते ही मीरान पिल्लै चारपाई पर लेट गए—अलहमद-उल-इल्लाह !

लेटते ही आंख लग गई। इधर कई दिन से आंखें भारी हैं। चिंता के मारे रात में कई बार नींद नहीं आती। अज्ञात भय, भविष्य की आशंका, घोर निराशा, हरदम दिल में धुकधुकी रह-रहकर एड़ी से चोटी तक पसीना, जैसे पसीने में नहा रहे हों। थोड़ी देर आंख लगी भी तो हाड़ तक कंपा देने वाले सपने—राहिला के बारे में, कासिम के बारे में।

कासिम को लेकर मन में जो महल बनाए थे, सब चूर-चूर हो गए। कासिम इस वक्त उनके काबू में नहीं है। सभी बंधन तोड़कर वह आजादी से घूम रहा है, मनमाने ढंग से। वह क्या बोल रहा है? किसके बारे में बोल रहा है, कुछ समझ में नहीं आता। वह जो काम करता है, उसका मतलब हमारी समझ में नहीं आता। वह जो बातें करता है, हमारे लिए अबूझ पहेलियां हैं। भारत की आजादी की बात करता है। 'आजादी' का क्या मतलब होता है? भारत के क्या मायने हैं? यह सब किसकी समझ में आएगा? वह आजकल रंगीन कपड़ा नहीं पहनता, सिर्फ सफेद कपड़ा पहनता है। पूछने पर कहता है—गांधी का मार्ग है। इस सबका क्या मतलब है? वह जिस दुनिया में रहता है, वह हमारे लिए एकदम अजनबी है।

गली में साइकिल की घंटी बजी। उसके नाद में सारी गली डूब गई। नाद और उसकी अनुगूंज। मीरान पिल्लै सिहर उठे। आंखें फाड़कर गली में नजर दौड़ाई।

"तार।"

तार? क्या लिखा होगा? बाजार तेज है या मंदा है? या माल नहीं बिका? यह नहीं तो और माल भेजने के लिए कहा होगा। वहां मांग बढ़ गई होगी। अब तो समुद्र में बिल्कुल नेत्तिली-पाडु नहीं है। सिर्फ पंद्रह दिन तक नेत्तिली-पाडु रहा। अब तो समुद्र-तट एकदम खाली है। फिर नेत्तिली कहां से खरीदें? कैसे चढ़ाकर भेजें? चिंताए उन्हें बुरी तरह चोंच मारने लगीं।

"इधर लाओ।" उन्होंने दस्तखत कर दिए। तार हाथ में लिया।

"पढ़कर बताओ।"

मैसेंजर ने लिफाफा खोला।

"पढूं?"

"हां, पढ़ो भाई !"

मीरान पिल्लै मैसेंजर के हिलते होठों को देखते रहे। उनसे छूटकर गिरनेवाले लफ्जों को जकड़ने के लिए कानों के चिमटे आगे बढ़े।

"पढ़ता हूं, सुन लीजिए।"

"हां, सुन रहा हूं।"

मैसेंजर ने अंग्रेजी शब्दों को पहले मन ही मन पढ़ा। फिर तमिल में तर्जुमा करके बताया—"हमें दुख है। अचानक आए आंधी-तूफान में हमारा जहाज फंस गया था। जहाज को बचाने के लिए आपके माल समेत बहुत-सा और सामान भी समंदर में फेंकना पड़ा। तफसील के लिए चिट्ठी भेज रहे हैं।"

मीरान पिल्लै ने कुछ भी नहीं सुना। उनके दोनों कान खोपड़ी से छिटककर कहीं दूर जा गिरे। धरती फट गई। आसमान औंधा हो गया। सूरज अपने स्थान से फिसलकर कहीं

दूर जा गिरा। जहां वह गिरा, वह स्थान धू-धू करके जल उठा। दुनिया-भर में आग की लपटें ! समंदर में भी आग ! जहाज पर भी ! मीरान पिल्लै का सारा शरीर भी आग में झुलसने लगा।

"हाय...मेरे रब !" एक दाहड़ ! भयंकर चीत्कार ! उस दहाड़ से आंगन में खड़े नारियल पेड़ जड़ समेत उखड़कर कहीं दूर जा गिरे ! घर की छत चूर-चूर हो गई ! दीवारें फट गईं ! छत और दीवार विहीन घर के नंगे फर्श पर मीरान पिल्लै किसी कीड़े की तरह तड़पने लगे।

मैसेंजर कांप उठा। वह अपने 'मामूल' के लिए वहां खड़ा न रहा। साइकिल पर बैठा और हवा हो गया।

दहाड़ सुनकर राहिला और उसकी उम्मा, अंदर से भागी आईं। उनका वीभत्स चेहरा देखकर दोनों स्त्रियां भय-कातर खड़ी रहीं। भिंचे हुए दांत, लाल आंखें, मुक्का मारने की मुद्रा में बंधी मुट्ठियां !

"वाप्पा !" राहिला का दिल फटा जा रहा था। वाप्पा को यह क्या हो गया ! अभी तो सही-सलामत लेटे हुए थे। क्या कोई डरावना सपना देखा है? कल भी तो देखा था डंसने को आ रहे सांपों वाला सपना !

"वाप्पा...वाप्पा ! आपको क्या हो गया?"

मीरान पिल्लै ने घूरकर देखा। उस दृष्टि से—उसकी आंच से—वह झुलस गई। भय से कांपते हुए अपनी उम्मा के पीछे जा छुपी। उम्मा की आंखों से आंसुओं का अविरल प्रवाह।

"क्या बात है?" कदीजा ने पूछा।

"तुम लोग जिंदा क्यों हो? मर क्यों नहीं गईं?" मीरान पिल्लै उछले और राहिला की गर्दन पकड़ ली—"मर जा...मर जा...लड़की होकर पैदा हुई थी तो अब तक मरी क्यों नहीं ! तभी तो मुझे अंगार खाने पड़ते हैं। तू मर जा री...मर जा !" वे उसका गला दबाने लगे।

राहिला का दम घुटने लगा। आंखों की पुतलियां बिदकने लगीं। कदीजा ने लपककर मीरान पिल्लै का हाथ खींचा। लेकिन वे छोड़ नहीं रहे थे—"मर जा...मर जा ! मैं भी मर जाता हूं !" लाचार होकर कदीजा ने मीरान पिल्लै के हाथ पर काट खाया और उनकी पकड़ ढीली होते ही उन्हें धकेल दिया।

धक्का खाकर मीरान पिल्लै जमीन पर जा गिरे, जैसे कोई बच्चा गिरता है, और फिर वहीं घुटनों के बीच मुंह दबाए फफक-फफककर रोने लगे।

"हाय, मैं लुट गया। मेरा सब कुछ चला गया ! सारा घर-बार डूब गया।" सिर उठाया तो आंखों के सामने हैदरुस मुदलाली !

"वाप्पा, रो क्यों रहे हैं? बताइए न?" राहिला ने वाप्पा की पीठ सहलाते हुए पूछा।

"वह पड़ा, उसे देखता रहा।" फर्श पर पड़े तार की ओर उन्होंने संकेत किया।

राहिला ने तार उठाया। एक खानदान के पतन—एक व्यापारिक पीढ़ी के सत्यानाश की करुण-कथा उसमें चार पक्तियों में लिखी थी। उलट-पुलट कर देखा, लेकिन अजनबी जबान समझ में नहीं आई। भ्रमित भाव से खड़ी रही। मीरान पिल्लै ने आंगन में सिर उठाए पूवरसु[1] वृक्ष को खड़े देखा। उसी की डाल पर एक रस्सी से लटक रहा था लूकास।

25

चैत का महीना पंख फड़फड़ाता उड़ गया। मम्मात्तिलु की बीवी चिंता में डूब गई। बैसाख की चिंता।

बैसाख के अंत में वर्षा का मौसम[2] शुरू हो जाएगा। गर्जन-तर्जन समेत शुरू होनेवाली वर्षा जेठ, आषाढ़ दो महीने तक जारी रहेगी। तेज हवाएं और जोरदार वर्षा। रुकने का नाम न लेने वाली बला की बारिश। कड़ाकेदार ठंड और पैशाचिक हवा ऐसी कि रीढ़ की हड्डी से जुड़ा पसलियों का बंधन ढीला हो जाए। आनेवाले दुर्दिनों के बारे में सोचते हुए मम्मात्तिलु की बीवी बेचैन हो रही थी। वर्षा-काल उसके सामने पहाड़-जैसा खड़ा था।

साल-भर पहले ही छप्पर खोलकर छवाना था। लेकिन छवाने के लिए न नारियल के पत्ते थे, न मजदूरी के लिए पैसा। आखिर पिछले साल छवाया नहीं गया। अब जैसे-तैसे पत्ते इकट्ठे हुए हैं।

"अजी, सुनते हो? बैसाख आ गया न? बारिश से पहले छप्पर छवाना है कि नहीं?" बीवी ने याद दिलाया।

पूरा छप्पर उजार छवाने के लिए तीन मजदूर बुलाने पड़ेंगे। उन्हें क्या मजदूरी नहीं देनी होगी? दोपहर को खाने-पीने के लिए अलग से देना होगा। पैसा कहां है?

अमीना के पास इसका जवाब नहीं था। घरवाले के चेहरे को एकटक देखती रही।

"बारिश शुरू हो गई तो घर में लेटते नहीं बनेगा। टपकते-चूते घर में पानी भर जाएगा। किसी से कर्जा लेकर छप्पर छवा दो। फाका करके रह सकते हैं, लेकिन सीलन भरे घर में भीगते हुए नहीं रह सकते। पत्ते तो इकट्ठे कर ही लिए हैं चुन-चुनकर..." अमीना के स्वर में जोर नहीं था।

---

1. एक ऊंचा पेड़ जिसके पत्ते बरगद के पत्तों जैसे होते हैं और फूल लाल रंग के।

2. केरल में और तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में इस समय वर्षा शुरू होती है-

"अरे भलीमानस, मजदूरी दिए बिना छवाएंगे कैसे? पणिक्कनर[1] क्या तेरा मामा है...जो यों ही छवा देगा? बोल...सब्र करो, कहीं से पैसा आने दो। बनवाएंगे।"

"इकट्ठे किए पत्तों को दीमक खा रहा है, दीमक झाड़ते-झाड़ते यह देखो, मेरा कंधा टूटा जा रहा है...सारे पत्ते अगर दीमक खा जाए तो मैं नहीं जानती..."

"दीमक खाए तो खाए, मैं क्या करूं?"

छप्पर के बारे में बीवी ने याद क्या दिलाई, मम्मात्तिलु के कलेजे में आग लग गई। अगर वह घर में बैठा रहा तो यह यों ही छत के बारे में बोलती रहेगी। इसलिए मम्मात्तिलु अंगोछा कंधे पर डाले यह कहते हुए बाहर निकल गया—

"तू नहीं जीने देगी..."

नदी पर आया। ठंडक अच्छी लगी। पानी में मुट्टनाली[2] का जाल फैला था। उसके बीच में भागती-फिरती विराल-मछलियां। मां मछली के चारों ओर बहुत-सी नन्हीं...नन्हीं ललछौंही मछलियां।

मम्मात्तिलु ने कमर में खोंसी माचिस निकाली। उंगली से धकेलकर उसे खोला। बीड़ी सुलगाने के लिए एक भी तीली नहीं। उसने उसे कान पर रख लिया। किसी से आग मांगनी पड़ेगी, चारों ओर नजर दौड़ाई।

देखा, कपड़े धोने के लिए पड़े पत्थर की ओट में कोई बैठा है। उसकी गोल पगड़ी के ऊपर काला धुआं हवा में हिल रहा है। होठों में कुछ कहने के लिए गुदगुदी-सी हुई। उसी ओर एकटक देखने लगा। वह उससे कहना चाहता था कि बीड़ी का टुकड़ा कहीं पानी में न फेंक देना।

तब तक बैठा हुआ आदमी उठ खड़ा हुआ। पीठ तक उठी लुंगी को नीचे गिराते समय मम्मात्तिलु ने उसे पहचान लिया—मीरासा काका है।

"मीरासा काका, जरा-सी आग चाहिए। टोंटा फेंक मत देना।" चिल्लाते हुए वह मीरासा की ओर चला।

मीरासा ने टोंटा पकड़ा दिया। उसकी नोक पर पान की जूठन। कोई बात नहीं। उंगलियों से साधकर पकड़ा और अपनी बीड़ी सुलगा ली। काला धुआं मुंह से बाहर निकला। वापस मीरासा के हाथ टोंटा देने लगा तो वह फिसलकर नीचे गिर गया।

"छोड़ो जाने दो।" मीरासा ने परवाह नहीं की।

"समंदर किनारे होकर लौट रहे हैं?" मम्मात्तिलु ने पूछा।

"कोई 'मीनपाडु' नहीं है। रात को समंदर में गई नाव और कट्टमरम खाली वापस आ गए हैं।" मीरासा ने लुंगी झटककर दुबारा पहन ली। लुंगी पीछे से गीली थी।

---

1. कारीगर।

2. शैवाल, जो पानी में होता है।

मम्मात्तिलु को कुछ नहीं सूझा। वहीं खड़ा रहा। कहां जाएगा। 'मीनपाड्ड' है नहीं। मछली मिल गई होती तो जरा चहल-पहल होती। हांड़ी में सोंठवाली कॉफी या 'शर्कर कंजी' ले जाता तो बिक सकती थी। कुछ मिलता। बच्चों के लिए कंद (मरच्चीनी) खरीद सकता था। पर अब क्या किया जाए? दिमाग में झट से एक विचार कौंधा—नागूर दरगाह के नाम पर मनौती की गुल्लक।

इधर चार-पांच बरसों से नागूर दरगाह के नाम पर एक गुल्लक में छोटी-मोटी रेजगारी डालने का क्रम था। रात को पत्ते बटोरने जाते हुए जहरीले कीट-पतंग न काट खाएं, समुद्र-किनारे 'शर्कर कंजी' ले जाते हुए ज्यादा बिक्री हो जाए, इस तरह की मनौतियां मानते वक्त गुल्लक में रेजगारी डाली जाती थी। हो सकता है इस वक्त चालीस-पचास रुपए गुल्लक में से मिल जाएं। इस पैसे को कर्जे के रूप में लें तो छप्पर छवा सकते हैं। फिर जब कभी पैसा आएगा, तो नागूर दरगाह की मनौती पूरी कर दी जाएगी।

मम्मात्तिलु घर की ओर चला।

घर के आंगन में चहलकदमी की। देखा कि पत्तों के अंबार के ऊपर दौड़ रहा अरणै[1] कहीं अंदर छिप गया। ख्याल आया, कोतरा काटे तो जहर चढ़ जाएगा। घर में घुसकर चबूतरे पर बैठ गया, बांहों से घुटने वांधे।

मनौती के गुल्लक से पैसा लेना गुनाह है क्या? यह सवाल एक तलवार की तरह उसके मन में घूमने लगा। अगर गुनाह ही है तो उसके लिए कौन-सी सज़ा मिलेगी? ज्यादा-से-ज्यादा जहन्नुम। मैं इस दुनिया में जो जिंदगी बसर कर रहा हूं, उससे भी बड़ा कोई जहन्नुम है क्या? कोई और दोजख है?

मम्मात्तिलु के मन में विचारों का जुलूस। गुल्लक तोड़े तो उसमें से कुछ निकलेगा। क्योंकि अभी कुछ दिन पहले नागूर आण्डवर[2] के वारिसों में से एक फकीर आया था। फकीर ने घर-घर जाकर लोगों को दुआ दी थी। श्रद्धा से दी जानेवाली भेंट भी कबूल की थी। तांबे की थाली में हरा झंडा। उसके ऊपर चंदन में लिपटा नारियल। सुलगती अगरबत्ती। धूप-दानी में पड़े अंगार पर सुगंधित सामग्री के जलने से वातावरण में फैली सुगंधि। हाथ में थाली लिए गांव में आया फकीर लंबे कद और इकहरे बदन का था। गले में रंग-बिरंगी और मोटी-मोटी तसबीहें। घुटनों के नीचे तक लटकता हरे रंग का चोगा। सिर पर हरी पगड़ी। कान पर खोंसकर रखे सुरमे के तार। लंबी दाढ़ी !

ये फकीर नागूर के पीर के पोते-पड़पोते हैं—उनके वारिस हैं। फकीरी करते हुए गांव-गांव घूमने और मांगकर खाने के लिए नागूर 'आण्डवर' द्वारा तैनात हैं।

---

1. छिपकली की जाति का एक विषैला जंतु कोतरा।
2. नागूर के पीर, नागूर की दरगाह जिनकी समाधि है।

भेंट कबूल करने के बाद फकीर चुटकी-भर भूरा शक्कर और फूल देते हैं। लोगों की मान्यता है कि इससे बरक्कत होती है।

जिन लोगों के हाथ नहीं होते, वे चांदी की पत्ती से छोटा-सा हाथ बनवाकर चढ़ाते हैं। लंगड़े लोग चांदी के पैर चढ़ाते हैं। इसी तरह आंखें, नाक और जीभ वगैरह।

"ओ पीरू की मां !" मम्मात्तिलु ने बीवी को बुलाया।

अमीना आई और पूछा, "जी ! किसलिए बुलाया...?"

"छप्पर छवाना है न?"

"हां...।"

"छप्पर छवाने के लिए मजदूरी नहीं देनी?"

"हां जी, देनी है।"

"चक्रम?"

अमीना के पास कोई जवाब नहीं था।

"मैं एक सुझाव देता हूं। सुनोगी...?"

"कहिए।"

"नागूर का गुल्लक तोड़ेंगे।"

"हाय...मेरे अल्लाह ! नहीं...नहीं..."

"चीखो मत ! मैं जो कह रहा हूं, गौर से सुनो...गुल्लक तोड़कर उसमें जितना पैसा है, उसे उधार की तरह ले लेंगे। कहीं से पैसा आते ही पहले गुल्लक में डालेंगे या नागूर भिजवा देंगे।"

"वल्लाह ! छप्पर के लिए कोई गुल्लक तोड़ता है ! नागूर आण्डवर हम पर लानत भेजेंगे। कहीं वे नाराज हो जाएं तो उनकी बद्दुआ से घर जलकर राख हो जाएगा। सोच लो...मुझे जो कुछ कहना था, कह दिया।"

"अरी, पीर साहब कभी हम पर नाराज नहीं होंगे। वे जानते हैं, हम मुफलिस हैं। हम पर रहम नहीं करेंगे तो किस पर करेंगे? छप्पर छवा लें। इसमें कोई गुनाह नहीं है। पास में पैसा होते हुए अगर ऐसा करें तो गुनाह होगा। जब पास में पैसा नहीं होता तो उन्हीं से तो दुआ मांगते हैं, रहम मांगते हैं !"

"मुझे नहीं पता। उनकी मर्जी के खिलाफ काम करने से कहीं ऐसा न हो कि बद्दुआ लग जाए। तुम खूब सोच लो...।"

"रहने दो। जो भी होगा, देखा जाएगा।" लेकिन मम्मात्तिलु ने साहस किया। दीवार पर खूंटी के सहारे लटके गुल्लक को उठाकर तोड़ा। औंधा किया। चारों तरफ कुछ सिक्के बिखर गए। बटोरकर उन्हें गिना।

काफी है ! तीन कामगारों को मजदूरी देने और उनके चाय-पानी के लिए पैसा

मिल गया।

पुराना छप्पर खोलकर नया छवाना हो तो शुभ मुहूर्त देखकर काम शुरू करना चाहिए। कभी-कभी छप्पर के पुराने पत्तों या बांस के तीरों के बीच सांप निकल आते हैं। सच्चाई पर चलनेवाले सांप ! या बड़े-बड़े बिच्छू ! डंसते ही मौत हो जाए।

मस्जिद के मोदीन ने 'श्रीमंगल पंचांग' देखकर बताया कि जुमेरात के दिन की सुबह शुभ है।

गुरुवार के दिन बड़े सवेरे तीन कामगारों ने आंगन में आकर आवाज दी, "मोयलाली...!"

कामगारों ने सिर से अंगोछा खोलकर कमर पर बांध लिया और धारदार लंबा चाकू कमर पर लटकाकर छत पर चढ़ गए।

अमीना और बच्चे घर के बरतन-भांडे और दूसरे सामान बाहर निकालने में व्यस्त हो गए।

"खोल दें...?" छत के ऊपर बैठे नारायण पणिक्कर ने नीचे खड़े मम्मात्तिलु से इजाजत चाही।

"खोलो पण्क्किर..."

चमचमाते लंबे चाकू ताड़ के पुराने और जीर्ण-शीर्ण पत्तों पर चलने लगे। जैसे किसी संन्यासी की काली जटाओं को काट-काटकर गिराया जाता है, पुराने पत्ते काले-काले गुच्छों में नीचे झड़े।

तीरों के साथ नए पत्ते बांधकर छवाने का काम शुरू करने से पहले छत की चौखटों से लगे जालों की सफाई करने लगे।

नीचे मम्मात्तिलु और पीरू पुराने पत्ते बटोरकर एक जगह इकट्ठा करने लगे। जरा दूर नारियल पेड़ के नीचे तीन पत्थरों को मिलाकर अंगीठी की शक्ल दे दी गई थी। उस पर चावल और मूंग की दाल की 'कंजी' उबल रही थी। पीरू सूखी लकड़ियों से अंगीठी जला रहा था।

उसके मुंह में पानी भर आया। मूंग की दाल की कंजी, और साथ में इमली, मिर्च और नारियल पीसकर बनाई गई चटनी !

"पत्ते..." छप्पर के ऊपर से नारायण पणिक्कर ने आवाज दी।

"अरे पणिक्कर...नीचे उतर।"

मम्मात्तिलु ने मुड़कर देखा।

ईना पीना कूना का मुनीम और साथ में चार-पांच लोग।

"छप्पर छवाना बंद करो..." मुनीम ने हुक्म दिया।

पणिक्कर ने पगड़ी की तह में रखी पोटली से पान-सुपारी लेकर पान खाया। फिर

चिबुक पर हाथ धरे नीचे की ओर देखने लगा। देखें क्या होनेवाला है !

"छप्पर क्यों नहीं छवाना चाहिए...?" मम्मात्तिलु हाथ में लिए पत्ते पकड़े रहा, नीचे नहीं गिराए। फिर वह मुनीम की तरफ चला।

"तुम्हें घर खाली करना होगा।"

"लगातार चालीस साल से मैं यहीं रहता आया हूं, इसी घर में। पता है?"

"इसीलिए कहते हैं, खाली करना चाहिए। मुदलाली कोलंबो से आज या कल आएंगे। लिखा है, उनके आने से पहले तुम्हें इस घर से निकाल दिया जाए।"

"क्या कह रहे हो? उन्होंने सचमुच कोलंबो से लिखा है, मुझे घर खाली कराने के लिए?"

"हां...जी...मैं तेरे घर आकर इससे पहले भी तीन बार उनका हुक्म सुना चुका हूं...है न? अब तो पुराना जमाना नहीं रहा भैया...गांधी की हुकूमत आएगी तो तुम्हें जमीन से कभी बेदखल नहीं किया जा सकता।"

"मैं...यहीं पड़ा रहूंगा। उतरकर नहीं जाऊंगा। बोलो, मैं बाल-बच्चों के साथ कहां जाऊं? मेरे वाप्पा की जमीन पर तुम्हारे मुदलाली ने जबरन कब्जा किया था। जब मैं छोटा था, हम लोगों को सड़क पर निकाल दिया गया था। रात में सोने के लिए जगह की तलाश में हम भटकने लगे...उस दिन हम पर तरस खाकर सुलेमान पिल्लै ने यहां यह थोड़ी जगह दी थी। जब उनके हाथ में दम नहीं रहा, दस-पांच देकर तुम्हारे मुदलाली ने यह जमीन अपने नाम लिखा ली। उस समय मैं छोटा था। अब मेरा पीरू छोटा है।"

"ये सब बातें हमारे मुदलाली से पूछ लो। तुम्हें अभी घर छोड़कर निकलना होगा। मैं छप्पर छवाने नहीं दूंगा।"

छप्पर के ऊपर बैठे पणिक्कर को हुक्म दिया, "अरे पणिक्का, नीचे आ।"

"नीचे नहीं उतरना"...मम्मात्तिलु ने रोका।

पीरू ने जो अंगीठी में आग जला रहा था, बिगड़ती हालत का जायजा लिया। ढीली होती निकर को ऊपर खोंसा। फिर हाथ से 'स्टियरिंग' घुमाई और फिर मुंह से मोटर-इंजन की आवाज निकालते हुए सरपट दौड़ा। निकर के पीछे किसी की थूक लगी हुई थी।

"अरे, कहां भाग रहा है?" मम्मात्तिलु ने पूछा।

"टट्टी जाना है..." पीरू हार्न बजाते हुए भागा।

"अब क्या कहते हो? घर से निकलने वाले हो कि नहीं...?"

"मैं यहां से निकलकर जाऊं कहां?"

"कहीं भी जाकर मरो। यह सब मैं नहीं जानता। मुदलाली के आने से पहले घर से निकल जाना चाहिए तुम्हें।"

"नहीं निकलूंगा।"

"आज ही, अभी निकलना होगा। इसीलिए हम मौका देखकर आए हैं, जब तुमने छप्पर उतारा है।"

"तुम छप्पर छवाओ पणिक्का..." मम्मात्तिलु ने हाथ का पत्ता ऊपर फेंका।

मत "बांधो..." मुनीम ने जोर से कहा।

उड़कर आए पत्ते को पणिक्कर ने नहीं पकड़ा। ऊपर गया पत्ता वापस नीचे आ गिरा।

"छप्पर छवाने नहीं दोगे?"...मम्मात्तिलु ने गुस्से से पूछा।

"नहीं।"

"तो यही सही। बरखा होगी तो भी हम यहीं पड़े रहेंगे। तब भी नहीं जाएंगे। इसी घर में पड़े-पड़े मर जाएंगे। तुम इस घर से हमें बेदखल नहीं कर सकते। बेदखल करोगे हमारी मैयतों को।"

जरा दूर पर पीरू की कार का हार्न। पीरू स्टियरिंग घुमाते हुए भागा आया। इंजन की आवाज बंद हुई।

"वाप्पा, कासिम काका आ रहे हैं। मैंने जाकर बुलाया है।"

"कहां रे?"

"पीछे आ रहे हैं। मैं अपनी कार में पहले पहुंच गया !"

"कासिम भैया, देखो इस मुनीम की धांधली। कहता है, छप्पर नहीं बनेगा। मुझे यह घर छोड़कर निकल जाना होगा।" मम्मात्तिलु ने कासिम से फरियाद की।

कासिम को देखकर मुनीम को बुखार चढ़ अया।

"तुम कौन होते हो जी, छप्पर छवाने का काम रोकनेवाले?" कासिम ने पूछा।

"ईना पीना कूना मुदलाली का मुनीम हूं। यह गिरवी रखी जायदाद है। इसका पट्टा मुदलाली के नाम है। लगान भरनेवाले मुदलाली हैं। इसे इस घर से निकल जाना होगा।"

"यह नहीं हो सकता।"

"कासिम, पता है तुम कहां उलझ रहे हो? तुम्हें मालूम नहीं, किससे खेल रहे हो? चंबे व्यापार के सिलसिले में तुम्हारा वाप्पा मुदलाली का कर्जदार है।"

"मैं सब जानता हूं। मुझे खूब पता है कि कोलंबो को चंबे भेजनेवाले सभी व्यापारी कर्जदार होकर ही मरेंगे। यह भी पता है कि तुम लोग उनके परिवारों की मिट्टी पलीद करके ही मानोगे। उनके घर ढहाकर, तालाब खोदकर ही मानोगे।"

"जानते हो न?....तब सलीके से रहो।" मुनीम ने चेतावनी दी।

"यहां से चुपचाप चले जाओ और छप्पर का काम होने दो। जमाना बदल गया है, समझे? छप्पर को छवाकर रहेंगे।"

"इतनी हिम्मत?..कैसे छवाएगा बे !"

"हां बे ! छप्पर का काम होगा। होकर रहेगा।"

"यह इस घर से नहीं निकलेगा है न?"

"हां, नहीं निकलेगा।"

"वैकल्लूर से हाथी मंगवाकर अगर मैं। इस घर को न कुचलवा दूं, तो मेरा नाम बदल देना।"

"हराम के बच्चे, बदलने के लिए तेरा कोई नाम हो तब न..."

"कासिम रे..."

"अरे, यह गीदड़-भभकी किसे दे रहे हो? जमाना बदल गया है, समझे? अंग्रेज बड़े गुमान में थे कि उनकी सल्तनत में सूरज नहीं डूबता। उसी अंग्रेज सरकार के खिलाफ लड़ रही है हिंदुस्तान की जनता, बिना किसी हथियार के। बरतानवी सरकार का तख्त हिल चुका है, उसके उलटने में अब देर नहीं। देखा नहीं, पिछले महीने वयलार-पुन्नप्रा[1] में क्या हुआ? सी.पी[2] की बंदूकों के सामने सीना तानकर खड़े होनेवाली और कोई नहीं, सैकड़ों-हजारों की संख्या में भूखे-नंगे लोगों की पलटन ही थी। आखिर बंदूकें कम पड़ गई, सीने नहीं। इससे सबक ले। चुपचाप यहां से चले जाओ। गरीबों पर जुल्म मत करो।"

"अरे, तुमने तो जंग और लड़ाई की बात छेड़ दी...खबरदार...जरा मुदलाली को आने दो गांव में। इस घर को ढहाकर तालाब खोदकर रहेंगे।"

"जब तुम यहां तालाब खोदोगे, सूरज आधी रात को आसमान के ठीक बीचोंबीच निकलेगा।" कासिम ने छत पर बैठे पणिक्कर की ओर देखकर कहा, "छप्पर का काम जारी रखो पणिक्का..."

मम्मात्तिलु ने पत्ता फेंका। उड़ते हुए पत्ते को नारायण पणिक्कर ने पकड़ लिया और तीरे की नोक पर उसे बांधा।

26

मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम की अप्रत्याशित वापसी शुरू-शुरू में गांववालों के मन में आतंक का कारण बन गई थी। लेकिन धीरे-धीरे लोग उनके गुणों को पहचान गए। असल में उनके जरिए गांव वालों को दीन दुनिया के बारे में नई-नई जानकारियां मिलीं, ज्ञान के क्षितिज का विस्तार हुआ। पांचों वक्त, बिला नागा, नमाज अदा करनेवाले दीन-परस्त

1. पुरानी तिरुवितांकूर रियासत में आलप्पुषा के पास स्थित गांवों के लोग दीवान की तानाशाही के खिलाफ उठ खड़े हुए और शहीद हुए।

2. तत्कालीन, तिरुवितांकूर रियासत का दीवान, सर.सी.पी. रामस्वामी अय्यर।

मुहम्मद अली खां के चारों ओर लोग हमेशा मंडराते रहते। सुबह वलियार में नहाने जाते हुए, नदी में गले तक पानी में खड़े हुए दाढ़ी को सहलाते हुए बदन पोंछते हुए, यहां तक कि उठते-बैठते हर वक्त लोग उन्हें घेरे रहते। एक जमाने में मालिक इब्नुद्दीन ने जिस काले पत्थर पर बैठकर आराम किया था, इब्नु आलीसम भी अस्र और मग़रिब के बीच शाम के समय उस पत्थर पर पालथी मारे तसबीह घुमाते रहते। उस वक्त भी लोग उनके चारों ओर बैठे रहते। इल्म के ऐसे प्यासे लोगों पर खुश होकर इब्नु आलीसम अपने चालीस साल लंबे सफर के तजुर्बो की किताब खोलकर किस्से सुनाते। इन किस्सों को सुनकर लोग खुश हो उठते। उनके अनुभव इब्न-बतूता की पुस्तक किताब-उल रिहलत के किस्सों की तरह रोचक भी थे।

"गजब के इल्मवाले हैं !" लोग चकित हो जाते थे।

"मुसलियार साहब, आपका निकाह हुआ है? बाल-बच्चे कितने हैं?"

मुहम्मद अली खां मुस्कुराते। लोगों के लिए वह मुस्कान चौदहवीं के चांद की तरह मोहक थी।

"मेरे बाल-बच्चे तो आप सब बंदे हैं।" धीमी, मीठी आवाज में लफ्जों को गिन-गिनकर बोलनेवाली उनकी अदा पर लोग फिदा रहते थे। आलिमों का संजीदगी से भरा लहजा।

"आप रात को कहां सोते हैं? घर-बार नहीं है?"

"खुदा की मंजिल हमारी मंजिल, अल्लाह का घर मेरा घर।" यही था मुहम्मद अली खां का उसूल। इस फलसफे और उस मुस्कान दोनों से लोग बहुत ही प्रभावित थे।

मुहम्मद अली खां के हरे चोगे से उड़ती इत्र की खुशबू लोगों की नासिका में गुदगुदी पैदा कर देती।

लोगों का बस चलता तो नाक में बांध बनाकर उस खुशबू को भीतर ही रोक लेते। लेकिन इस कोशिश में नाकाम होकर वे वातावरण में फैली खुशबू को बार-बार भीतर खींचने लगे।

"नागूर की दरगाह शरीफ से आप कहां चले गए थे?" लोग उनका सफरनामा सुनने के लिए उत्सुक थे। कुछ लोगों ने बीड़ी सुलगा ली और कुछ ने नाक में खालिस मद्रासी सुंघनी घुसेड़ ली। कुछ लोगों ने पान-सुपारी का पुलिंदा खोला और पान बनाकर खाया। कुछ ने मीठे तंबाकू की सुगंधि फैलाई।

"दोस्तो, नागूर शाहुल हमीद औलिया की हुजूरी में मैंने एक लंबा अरसा बिताया। एक ही आसन पर बैठा रहा—बिना हिले-डुले। एक रात को क्या हुआ कि मैंने एक सपना देखा। खौफनाक सपना। लगा कि मेरे गले को कोई दबा रहा है। सामने कोई नजर नहीं आया। इधर दम घुटने लगा। मामला कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

'तने समझ क्या रखा है?'

जोर से आवाज आ रही थी। तब भी बोलनेवाला नजर नहीं आया।

'तू काफी दिनों से यहीं रहता है?...मुझे भूल गया तू...?'

एकाएक पूरे माहौल में गजब की महक छा गई। अगरबत्ती, खुशबूदार द्रव्य, चमेली—इन सबकी मिली-जुली गंध। माजरा मेरी समझ में आ गया।

'तू मुझे देखने के लिए अजमेर क्यों नहीं आया?'

'माफी चाहता हूं...जरूर आऊंगा।' मैंने कहा। अगले ही पल मेरे गले का वह दबाव कम हुआ। ठीक से सांस आने लगी। आंखें मिचमिचाकर चारों ओर देखा। कोई नहीं था। वही गजब की महक ! चमेली, अगरबत्ती वगैरह की मिली-जुली सुगंध। उसके बाद सो नहीं सका। नींद रफू चक्कर हो गई। सुबह की नमाज पढ़ने के बाद नागूर आण्डवर के मकबरे पर जाकर रोया, दिल खोलकर रोया। रो-रो कर माफी मांगी।

'चल...' एक भारी आवाज मकबरे से आई।

"देखा न...देखा न..." तमाम लोग आश्चर्यचकित हुए।

"फौरन निकल पड़ा। बाहर आया। घुप्प अंधेरा। अजमेर कैसे पहुंचूं। रास्ते का कोई पता नहीं। दिमाग में धुंधला-सा ख्याल आ रहा था कि मद्रास जाने पर अजमेर की गाड़ी मिलेगी। मैं पैदल चल रहा था। सुनसान और अनजान रास्ते पर। मैंने अजमेर के ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की याद की और चल दिया। पल-भर में कमाल हुआ ! अजीब बात हुई ! पूरब में सूरज निकला और मैंने अपने को तंजाऊर में पाया !"

"सच...?" श्रोताओं की आंखें अचरज से फैल गईं।

"हां, अब मैं तंजाऊर में था। फिर अपनी मंजिल पर आगे बढ़ चला। धूप चढ़ने से पहले जितनी राह कटे, बेहतर रहेगा। यही सोचते हुए चल रहा था। मुझे न थकान महसूस हुई, न भूख-प्यास। चलते-चलते मैं घुस गया जंगल में। जंगल में चलते हुए मेरे सामने खूंखार बाघ आ गया!"

"बाघ ! मेरे रब ! आपको मारा नहीं?"

"उल्लू का पट्ठा। बीच में टांग क्यों अड़ा रहा है? मुसलियार साहब को पूरा वाकया सुनाने दो..."

मुहम्मद अली खां ने आपबीती जारी रखी, "बाघ आया, मेरी नजर आजू-बाजू में गई, किस ओर भागूं? अगर मैं भागता तो बाघ मेरे पीछे पड़ जाता। उसका अंजाम होता मौत! सो आंखें बंद करके मैं वहीं खड़ा रहा। आंखें खोलकर देखता क्या हूं कि बाघ एक अदने-से बकरे की तरह खड़ा है और मुझे देखकर थर-थर कांप रहा है। फिर वह अपनी राह चला गया।"

"भाई लोगो, सुना? यही है ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की करामात ! 'क्राप' किए छोकरे

को इन सब बातों का इल्म कहां...” लोग आपस में बतियाने लगे।

“मैं फिर आगे चला। बेपानी जंगल। रास्ते में इंसान का बच्चा तक नहीं। लगातार आगे बढ़ रहा था कि तभी देखा छुक-छुक...छुक-छुक...करती हुई रेलगाड़ी आ रही है ! अल्लाह की कसम, वाप्पा की कसम, मरहूम उम्मा की कसम, मैंने बिल्कुल हाथ नहीं उठाया, लेकिन जो रेलगाड़ी तेजी से आ रही थी, मेरे सामने आकर फटाक पर रुक गई। 'ड्राइवर' उतरकर आया। मिन्नत करने लगा, 'जनाब, रेल में सवार हो जाइए। आपको मद्रास में उतार दूंगा'।”

“देखा?...देखा न ! यह औलिया की करामात नहीं तो और क्या है?”

“फिर?...तब क्या हुआ?” कहते हुए लोग बड़े जोशो खरोश से मुहम्मद अली खां के और करीब आ गए। वे मुंह-बाए कहानी सुन रहे थे। कुछ लोग अंगोछे के सिरे कान में से कान कुरेदने लगे।

“मेरे चढ़ते ही रेलगाड़ी ने सीटी बजाई कू...कू...और छका-छक...छका-छक करते हुए तेजी से चल पड़ी। यहां तक कि मद्रास पहुंचकर ही रुकी। मैं रेल से उतर पड़ा। उतरते ही देखा, सामने अजमेर वाली गाड़ी खराब हुई खड़ी है। कितने ही 'मिकानिक' और 'इंजिनियर' आए। कोई भी उसे ठीक नहीं कर पाया। वह जहां थी, वहीं थी। टस से मस नहीं हो रही थी...”

“फिर...”

“तो मुझे यह बात मालूम [illegible] थी कि रेल खराब हो [illegible]

“हां, सच बात है, आपको क्या पता?”

“तो मैं अजमेर की गाड़ी में चढ़ने लगा। एक आदमी ने मुझे टोका, इस पर मत चढ़िए। यह रेल नहीं जाएगी। आगे रखा कदम पीछे हटा लिया। मैंने पूछा, रेल क्यों नहीं जाएगी? तब पता चला कि कल से ही वह खराब है। मुझे पेशाव लगा था। सोचा, जरा पेशाब करूं। यही सोचकर रेल में पांव रखा और पांव रखते ही रेल के इंजन में घरघराहट की आवाज। एक लंबी सीटी...फिर फक-फक की आवाज। फिर धुआं ! सभी लोग भागे हुए आए। रेल में चढ़ गए और रेल फर्र-र्र...करके हवा से बातें करने लगी !”

“सच? रेल के अंदर पेशाब करने पर पानी नहीं मिलता है न?”

यह सुनकर अली खां ने कहकहा लगाया।

“रेल में संडास होता है, पानी भी होता है।”

“ऐसी बात है? फिर तो खाना-पीना सब होगा? घर की तरह?”

“बिल्कुल...”

“मुसलियार जी, 'लयिलु' (रेल) कैसी होती है?”

“लंबी-सी...डब्बे की तरह होती है...उसमें लेट सकते हैं, चल-फिर सकते हैं।”

"बीड़ी भी फूंक सकते हैं?"

"खुशी से।"

"पान खा लें तो थूक सकते हैं?"

"हां भई, थूक सकते हैं।"

"तब तो कमाल की चीज है लयिलु गाड़ी..."

"बकवास बंद करो, कमीने !"

कोई चिल्लाया। मुसलियार जो वाकया सुना रहे थे, उसका सिलसिला टूटने से उसे खीज हो रही थी। उसने अली खां से पूछा, "फिर..?"

"सीधे अजमेर जाकर उतरा...वहां से ख़्वाजा साहब की हुजूरी में आंखें बंद करके बैठ गया...दस-पंद्रह साल बैठा रहा।"

"तब...खाना-पीना? हमारे यहां की तरह नेत्तिली मछली मिलती थी साहब? खाने के लिए अच्छी चीज मिलती थी?"

"इन सब बातों का मुझे क्या पता? मैं तो एक ही मुराद लिए बैठा रहा। न भूख, न प्यास, न थकान।"

"सच? कुछ भी नहीं खाते थे?"

"फल-दूध से परहेज नहीं था। खुदा के बंदे दूध और फल ले आते। जरा-सा पीकर बाकी लौटा देता। मेरा जूठा किया दूध पीने के लिए बहुत-से लोग इंतजार करते रहते। फल को भी जरा-सा चखकर लौटा देता। इसी तरह दस-पंद्रह साल खुदा की मुराद में बैठा रहा।"

"दस-पंद्रह साल...!"

"पंद्रहवें साल 'दूसरी बड़ी जंग' शुरू हो गई।"

"जंग !" लोगों की आंखें अचंभे से फैल गईं।

"हां, जंग। युद्ध, वार...वह कटी मूंछवाला हिटलर था न, अव्वल दर्जे का चोर नस्रानी!" अली खां ने दांत भींचे, "चारों तरफ अफवाह उड़ी कि वह हमारी मस्जिदों पर बम गिरानेवाला है...मेरा इस्लामी खून खौलने लगा। मैंने जोर से पुकारा—'या अल्लाह ! मेरे वली !' मेरी यह पुकार सो रहे ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती साहब ने सुन ली। हुक्म हुआ—'जिहाद पर चलो।' मैं निकल गया। सीधे गोरे फिरंगी की पलटन में जाकर शामिल हो गया। धायं-धायं चालीस-पचास दुश्मनों पर गोली दागी। मेरे पास एक बम आकर गिरा। पैर साधकर मैंने उसे गेंद की तरह उछाल दिया। लुढ़ककर वह दूर जा गिरा। उससे कोई सौ डेढ़ सौ लोग हलाक हो गए।"

"ऐं...आपको कुछ नहीं हुआ...?"

"कैसे होता? आप जानते हैं, मैं कहां से आया था, किनके हुक्म से निकला था।"

"यही बात है पिल्लै, अजमेर के बादशाह के पास से चले थे न !"

"बंदूक बेधती कैसे इस सीने को?" सीना फुलाते हुए उसने पूछा।

"नहीं बेधती।"

"तलवार काटती?"

"नहीं काटती।"

"फिर?" किसी श्रोता ने उत्सुकता जताई।

"फिर क्या था? लड़ाई खत्म हुई। मैं सीधे अजमेर लौटा और चिश्ती बादशाह की हुजूरी में हाजिर हो गया। पहले की तरह उनकी खिदमत करते हुए वहीं रहा। आंखें बंद करके मुराद मांगता रहा। इस तरह एक-दो साल बीते। फिर एकाएक हुक्म हुआ—-चलो, निकलो।"

"कहां?"

"अपने गांव। वहां एक लड़का घूम रहा है। बाल बढ़ाकर मनमानी करने पर तुला हुआ है। उसका दिमाग ठिकाने लगाने के लिए निकलो।"

"मैंने मन में कहा—सुबह होने दो, निकल पड़ेंगे। यह ख्याल करके मैं जरा-सा लेट गया। आंख लग गई। जब आंखें खुलीं तो देखता क्या हूं कि यहां, इस गांव में हूं। देखा तो रात के बारह बजे थे।"

"सुभान अल्लाह ! इसी को कहते हैं कुदरत की करामात !" लोगों को बड़ा अचंभा हुआ।

"अल्लाह की कसम ! रसूल की कसम ! मुसलियार जी आप इस गांव से निकलकर कहीं नहीं जाइएगा। आप यहीं पर रहकर हमारी रहनुमाई करते रहिएगा। उस छोकरे को ठीक कीजिए, इस गांव का भला कीजिए।" मैदीन पिल्लै ने गिरगिराकर गुजारिश की।

"पिल्लै, यूं ही अर्ज करने से बात नहीं बनेगी। मुसलियार जी छड़े बने रहकर इस गांव में कितने दिन रहेंगे? इनका निकाह कराके यहीं बसाएं, तब बात बनेगी।"

"अच्छा सुझाव है !" सबने समर्थन किया।

"मुसलियार जी, आप मेहरबानी करके 'ना' न करें। हम लोग आपका निकाह करवाना चाहते हैं।"

"निकाह?"

"हां, एक खूबसूरत लड़की से आपका निकाह करा देंगे। हम चाहते हैं, आप इसी गांव में रहें और यहीं की मिट्टी में समा जाएं...मंजूर है?"

चुप्पी।

"खुदा के लिए 'हां' कीजिए न !"

"अच्छा, ठीक है।"

"तब फौरन लड़की देखें?"

"सिर्फ लड़की देखने से क्या बनेगा? खाना...कपड़ा, गुजर-बसर भी तो होनी चाहिए।"

"थोड़ा बहुत दहेज-वहेज की रकम चाहिए। आप यही कहना चाहते हैं न?"

मुहम्म्द अली खां ने सिर हिलाया—'हां'।

"सही बात है, फौरन देखेंगे।"

"साथ में थोड़े-से...थोड़े-से सोने के गहने भी।"

"ठीक है मुसलियार ! आप देखते रहिए। आपके निकाह का जिम्मा अब हमारे कंधे पर...।"

पश्चिम के आसमान पर जब सूरज खिसकता हुआ उतरने लगा, तब अजान हुई। लोग नमाज के लिए मस्जिद आने लगे।

नमाज के बाद दुआ पढ़कर हाथ चूमे गए, लोगों के उठने से पहले फरीद पिल्लै उठकर खड़े हुए। बड़े अदब से मुंह के नीचे हाथ रखते हुए वे मुस्लिम भाइयों से मुखातिब हुए।

"मुअजिज भाइयो ! हमारी बस्ती के मूल निवासी कोलंबो में तिजारत करनेवाले जनाब ईना पीना कूना मुदलाली पांच साल पहले मक्का शरीफ से हज करके लौटे हैं। यह बात आप सभी को मालूम है। हज का सफर पूरा करने के बाद मुदलाली पहली बार अपने वतन आ रहे हैं। हाजी साहब ईना पीना कूना का शानदार इस्तकबाल करना हम सब का फर्ज है। इसलिए मुहल्ला कमेटी की ओर से और दीन-उल-इस्लाम के नाम पर मैं आप सभी से गुजारिश करता हूं कि बस-स्टैंड से मस्जिद तक और मस्जिद से हाजी साहब के मकान तक हरी झंडियां और ऊंचे दरवाजे बांधने और उनके रास्ते में चमकदार रेत बिछाने के लिए मुहल्ले के सभी लोग दो-दो रुपए का चंदा दें।"

"वाह, वाह..!" मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम ने फरीद पिल्लै के इस ऐलान का जोरदार स्वागत किया। सुननेवालों को इतनी खुशी हुई मानो हाजी ईना पीना कूना का सार्वजनिक अभिनंदन इसी वक्त हो रहा हो।

"हबीब, हमारा ऐलान कैसा रहा?"

"क्या कहने, बहुत बढ़िया !" इब्नु आलीसम ने दिल खोलकर तारीफ की।

"उस छोकरे की शैतानी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है..." फरीद पिल्लै ने मुहम्मद अली खां से मशविरा किया।

"कैसी शैतानी?"

"आप भी जानते हैं कि हमारी बस्ती के खासमखास मुदलाली हैं ईना पीना कूना। समंदर पर जाकर रात-दिन की मेहनत से जो पैसा मिला है, उसमें से वे नेकी के कई काम करते हैं। हर रमजान में दिल खोलकर जक़ात देते हैं। उनके बाड़े में चालीस साल से यह मम्मात्तिलु घर बनाकर रह रहा है। मालिक के कहने पर आसामी को निकलना

चाहिए कि नहीं?"

"हां, निकलना ही चाहिए।"

"वह छप्पर को नए सिरे से छवाने लगा है। मालिक के मुनीम ने टोका। इसमें कोई गलती है? आप ही बताइए।"

"बिलकुल नहीं।"

"इसमें गलती नहीं थी न? लेकिन यह छोकरा जो है, अरे वही, जिसे किसी बात का शऊर ही नहीं है, पेशाब करने का भी नहीं, खड़े-खड़े पेशाब जो करता है...दो कौड़ी का छोकरा, इंगरेजी के चार टेढ़े-अच्छर पढ़कर जो अपने आपको आलिम समझता है, उस सिरफिरे ने मुनीम को अबे-तबे कह दिया और इधर-उधर की बातें सुनाकर उसे धमका दिया। क्राप कटवाला वह हरामी का बच्चा छप्पर बनवाने में मदद करने गया था। ऐसा जुल्म आपने कहीं देखा है हबीब..."

"ऐसी बात है? उसने छप्पर बनवा दिया।"

"हां...दूसरों की जायदाद पर उनकी बिना मंजूरी के कब्जा करने का इस्लाम में कहीं कानून है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं है। मालिक की मंजूरी के बिना दांत कुरेदने के लिए एक तीली लेना भी हराम है।"

"बजा फरमाया आपने। तब तो इसका मतलब यही निकला कि इस छोकरे के सारे काम दीन-उल-इस्लाम के खिलाफ हैं। ऐसे में इसका क्या किया जाए।"

"वह अब कांग्रेसी भी है।"

"मतलब... ।"

"गांधी पार्टी का है। अंग्रेजों को भगाने की कोशिश करनेवाली पार्टी का।"

"ओ...हो, यह बात है?"

"चूंकि वह कांग्रेस पार्टी में है, इसलिए हम सभी मुसलमानों को मुस्लिम लीग में शामिल होना चाहिए।"

"वह क्या चीज है? हमारी समझ में नहीं आ रही।"

"मुस्लिम लीग जो है, जिन्ना की पार्टी है।"

"कितना शानदार दिमाग है हबीब ! यह भी समझा दीजिए। जिन्ना मुसलमान नहीं है क्या?"

"सोलहों आने मुसलमान है।"

"तब इस छोकरे को जाति-बिरादरी से निकाल दें?"

"इसके अलावा कोई और चारा नहीं है।"

"ईना पीना कूंना मुदलाली को सही-सलामत लौटने दीजिए। उनसे भी मशविरा कर

लेंगे। हम अपने तईं झटपट कोई फैसला लेंगे तो यह फिर से इस गांव में हैजा ले आएगा। जरा सब्र करें। हाजी साहब का इस्तक़बाल होने दें।"

फरीद पिल्लै सलाम करके घर चले गए।

मुहम्मद अली खां फिर से काले पत्थर पर बैठ गए। लोगों ने देखा उनकी उंगलियां तसबीह के मनकों को फेरने लगी हैं।

"बड़ा सलीकेवाला इंसान है !" घर लौटते हुए सभी लोग उनकी तारीफ कर रहे थे।

27

दीवान सी. पी की बंदूकों द्वारा छलनी किए सीनों से फूटी रक्त-धारा से वयलार-पुन्नप्रा की मिट्टी लाल हो गई। खून की उस नदी में अनगिनत जानें तड़प-तड़पकर शांत हुईं। इससे भी सी. पी की विशेष मलाबार पुलिस को संतोष न हुआ तो कंधे पर बंदूक रखे पुलिस दल ने जनता को दहलाने के लिए गांवों और बस्तियों में 'परेड' की। देखते ही 'फायर' करने का हुक्म था, जो तामील भी हुआ। पुलिस को चकमा देकर भागे अपराधियों का शिकार शुरू हुआ। आधी रात के सन्नाटे में पुलिस के बूटों की आहट गांव की धूल भरी गलियों में सुनाई देती। रात के अंधेरे में उसकी लाठियां सायं-सायं करतीं। सड़क पर दौड़ती 'इडिवण्डी'[1] का शोर सुनकर लोग थर-थर कांपते हुए विस्तर पर औंधे पड़े थे।

पुलिस की सजग आंखें अंधेरे कोनों को भी बेधती चलीं। संदिग्ध स्थानों पर छापा मारा गया। आधी रात में अगर किसी घर से टिमटिमाती रोशनी भी बाहर आ रही होती तो वहां बंदूक के बट से दस्तक देते। घर में रहनेवालों को जगा देते। श्री अनंत पद्मनाथ[2] की रियासत तिरुवितांकूर के खिलाफ साजिश तो नहीं चल रही, यह जानने के लिए उलट-पलटकर सवाल करते और धमकियां देते। संदिग्ध व्यक्तियों को उठाकर 'इडिवण्डि' के अंदर फेंक देते।

'इडिवण्डि' आने से पहले हरेक को अपने घर पहुंचने की जल्दी होती थी। लेकिन क्या किया जाए? उस दिन 'पालत्तडि' घर के एक बुजुर्ग की बर्षी थी। बुजुर्ग के देहांत के बाद दो-चार बार पलक झपकने से पहले ही साल निकल गया। 'पालत्तडि' घर में उस

1. 'घूंसा गाड़ी'। पुलिस वैन, जिस पर संदिग्ध अपराधियों को पकड़कर थाने ले जाते हैं और पकड़ते ही लातों-घूंसों की वर्षा शुरू हो जाती है।

2. तिरुवितांकूर रजवाड़े का कुलदेवता।

रात 'मौलूद'[1] का आयोजन था। मौलूद के बाद गांव-भर का पंक्ति-भोज। जोरदार सुरीली आवाज में 'मौलूद' पढ़ने के लिए आसपास के आठ गांवों से आठ बड़े 'लब्बे' (मौलवी) बुलाए गए थे। चार रेशमी गद्दों और चार 'कुत्तुविलक्कु'[2] को घेरकर बैठे आठों लब्बों ने गला खोलकर, मगर सुरीले कंठ से पाठ किया तो लोग गद्गद हो गए। भक्ति-रस में सराबोर उन अरबी मौलूदों ने गांव के वातावरण में एक मायावी वलय का सृजन किया। कहीं कफ का प्रकोप न हो जाए, गला बना रहे, इस बात के मद्देनजर सभी लब्बे बीच-बीच में काली मिर्च और ताड़ का गुड़ छान लेते थे। लब्बों के सिर पर धवल रेशमी वितान तना हुआ था। उसमें लटक रहे चमेली फूलों के गजरों से निकली सुगंध जब गांव के कोने-कोने में फैल गई तो लोगों के दिलों में मृतक की स्मृतियां जाग उठीं।

मृतक-भोज खाने के लिए गरीब लोग पालत्तडि घर के सामने घास से भरी जमीन पर बैठकर पुराने किस्से सुनाते हुए समय काट रहे थे। पीरू का हाथ पकड़े आए मम्मात्तिलु ने भी एक जगह बैठकर 'मापला गीत' के दो-चार बंद गुनगुनाए। मछुआरिनों की खुली देह से मछली की गंध उठकर हवा में फैल रही थी। उन्होंने अपनी बगल में रखे पानदान से पके हुए पान लिए, उनकी पीठ पर चूना लगाया और कल की जूठी कच्ची सुपारी समेत ताड़-गुड़ की चाशनी में औंटाए तंबाकू के साथ पान खाया। फिर पूरे परिसर को थूक और पीक से पाट दिया।

ममदाजी बगल में अपनी गुदड़ी दबाए और हाथ में चांदी की मूठवाली छड़ी लिए बाड़ से लगे खड़े रहे। किसी से बात किए बिना अपने में ही डूबे हुए उनकी सारी चिंता रैन-बसेरे की थी। रात में सिर छुपाने को जगह कहां मिलेगी, इसी बात की चिंता थी। दो कौर खाने के बाद कहीं लेटने को जगह चाहिए। उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी कि फरीद पिल्लै 'आपातकालीन हुक्म' निकालेंगे और मस्जिद में उनका सोना बंद कर देंगे।

अगर बाहर वाले लोग मस्जिद में सोएंगे तो सी.पी की पुलिस संदेह के आधार पर उनकी धर-पकड़ के लिए मस्जिद में बूट पहने दाखिल हो जाएगी और उसे नापाक कर देगी—फरीद पिल्लै की यह दलील गांववालों को भी जंच गई।

गुदड़ी को बगल में दबाए और छड़ी टेकते हुए ममदाजी जब घुप्प अंधेरे में मस्जिद से निकले तो उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाएं और कहां रात बिताएं। रात की खोह में आंख गड़ाए वे चिंतामग्न खड़े रहे और तब माहौल में पालत्तडि के बुजुर्ग की बर्षी की महक फैल गई। दो दिन से रात को फाका चल रहा था। रात को नियमित रूप से किसी न किसी घर से खाना आया करता था, इधर दो दिनों से वह अप्रत्याशित

1. पैगंबर साहब का कीर्ति-गान।

2. पीतल का बना भव्य तैल-दीप, जिसके चारों ओर बत्तियां जलती हैं।

रूप से बंद हो गया था।

"एक गरीब और लाचार आदमी को बाल-बच्चों समेत घर से निकालना अंधेरगर्दी नहीं तो क्या है?" ममदाजी ने एक दिन चाय की दुकान के सामने बेंच पर बैठकर टिप्पणी की थी। इसे ही किसी ने सुन लिया था।

"यह परदेसी भडुआ भी उस हरामी के साथ मिल गया?" लोग ममदाजी की टिप्पणी को हजम नहीं कर पा रहे थे। उसी दिन से उनके रात के खाने पर विराम लगा दिया गया।

भूख के भयानक पंजों ने जब उनकी अंतड़ियों को दबोचा तो ममदाजी ने फैसला किया कि थोड़े दिनों के लिए गांव छोड़कर कुलच्चल चले जाएं और दो-एक हफ्ते वहां रहने के बाद और कहीं चल दें।

एक ही स्थिति में खड़े-खड़े ममदाजी थक गए। रात को कहीं सो लेंगे और पौ फटने से पहले ही समुद्र किनारे नारियल के बागानों से लगे-लगे चलेंगे तो रेत गर्म होने से पहले कुलच्चल पहुंच जाएंगे। मन में उन्होंने यही गणना की। यहां तो हालत बिगड़ रही है, और दो-चार दिन रहे तो अंतड़ियां सूख जाएंगी।

रात के दस बज गए, फिर भी आरकूस अली ने अपनी दुकान नहीं बढ़ाई। वैसे 'इशा' का अजान सुनकर वह दुकान बंद कर देता था। अगर वह पटरी डाल देगा तो उस बरामदे में सोया जा सकता है। आंखों में नींद भरी थी। सुवह से पहले उठना भी है। तभी पौ फटने से पहले कुलच्चल की ओर निकल सकते हैं। 'बर्षी' वाले घर में पेट भरने के वाद बीड़ी और पान-सुपारी की तलब में आनेवाले लोगों की खिदमत करने के मकसद से अरकूस ने धक्का-मुक्की करके पहली पंगत में वैठकर खा लिया था और इस समय तीली से दांत कुरेद रहा था।

आखिरी पंगत में बैठे ममदाजी ने ज्यों ही पहला कौर मुंह तक उठाया, वैसे ही आस-पास बैठे लोग उन्हें घूरने लगे। कुछ लोगों ने तरस भी खाया, "खाने दो बेचारे को। बर्षी का भात है। मरहूम की रूह को सुकून मिलेगा।"

"इसे खाना देना भी गुनाह है। मर जाए, तब भी इसके मुंह में दाना नहीं डालेंगे।" कहते हुए कोई आदमी उनकी थाली ही उठा ले गया। यों उनके मुंह का कौर छीनने पर किसी को एतराज भी नहीं हुआ।

ममदाजी ने गीले हाथों को गुदड़ी से पोंछ लिया। लाठी टेकते हुए खाली पेट बाहर निकले तो अरकूस ने फूंक मारकर चौदह नंबर लैंप की बत्ती बुझा दी। फिर उसने चूट्ट की मशाल जलाई और उसे हिला-हिलाकर अंधेरे को चीरते हुए निकल गया। ममदाजी ने फूंक मारकर दुकान के बरामदे की कुछ जगह साफ की और गुदड़ी को सिरहाने रखते हुए लेट गए, "या मेरे रब, तेरा ही आसरा है।"

दुकान के सामने जूठे पत्तों के अंबार के लिए गली के कुत्तों में छीना-झपटी शुरू हुई।

'गोश्त' की गंध के साथ पापड़ और चेव्वालै[1] की गंध भी आ रही थी। खाली देगों, हांडियों और बरतनों को मांजने-साफ करने की आवाज। ममदाजी के खाली पेट से भी कुछ इसी तरह की आवाज निकलीं।

लाल मिट्टी वाले बरामदे की ठंडक और मिट्टी की सोंधी गंध में सांस लेते हुए ममदाजी सो गए। फिर अपनी टांगों के पास लाठी ठोकने की आवाज सुनकर वे कांपते हुए उठे।

"अबे, उठ..." भारी आवाज में कोई चिल्लाया।

ममदाजी सकपकाकर बोले, "कौन हो जी?"

चार-पांच पुलिसवाले खड़े थे। अगला सवाल, "तेरा क्या नाम है...?"

"ममदाजी..."

"कौन-सा गांव है?"

"कांजिरपल्ली।"

"यहां क्या काम करता है?"

"भीख मांगने के लिए आया था।"

"तूने कितने पुलिसवालों को मारकर दफनाया...?"

ममदाजी घबरा गए। कुछ समझ में नहीं आया।

"बोल बे...?"

वे सकपकाए।

"अबे, मुंह खोल...कुत्ते की औलाद !"

मैं बेकसूर हूं...सरकार...!"

"यह वही है..." पुलिस के एक जवान ने दूसरे को आंख मटकाते हुए कुछ संकेत किया।

"चल बे..."

"हुजूर, मैं बेकसूर हूं। कुछ नहीं जानता। कुछ भी नहीं..." वे गिड़गिड़ाए।

"इसकी मलयालम जो है, वहीं की जबान है।" एक पुलिसवाले ने पहचाना।

"चल रे...बदमाश कहीं का..." एक ने डंडा उठाया।

ममदाजी की समझ में कुछ नहीं आया। वे स्तब्ध खड़े रहे। सी.पी. की पुलिस ने लपककर उनका गरेबां पकड़ लिया।

"चल बे...!"

ममदाजी चल पड़े। जरा दूर 'इडिवण्डि'[1] खड़ी थी।

किसी पुलिसवाले द्वारा फेंकी गई टार्च की रोशनी में उन्होंने देखा, 'इडिवण्डि' का

---

1. एक खास किस्म का लाल मोटा केला।

2. पुलिस वैन

पिछला दरवाजा खुला है।

"अंदर चल, हरामी के बच्चे !" लाठी ऊपर उठी।

डर से कांपते ममदाजी गाड़ी में बैठे। रेत को उलीचते हुए 'इडिवण्डि' के पहिए जैसे ममदाजी की गर्दन पर चले।

गांव की मिट्टी पर उतरी सुबह की रोशनी में इडिवण्डि के पहियों के निशान देखकर लोगों के चेहरों पर संदेह उभर आया।

"कल रात यहां कौन आया था? गाड़ी के पहियों के निशान दिखाई दे रहे हैं।" लोगों ने झुककर उन निशानों की जांच-पड़ताल की।

सुबह होते ही अरकूस कलियिंक्काविल्लै के हाट जाने के लिए बस में सवार हुआ। बेट्टुमणी के चौराहे पर वह बस से उतरा। रास्ता घुमावदार था। ादी में पानी ज्यादा नहीं था। पार करने पर हाट जल्दी पहुंच सकता है। अरकूस ने लुंगी को तह करके बांधा और नदी में उतर पड़ा। देखता क्या है, नदी के उस पार झाड़ियों के पीछे दो पुलिसवाले ममदाजी के हाथों में बेड़ी लगाए लिए जा रहे हैं।

"ओह ! यह बात है...! वह शैतान सिपाहियों की आंख बचाकर इस बस्ती में छिपा रहा?"

समुद्र-तट की रेत पर गाड़ी के जो निशान दिखे थे, उसके रहस्य को हाट से गांव लौटे अरकूस अली ने खोला। अरकूस ने अपने सिर की कसम खाकर बताया कि उसने बेड़ियों में जकड़े ममदाजी को देखा। साथ ही एक झूठ भी जोड़ा—ममदाजी की कूबड़वाली पीठ की मरम्मत भी हो रही थी—आठ-दस पुलिसवाले मिलकर मार रहे थे।

लोग इस नजारे की कल्पना करके बार-बार हंसे।

ममदाजी को पुलिस ने किस तरह लात-घूंसों से मारा, इसका अभिनय करने के बाद अरकूस अली ने विस्तार से बताया कि कैसे ममदाजी 'अल्लाह...मेरे वाप्पा' की गुहार लगा रहे थे। बोला कि उसने अपने दोनों कानों से सुना है। यह सुनकर हंसते-हंसते लोगों के पेट में बल पड़ गए।

"बस करो भैया...हंस-हंसकर पेट दुख रहा है। लोगों ने इस वर्णन पर विराम लगा दिया। और सुनते तो पेट फट जाता।

"तब...यही वह शख्स है, जिसने कासिम को बिगाड़ा है। अब आई बात समझ में?"

"नहीं, ममदाजी को बिगाड़नेवाला कासिम है। मैं जानता हूं, बड़ा शैतान तो कासिम ही है।" मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम ने फरीद पिल्लै से कहा।

"बेचारा, बुड्ढा !" फरीद पिल्लै तरस खाने लगे।

"उस बुड्ढे को मस्जिद में सोने दिया होता तो...?" मुहम्मद अली खां ने पूछा।

"पुलिस के सिपाही बूटों समेत मस्जिद में घुसते और उसे नापाक करके उस बुड्ढे को

ले गए होते। मुमकिन था, गलती से आपको भी ले जाते।"

"मुझे...? मुझे ले जाएंगे? अजमेर के शाहंशाह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने मुझे यहां भेज रखा है। मुझे हाथ लगाएगा सिपाही? उस हाथ को लकवा न मार जाएगा? मैं बेखौफ होकर मस्जिद में सो रहा हूं। आकर मुझे पकड़ लें, जरा मैं भी तो देखूं।" मुहम्मद अली खां ने चुनौती दी। गंजे सिर पर झलके पसीने को मक्का शरीफ की पीली शाल से पोंछा।

"बाल तो आपके पक गए !" फरीद पिल्लै ने मजाक में कहा।

"क्यों नहीं पकेंगे? साठ साल तो पूरे हो गए हैं !" मुहम्मद खां ने हंसते हुए जवाब दिया।

"अब देर नहीं करेंगे आपके निकाह में। लड़की एकदम खूबसूरत है। छुओ तो खून टपकेगा। बीस साल के अंदर-अंदर है। घराना अच्छा है, हालांकि अब माली हालत जरा कमजोर है।"

"खैर, सिरजनहार ने मेरे लिए एक लड़की यहां रखी हुई है। देखा न, रब-उल-अल-अमीन का खेल कैसा है...!" मुहम्मद अली खां ने रब की रहमत को नवाज़ा।

ईना पीना कूना का मुनीम जब पंडारविला घर पहुंचा तो दरवाजा बंद था। मुनीम ने दस्तक दी।

"कौन है..?" राहिला ने दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते हुए उसने कासिम के होने की उम्मीद की थी। लेकिन बाहर खड़ा था ईना पीना कूना का मुनीम। जालिम।

वह भागकर ओट में जा खड़ी हुई। वालिद से कहने लगी, "वाप्पा, कोई आया है...।"

फर्श पर चिपके गीले कपड़े को जिस तरह उठाया जाता है, मीरान पिल्लै चटाई से उठे। थके हुए, कांपता हुआ बदन...बाहर आए।

ईना पीना कूना का करिंदा...मुनीम!

मीरान पिल्लै पीछे हटे और चारपाई पर जा बैठे। मुनीम मीरान पिल्लै के पास आकर बैठ गया।

"कोलंबो से कोई चिट्ठी आई...?" मुनीम ने बड़े प्रेम से पूछा।

मीरान पिल्लै ने सहमति में सिर हिलाया।

"पढ़कर देखा?"

इस बार उन्होंने नकारात्मक मुद्रा में सिर हिलाया।

"मुझे भी चिट्ठी मिली है..."

मीरान पिल्लै ने बिना किसी भेद-भाव के गौर से मुनीम को देखा।

"क्या आप मुदलाली के देनदार हैं?"

"हां।"

"तो क्या जवाब दे रहे हैं?...मुदलाली अब जरा तंगी में हैं...फौरन कर्जा अदा करने

के लिए कोई रास्ता ढूंढ़ने को कहा है...।"

"कौन-सा रास्ता?" मीरान पिल्लै ने धीमे, किंतु दृढ़ स्वर में पूछा।

"कोई भी...।"

"आप बताइए रास्ता...।"

"हाथ में पैसा न हो तो कोई जायदाद लिखकर देनी होगी, ऐसा लिखा है।"

मीरान पिल्लै ने सिर झुका लिया। थोड़ी देर तक वहां चुप्पी बनी रही।

"क्या कह रहे हैं..." मुनीम ने उन्हें याद दिलाया।

"कहने के लिए क्या रखा है? मुझे इंतजार था कि आप दो दिन पहले ही आएंगे। दो दिन देर से आए हैं, कोई बात नहीं इस बीच में अपना दिल मजबूत कर लिया है। इस दुनिया का कर्ज उस दुनिया में भी रहता है। इसलिए आप जो भी कहेंगे मैं मान लूंगा।"

"देने के लिए पैसा है?"

"बाकी हैं चार अदद हम लोग और हमारा यह घर।"

"यह घर उस रकम के लिए पूरा कहां पड़ेगा...? दीवारें भी मिट्टी की हैं और ऊपर का छप्पर पत्तों का।"

मीरान पिल्लै कुछ नहीं बोले।

"घर के अलावा कोई गहना-जेवर है?"

"हम चारों जो पहने हैं, वही कपड़े हैं। अगर पूरा नहीं पड़े तो हमारे कपड़े भी उतार लीजिए।"

"ही-ही, कोई बात नहीं। कपड़े नहीं चाहिए। पहने रहिए खुशी से...तब बताइए कब कराएं इस घर की रजिस्ट्री।"

"आपकी मर्जी...जब आप चाहें।"

"घर का मूल दस्तावेज?"

"रखा है", अंदर झांककर आवाज दी, "बेटी, घर का दस्तावेज लाना..."

राहिला एक जीर्ण-शीर्ण दस्तावेज लेकर आई और दरवाजे के उस ओर खड़ी हो गई। मीरान पिल्लै ने धीरे-से आगे बढ़कर दस्तावेज हाथ में लिया और चारपाई पर आकर बैठ गए।

"मेरे वालिद के वालिद का बनाया हुआ यह घर। पांव में समुद्र-तट की तपन और सिर पर तीखी धूप झेलते हुए जिंदगी-भर पसीना बहाने के बाद मिला यह तोहफा। मेरे वालिद और खुद मैं जिस घर में पैदा हुए, उसे आज खो रहा हूं। यह लो, घर का मूल दस्तावेज।"

मूल दस्तावेज मुनीम के हाथ में रखते हुए मीरान पिल्लै के हाथ कांप रहे थे। आंखें लाल हो गईं। लेकिन आंसू नहीं गिरे, क्योंकि आंसुओं का स्रोत बहुत पहले ही, अपने उद्गम

में ही सूख चुका था।

मुनीम ने दस्तावेज खोलकर उस पर नजर दौड़ाई। कहा, "यह घर जो है, मुदलाली की मंझली बेटी की बेटी के नाम लिखा जा रहा है। मुदलाली ने दस्तावेज इस तरह लिखने को कहा है, 'तेगडी विलाकम घर के निवासी मुत्तलीफ पिल्लै का बेटा अब्दुल सलाम मुदलाली उम्र छत्तीस साल, धंधा खेती, अपनी हिफाजत में रहनेवाली बेटी आइशा कण्णु नफीसा बीबी, उम्र साढ़े छह साल, के नाम उसके सरपरस्त के रूप में तीन सौ ब्रिटिश रुपए कीमत पर यह जायदाद खरीदी जा रही है...''

"जैसा चाहें लिखिए..."

"मैं आपको रजिस्ट्री की तारीख बताऊंगा। उस दिन आप मुंचिरा की कचहरी में आएंगे।"

"जहां कहीं बुलाएंगे, चलूंगा। वह स्थान मुंचिरा की कचहरी हो या बागदाद, मुझे चलना पड़ेगा। मगर दो दिन पहले बता दें। रजिस्ट्री के बाद एक मिनट भी मैं इस घर में नहीं रहूंगा।"

"तो दूसरा घर देख लिया?"

"अभी नहीं देखा है। अपने घर में मरना किस्मत में नहीं है, कहीं और जाकर मर लूंगा।"

"दूसरी बात...मम्मासीन (कासिम) को समझाना होगा।"

"कासिम नाइंसाफी का कोई काम नहीं करता।"

"लेकिन वह बड़ा बदतमीज है।"

मीरान पिल्लै की आंखों से शोले फूट पड़े। संयम की सारी जंजीरें टूट गईं।

"चला जा यहां से, कुत्ते ! दफा हो जा मेरे सामने से।" जैसे एक ज्वालामुखी फूटा हो। घर के फर्श, आंगन और दीवारों पर लावा बह निकला। राहिला कांप उठी। "अरे, तू कौन होता है मेरे बेटे को बदतमीज कहनेवाला? गली का आवारा कुत्ता है तू ! पूरी बस्ती को गरीबी के खड्ड में धकेलकर कोलंबो में सीना ताने घूम रहा है न तेरा वह मुदलाली। उसे जाकर 'बदतमीज' कह। हां, वही है बदतमीज। दिन-दहाड़े बेझिझक लूट-खसोट करनेवाला तेरा मुदलाली ही बदतमीज है।"

''अजी, मीरान पिल्लै !" मुनीम ने कुछ समझाना चाहा।

"बंद करो बकवास ! कलम उठाकर आपने जो हिसाब लिखा और आपसे जो तार भेजे, उनके मुताबिक मैं आपका कर्जदार हूं। हम अनपढ़ और गंवार लोग हैं। इसका फायदा उठाकर आप लोगों ने पूरे गांव को गरीबी में धकेल दिया है। आप लोग ईमान और तमीज के रखवाले हैं, और हम अपना सब कुछ गंवाकर बीच रास्ते पर खड़े रहनेवाले लोग और हमारे बच्चे बदतमीज हैं !"

"जी मीरान पिल्लै !"

"अब एक लफ्ज भी बोलने की जरूरत नहीं। निकल जाओ यहां से। इसा दम।" मीरान पिल्लै दहाड़े।

मुनीम बगल में दस्तावेज दबाकर वहां से निकल गया।

28

सरपंच फरीद पिल्लै ने गांववालों के सामने अपनी मंशा रखी, "इस गांव को, मालिक इब्नुद्दीन की कदमबोसी से पवित्र गांव को, पुराने रुतबे पर पहुंचाना हो तो गांववालों को नेक मुसलमान बनना होगा, बेइल्मी से निकलकर दीन के बारे में बहुत-सी जानकारियां पानी होंगी। इन दोनों कामों के लिए मुहम्मद अली खां इब्नु आलीसम ने अपनी जिंदगी निछावर करने का बीड़ा उठाया है। इसलिए हम सबका यह फर्ज बन जाता है कि दीन की खिदमत में लगे इब्नु अलीसम के निकाह को हम अपने घर में होनेवाला निकाह मानें और इसे कामयाब करें।" गांव के लोगों ने इस अपील पर अमल करने के लिए नारा-ए-तक़बीर लगाया और जी-जान से इस नेक काम में जुट गए। जुमेरात की शाम के बाद जुम्मे की रात। इशा की नमाज पूरी हुई। लोगों को खबर दी गई कि इब्नु आलीसम का निकाह मालिक इब्नुद्दीन द्वारा सफेद हाथी की मदद से मलाबार-तट पर बनी चालीस मस्जिदों में सबसे आला मस्जिद—इसी कुतबा मस्जिद में निहायत सादगी से पढ़ा जाएगा। सुनकर लोगों को बेहद खुशी हुई।

गांववालों ने दिल खोलकर उस लड़की की किस्मत को सराहा, जिसे बुलूक[1] होकर लंबे अरसे तक लाल मिट्टी की चहारदीवारी में इंतजार करना पड़ा। लेकिन उसकी ऊब-भरी इंतजारी के बदले ही खुदा ने उसे निहायत उम्दा तोहफा दिया है, दिल की गहराई से मांगी गई उन दुआओं को अल्लाहताला ने कबूल किया है, इसकी जीती-जागती मिसाल है यह निकाह ! गांव की महिलाएं शायद उस लड़की की लंबी सांसों का मतलब समझ गईं, इसलिए खुदा से दुआ मांगी कि उसका सुहाग लंबे समय तक कायम रहे। इतने लंबे अरसे तक ऊब-भरी जिंदगी बिताने के लिए उस लड़की पर अल्लाह ने जो रहमत बरसाई है, उसी का इंसानी रूप है अली खां इब्नु आलीसम। लोगों के मुंह से ऐसी तारीफें सुनकर शादी के लिए खड़ी लड़कियों के मन में गुदगुदी होने लगी। कई महिलाओं को पोडिक्कण्णन की बेटी मैमून की यह किस्मत देखकर जलन होने लगी।

---

1. पहली बार रजस्वला होना।

"गांव से लापता होकर बरसों बाद दाढ़ी और टापी में सज आए इस बुड्ढे से एक गरीब लड़की का निकाह करानेवाले हैं आप लोग?..यह उसकी कुर्बानी है, कुर्बानी..."भरे बाजार में खड़े होकर कासिम गुस्से में चिल्ला रहा था। सांझ को हाट में मछली खरीदते हुए मछुआरिन से झगड़ा कर रहे पदरू ने इसे गौर से सुना। दूसरे कई लोगों ने भी सुना।

"पता है, तुम किसके साथ टकरा रहे हो?" पदरू ने पूछा।

"मैं टकरा नहीं रहा, सचाई बता रहा हूं।"

"जानते हो, वह मुसलियार कौन है?"

"खूब जानता हूं। सारा गांव जानता है कि यह वही आदमी है, जो इस गांव में नारियल चुराता था और पकड़े जाने पर लुंगी छोड़कर भाग खड़ा हुआ था।"

"वह तो उनके बचपन की बात है। अब उसका जिक्र करोगे तो मुंह में कीड़े पड़ जाएंगे। नाजायज बात नहीं करनी चाहिए, समझे? तुम्हें मालूम नहीं, उमरु पुलवर[1] पहले नमाज नहीं अदा करते थे, रमजान के रोजे नहीं रखते थे, बाद में उन्होंने 'चीराप्पुराणम' लिखा।"

"तो आपका मतलब है, ये भी उमरु पुलवर हैं?"

"उनके बारे में तू क्या जानता है रे? हम जानते हैं। उनको पहचानने का 'इल्म' तेरे पास नहीं है। बड़ा आया।"

"ये इतने बड़े आदमी हैं तो फरीद पिल्लै अपनी भतीजियों में से एक के साथ इनका निकाह क्यों नहीं कराते? या फिर ईना पीना कूना की लड़कियों में से किसी के साथ क्यों नहीं कराते? यह तो परदेसी है, इसका क्या ठिकाना? रात को सोकर सुबह कहीं चला जाए। ऐसे आदमी को देने के लिए गरीब की लड़की ही मिली?"

"अरे, यह बकवास बंद करता है कि नहीं। तू गुमराह हो गया है। इस्लाम में बाल रखना हराम है और तू बाल बढ़ाए घूम रहा है। तुझे ये सब बातें कहने का हक नहीं है...तुझसे तो बात करना भी गुनाह है, हम भी काफिर हो जाएंगे..."

पदरू और दूसरे लोग कासिम की बात सुनने के लिए वहां नहीं रुके। उससे बोलने के लिए अल्लाह से तौबा किया। इस मौके का फायदा उठाते हुए कई लोग मछुआरिनों के हाथ से मछली छीनकर भागे।

मछुआरिनें मिट्टी उछालते हुए उन्हें गाली देने लगीं, "बदजात हैं, पैसा दिए बिना मछली छीनकर ले जा रहे हैं...। पेट फूलकर तुम्हारी मौत होगी।"

उस दिन इशा की नमाज के बाद लोग मस्जिद के सामने ही खड़े रहे। फरीद पिल्लै मस्जिद से उतरकर आए तो वे उन्हें घेरकर खड़े हो गए।

---

1. कवि उमर साहब, जिन्होंने पैगम्बर साहब के जीवन पर तमिल में 'चीराप्पुराणम' की रचना की थी।

"क्या बात है?" फरीद पिल्लै ने पूछा।

"एक फरियाद है..." पदरू बड़े विनम्र भाव से फरीद पिल्लै के पास गया।

सभी लोग बाअदब, सीने पर हाथ बांधे खड़े रहे।

"क्या कहना है?"

"हुजूर, उस सिरफिरे छोकरे ने आपके और कोलंबोवाले मुदलाली के बारे में बड़ी गलत बात कही है।"

"क्या कहा उसने?"

"वह पूछ रहा था, इस परदेसी को कुर्बानी देने के लिए गरीब लड़की ही मिली? फरीद पिल्लै के घर में उनके भाई की दो लड़कियां हैं, उनमें से एक के साथ निकाह क्यों नहीं कराते? नहीं तो ईना पीना कूना के घर से किसी लड़की के साथ क्यों नहीं कराते?...ऐसा कह रहा था जी..."

"ऐसा कहा उसने?"

"हां सरकार !" सांझ के हाट में खड़े होने वालों में से कई लोग चश्मदीद गवाह के रूप में आगे आए, "भरे बाजार में अठारह जातवालों के सामने उसने यह पूछा था, सुनते हुए हमारी खाल उधड़ी जा रही थी हुजूर..."

फरीद पिल्लै के पैर लड़खड़ा गए। खड़ा होना मुश्किल हो रहा था। लगा, सिर चक्कर खा रहा है, बदन टूट गया है। काले पत्थर पर आकर बैठ गए। देह से पसीना छूटने लगा। पगड़ी उतारकर रख दी। गंजे सिर पर भी पसीना। अपनी छोटी उंगली से पसीना पोंछा।

"मुझे थकान महसूस हो रही है।" कहकर वे मस्जिद की दीवार से सटकर बैठ गए।

लोग अपने कंधों से अंगोछा उतारकर हवा करने लगे। बारी-बारी से कई लोग हवा करते रहे। हाथ थकने तक हवा करते रहे। हवा करते-करते थक गए।

थकान मिट जाने पर फरीद पिल्लै ने बंद आंखें खोलीं, "जो सब्र करेंगे सब कुछ पाएंगे। मेरी गुजारिश है, आप सब लोग सब्र करें। बुजुर्गों और नेक बंदों को बुरा-भला कहनेवाले को अल्लाह सजा देगा।"

सरपंच की वह निढाल मुद्रा देखकर लोगों को बड़ा अफसोस हुआ।

"हाय, इस तरह दिल दुखानेवाले लफ्ज बोले उस हराम के बच्चे ने !"

फरीद पिल्लै ने लोगों को शांत किया।

"सबूर[1] ...सबूर ! यह निकाह होने दो। और कोलंबो मुदलाली हाजी ईना पीना कूना को आने दो। उनके आते ही इस हरामी के बच्चे के बारे में फैसला लेंगे।"

"कौन-सा फैसला?" अली खां इब्नु आलीसम पूछते हुए मस्जिद से बाहर आए। हाथ

---

1. सब्र

में तसबीह। उंगलियों के बीच में कांच के मनके लुढ़कते रहे।

"उस हरामी के बच्चे के..."

"मैं एक सलाह देता हूं। सुनेंगे...?" अली खां इब्नु आलीसम पत्थर पर बैठ गए।

लोग इब्नु आलीसम को घेरकर खड़े हो गए। जमा हुए लोगों की उंगलियां बंद हुईं और फिर खुली। खुल रही उंगलियों पर जीभ से निकली आयतों की गिनती।

अली खां इब्नु आलीसम ने लोगों के सामने अपना सुझाव रखा–

"सीधे पोन्नानी चलना चाहिए। पोन्नानी जो है, छोटा मक्का शरीफ है। वहां जाकर फतवा लिखवा लेना चाहिए कि 'क्राप' वाला काफिर होता है। उस फतबे के मुताबिक इस हरामी को, इसके वाप्पा और उम्मा को इसके भाई-बंदों के साथ जाति-बिरादरी से बाहर कर देना चाहिए। शादी-ब्याह या किसी भी काम पर उनके यहां कोई कदम नहीं रखेगा। उस घर में किसी की मौत हो तो मैयत को मस्जिद के अहाते में दफनाने नहीं देंगे। ले जाकर समुंदर में फेंके या किनारे गाड़े, कुत्ते उसे खोदें और चबाकर थूकें..."

"शाबाश ! क्या खूब दिमाग पाया है...!" लोगों के दिल से खुशी छलक उठी।

"ऐसा ही करेंगे। उसका वाप्पा कर्ज के बदले में कोलंबो मुदलाली ईना पीना कूना हाजी के नाम अपनी जायदाद लिखकर देनेवाला है।"

"सच?"

"यह तो अच्छी बात है।"

"तब सारा कुनबा सड़क पर आ जाएगा, है न?"

"और नहीं तो क्या, ऐसे गुनाहगारों को कहीं दुमंजिला मकान मिलेगा?" फरीद पिल्लै ने लोगों को शांत किया। फिर बताया, "सब लोग गौर से सुनिए। इस गांव का कोई भी बच्चा उस खानदान के लिए एक अंगुल जमीन भी नहीं बेचेगा। घर बनाने के लिए मुफ्त में जगह नहीं देगा। इस ऐलान को मुहल्ले का कायदा मानकर सब लोग इस पर अमल करेंगे।"

"हां, अमल करेंगे...." लोगों का हर्षित स्वर।

"भटकने दो उन्हें, बेघर होकर।"

मन-ही-मन खुश होते हुए लोग अपने-अपने घर चले गए।

'इशा' की नामज के बाद मालिक इब्नुद्दीन द्वारा सफेद हाथियों की मदद से निर्मित मस्जिद की चहारदीवारी के अंदर झाड़-फानूस की ठंडी रोशनी में पालथी मारे बैठे पोडिक्कण्णन और सुर्ख आंखों वाले अली खां इब्नु आलीसम के हाथों को एक साथ पकड़ते हुए कतीफ-कालू निकाह के कलाम पढ़ा रहा था।

वहां पर जमा लोगों ने जब दुआ मांगी कि यह जोड़ा दो बदन एक जान होकर, यूसुफ नबी और जुलैमा बीबी की तरह, आदम नबी और हव्वा बीबी की तरह खुशी से जीता

रहे, तब जैसे जड़-चेतन, सारी कायनात ने खामोश जबान में 'आमीन' कहकर उनके हाथ चूम लिए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अगले चरण के कार्यक्रम के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिए एक बैठक आयोजित की गई थी। उसमें भाग लेने के लिए मंडल समिति के कार्यालय से कासिम को भी बुलावा आया था। इसी बैठक के सिलसिले में कासिम कुषित्तुरै गया हुआ था।

मजदूर वर्ग को नेस्तनाबूद करने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियां अपना दमनचक्र तेज किए हुए थीं। इसका सामना करने के लिए मजदूर वर्ग हथियारों से लैस होकर मैदान में उतरा। तानाशाहों ने उन पर अंधाधुंध गोलियां चला दी। इस बर्बरता का खंडन करते हुए बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया। राजनीति से सरोकार न रखनेवाली बेगुनाह जनता को पकड़कर जेल में ठूंस देनेवाली जालिम सरकार की निंदा करते हुए कासिम ने वह प्रस्ताव सभा में रखा था। उस समय कासिम के मन में ममदाजी का चित्र घूम रहा था। सी.पी. के जालिम राज के खिलाफ लड़ने के लिए लोगों को तैयार करने तथा जगह-जगह जनसभाएं बुलाने के लिए प्रस्ताव पारित हुए।

सभा खत्म होते-होते बहुत देर हो गई। रात की आखिरी बस उस दिन रद्द हो गई थी। काजल की तरह स्याह अंधेरा। ऊबड़-खाबड़ रास्ता। चप्पल के बिना चलना दुश्वार है। 'चूट्टु' (पलीता) भी नहीं मिल सकता, दुकानें बंद हो चुकी हैं। बेट्टुमणि चौराहे पर खड़ा कासिम सोच रहा था कि अब कैसे घर पहुंचे। तभी अचानक सामान से लदी किसी बैलगाड़ी की आवाज आई। लगा, गाड़ी दक्षिण की ओर घूम रही है। गाड़ी के नीचे लटकती लालटेन की रोशनी में उसने गाड़ीवान की काली दाढ़ीवाले चेहरे को देखा। उसकी गोलाकार पगड़ी को देखा।

"परमेश्वरन !"

"भैया, बस नहीं मिली क्या?"

"नहीं...।"

"तो गाड़ी में बैठ लो। धीरे-धीरे चलेंगे।"

पक्की सड़क पर पहिए घूमने लगे। बैलों के खुरों पर लगी कीलों से चिनगारियां निकलीं।

जब गाड़ी बसस्टैंड पर पहुंची तो रात का तीसरा पहर शुरू होने को था। ठीक वही समय, जब अग्निमुख पिशाच अंगार लेकर घूमते हैं। दिन-भर सोने के बाद रात के तीसरे पहर में ये पिशाच नहाने के लिए निकलते हैं। तभी उनके पैरों के नूपुर बज उठते हैं।

ताण्डवरत तीसरे याम के तीसरे नेत्र को घूरते हुए इडिवण्डियां अंधेरे को चीरकर लपकती हैं और काला धुआं उगलती हैं। इस काले धुएं को मुंह से खींचकर नाक से निकालते हुए

तीसरा याम तांडव कर रहा है।

घर की ओर चलते हुए कासिम चौकन्ना होकर कदम बढ़ा रहा था कि कहीं 'इडिवण्डि' की आवाज तो नहीं सुनाई दे रही। पोडिक्कण्णन की झोंपड़ी से—लाल मिट्टी से बनी कच्ची दीवार के उस झरोखे से—मद्धिम रोशनी को देखकर और किसी की लंबी सांसों को सुनकर कासिम को याद आया कि यह रात पोडिक्कण्णन की बेटी मैमून की सुहागरात है। यह याद आते ही वह सिहर उठा। बेचारी लड़कियां ! पालतू जानवरों की तरह गूंगी हैं। पुरुष की भोग्य वस्तुएं।

उस गरीब लड़की की जिंदगी में यह सुहागरात ही शायद उसकी अंतिम रात होगी। नहीं तो यह वह लम्हा होगा जब उसकी पीठ पर भारी सदमे का बोझ लादा जा रहा है। संभव है उसके दिल की दरार से फूटता सोता उसके अविराम आंसुओं का उद्गम हो? विचारकर देखा तो गरीबी और अज्ञान के ताने-बाने में बुने समाज के भविष्यत क्षितिज तक व्याप्त था स्याह बादलों का समूह। अंधविश्वास को मजहब का रेशमी जामा पहनाकर उसकी शोभा देखनेवाली पुरोहिताई की खुदगर्जी पर उसका ध्यान गया तो मन छटपटा उठा। न जाने नई सुबह की नई रोशनी को यह समाज कब देख पाएगा ! समाज में अबलाओं की बदकिस्मती पर उसे अफसोस हुआ, जो किसी भी अनजान आदमी के शयनकक्ष में धकेल दी जाती हैं, और उसे खुश करने के लिए मजबूर होती हैं।

कासिम जब घर पहुंचा तो घर के अंदर से रोशनी आ रही थी। लगता है, कोई भी सोया नहीं। दरवाजे पर कुंडी नहीं लगी थी। धक्का देते ही वह खुल गया। लेकिन कोई बोला नहीं। खामोशी से बोझिल माहौल। वाप्पा चारपाई पर हमेशा की तरह मायूसी से बैठे हैं। राहिला और उम्मा घर की चीजें सहेजने में व्यस्त हैं।

कासिम को यों अचानक आया देखकर राहिला और उम्मा सहम गईं।

"घर के सामान क्यों सहेज रही हो?" कासिम ने उम्मा से पूछा।

कदीना ने कोई जवाब नहीं दिया। दूसरी तरफ मुंह घुमा लिया। घर की दीवारें जाने कब से उन गालों पर बहते आंसुओं को देख रही हैं और उस कलेजे से उठती सिसकियों को सुन रही हैं।

"किसलिए?" उसने राहिला से पूछा।

राहिला ने सिर झुका लिया और अपने आंचल को आंखों के पास खींच लिया। तभी कासिम को पता चला कि वह रो रही है। लेकिन वह यह नहीं जान सका कि वह निरे आंसू नहीं हैं, बल्कि झुलसे दिल से फूटे छालों का जल है।

"बोलो, क्या बात है?" उसकी आवाज ऊंची हुई। तब मीरान पिल्लै ने उसे पास बुलाया, "इधर आ रे...मैं बताता हूं।"

कासिम वाप्पा की चारपाई के पास गया।

मीरान पिल्लै ने बेटे को घूरकर देखा। कासिम का खादी का कुर्ता पसीने में तर था। उससे पसीने और धूल की मिली-जुली बदबू निकल रही थी। वह उस माहौल में भर गई।

मीरान पिल्लै ने उसे सांसों में भरा।

मीरान पिल्लै की आंखों में यह जो कातरता दिखाई देती है, यह हाल की बात है। पहले कभी ऐसा नहीं होता था। कारण जानने के लिए उसे समय नहीं मिल रहा था, व्यस्तता ही ऐसी थी।

मीरान पिल्लै कहने लगे–

"मैं अपनी जिंदगी पूरी कर चुका हूं। अब जीने के लिए कुछ भी बाकी नहीं है। अब तुम लोगों को जीना है। मैं नहीं चाहता, आगे जिंदा रहकर तुम्हारी जिंदगी में और कमियां पैदा करूं। अपनी जिदंगी में मैंने कुछ नहीं जोड़ा। जो भी जोड़ा है, जो भी पाया है, वह तुम दोनों हो–एक बेटा, एक बेटी। मेरे जाने के बाद 'अपनी' कहकर छोड़ जाने को और कोई चीज नहीं है... ।"

"आप क्या कह रहे हैं वाप्पा..."

"मैं कर्जदार होकर मरना नहीं चाहता बेटे ! मैं नहीं चाहता कर्ज मेरी मैयत पर बोझ बन जाए। कर्ज के साथ जो मरता है, उसे जन्नत नहीं मिलती। अपने कर्ज के साथ जो मरता है, उसे जन्नत नहीं मिलती। अपना कर्ज चुकाने के लिए मैं घर को–इस जायदाद को–ईना पीना कूना के नाम लिखकर देनेवाला हूं। इसीलिए तुम्हारी उम्मा घर का सामान सहेज रही है... ।"

"इस घर को?"

"हां।"

"तो हमारे लिए घर?"

निरुत्तर मीरान पिल्लै ने बेटे को घूरकर देखा।

कासिम ने उन आंखों में दर्द का चक्रवात देखा। चक्रवात की वह लहरें बड़े-बड़े वृक्षों को झकझोर रही थीं। आंधी में उड़ी धूल ऊपर उठ रही थी।

यही लग रहा था कि वाप्पा की आंखें, उनकी निगाह किसी चीज को ढूंढ रही है। क्या तलाश कर रही हैं वे?

"वाप्पा, आपने घर से निकलने का फैसला कर लिया?"

"और कोई चारा नहीं है बेटे !"

"यह क्या बात है वाप्पा, हमारी बस्ती में चबै व्यापार करनेवालों की यही दुर्गति हो रही है? सबको अपनी जायदाद से हाथ धोना पड़ रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है?"

"मुझे नहीं पता बेटे ! यही कहूंगा कि हमारी किस्मत ही खोटी है।"

"किस्मत खोटी नहीं वाप्पा ! इसका कारण आपकी नादानी है, अज्ञान है। कोलंबो

के कमीशन व्यापारियों ने आप लोगों को खेत का बैल बनाया, मेहनत आप लोग करते रहे, फसल वे काटते रहे। वे दगाबाज लोग अट्टालिकाओं में रेशमी सेज पर सो रहे हैं और आप लोग हड्डी का ढांचा होकर उसी खेत में औंधे गिरकर मर जाते हैं, जिस पर आपने काश्त की है। लेकिन आप हैं कि इस सचाई को समझे बिना किस्मत को रो रहे हैं।"

"मैं क्या करूं बेटे, समुद्र किनारे बैठकर यह काम करने के अलावा मुझे और कोई धंधा नहीं आता।"

"आप में से कोई भी असल में उसका कर्जदार है ही नहीं, आप को कर्जदार सिर्फ दिखाया गया है। आप लोग क्योंकि कर्जदार होकर मरना नहीं चाहते, इसलिए अपने वाप्पा की जुटाई जायदाद उसके नाम लिखकर दे रहे हैं।"

"बेटे, अब हम किधर जाएंगे? कहां रहेंगे?" कदीजा ने दर्द-भरी आवाज में पूछा।

"हम लोग समुद्र किनारे परती जमीन पर एक झोंपड़ी बना लेंगे। उसमें रहेंगे।"

"क्या कह रहे हो? समुद्र किनारे की परती जमीन पर रहना होगा, कुंवारी लड़की को साथ में लेकर? क्या मेरी मैयत परती जमीन के घर से निकलेगी?"

"हमें हालात के साथ समझौता करना ही पड़ेगा वाप्पा ! वहीं जीना होगा। सोचकर देखिए, कितने ही लोग समुद्र किनारे परती जमीन पर झोंपड़ियों में रहते हैं। उनकी जमात में हम भी शामिल हैं।"

चिंता की भट्टी में झुलसी रात के पिछले पहर में कासिम की आंखों के सामने कतार बांधे खड़े थे उसके वाप्पा, उम्मा, बहिन, गांव के लोग और पूरा समाज।

पीरू की आवाज सुनकर कासिम की नींद टूटी। सूरज काफी चढ़ आया था। रात में देर तक नींद नहीं आई थी। आंखें अब भी जल रही थीं। आंगन पर पड़ रही तेज धूप को आंखें बरदाश्त नहीं कर सकीं।

"दौड़कर आइए।" पीरू ने जल्दी मचाई।

"क्या बात है रे?'

"मस्जिद के सामने भीड़ लगी है। बाहर से एक औरत आई है, रो रही है।"

रात को उतारी खादी की कमीज उठाकर उसने पहन ली। पसीने की बदबू ज्यों की त्यों थी। मंजन करने के लिए भी वह नहीं रुका। थोड़ा-सा पानी लेकर कुल्ला किया और पीरू के पीछे चल दिया।

दूर से ही उसने देखा, मस्जिद के सामने लोगों का जमघट है और पर्दानशीन एक लड़की खड़ी सुबुक रही है। उसके साथ दो आदमी और हैं। कासिम ने देखा, उस लड़की के हाथ में दरख्वास्त जैसा कोई कागज भी है।

उसने अंदाजा लगाया—ये लोग मुहल्ले के सरपंच के पास कोई फरियाद लेकर आए

होंगे।

मीरासा और मम्मात्तिलु भी वहीं खड़े मिले। कासिम ने उनसे पूछा, "क्या माजरा है?"

"हरे रंग का कुर्त्ता पहने जो आदमी उधर खड़ा है, उससे पूछो..."

कासिम उसके पास गया, "क्या बात है जी..."

"आपके गांव में मुसलियार नाम के एक शख्स आए हैं न?"

"हां आए हैं..."

"इस गांव में उनका निकाह कैसे हो सकता है...?" हरे रंग के कुर्तेवाले ने गुस्से में पूछा।

"निकाह कैसे हो सकता है, यह बात मुहल्ले के सरपंच फरीद पिल्लै से पूछिए। वही बताएंगे। हमें तो सिर्फ इतना बताइए कि मामला क्या है? आप कौन-से गांव के हैं?"

"हम पनच्चमूड गांव के रहनेवाले हैं। गरीब लोग हैं। बागानों में दैनिक मजूरी करके पेट पालते हैं। आपके यहां 'मुसलियार' 'मुसलियार' करके जो आए हैं, वे हमारे यहां हकीम के रूप में आए थे। गांव की मस्जिद में पांच-छह महीने ठहरे। कह रहे थे, शादी-वादी नहीं की है। हमने भी यकीन कर लिया। इस लड़की की शादी नहीं हो रही थी। पास में धेला नहीं था, इसलिए हमने सोचा—हकीम हैं, किसी तरह इनके साथ इसका गुजारा हो जाएगा। कम से कम खाने को तो मिल जाएगा। ऐसा ख्याल करके हमने इधर-उधर से मांग-मूंग कर दो-चार गहने बनवाए और शादी भी कर दी। तीन दिन वो साथ में रहे और चौथे दिन गहनों के साथ नदारद। हम बड़े परेशान हुए। कई जगह ढूंढा। जहां भी तलाश किया, यही पता चला कि सभी जगह एक-एक शादी की है और छोड़कर भाग गए हैं। कहीं अपने को साइकिल चैंपियन कहते थे, तो कहीं तांत्रिक। हमारे यहां हकीम अब्दुल हमीद अजमेरी नाम बताया..."

"ऐसी बात है? यहां उनका नाम है अली खां इब्नु आलीसम।"

"इसे छह महीने का गर्भ है। आप लोग मिलकर इस मसले का कुछ हल निकालिए। इस लड़की की जिंदगी का सवाल है।"

"इस गांव का मतलब है फरीद पिल्लै। वे जो भी कहें वही होगा।"

"अरे, तुम झूठे हो। हमारे मुसलियार ऐसे आदमी नहीं हैं। हीरा हैं, हीरा। ऐसे शरीफ आदमी के बारे में गलत बातें हम नहीं सुन सकते।" कुछ लोग तैश में आ गए।

"सबूर...सबूर...! कोई शोर न करे। मुसलियार को बुलाकर पूछेंगे तो सचाई का पता चल जाएगा।" कासिम ने लोगों को शांत किया।

"हां, हां। और अगर इस औरत की बात गलत साबित हो जाए तो इसे इस खंभे से बांधकर एक सौ एक चाबुक मारना चाहिए, सिर मुंडवा देना चाहिए।" लोग गुस्से में लाल-पीले हो रहे थे।

"अगर इसकी बात सच निकले तो क्या करना चाहिए?" कासिम ने पूछा।

"उसे हम अपने मुंह से नहीं कहेंगे। क्राप लगाए तुम...इस गांव के मामले में दखलंदाजी नहीं कर सकते। तुम्हें बोलने का कोई हक नहीं है।"

"मुझे कोई हक नहीं है। मुझे हक चाहिए भी नहीं। अगर यह सच हो, उस दगाबाज ने इस औरत के साथ भी शादी की है, तो मैं उसे नहीं छोड़ूंगा। यह बात तय है।" कासिम ने कहा।

आनैविलुंगी अपना कूल्हा मटकाते हुए आया, "सुना आपने? पोडिक्कण्णु के घर में चीख-पुकार मची हुई है !"

"क्यों, किसी की मौत हो गई?"

"नहीं, मैं क्या बताऊं, कैसे बताऊं?"

आनैविलुंगी झिझकते हुए खड़ा रहा।

29

रात में जोर की हवा चलने लगी। उसमें क्षोभ और आक्रोश था। वलियार नदी की लोल लहरियों को उसने तितर-बितर कर दिया। आक्रोश बढ़ रहा था। आगे बढ़कर उसने कन्यारकोणमं पहाड़ी के नीचे सजी-संवरी खड़ी धान की फसल को झकझोर डाला। तब भी उसका आवेश नहीं रुका। अंधी हुई वह गांव में पहुंच गई और गांव के ऊपर भंवर बनाते हुए घूमने लगी। मीरासा के छप्पर से उसने शेष बचे पत्तों को उखाड़कर फेंक दिया। घर के दरवाजों से टकराने और उन्हें हिलाने के बाद एक बार उसने भारी अट्टहास किया। रुक्किया थर-थर कांपने लगी। उसे आशंका हुई। अब यह छत चक्रवात का शिकार होकर किसी भी क्षण सिर पर आ गिरेगी। वह अपनी उम्मा से लिपट गई।

"उम्मा, हवा...जोर की आंधी !"

रुक्किया की श्यामल आंखों में भय की छाया।

यह आंधी भावी विपत्ति की सूचना है।

इसी तरह की चक्राकार हवा के बाद आई भयंकर वर्षा ने मीरासा के सबसे छोटे बच्चे की जान ले ली थी। उस दिन से रुक्किया को अंधड़ के नाम से ही बुखार चढ़ जाता था। ऐसे मौसम से वह त्रस्त हो जाती थी। जब भी जोर की हवा चलती, उसकी आंखों के सामने छोटे भाई का शव दिखाई देता। निश्चल और निस्पंद पड़ी वह छोटी सुनहली देह। बिखरे बालों के साथ झोंपड़ी के अंधेरे कोने में मिट्टी की दीवार से सटकर रोती हुई उसकी उम्मा।

किसी से बात किए बिना इधर-उधर घूमते या कहीं एकांत में खड़े आंसू बहाते वाप्पा का मायूस चेहरा। भूख और गरीबी की चरम ज्वाला में झुलसकर उसने मछली काटनेवाला चाकू बेच डाला था और फिर घर लौटकर फफक-फफककर रोया था। दुनिया की इन सारी मुसीबतों से एकदम बेखबर खेलते छोटे बच्चे। घरौंदे बना-बनाकर घर-गृहस्थी का खेल चल रहा है। अंगीठी पर खाना पक रहा है। पेड़ से झड़े छोटे-छोटे नारियल बच्चों की कल्पना में नए-नए रूप ले रहे हैं। कभी वे रंग-बिरंगी तितलियों को पकड़ने के लिए उछल-कूद करने लगते हैं।

रोज की तरह मीरासा समुद्र-तट पर गया। सुबह समुद्र किनारे जाने से इस बात का अंदाजा लग जाता है कि उस दिन मछली मिलेगी या नहीं। रात को जाल फेंकने के लिए निकली नावें और कट्टुरम सुबह तक लौट आते हैं। जालों में बड़ी-बड़ी मछलियां फंस जाएं तो उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना होता है। लेकिन चाकू बेचकर खा लिया। लुहार से कहने पर नया चाकू तो बन जाएगा पर पैसा कहां से देगा? निरंतर चला आ रहा अभाव इसमें आड़े आ रहा था। एक जून खाने को मिले तो तीन जून फाका !

मीरासा समुद्र के विशाल वक्ष को घूरता हुआ देर तक खड़ा रहा। दूर चट्टान के ऊपर घिरे घने जंगलों को चीरकर बाहर झांकता सूर्य-बिंब। सूर्य-किरणों में चमचमाती समुद्री लहरें। दूर-दूर तक कोई नाव या जलयान नहीं दिख रहा है। सागर द्वारा दिए गए दुख को छाती पर ढोते हुए मीरासा थोड़ी देर तक उसीके तट पर खड़ा रहा। अरब सागर से होकर हिंद महासागर की ओर सरकते मालवाही जहाजों से उड़ रहा धुआं और इधर दुख-रूपी समुद्र में अभावों की लहरों से जूझते मीरासा की छाती से उड़ता हुआ धुआं !

सागर-तट पर खड़े वृक्षों पर बैठे कौए जोर-जोर से कांव-कांव करने लगे। मीरासा को उन पर तरस आ रहा था। कौए रेत में इधर-उधर बिखरे मछलियों के सूखे सिरों और पूंछों को लेकर उड़े, और पेड़ों की डालों, नारियल के पत्तों या झोंपड़ियों के छप्परों पर जा बैठे। फिर उन टुकड़ों को पंजों में दबाए हुए बड़े चाव से कुतरने लगे। लेकिन जब कुछ नहीं निकला तो उन्हें फेंककर और कहीं उड़ गए। इसे देखकर मीरासा को उनसे ईर्ष्या भी हुई।

चारे की तलाश में उड़ने के लिए चिड़ियों के पास पंख हैं !

मीरासा घर की ओर चला। समुद्र-तट देखकर वह सुबह की चाय भी भूल गया था। घिसी हुई कोलंबो बेल्ट की खाली जेब में एक बीड़ी पड़ी थी। मीरासा को उसका ध्यान आया।

घर की सीढ़ी पर रुक्किया नजर आई। मीरासा ने गौर से देखा। वह पत्तों की टोकरी में अपनी छाती छिपाए बैठी है। सूखे गालों पर उभरी हुई हड्डियां। दरिद्रता भरी रेखाएं। रीढ़ से सटा पेट। भूख का जीता-जागता इतिहास। वक्त ने गरीब जानकर भी उसे बख्शा

नहीं, छाती पर स्त्रीत्व के दो पुष्प विकसित कर दिए। छातियों को छिपाने लायक एक चोली का जुगाड़ भी नहीं हो पा रहा। अपनी लाचारी पर दुखी होते हुए मीरासा को रंग-बिरंगे पापलिन कपड़ों की याद आई। कोलंबो से लाकर उसने खुले हाथों उसे अपने रिश्तेदारों में बांटा था। आज उसे पता चल गया है कि रिश्ते 'पानी के बुलबुले' हैं। उसने बेटी से कहा, "ठंडी हवा चल रही है, कमीज पहन ले न?"

वाप्पा की बातों में निहित अर्थ को समझने का बोध बालिका में आ गया था। दोनों कंधे उठाकर हाथों से अपने सीने को छिपाते हुए रुक्किया सीढ़ी से उठ खड़ी हुई।

"पहनने के लिए मेरे पास कमीज नहीं है..."

रुक्किया की बात से मीरासा के दिल में अपराध-बोध की चुभन हुई। अपना कसूर कबूल करनेवाले अपराधी की तरह वह चुपचाप खड़ा रहा।

"देखो रे देखो, हाथी की गुदा पर काली चींटी...!" गली में खेलते बच्चों का यह हो-हल्ला सुनकर मीरासा को परिस्थिति का बोध हुआ।

रुक्किया ने अपनी छोटी बहन को गोदी में उठा लिया। सीढ़ी से उतरकर जाने का साहस नहीं हुआ। वाप्पा की ओर दयनीय दृष्टि से देखते हुए खड़ी रही।

"कहां जा रही है?"

"हाथी देखने।"

"नहीं जाना, समझी !" मीरासा ने उसे डांट दिया। लेकिन खिलती कली जैसे कोमल दिल की उस अभिलाषा को मसल डालने की अपनी मजबूरी पर सोचते हुए उसका दिल भी दुखा।

एक तितली की तरह उड़ती रुक्किया के परों को आज पहली बार हल्की डोरी से बांधा गया। अब उसे एक छोटे-से घेरे में जिंदगी बसर करनी होगी। इस बेबसी के बारे में सोचकर वह दुखी हो गई। बच्ची को उसने गोदी से उतार दिया।

'तन ढंकने के लिए मेरे पास कमीज होती तो मैं भी हाथी देखने जाती !' रुक्किया के दिल की आह अपनी खामोशी में भी सुनाई दे रही थी।

वाप्पा की गरीबी के बारे में सोचकर उसने अपनी इच्छाओं को बेड़ी पहनाई।

बच्चों का हो-हल्ला नजदीक आ रहा था। मीरासा गली में आया।

बड़े-बड़े दांतोंवाला विशाल हाथी। सूंड़ पर नारियल के पंद्रह-बीस पत्ते। पीठ पर महावत! पीछे-पीछे बीसियों बच्चे चिल्लाते हुए।

"देखो रे देखो, हाथी की गुदा पर काली चींटी..." चिल्लाते हुए बच्चों के कंठनाल फटे जा रहे थे। हाथी को परेशान करने की कोशिश में उनकी फौज उसके पीछे चिल्ल-पों मचाती हुई चल रही थी।

चींटी हाथी की जानी दुश्मन होती है। वह दुनिया में सिर्फ चींटी से डरता है। दुनिया

का सबसे बड़ा जानवर छोटी-सी चींटी से थर-थर कांपता है। चींटी अगर उसके कान में, गुदा में या सूंढ़ में काट खाए तो हाथी 'दैया रे' कहते हुए ढेर हो जाएगा। ऐसी सुनी-सुनाई जानकारियों से प्रेरित बच्चे हाथी के पीछे ऊधम मचाते जा रहे थे।

बच्चों की भीड़ में चार-पांच मुंड़े सिर दिखाई दिए। मीरासा ने गौर से देखा। बगल में टेढ़ी मूंठवाली छतरी दबाए ईना पीना कूना का मुनीम और साथ में उसके कुछ आदमी।

मीरासा सहमकर वहीं खड़ा रहा...कुछ क्षण।

वैक्कलूर का बड़ा हाथी। लंबे, टेढ़े दांतोंवाला।

जंगल के विशाल पेड़ों को उठवाने के लिए लोग इसी हाथी को ले जाते हैं। बड़ा चुस्त हाथी है, फौजी जवान-जैसा। इसी हाथी का इस्तेमाल करके वैक्कलूर के 'अंगत्तै'[1] ने अपने बागान में काफी दिनों से रहते चिन्नय्यन के घर को तुड़वाया था, उसे उसकी जमीन से बेदखल किया था। एक बार एक विवाद के कारण दो बागनों के बीच खड़े कटहल के पेड़ को अंगत्तै ने इसी हाथी से उखड़वाया था और रातों-रात दूर फेंकवा दिया था। इस तरह के अनेक क्रूर कार्यों के लिए इस्तेमाल किया गया था यह खूंखार हाथी।

"मम्मत्तिलु...ऐ" मीरासा ने भय-कातर स्वर में पुकारा। वह इतने जोर से चिल्लाया कि श्मशान नदी के किनारे पर रहनेवाले मम्मात्तिलु के कानों तक आवाज पहुंच जाए...इतने जोर से कि स्वरतंत्रियां तक फट जाएं। उसे लगा कि वह चीत्कार मम्मात्तिलु के कानों तक नहीं गया। दूरी भी बहुत ज्यादा थी।

मीरासा भागा। रास्ते को छोड़कर भागा। उसने पोन्नप्पन के पान की बेलोंवाले खेत को लांघा। कलफ के लिए बनाई गई लप्सी की सूखी परतें उसके पैरों तले कुचलकर 'चरमर' करने लगीं। रेत पर दौड़ते हुए पैरों को घोड़ों की रफ्तार कैसे मिली, यह सोचकर उसे बाद में अचरज हुआ। वह यह नहीं समझ पाया कि रात के फाके के बावजूद वह इस तरह कैसे भाग सका।

मम्मात्तिलु के आंगन में पहुंचकर वह हांफने लगा।

"मीरासा काका, क्या बात है?" आंगन पर छाए नारियल के साए में घुटने बांधकर बैठे मम्मात्तिलु ने सहमकर पूछा।

"सत्यानाश !"

"क्या?"

"हाथी आ रहा है रे !"

"ऐं !"

"मुनीम वैक्कलूर हाथी समेत कुछ आदमी लेकर आ रहा है !"

---

1. जमींदारों और अमीरों के लिए प्रयुक्त शब्द।

"या रब ! घर तुड़वाने आ रहा है जालिम? हाथी लेकर आ रहा है !"

"हां !"

"काका, मैं कहां जाऊंगा इन बच्चों को लेकर?"

"यह मुझसे क्यों पूछ रहे हो भाई ! पूछो उस रब से, जिसने हमें पैदा किया।"

"अरे ओ पीरू...ऊ !" मम्मात्तिलु चिल्लाया।

श्मशान नदी के किनारे बैठा था पीरू, चिबुक हथेली पर धरे देख रहा था पानी में खेलनेवाली छोटी-छोटी मछलियों को। पानी में पौधों के चारों ओर आंख-मिचौली खेलती मछलियों के निरीक्षण में व्यस्त पीरू के कान में वाप्पा की पुकार सुनाई दी।

"आया...!" उसने वहीं से आवाज लगाई। खिसके निकर को हाथ में पकड़े वह घर की ओर भागा।

वाप्पा का मायूस चेहरा ! पनाले की तरह बहती उम्मा की आंखें। दोनों के चेहरों पर सरकते काले बादल। मीरासा काका भी सामने खड़े हैं। उनकी नजर आंगन में कहीं टिकी है। कोई भी कुछ नहीं बोल रहा। पीरू की समझ में कुछ नहीं आया। वह तीनों का चेहरा पढ़ने की कोशिश में खड़ा रहा।

"अरे दौड़ के जा। कासिम काका को बुला ला...हमें इस घर से निकालने के लिए मुनीम हाथी लेकर आ रहा है।"

वाप्पा की बातें सुनकर उस नन्हें दिल में एक ज्वालामुखी फूट पड़ा। उबलता हुआ लावा। रास्ता बनाते हुए वह उछल पड़ा।

"सच....?" उसकी चमकदार आंखों में क्रोध ने लाल झंडा उठा लिया। दांत पीसे।

"अरे ओ मुनीम, तू हमारा घर तोड़ने आ रहा है? सामने तो आ...तेरी खोपड़ी तोड़ दूंगा।"

"अरे, भाग रे....." मम्मात्तिलु ने जल्दी मचाई।

पीरू ने निकर पहना। फिर लपका, "बू...वाय्...बू-बूं..."

मम्मात्तिलु की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। मन में एक साथ कई चिंताएं। चिंताओं की बाढ़। भ्रमित मन। थककर चूर-चूर है दिल। वह अभी अपनी आंखों के सामने कयामत को देखेगा, बने-बनाए घर को मटियामेट होते देखेगा। उस दर्दनाक कारनामे की कल्पना से दिल में बवंडर-सा उठा। अमीना नारियल के एक छोटे पेड़ के नीचे बैठकर अपने आंचल से आंसुओं को पोंछने लगी।

मुंचिरै की कचहरी में विक्षिप्त वाप्पा का अंगूठा लगाकर जब उन लोगों ने घर लिखवा लिया, तब मम्मात्तिलु आठ साल का था, 'बुनियादी प्रपंचों' से अनजान। अचानक एक दिन सारे परिवार के सड़क पर आ जाने की नौबत आ गई थी। उस दिन आंगन में खड़ी होकर उम्मा इसी तरह रोई थी। रो-रोकर चेहरा सूज गया था। उसी मां की कोख से पैदा

लड़के को भी उसी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। दुख-दर्द और मुसीबतें भी क्या विरासत में मिलने वाली चीजें हैं?

दरिद्रता और अभावों से भरे वे दिन। सिर छिपाने के लिए भटकन-भरी रातें। जिंदगी में हारी एक मां को अपने बच्चों के साथ दर-दर भटकते देखकर किसी ने सिफारिश की तो यह जमीन मिल गई। गांव से हटकर एक निर्जन जगह पर थोड़ी-सी जमीन-सुनारों के श्मशान के पास थी। वहां पर छोटी-सी झोंपड़ी बनाकर रहने लगे। कई साल उसी में गुजर गए। श्मशान में लाशें जलतीं। धुएं और जलते हुए मांस की दुर्गंध में सांस लेते हुए बिताए गए साल। खोपड़ियां चटकने की आवाज से भरी दिल दहलानेवाली रातें। पहले कंपकंपी होती थी। लेकिन अब इस सबके आदी हो गए हैं।

बरसात में छप्पर से कहीं पानी रिसता, कहीं चूता और कहीं टपकता। पत्ते खस्ता हो गए थे। उन्हें गिराकर नए पत्तों के लिए कोई जुगाड़ नहीं। एक रात अचानक नींद खुली तो देखा कि उम्मा के सिरहाने काला नाग फन फैलाए खड़ा है। अगले दिन सारे पत्ते गिराकर साफ किया तो वहीं बाड़ के पास सांप की बांबी मिली। उसमें और भी कई केंचुलियां !

लंबी आयु बदी थी, ऐसी ही मुसीबतों से भरी लंबी आयु। नहीं तो उसी रात जहरीले सांप के डंसने से मौत मिल गई होती।

इस घर के पूरा होने तक कितने पापड़ बेलने पड़े। कितने लोगों से मदद मांगनी पड़ी—मिट्टी-गारा करने के लिए, दीवार चिनने के लिए, छप्पर छवाने के लिए। काक्कानकुलम से मिट्टी की टोकरियां खुद ढो-ढोकर लाया था।

जब उसकी शादी तय हुई, उम्मा ने कहा था, पैर पसारे लेटने के लिए जगह नहीं है। क्या इसी घर में दुल्हन लाओगे? कम-से-कम एक कमरा तो ढंग का होना चाहिए..."

उस वर्ष चित्तिरै में खूब मछलियां लगीं। समुद्र किनारे दुकान बनाकर व्यापार किया, काफी पैसे बचे। आमदनी अच्छी हुई। घर की कुछ और चीजें बेची गईं। किसी तरह पत्थर और लाल मिट्टी वगैरह का जुगाड़ हो गया। कीलकुलम से एक बड़ी-सी बाड़ कटवाकर ले आया, उससे घर के लिए जरूरी लकड़ी, चौखट, तीरे सब बन गए। लेकिन घर पूरा होते-होते कर्जे में डूबना पड़ा। खपरैल नहीं जुटा पाया तो पत्तों से छप्पर छवाया। इतनी दौड़-धूप के बाद घर पूरा हुआ, तभी उम्मा की जान में जान आई। बेचारी बेहद खुश हुई। उम्मा की मैयत बाहर निकली इसी घर से। कई बच्चे पैदा हुए इसी घर में, हालांकि उनमें से कुछ मर भी गए।

"देखो रे देखो, हाथी की गुदा पर काली चींटी..."

बच्चों का यह हो-हल्ला मम्मात्तिलु के कानों में पड़ा। उसने अपना आपा नहीं खोया। आनेवाली आफत के लिए स्वयं को तैयार कर लिया। गांव के धूल भरे रास्ते पर लीद

करते हुए, पैर की सांकल बजाते हुए वैक्कलूर का हाथी आगे बढ़ रहा था। लोग तमाशा देख रहे थे। धूल-मिट्टी पर हाथी के पांवों के निशान। जहां-जहां उसके भारी पांव पड़े, वहां-वहां गड्ढे-से बन गए।

पूरी गली को घेरकर और महावत को पीठ पर उठाए हाथी किस दिशा में जा रहा है, इसे लोग गौर से देखने लगे। बगल में छतरी दबाए कोलंबो मुदलाली का मुनीम और उसके आदमी हाथी के पीछे क्यों जा रहे हैं, इसे लेकर लोग कानाफूसी करने लगे।

हाथी के पैरों की सांकल की आवाज सुनकर मम्मात्तिलु सहम गया। अमीना चीत्कार करने लगी।

"रोओ मत !" मम्मात्तिलु ने अमीना को झिड़का।

अमीना उस घर को अपलक खड़ी देखती रही। यद्यपि आंसुओं ने आंखों पर पर्दा डाल रखा था, वे आंखें बीस साल पुराना एक आनंदपूर्ण दृश्य देख रही थीं। नया-नया बना घर, लाल मिट्टी की सोंधी गंध आ रही है। द्वार पर लटका है एक रेशमी पर्दा और वह स्वयं दुल्हन के रूप में घर में प्रवेश कर रही है।

"किसलिए रोना?...वे लोग अपने पैसे का जोर दिखा रहे हैं, दिखाने दो..." मम्मात्तिलु इसके आगे बोल नहीं सका। गला रुंध गया।

वैक्कलूर का हाथी मस्जिद के पास से घूमा, और श्मशान नदी के किनारे से होकर धीरे-धीरे कान हिलाते हुए आगे बढ़ता रहा।

बच्चे चिल्ला-चिल्लाकर गा रहे थे—"देखो रे देखो, हाथी की गुदा पर काली चींटी... "

हाथी को देखकर मम्मात्तिलु का दिल तड़प उठा। अपनी सारी ताकत खत्म होने तक पसीना बहाकर, रात-दिन की मेहनत से जो एकमात्र जायदाद खड़ी की थी, वह अभी आंखों के सामने तहस-नहस होनेवाली है। यह ख्याल आते ही मम्मात्तलु दुखी हुआ। मैं क्यों इस धरती पर आया।

"चलो, हम बाहर चलें। हाथी की मदद से मकान गिराने दो उसे..." मम्मात्तिलु बीवी के साथ बाहर निकल आया। वाप्पा के पीछे खैरुन्नीसा और सफिया भी बाहर आई।

क्या अमीना इस स्थान को भूल सकती है? उसके लिए 'कावा' है यह। जहां उसने बीस साल तक गृहस्थी चलाई, जो स्थान उसके बच्चों के नन्हें पैरों की ठुमकन से पुलकित है, उनकी पैदाइश की मिठास भरी टीस और रोमांच का गवाह रहा है और जो उसके दिल के एक कोने से दूसरे कोने तक फैला हुआ है—ऐसी न भुलाई जानेवाली जगह को उसने जी भरकर देखा, और दोनों हाथों से आंखें बंद कर लीं।

"रोओ नहीं...भले ही आज हम बेघर हो गए हैं, पर देखती रहो, कुछ ही बरसों में हमारा पीरू अपनी जमीन पर अपना घर बनाएगा। आओ, अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे

बड़ा करने की कोशिश करें।"

वैक्कलूर का हाथी मम्मात्तिलु के बाड़े में घुस आया। मुनीम ने सावधानी से इधर-उधर देखा—कहीं कोई सशस्त्र गिरोह प्रतिरोध पर तो उतारू नहीं है !

नहीं, ऐसा कुछ नहीं था।

"हो जाए शुरू..." मुनीम ने महावत को हुक्म दिया।

फिर पल-भर की भी देरी नहीं हुई।

विशाल वृक्षों को खेल ही खेल में उखाड़ देनेवाले हाथी की सूंड़ आगे बढ़ी। उसकी पकड़ में पहले ऊपर का तीरा आया। बस, एक ही झटके में समूचा छप्पर चरमराते हुए औंधा गिर पड़ा।

"जिस तरह हमारा घर टूट रहा है, हमारा दिल टूट रहा है, उसी तरह तेरी दौलत का किला भी टूट जाए..." अमीना की यह बद्दुआ उसके पेट से चीत्कार की तरह निकली। पर इस चीत्कार को किसी ने नहीं सुना। वहां इकट्ठा लोगों का सारा ध्यान ध्वस्त होते मकान पर केंद्रित था।

बेहोश होकर गिरी बीवी को मम्मात्तिलु ने अपने कंधे के सहारे संभाला। नादान बच्चियां जोर-जोर से रोने लगीं।

चंद लम्हों की बात थी। पूरा मकान धराशायी हो गया।

ध्वंस का वह तांडव करने के बाद हाथी शांत हो गया। जमीन पर पड़े नारियल के हरे पत्तों को उसने सूंड़ से उठाया और फिर कान हिलाकर मक्खियों को भगाते हुए वह अपने भारी शरीर को उचकाते हुए अपनी राह चल पड़ा।

"वूभ्...बुवाय्...बूभ्..." की आवाज निकालते हुए पीरू भागा आया। पीछे-पीछे कासिम था।

पीरू सहमकर खड़ा हो गया।

कल तक वह जिस घर में सोया था, आज वह उसके सामने खंडहर हुआ पड़ा है। इस दृश्य को देखकर वह भौंचक्का हो गया। उसकी रगों में गर्मी महसूस हुई और वे खिंचकर तन गई। उसने मकान की हालत को ध्यान से देखा। फिर कल्पना की कि इसी टूटे मकान की जगह ईना पीना कूना का दुमंजिला भवन उठ आया है और वह स्वयं उसकी ऊपरी मंजिल पर खड़ा है। वहां खड़े उसने फिर उस भवन को देखा है और अब वहां पर दुमंजिला भवन नहीं है। वह कब का टूट चुका है और उसी जगह खड़ा है एक पुस्तकालय !

पीरू पत्थर का एक नोंकदार टुकड़ा उठाने के लिए झुका तो उसके पुराने निकर में लगा पैबंद फिर से फट गया। हाथ में पत्थर उठाए वह पीछे मुड़ा।

हाथी नदी के किनारे-किनारे चला जा रहा है। पीरू ने दांत भींचकर अपनी पूरी ताकत बटोर ली और हाथी को निशाना बनाकर पत्थर मारा, "जहन्नुम में जा, हरामी के

बच्चे...!"

पत्थर हाथी को नहीं लगा।

पीरू फिर पत्थर उठाने के लिए झुका।

नीचे झुकते हुए उसे अपने कंधे पर किसी के हाथ की छुअन महसूस हुई।

कासिम भाई !

कासिम को देखकर पीरू फूट-फूटकर रो पड़ा।

"भाई !...देखा हमारा घर..."

"देख लिया भैया ! रोओ मत..."

पीरू और जोर से रोने लगा। कासिम ने पीरू के कंधे को थपथपाया।

"पीरू, एक दिन तू जिस हाथी को पत्थर मारकर गिराएगा, वह इंसान नहीं, जानवर है। मालिक का हुक्म बजानेवाला जानवर। यह मुनीम भी मालिक के हुक्म पर नाचनेवाला, पैसे के लिए काम करनेवाला जानवर है। ये सब बेकसूर हैं। पीछे से इन्हें जो चलाता है, उसी को जड़-मूल से काटना चाहिए। ईना पीना कूना की तरह जो लोग इंसान के लहू को पीते हैं, उन्हें ही जड़-मूल से काटना चाहिए। पीरू रे, तू इसका बदला लेना चाहता है तो अपने घर के इस खंडहर पर खड़ा होकर कसम खा...बोल—'हां मैं, इन हैवानों को जड़-मूल से काटूंगा...यह कसम खाता हूं' कासिम ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए टीसती हुई आवाज में कहा।

"काटूंगा..." पीरू की नन्हीं मुट्ठी हवा में उठी।

उस नन्हीं मुट्ठी को देखकर कासिम के मन में गुदगुदी हुई।

"मेरे वाप्पा कहां हैं...?" पीरू ने पूछा।

"नदी-किनारे...।"

"मेरी उम्मा?"

"वहीं बेहोश पड़ी है..."

"हाय, मेरी उम्मा..." पीरू चिल्लाते हुए नदी-तट की ओर भागा।

कासिम उस टूटे मकान को खड़ा देखता रहा। मम्मात्तिलु को हर आफत से बचानेवाला कासिम आज अपनी बेबसी पर गम जदा खड़ा था।

मम्मात्तिलु और उसके परिवार ने वह रात उसी जगह बिताई।

आसमान के नील मंडप के नीचे निर्बाध, अपनी मिचमिचीं आंखों से सितारों को देखते हुए चित्त पड़ा रहा पीरू। आधी रात बीत जाने पर भी उसे नींद नहीं आ रही थी।

कल रात को कहां लेटेंगे? यह ऐसा सवाल था, जिसका कोई जवाब नहीं। दीदी और छोटी बहन को सीने से लगाकर लेटी उम्मा भी बार-बार नाक भींच रही है।

तो क्या उम्मा भी नहीं सोई..? पीरू ने आंखों की कोर से देखा। चटाई पर बैठा मम्मात्तिलु

भी बीड़ी सुलगा रहा था।

तो वाप्पा भी नहीं सोए ! घर में कोई भी नहीं सोया। पीरू धीरे से उठा।

"क्या तू सोया नहीं?" मम्मात्तिलु ने पूछा।

"नींद नहीं आ रही है।"

"आंख मूंदकर सो जा।"

"वाप्पा...जड़-मूल से कैसे काटा जाता है?" पीरू का सवाल जलते हुए बादल-जैसा था।

30

काश, उस दिन पौ न फटी होती ! सुबह की किरणें न फैली होतीं ! वह रात ज्यों-की-त्यों बनी रहती—युग-युगों तक, कयामत तक, तो क्या ही अच्छा होता ! सुबह हुई, तभी तो वह खबर सबके कानों में पड़ी। दुकान की पटरी पर बैठकर मटरगश्ती करनेवाले निकम्मे, पुलिया की दीवार से पीठ सटाए खड़े रहनेवाले निठल्ले और चाय की दुकान पर पड़ी बेंच पर पांव पसारे टांगों को खुजलाते आवारा और ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे भी—सबकी जानकारी में वह बात आ गई।

सुननेवालों ने यकीन नहीं किया। करें भी कैसे? बात ही कुछ ऐसी थी। हजरत अली खां इब्नु आलीसम नई दुल्हन के साथ सुहागरात मनाने के बाद उसके गहने-गुड़िया लेकर सुबह की अजान से पहले ही नौ-दो ग्यारह हो गए। लोग इस खबर को कैसे हजम कर सकते थे? अजमेर के बादशाह का खासमखास चेला भी भला ऐसा कमीनापन दिखा सकता है? हरगिज नहीं। लोग इसे मानने के लिए तैयार ही नहीं थे।

"सुना तुमने? गफलत में पड़े हम जैसे लोगों को दीनी इल्म देकर नेक मुसलमान बनाने आए मुसलियार साहब भला ऐसा काम करेंगे? तुम ही बताओ !" सुलैमानी चाय[1] को फूंक-फूंककर पीते हुए हनीफ मल्लाह ने पूछा।

चाय की दुकान पर मौजूद टांगें खुजलाते लोगों को लगा कि हनीफा की दलील में दम है। किसी ने कहा, "मुमकिन है मोयलियार साहब को अजमेर के बादशाह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती उनके मनाफियत[2] में ही उठा ले गए हों !"

"हां, यह हो सकता है। कहीं लड़ाई भी चल रही है !"

"भई, ये दरवेश ठहरे। इनके बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। देखते-देखते ओझल

1. काली चाय।

हो सकते हैं, आनन-फानन में दीदार दे सकते हैं। इनका क्या ठिकाना?"

"लेकिन उस लड़की के गहने कैसे गुम हो गए?"

"छिः छिः, तुम भी कैसी बातें करते हो? किसी ने कुछ कह दिया और तुमने मान लिया। जरा सोचो तो सही। क्या मोयलियार दुनियावी दौलत के लालची हैं? उन्हें सोने-चांदी से क्या काम?" हनीफा ने प्रतिवाद किया। फिर धीमे स्वर में बोला, "अरे, तुम्हें असली राज का पता नहीं। इधर-उधर से गहने मांगकर पोडिक्कण्णु ने अपनी लड़की को दुल्हन बनाया। मोयलियार गायब हुए तो उसने ही गहनों को कहीं दबा दिया ! चोरी और बदनामी थोप दी मोयलियार पर ! क्या ऐसे आदमी का कभी भला होगा..."

"उफ्...! यह बात है ! पोडिक्कण्णन आदमी ही ऐसा है। यह तो कर ही सकता है, इससे आगे भी जा सकता है।"

"अच्छा, यह भी तो सोचो। मस्जिद में एक लड़की आई है न फरियाद लेकर...? वह मसला भी तो इससे जुड़ा है !" खंभे से लटकी जलती हुई रस्सी से बीड़ी सुलगाते हुए 'काना' कन्नन ने एक अहम सवाल उठाया।

"अरे, तुझे पता नहीं तो सुन। मैं बताता हूं। बाल बढ़ाकर घूम रहा है न एक सिरफिरा छोकरा, जिसकी वजह से बादलों ने पानी बरसाना बंद कर रखा है, वही हरामी का बच्चा कहीं से इस लड़की को किराए पर ले आया है, मोयलियार को बदनाम करने के लिए।"

"अच्छा, यह बात है ! वाकई वह शैतान का बच्चा है। यह भी कर सकता है, इससे आगे भी गुल खिला सकता है। किसी न किसी बहाने मुस्लिम लड़कियों का हाथ छूने के लिए कुछ दिन पहले उसने एक चाल चली थी न? भूल गए तुम? वही...हैजा रोकने के लिए सुई लगाने का बहाना बनाते हुए शहर से एक काले भूत को साथ में ले आया था! याद है?"

"खूब याद है भई, ठीक है। इस लड़की को भी वही लाया है।" वहां पर इकट्ठे लोग एकमत होकर इस फैसले पर पहुंच गए।

गांव के लोगों को सही रास्ता दिखाने उनकी रहनुमाई करने के लिए आए अली खां इब्नु आलीसम के एकाएक गायब होने की खबर चक्कर काटती हुई चारों ओर फैल गई। गली में खेलते बच्चों से लेकर रीढ़ टूटे, खटिया पकड़े बुड्ढों तक ने इसे सुना। रसोई की धुआं भरी चहारदीवारी में बंद कुमारियों ने भी यह सब जान लिया।

कुछ लोगों को मुसलियार के चले जाने का अफसोस हुआ, तो कुछ लोगों को खुशी भी हुई कि पोडिक्कण्णन की बेटी सुहागरात में ही खसम से हाथ धो बैठी।

पोडिक्कण्णन घर के लिपे-पुते आंगन में तख्त पर बैठा था। बांस के खंभे से पीठ

---

2. रुन्ना।

सटाए उसने अपनी सूजी हुई आंखें बंद कर रखी थीं। दिल छटपटा रहा था। कमरे में बेटी की सिसकियां भरी हुई थीं। दिल सुकून से कैसे रह सकता था?

उसकी सुबकन और सिसकियों को सुनकर मन में ज्वालामुखी उबल रहा है। लावे की धाराएं चारों ओर बह रही हैं। उस बहाव में पर्वत फटे जा रहे हैं। लावा उनकी दरारों से बहते हुए और रेगिस्तानी रेत को पिघलाते हुए आगे बढ़ रहा है।

"अल्लाह..." दिल दहलाती यह आवाज घर के भीतर से सुनाई दी। इसे सुनने के बाद पोडिक्कण्णु से वहां बैठते न बना।

वह बाहर निकला। चला, सीधे मस्जिद की ओर। नजर अगल-बगल कहीं नहीं गई। चेहरा लटका हुआ था। मस्जिद की दीवार से सटा खड़ा पीरू दिखाई दिया। दक्षिण की ओर देखा तो कब्रों के उभार दिखाई दिए। नई रेत से पटी हुई कुछ कब्रें। पुराने रेत से फीकी हुई कुछ कब्रें। सारी रेत गायब होने से सपाट हो गई कुछ कब्रें। गड्ढे की शक्ल में दिखाई देती कुछ कब्रें। घुन खाए 'मीयान तख्तों'[1] को दिखाती हुई कुछ कब्रें !

मीठे नीम की पतली डाल पर बैठी 'मैयत चिड़िया' की चहचहाहट 'गड्ढा खोदूं? गड्ढा पाटूं?' मौत के कगार पर खड़े लोगों से सीधा सवाल !

अगर 'मैयत चिड़िया' डाल पर बैठी लगातार यों बोलती रहे तो गांव में जरूर मौतें होंगी।

किसकी मैयत है यह?

अगर यहां 'इत्ती-सी-जगह' मिली होती तो ऐसे दुख काहे को आते?

मस्जिद के चबूतरे से अजान सुनाई दी। इससे उसका सोच बिखर गया। वह अपने होश में आया।

"गली में फरीद पिल्लै की खडाऊं की आवाज–टक्...टक् ! उनके कंधे से लटकती वायल शॉल से उड़ती इत्र की सुगंध !

"काका !" पोडिक्कण्णन की आवाज थरथरा उठी।

"क्या है?"

"सुना आपने?"

"हां, पता चला। अल्लाह ने बिटिया के भाग में यही लिखा है भाई, हम क्या कर सकते हैं? अजमेर के बादशाह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के खासमखास चेले की बीवी होकर उनके साथ कम-से-कम एक रात बिताने की खुशनसीबी तो उसने पाई। वह बड़ी खुशकिस्मत है। सब्र करो भाई, सब्र करो। मोयलियार जरूर आएंगे। ये दरवेश हैं, ऐसे ही होते हैं भई। अचानक आते हैं और एकाएक ओझल हो जाते हैं।"

---

1. मैयत को दफनाते समय सिरहाने और पायताने गाड़े जानेवाले तख्ते।

"सारे गहने मंगनी के थे हुजूर ! जिन लोगों से मांगे थे, वे सभी सुबह-सुबह घर में आ गए। मैं...मैं कंगाल हो गया हूं काका !" पोडिक्कण्णन की आंखें भर आईं।

"अल्लाह पर भरोसा कर भई, सबके ऊपर है वह परवरदिगार। गहने देनेवाले अगर ज्यादा दबाव डालें तो घर बेचकर उनकी भरपाई करो। सही दाम मांगोगे तो मैं खुद भी ले सकता हूं। बेचने के लिए इधर-उधर जाकर झंझट करने की जरूरत नहीं है।"

"काका, आप सब लोगों ने मिलकर कराया यह निकाह। अब मुझे यूं मंझधार में छोड़ देंगे तो..."

"अपनी बेटी की शादी कराना तुम्हारे बूते की बात नहीं थी। हम सब लोगों ने मिलकर उसका बेड़ा पार कराया। मोयलियार चले गए तो अब हम लोग क्या कर सकते हैं? तुम बेटी को उतना ही जेवर देते जितना तुम्हारे पास था। मंगनी के जेवर देने को किसने कहा था?"

सर्वशक्तिमान अल्लाहताला के सामने घुटने टेककर सिजदा करने के लिए फरीद पिल्लै मस्जिद की सीढ़ियां चढ़कर अंदर चले गए और इधर उसी सर्वशक्तिमान से उपेक्षित सर्वहारा पोडिक्कण्णु की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उसके पांवों के नीचे की जमीन खिसकने लगी। वह भीतर-बाहर से टूट चुका था। थकान से चूर-चूर होकर वह गिरने को हुआ तो दीवार के सहारे टिक गया। उसकी नजर फिर दक्षिण की ओर गई। कब्रों पर उसकी आंखें गड़ गईं। 'यहां मेरी कब्र किस जगह बनेगी', यही सोचता रहा।

उसी समय मीठे नीम की डाल पर बैठी 'मैयत की चिड़िया' फिर से चिल्ला उठी—

गड्ढा खोदूं? गड्ढा पाटूं?...किसके लिए था उसका यह सवाल?

मुंचिरै के तिरुमलै मंदिर के नीचे बने रजिस्ट्रार आफिस में, श्री चित्तिरै तिरुनाल बालरामवर्मा महाराजा के चित्र से अंकित स्टैंप कागज पर मीरान पिल्लै के बाएं हाथ का अंगूठा लुढ़काया गया। तब उनके अंगूठे में रक्त-संचार बंद-सा हो गया था।

घर पहुंचकर वे किसी से कुछ नहीं बोले। घर से निकलते समय भी बीवी को यह नहीं बताया था कि वे कहां जा रहे हैं।

ईना पीना कूना के मुनीम के पीछे-पीछे वे एक मेमने की तरह चल पड़े। 'मरण विलासम' में सवार होकर मुंचिरै पहुंचे। मुंचिरै में उतरकर सब रजिस्ट्रार के आफिस में गए। जहां-जहां बताया गया, बाएं हाथ का अंगूठा लगाया और अंगूठे की स्याही को पोंछे बिना गाड़ी में बैठकर घर लौट आए।

हमेशा की तरह घुटने बांधकर बैठे। उन्हें रात महसूस हो रही थी, जैसे छाती का बोझ उतर गया हो। पर जहां वह बोझ था, अब वहां दावानल दहक रहा था। उसकी दाह से

उनकी जीभ ऐंठ-सी गई। ऐसे में वे अपने दिल को पसलियों में दबाए भारी वर्षा में भीगे पंछी की तरह बैठे रहे।

एक लंबे व्यापारिक जीवन का यह दुखांत क्षण। इन लम्हों में मीरान पिल्लै ने पीछे पलटकर देखा, उन लम्हों को जब उन्होंने "बिसमिल्लाह" करके कारोबार शुरू किया था।

उफ्‌ ! कितना लंबा समय गुजर गया।

समुद्र में उस साल खूब नेत्तिली मिली थी। शादीशुदा जिंदगी, उसकी नई-नई महक। जाल में आई मछलियों पर लोग बोली लगा रहे थे। दिन-भर सुखाने के बाद अगली बोली में वे उसे ऊंचे दाम पर बेचते थे। मीरान पिल्लै के मन में भी यह नई ललक जागी कि स्वयं 'चंबै व्यापार' (मछली का कारोबार) क्यों न करे। सूखी मछली खरीदकर कोलंबो भेजें तो मुनाफा अच्छा मिलेगा। लेकिन उसके लिए जरूरी पूंजी हाथ में नहीं थी।

कदीजा की कलाई में पड़ी चूड़ियों में से दो चूड़ियां लेकर पुदुक्कडै गए। चेट्टियार के पास उन्हें गिरवी रखने पर एक अच्छी रकम मिली। उसी से कारोबार शुरू किया। इरयम्मन घाट पर जाल में बहुत-सी नेत्तिली। शाम को नीलामी। नीलामी में खरीदे गए माल से नाव पूरी भर गई थी। नेत्तिली को बोरियों में भरकर जब नाव पर चढ़ाया गया तो रात के बारह बज चुके थे। चटक चांदनी। वलियार में खासा जल-प्रवाह। बोझ ज्यादा होने से पानी नाव के किनारों तक आ गया। रात का वक्त, किसी ने ध्यान नहीं दिया। बीच नदी में आकर नाव डूब गई। जहां नाव डूबी, उसी जगह बल्ली गाड़कर नाविक किनारे तक पहुंचा।

गोता लगाकर सीपी ढूंढने वाले मजदूरों को पुत्तनतुरै से आने में तीन दिन लग गए। उसके बाद वे घंटों तक डुबकी लगाकर माल निकाल लाए।

बाहर निकाले गए माल से भारी बदबू आ रही थी। सारी नेत्तिली फीकी पड़ गई थी। लगाया गया सारा पैसा पानी में डूब गया। ऊपर से आसमान पर काले बादल देखकर चिंता बढ़ गई। धूप न मिली तो सारा माल जमीन में गाड़ने के सिवा कोई चारा नहीं रहेगा। सैकड़ों साल पहले आत्तुपल्लि की चट्टान पर शाम को आराम करने आए नागूर शह-उल-हमीद ओलिउल्ला से दुआ मांगी। वह मंजूर हुई।

मेघ छंट गए। अच्छी धूप निकल आई। दो दिन धूप खाकर नेत्तिली सोंठ की तरह सूख गई। बदबू भी निकल गई। लेकिन माल इस लायक नहीं था कि ज्यों-का-त्यों भेजा जाए। रेत छंट जाने से वजन भी कम हो गया होगा। इसलिए उतने ही वजन की नेत्तिली खरीदकर और फिर इसके साथ मिलाकर माल भेजना होगा। इसके लिए उन्हें कदीजा की दो और चूड़ियां लेकर चेट्टियार के पास जाना पड़ा।

दुबारा खरीदे गए माल के साथ मिलाकर और फिर उसे ठीक से बांधकर कोलंबो भेजा गया। दो हफ्ते में ही बिक्री का बीजक मिल गया। अच्छा-खासा मुनाफा। इससे आगे भी कारोबार करने का हौसला हुआ। व्यापार चल निकला। इस तरह कई साल बीत

गए—जिंदगी के कितने ही खुशनुमा साल। लेकिन अब इस जिंदगी में खोने के लिए कुछ भी शेष नहीं है। कदीजा के सोने के गहने, इकलौती बेटी को पहनाने के लिए रखे गए जेवर, बीवी के नाम से खरीदी और अपनी मरौसी जायदाद और आखिर में रात बिताने के लिए उप्पा (दादाजी) द्वारा पोते को दिया गया यह घर।

तपती दुपहरी, मूसलाधार पानी और चमड़ी को बेध देने वाले जाड़े में न समय पर खाना हुआ, न नींद ली। बरसों तक कोल्हू के बैल की तरह जो मेहनत-मशक्कत की थी, आखिर उसका क्या नतीजा निकला। नफा या नुकसान?

आंगन में घास से पटी जमीन पर ततैए उछल-कूद रहे थे। धोबी का मरियल-सा एक गधा उधर से निकला। बूढ़ा और बीमार। बदन पर जगह-जगह फोड़े और घाव। धीरे-धीरे वह अपना चेहरा आंगन की घास तक ले गया। फिर उसने थूथन उठाया तो उसकी आंखों से टपकते आंसुओं को मीरान पिल्लै ने देखा। खिड़की पर बैठे उसे गौर से देखने लगे। मेहनत का बूता इसमें नहीं रहा तो इसका कोई धनी-धोरी नहीं। बेचारा लावारिस और उपेक्षित गधा!

मीरान पिल्लै ने उससे नजर नहीं हटाई। कोई अदृश्य डोर उनके दिल को उस गधे से जोड़ रही थी।

"आप कहां गए थे?" कदीजा ने पूछा।

"मुंचिरै..." इसके आगे उनकी जीभ ऊपर नहीं उठी। गला रुंध गया।

कदीजा ने भी और कुछ नहीं पूछा। मुंचिरै का नाम सुनकर न कांपी, न रोई। दिल में अब कांपने के लिए भी ताकत नहीं थी। सिहरते हुए वह कब का कमजोर हो गया था। बहाने के लिए अब आंखों में आंसू भी नहीं। उनके भीतरी तालाब बार-बार पानी बहने से सूख गए थे। उनकी सतह पर दरारें पड़ गई थीं।

कदीजा ने कमर पर बंधी काली डोरी से लटकती चाबी निकालकर पति के हाथ पर रखी। बरसों तक यह चाबी उसकी सोने की करधनी में लटकी रही। फिर रजत करधनी से लटकी 'कलकल' करती रही। लेकिन अंत में मनिहार से खरीदी गई काली डोरी से बंध गई और खामोश लटकी रही।

"लो अब इसे ईना पीना कूना मुदलाली की बीवी की करधनी में लटकने दो।" कहती हुई कदीजा घर में चली गई।

उस दिन शाम को ईना पीना कूना का मुनीम अपनी बगल में टेढ़ी मूठवाली छतरी दबाए, पान-सुपारी से दोनों गाल फुलाए घर में घुस गया। मीरान पिल्लै ने उसके वजूद पर कोई गौर नहीं.किया। वे खामोश बैठे रहे।

उसी समय वह गधा लंगड़ाते हुए धीरे-धीरे आ रहा था। थोड़ी दूर, शिरीष वृक्ष के नीचे खड़े होकर उसने मुंह उठाया, मीरान पिल्लै के घर की ओर। गधे की पीठ के खुले

घावों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं।

मुनीम आते ही चारपाई पर बैठ गया। बैठते ही आगे को उचककर पान का पीक थूका। फिर बाएं घुटने पर दाईं टांग टिका ली। बिना कालर वाली आधी बांह की कमीज का बटन खोल दिया। पसीना सुखाने के लिए सीने पर फूंक मारी। बैठे-बैठे ही आंखों से पूरे घर को टटोला। ऊपर लगे तख्ते...खंभे...छत पर लकड़ी के तीर..सभी को नजर की जीभ से चाटा।

"घर से कब निकलने वाले हैं?" मुनीम ने पूछा।

मीरान पिल्लै ने मुनीम को घूर कर देखा।

मुनीम ने अपनी अंटी खोली। अंटी से कछुआनुमा ताला और चाबी निकालकर उन्हें सामने रखा।

कछुआनुमा ताला...लंबी चाबी...और ढीठ मुनीम—मीरान पिल्लै ने तीनों को बारी-बारी से देखा, किसी विक्षिप्त व्यक्ति की तरह। फिर खिड़की के सीखचों से गली की ओर देखा।

गधा वहीं खड़ा था।

क्या यह गधा रात को पैर पसारे सोने के लिए रैनबसेरे की तलाश में है?

"सुना कि नहीं..." मुनीम ने याद दिलाई।

मीरान पिल्लै ने मुनीम को फिर से घूरकर देखा।

मुनीम जरा झिझका।

थोड़ी देर तक खामोशी।

खामोशी की डोरी को मुनीम ने काटा।

"मैं...मैं तो इस रगड़े में नहीं हूं। आप इस घर में बने रहें या यहां से निकल जाएं इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मुदलाली ने मुझे लिखा है, वे एक हफ्ते में आनेवाले हैं, तब तक मैं इस घर को खाली करवा लूं और सफाई कराकर तैयार रखूं। मुदलाली के आने पर इसी घर में मौलूद पढ़वाकर गरीबों को दावत दी जाएगी।"

"जैसे ही हमारा बेटा मम्मासीन[1] आएगा, हम लोग घर छोड़कर निकल जाएंगे।" घर के भीतर से कदीजा बोली।

"पिल्लै ! वह आ जाए तो तुरंत घर से निकल जाइयो।" कछुआ-ताला और चाबी हाथ में लिए सीढ़ी उतरते हुए मुनीम ने कहा।

मुनीम जब बाहर निकल गया, मीरान पिल्लै ने खंखारकर थूका और गुस्से से फुफकार उठे।

गधा बिलकुल नहीं सरका। उसी जगह पर खड़ा रहा। सांझ की हवा में उसका बदन

---

1. 'मुहम्मद कासिम' का संक्षिप्त रूप।

थर-थर कांप रहा था, इसे मीरान पिल्लै ने गौर से देखा।

उसके जीवन की संध्या।

गली में मुरज बजाने का स्वर। बच्चों का हो-हल्ला। आनैविलुंगी ने अपने गले में लटकते गोलाकार सूरज को टेढ़े डंके से पीटकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। फिर वह जोर से चिल्लाया—

"बस्ती के सभी लोगों को खबर दी जाती है कि ईना पीना कूना मुदलाली, जो हमारे गांव के निवासी हैं और कोलंबो के बड़े व्यापारी हैं, पांच साल पहले हज के लिए गए थे। अब वे हज करने के बाद पहली बार गांव लौट रहे हैं। मुहल्ला समिति ने फैसला किया है कि मुहल्ले की ओर से अल-हाज ईना पीना कूना मुदलाली का शानदार स्वागत किया जाए। बस स्टैंड से लेकर मालिक इब्नुद्दीन मस्जिद तक और मस्जिद से लेकर मुदलाली के घर तक हरी झंडियां और तोरण बांधने के लिए तथा रास्ते में सफेद रेत बिछाने के लिए गांव का हर आदमी मस्जिद में आकर दो-दो रुपए अदा करेगा। यह सदर-ए-मुहल्ला समिति का फरमान है। जो लोग यह रकम अदा नहीं करेंगे, उन्हें जाति-बिरादरी से अलग किया जाएगा। मूना नावन्ना फरीद पिल्लै मुदलाली का फरमान है...ऐ...ऐ..."

गली में खड़े होकर गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते हुए आनैविलुंगी की आवाज मीरान पिल्लै के कानों में लहरें मारने लगी। उन्होंने कान देकर सुना। फिर धीरे-धीरे ढोल की आवाज भी दूर होती चली गई।

"हुम्...'सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को' पर यह तो बिलाव नहीं, खूंखार तेंदुआ है। सौ-सौ हज करे, तब भी क्या इसके गुनाह मुआफ होंगे?...हुम्...इसके खैरमकदम की तैयारी !" मीरान पिल्लै का दिल दहल उठा।

आनैविलुंगी हर नाके-नुक्कड़ पर खड़ा होकर मुरज वजाता, लोगों के इकट्ठा होते ही मुनादी करता। फरीद पिल्लै का यह ऐलान सुनकर लोगों की जीभ ललक उठी। रस के सोते बह उठे। नथुनों में घी और चावल की गमगमाती महक। तला हुआ पापड़। चेन्तुलवन केला[1] !

ईना पीना कूना जब भी कोलंबो से आते, 'सुभान मौलूद'[2] का आयोजन होता और गांव के लोगों को पंक्ति-भोज खिलाया जाता। धुआंधार भोज।

---

1. केले की एक विशेष किस्म जिसका छिलका ईंट जैसे लाल रंग का होता है। इस केले का जायका भी अलग है।

2. पैगम्बर साहब की शान में गाया जानेवाला गीत।

ईना पीना कूना का मौलूद[1]-भोज मशहूर था। गांव के लोग हाथ हिलाते हुए समंदर-किनारे होकर आते। ठेठ दोपहर की कड़ी धूप से बचने के लिए अंगोछे को सिर पर बांधे कतार-के-कतार लोग। गले तक मुफ्त का माल खींचते हुए लोगों का हाल देखने लायक होता है। कुछ लोग तोंद पर हाथ फेरते और तीली से दांत कुरेदते हुए चहलकदमी करने लगते हैं। कुछ लोग समुद्री हवा में नारियल के नीचे निढाल पड़े मिलते हैं। कुछ मनचले रेत पर उछल-कूद में मस्त हो जाते हैं। कोई-कोई अंधाधुंध खाने के बाद भारी पेट संभाले चल नहीं पाता। लोगों पर नजर रखने के लिए द्वार पर खड़े मुच्छड़ पहलवान शेमद की आंख बचाकर कोई-कोई दो-तीन बार भीतर घुसने में कामयाब हो जाता। कुछ ऐसी बचत के कायल भी थे, जो बाकी खाना अंगोछे में बांधकर उठते।

लेकिन अभी वह शुभ दिन नहीं आया था। लोग सिर्फ सपने देख रहे थे।

कासिम जब बसस्टैंड पर पहुंचा तो बहुत रात हो गई थी। अखबार को उसने कमीज के भीतर छिपा लिया था। अंधेरे को चीरकर लपकती 'इडिवण्डि' कब कहां पहुंच जाएगी, इसका कोई ठिकाना नहीं। दीवान सी.पी. की पुलिस-फौज की खूंख्वार आंखें, जो अंधेरे को चीरकर देख सकती हैं... पागल कुत्तों की तरह खतरनाक मलाबार स्पेशल पुलिस ...सी.पी. का खास हुक्म था—हाथ में अखबार लिए जाते और शुबहा पैदा करने वाले लोग जहां भी मिलें, उन्हें तुरंत पकड़ा जाए और उनसे सचाई उगलवाई जाए।

कासिम पक्की सड़क पर आगे बढ़ा। फिर पुल पार किया।

"भैया...!"

मोड़ मुड़ते हुए कासिम को लगा कि कोई उसे बुला रहा है।

दो जने कासिम के पास आए। साथ में मछली की गंध। कासिम ने अंधेरे में गौर से देखा। मीरासा और मम्मात्तिलु।

"सुना भैया..."

"क्या..?"

"कहते हैं कि ईना पीना कूना गांव आ रहे हैं। गांव में मुनादी करके आनैविलुंगी ने बताया है। कह रहा था कि उनके स्वागत के लिए गांव का हर आदमी दो रुपए देगा। जो नहीं देगा उसे बिरादरी से निकाल देंगे। मुहल्ला समिति का फरमान है।"

"ऐसी बात है?"

"और तुम्हारे वालिद मुंचिरै गए थे।"

"सच?"

"हां।"

---

1. पैगम्बर साहब की शान में गाया जाने वाला गीत।

"घर से भी निकल गए?"

"अभी नहीं।"

कासिम चुप हो गया। थोड़ी देर तक सोचता रहा।

"आज पुलिस वैन आई...?"

"यह कैसा सवाल है? दिन में दो-तीन बार आई थी। रात में भी दो-तीन चक्कर हो गए हैं। भैया, हमें तुम्हारी फिक्र सता रही थी। तुम्हारी ही बाट जोहते हुए हम यहां बैठे हैं।"

"किसी की धर-पकड़ हुई?"

"अभी तो नहीं। पर लगता है, पुलिस किसी खास शख्स की तलाश में है। वह तुम भी हो सकते हो, इसकी पूरी गुंजाइश है। कोलंबो से ईना पीना कूना ने पुलिस को लिखा होगा, तुम्हारा हुलिया बताया होगा। लोग दबी जबान में बात कर रहे हैं। खुदा करे यह सच न हो। तुम्हें जरा होशियारी से रहना होगा भैया!"

"अगर पुलिस को लिख दिया तो क्या होगा। ज्यादा से ज्यादा मुझे पकड़कर ले जाएंगे। ले जाने दो। हम क्या कर सकते हैं? अगर मैं न भी रहा तो क्या विरोध खत्म हो जाएगा? विरोध करने के लिए क्या दूसरा कोई नहीं आएगा?"

"जरूर आएगा।"

"आएगा। वह जड़-मूल से काटकर इनको खत्म करेगा।"

"इसका क्या मतलब होता है भैया? हमारा पीरू बारंबार कहता फिरता है—जड़मूल से काटूंगा।"

"वह काटेगा। पेड़ के सहारे रहनेवाली बला को हटाने के लिए सिर्फ उसकी डालें काटना ही काफी नहीं है। उसे जड़-मूल से काटकर फेंकना चाहिए। तभी पेड़ से जुड़ी बला टलेगी। जड़-मूल से काटना इसी को कहते हैं।"

"हां, समझ में आ गया।"

"तब?" मीरासा ने पूछा।

"हमारा असली दुश्मन ईना पीना कूना का मुनीम नहीं है, उसके मुस्टंडे भी नहीं, खुद ईना पीना कूना मुदलाली भी नहीं। गांव की जनता को गरीबी के मुंह में धकेलने के लिए तीन चीजें जिम्मेवार हैं—दौलत का नशा, गलत रास्ते जिनसे दौलत बटोरी गई है और अमीरों की हां में हां मिलानेवाली मस्जिद-कमेटी। हमें इन तीनों का सामना करना चाहिए। इनकी मिट्टी पलीद करनी चाहिए। ये ही हमारे जानी दुश्मन हैं।"

"हां, भैया, अब समझ आ रही है..." मीरासा ने सिर हिलाया।

"हमें एकजुट हो जाना चाहिए, एकजुट होकर इनका सामना करना चाहिए। आज हमारे पास केवल दो ही साधन हैं—बुलंद आवाज और शरीर में बची ताकत। मगर हमें

लड़ना होगा। पूरी ताकत से लड़ने पर भी शायद शिकस्त ही मिले। लेकिन जीत कल हमारी ही होगी, यह बात गांठ बांध लो। आजाद हिंदुस्तान में गरीबों की जीत पक्की है।"

"भैया !"

"हां काका !"

"तुम्हारी बातें तो ठीक हैं। पर इस समय कहां रहेंगे? कहां सोएंगे?"

"देखो, इतने बड़े समुद्र-तट के रहते काहे की चिंता? कल हम सब यहीं झोंपड़ी बना लें और यहीं रहें। जमाना जरूर बदलेगा। उस वक्त सरकार द्वारा दी गई जमीन पर अपना घर बना लेंगे।"

दूर 'इडिवण्डि' की हेड-लाइट दिखाई दी। तीनों अंधेरे में कहीं ओझल हो गए।

31

गांव की उजली रेत पर, घास की नोकों पर, वृक्षों के हरित आंचल पर जब सूरज की सुनहली किरणें नाचने लगीं तो सारा गांव जाग गया।

लोग जंभाइयां और अंगड़ाइयां लेते हुए उठे और मैदान पर फैली हल्की धूप में आकर बैठ गए। सभी के गाल हथेली पर टिके थे। उनकी निगाहें रंगून पीरशाह के घर की दीवार पर पड़ीं, जिस पर गेरुई रंग से बड़े-बड़े अक्षरों में कुछ लिखा था। यह उनकी किचड़ाई आंखों को दिखाई दिया। आंखों को अंगोछे से पोंछकर उन्होंने फिर देखा। भौंहों पर जोर डालते हुए पढ़ने की कोशिश की। जब कुछ समझ में नहीं आया तो अपने आप में सिमट गए।

फिर कपड़े से सिर ढंककर सुबह की नमाज के लिए गए। कुछ लोग नमाज अदा करने के बाद बाहर आए। सबकी निगाहें मस्जिद की दीवार पर पड़ीं। उन्हें बिजली का-सा झटका लगा। अरे, मस्जिद की दीवार पर भी?

सर्वशक्तिमान खुदा के पवित्र घर की दीवार पर भी काफिरों के भगवा रंग से लिखी लंबी-लंबी पंक्तियां ! इस छोर से उस छोर तक ! कुछ लोग उन जुमलों को पढ़ने की कोशिश करने लगे। कोई फायदा नहीं। इधर उधर से एकाध हर्फ ही समझ में आया। कभी किसी जमाने में पढ़े अक्षर।

किस इबलीस के बच्चे ने मस्जिद की दीवार को यों नापाक किया है?...लोग एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

"क्या लिखा है...मतलब समझ में आ रहा है...?"

"यहां किसको पता है..?" लोगों ने हाथ फैलाया।

"मुहल्ला कमेटी के मेंबरान ! जिस शख्स ने इस गांव की अवाम को चूसकर उन्हें मनमाने ढंग से लूटा है, पूरे गांव को गरीबी के गड्ढे में धकेला है, ऐसे ईना पीना कूना का स्वागत? उस जालिम का स्वागत करने के लिए गरीबों को धमकाकर चंदा वसूल करना बंद करो..."

'लुहर' का वक्त होने तक लोगों को उन शब्दों का मतलब समझ में आ गया। अब वे गुस्से से कांपने लगे। दांत किटकिटाने लगे। फरीद पिल्लै गुस्से में लाल-पीले होकर चिल्लाने लगे।

लोगों का धर्मरोष जाग उठा।

मक्का शरीफ जाकर 'हज' करने का अपना पाक फर्ज निभाकर सब तरह के पापों से मुक्त हो गए हैं मुदलाली। इस समय तो वे बच्चे की तरह मासूम और नादान हैं। ऐसे अल-हाज ईना पीना कूना मुदलाली पर 'जालिम' की मुहर लगानेवाला यों ही बचकर नहीं जा सकता।

जिन हाथों ने यह इबारत लिखी हैं, उन्हें काट डाला जाएगा। उसकी जीभ खींच ली जाएगी। जुम्मे के रोज मस्जिद में बुलाकर उससे तफसील से पूछताछ की जाएगी और कड़ी सजा मिलेगी। ...लोग पटाखों की तरह उछल रहे थे।

हजार साल पहले मालिक इब्नुद्दीन ने जिस पत्थर पर बैठकर इत्मीनान से आराम किया था, उसी काले पत्थर पर फरीद पिल्लै आज पस्त होकर जा बैठे। माथे से पसीना छूटने लगा। सारा बदन पसीने में तर। खल्वाट सिर पर पसीने की बूंदें। दिमाग और सीने में लगी आग के कारण उड़ रही भाप।

इस छोकरे को कैसे ठीक किया जाए?

जबर्दस्त शैतान निकला। मेरी एक-एक योजना का डटकर विरोध कर रहा है। हर योजना की काट निकालकर उसे नाकाम कर देता है। मुहल्ले के कानून को नहीं मानता। यहां तक कि गांव के ऊपर मेरे हक पर भी सवाल करता है। कई बार मुझे जलील करके सिर झुकाने को मजबूर कर दिया। इस नजीस को पनपने दिया तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा। इसे अभी ही मिटा देना होगा।

लेकिन कैसे?

किस तरह इस नजीस को मिटाया जाए?

दीवार पर लिखी इबारत के मामले में फैसला करने के लिए फरीद पिल्लै के बुलाने पर मुहल्ला कमेटी के चालीसों मेंबरान मस्जिद में जमा हो गए। उसकी हां में हां मिलानेवाले चालीस मेमने। फरीद पिल्लै के पीछे 'में-में' करते फिरनेवाले मेमने।

सब लोग मालिक इब्नुद्दीन मस्जिद के अंदर हॉल में बिछी चटाइयों पर बैठ गए। दीन

के खिलाफ काम करनेवाले कासिम को रास्ते से हटान के कई सारे तरीकों पर बहस हुई। घंटों बैठकर विचार किया गया।

"यही एक रास्ता है। इसके सिवा और कोई तरीका है ही नहीं," फरीद पिल्लै ने निश्चित स्वर में कहा तो चालीसों सिर सहमति में हिले। हिलते हुए हरेक माथे पर काला दाग लगा था—अल्लाह के सामने 'सिज़दा' करने से बना काला दाग। कयामत के दिन 'महजर'[1] के मैदान पर जब लेखा-जोखा होगा, तो ये दाग हीरे-जवाहरातों की तरह चमकेंगे !

मम्मात्तिलु, मीरासा और पीरू झोंपड़ियां बनाने के लिए आवश्यक लकड़ी, बांस और पत्ते ढोकर समंदर किनाने ले आए। झोंपड़ियों के निर्मण के लिए उन्होंने टीले पर ऐसा स्थान चुन लिया, जहां समुद्र की ऊंची लहरें न पहुंचें और जो हर तरह से सुरक्षित रहे। ईना पीना कूना मुदलाली के नाम पट्टेवाले नारियल के सघन बागों की दक्षिणी बाड़ से लगी हुई सरकारी परती जमीन।

तिरुवनंतपुरम में श्रीपद्मनाथ सवामी-मंदिर के गर्भगृह में 'अनंतशायी' भगवान श्रीअनंत पद्मनाथ[2] की उस परती जमीन पर झोंपड़ी बनाने के लिए डंडे गाड़े गए। बांसों को आड़े-सीधे रखकर उन्हें रस्सी से बांध दिया गया। फिर उन्हें पत्तों से पाटा गया। यह सारा काम चंद घंटों में पूरा हो गया।

देखते-देखते दो नई झोंपड़ियां बन गईं। धूप और वर्षा से बचाव लायक घर बन गए।

"उम्मा, सागर-तट पर झोंपड़ी तैयार हो गई।" कासिम ने उम्मा को दिलासा देते हुए कहा।

जरा हटकर खड़ी राहिला ने कहीं दूर नजर दौड़ाई। ऐसा लगा कि उसकी निगाहें दूर, बहुत दूर अनंत में—किसी की तलाश कर रही हैं।

कासिम ने खामोशी से उसे देखा। एकांत में खड़ी वह क्या तलाश रही है, इसका अर्थ उसकी समझ में आ गया। उसकी निगाह में जो शोकभरी कविता थी, कासिम ने उसे पढ़ लिया और उसके उसी शोक में शरीक होकर वह थोड़ी देर शिला की तरह खड़ा रहा। दिल में किसी ठोस चीज का असह्य दबाव। उसने उस ओर से मुंह फेर लिया और कहा—

"बहन, दुखी मत हो। लंबी जिंदगी पड़ी है हमारे सामने।"

कासिम की बातें सुनकर उसके आंसुओं का बांध टूट गया। उनके अजस्र प्रवाह में

---

1. क़यामत के दिन जिस मैदान में रुहें उठ खड़ी होती हैं।

2. ऐतिहासिक साक्ष्य के अनुसार लगभग ढाई सौ साल पहले अनेक छोटे रजवाड़ों को जीतकर तिरुविंताकूर राज्य की स्थापना करने के बाद महाराज मार्तांड वर्मा ने अपनी तलवार भगवान श्रीपद्मनाभ के चरणों में सौंप दी। तब से इस राज्य के राजा भगवान श्रीपद्मनाभ के प्रतिनिधि के रूप में ही राज करते रहे।

भविष्य और भी धुंधला गया था। ऐसा सघन अंधकार जिसमें चेहरा नजर नहीं आ रहा था। उसी अंधेरे में टटोलते हुए चल रहे वाप्पा और उम्मा। थककर चूर हो गए दो बलि-पशु।

"कल सुबह हम समुद्र तट वाली झोंपड़ी में जा बसेंगे।"

"कल मंगल है न?"

"अपना हर काम अच्छी साइत देखकर करते रहे, इसी से हमारा यह हाल हुआ है। वाप्पा, सूखी मछली कोलंबो भेजने के लिए भी तो आप हमेशा घड़ी-साइत शोधते थे।"

"मगर यह तो नए घर में जाने की बात है न, बेटे !"

"अच्छा बुधवार को बदलेंगे, ठीक है न?"

बुध की सुबह जल्दी उठना होगा। घरवालों ने मंगल की रात को जल्दी ही चटाइयां बिछा लीं। अपनी आदत के खिलाफ कासिम भी उस दिन जल्दी घर लौटा और सुबह जल्दी उठने के लिए चटाई में सिमट गया। लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई।

मीरान पिल्लै की आंखों में नींद नहीं थी। नींद उन्हें चकमा देकर जरा दूर जा खड़ी हुई थी—मानो उन्हें चिढ़ा रही हो।

मीरान पिल्लै चारपाई पर उठकर बैठ गए, बांहों से घुटनों को बांधते हुए। बीच-बीच में वे कुछ पुरानी राग-रागिनियों को सुनने की चाह में, घर में भी कान लगाए रहे।

वहां सभी लोग गाढ़ी नींद में थे। सीमेंट के चिकने फर्श की ठंडक का वे आज आखिरी सुखानुभव ले रहे थे।

श्मशान नदी के उस पार, टेढ़े काजू-वृक्ष से भी परे, चट्टानों के ऊपर से भेड़ियों की आवाज। परछाइयां देख-देखकर गली के कुत्तों की भों-भों, आधी रात को चलनेवाली हवा में नारियल-पत्तों के आपस में रगड़ खाने से उठती हुई ताल-ध्वनि। दीवार की दरारों में झींगुरों का झंकार। अंतिम पहर की हृदय की धड़कनें।

इस घर में तीन पीढ़ियों से घुसे बराबर फूल-फल रहा परिवार हाथ तंग होने के कारण कल बाहर निकल जाएगा। उसी निष्क्रमण की पूर्व-रात्रि का अंतिम प्रहर। मीरान पिल्लै उसी पहर की धड़कनों को ध्यान से सुन रहे हैं—हृदयतल से बुदबुदे की तरह फूटती सिसकियों को बमुश्किल जब्त करते हुए।

खिड़की से बाहर देखा। घुप्प अंधेरा। उन्हें उस बूढ़े गधे की याद आई, जो शिरीष वृक्ष के नीचे खड़ा हुआ था। उन्हें याद आई उसके कृष्ण नयनों से झरते जीवनजल की, जिसके जर्रे-जर्रे से उसके प्राण निकल रहे थे। फिर उसके उन दिनों की याद आई, जब वह अपनी ताकत से भी अधिक बोझ ढोते हुए अनथक भाव से मीलों चलता होगा। आज भारी बोझ से उसके शरीर में घाव हो गए हैं, और बुढ़ापे की दुर्बलता भी। ऐसे में उसके मालिक द्वारा बाहर खदेड़ देने की कृतघ्नता का भी उन्हें ध्यान आया।

आखिर उस गधे और उनके बीच क्या अंतर है? एक जिंदगी भर की कड़ी मेहनत

से बीमार होने पर खदेड़ा गया चौपाया। दूसरा जिंदगी भर कड़ी मेहनत करने के बावजूद घर से बाहर कर दिया गया दोपाया, जो अब अपनी अंतिम घड़ी की प्रतीक्षा में है।

मीरान पिल्लै की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। दीर्घ जीवन के अंतिम अध्यायों के बांचने से निकली अश्रुधारा ! कदीजा से निकाहवाली वह जुमे की रात। उस रंगीन रात में गैस-लैंप की 'सी-सी' का अनवरत स्वर गर्दन में झूलती माला से चमेली की भीनी-भीनी खुशबू। उसी खुशबू के नशे में उन्होंने कदीजा के मखमली गालों को पहली बार सहलाया था। रग-रग में गुदगुदी। महबूबा की सुरमई आंखों में आंखें डालकर अपनी परछाईं देखी थी। अधखिले होंठों को देखकर लगा था कि वे जन्नत की दहलीज पर पहुंच गए हैं। उसी खुशनुमा नजारे का चश्मदीद गवाह था यह घर, और इसकी दीवारें। कदीजा की खिलखिलाहट बार-बार इसकी छत से, खंभों और तीरों से टकराकर गूंज उठी थी। उसी तरह के मधुर पल तब आए थे जब कदीजा की कोख से कासिम पैदा हुआ था। राहिला पैदा हुई थी। कदीजा की प्रसव-पीड़ा की गवाह हैं ये दीवारें...इस घर के कमरे। दोनों बच्चे इसी के फर्श पर घुटनों के बल चले थे। पैरों में घुंघरू, कमर में करधनी, घर-भर में किलकारियां। फिर इसी आंगन में उनके नन्हें-नन्हें पांवों से तत्थक-था-थै...मियां-बीवी दोनों ने बच्चों पर ढेर सारा प्यार बरसाया था, लोरियां गा-गाकर उन्हें सुलाया था। जिगर के टुकड़ों का बचपन मीरान पिल्लै की आंखों में आज ज्यों का त्यों नाच रहा था।

वे चारपाई से उठे और घर में चले गए। कदीजा राहिला को गले से लगाए सो रही थी। पिल्लै थोड़ी देर तक उन दोनों को देखते रहे। हड्डियों के ढांचे में उलझे बाल और ढीले गाल नजर आए। सत्रह साल की वह परी जब हंसती थी, गालों में भंवर-सा दिखाई देता था। पिल्लै को आज बीवी का वही मोहक चेहरा दिखाई दिया। राहिला पालने में लेटी अंगूठा चूस रही थी।

कासिम के पास गए। उसने करवट ली। पूरे परिवार का बोझ अब इसी के कंधों पर पड़ेगा। लेकिन मीरान पिल्लै की आंखें तो कासिम के बचपन और उसके नटखटपन को देख रही थीं। वे एकटक कासिम पर नजर गड़ाए रहे।

नारियल के मोटे डंठल से बैलगाड़ी बनाकर आंगन में खींचता कासिम। एक बार की बात है। ईद से पहले दो मुर्गियां लाई गई थीं। उन्हें बांधकर रखा था। तभी नकली बैलों की जगह नन्हें कासिम ने दोनों मुर्गियों को जुए में जोत दिया था। फिर उसने स्वयं जोर-जोर से बैलगाड़ी खींची। इस क्रीड़ा में मुर्गियां बलिदान हो गईं। चित्त पड़ी मुर्गियों को देखकर वह ताली बजा-बजाकर हंसने लगा था। इसी तरह रोज कोई न कोई शरारत करता रहता था।

"बेटे..." मीरान पिल्लै के हृदय वात्सल्य का झरना फूटा। उसमें भावनाओं का ज्वार आया हुआ था। बड़ी मुश्किल से वे उस पर काबू कर पाए। डबडबाई आंखों को अंगोछे

से पोंछा और दरवाजे तक आ गए।

आंगन में पूंछ उठाए गुर्राता बौराया अंधेरा !

वे फाटक से बाहर निकल आए। धीमे से उसे बंद किया। आंगन में आए। पांव का बंधन खोलकर खदेड़ा गया बूढ़ा गधा और उसकी आंसू भरी आंखें उनके मानस-पटल से नहीं हट रही थीं।

"मैं भी तुम-जैसा हूं !" बुदबुदाते हुए मीरान पिल्लै चल दिए। उनके थके पांवों में न जाने कहां से सोलह साल के जवान की चुस्ती और ताकत आ गई। आधी रात को चलने वाली सर्द हवा की भी उन्होंने कोई परवाह नहीं की। सामने पहाड़ की तरह खड़े अंधकार को चीरते हुए वे आगे बढ़ते रहे।

चालीस सफेद हाथियों को लेकर मस्जिदों का निर्माण करने आए थे मालिक इब्नुद्दीन। उनकी कदमबोसी से धन्य हुआ था यह अंचल। वह इतिहास इसके कण-कण पर लिखा है। उसी इतिहास के एक अध्याय के आखिरी पन्ने को उलटते हुए देख रहा है अर्धरात्रि का यह घना अंधकार।

मालिक इब्नुद्दीन की मस्जिद के सुबह की अजान से पहले ही कदीजा जाग गई। उसने राहिला को जगाया। तांबे के घड़े में कुएं से पानी भरकर यथास्थान रखा।

चारपाई पर सोते वाप्पा को जगाने राहिला बरामदे में आई।

खाली चारपाई। समेटकर रख दी गई चटाई !

उसने देखा, बाहर का दरवाजा खुला है। अरे, सुबह की अजान से पहले तो वाप्पा कहीं नहीं जाते।

"उम्मा, वाप्पा दिख नहीं रहे !" राहिला ने मां को पुकारा। कदीजा भागी आई। दोनों ने घर के पीछे जाकर देखा।

नहीं मिले !

कासिम को उठाया—"वाप्पा गायब हैं बेटे !"

कासिम ने घबराकर वाप्पा की चारपाई को देखा। समेटकर रखी गई चटाई को देखा। उम्मा और राहिला को देखा। फिर उसे दिशाहीन भटकते मम्मात्तिलु के वाप्पा की कहानी याद आई। उम्मा और राहिला को उसने दिलासा दिया, "वाप्पा कहीं गए नहीं होंगे। आ जाएंगे। जरूर आएंगे। अब तुम दोनों तैयार हो जाओ।"

नए घर में जाने की शुभघड़ी वही होती है जब मस्जिद से सुबह की अज़ान माहौल में गूंज रही हो। उसे सुनते हुए जल से भरा घड़ा उठाए नए घर में कदम रखना चाहिए। पुरखों ने इसी को बरकतवाली घड़ी माना है।

अजान के सुनाई देते ही कासिम ने लालटेन हाथ में उठाई—"चलो !"

राहिला ने पानी से भरा तांबे का घड़ा कूल्हे पर साध लिया। फिर अपने भाई के पीछे-पीछे चली। कदीजा ने नए घर में दूध उबालने के लिए जरूरी सामान ले लिया। घर से बाहर कदम रखते हुए उसकी आंखें नम हो उठीं।

उसी सुबह मम्मात्तिलु ने भी नई झोंपड़ी में प्रवेश किया।

झोंपड़ी में लालटेन की रोशनी भर गई। फिर अंगीठी में नारियल के पत्ते जलाकर दूध उबाला गया। उसमें केले के टुकड़े काटकर डाले गए।

इसके बाद वे तीनों मीरान पिल्लै का इंतजार करने लगे।

सुबह की हल्की धूप धीरे-धीरे तेज हुई। समुद्र-तट की रेत का तापमान बढ़ने लगा। समुद्री कौवे इधर-उधर उड़ने लगे। धोखेबाज बाज आसमान पर चक्कर काटने लगे।

समुद्र के अनंत विस्तार में कुछ नावें और कट्टुमरम सरकने लगे। तट पर खड़े मछुआरे उन नावों को रास्ता दिखाने की उत्तेजना में अपने कंधे से अंगोछे उठाकर हवा में हिलाने लगे।

समुद्री लहरें जोर-जोर से किनारे पर सिर पटकने लगीं। उनके वेग में जहां-तहां ताड़फल के सूखे छिलके और मरी मछलियां नई झोंपड़ियों के आसपास जमा हो गईं।

लहरों के आवर्तन से रेत पर बने जिन छेदों में केकड़े छिपे हुए थे, उनसे बुदबुदे उठे। फिर उनसे केकड़े सिर उठाने लगे और तेजी से आगे-पीछे चहलकदमी करने लगे।

तभी एक ऊंची, विशाल लहर चीत्कार करती हुई किनारे की ओर आई। अंगोछे हिलाते हुए खड़े रहनेवाले मछुआरे डरकर पीछे हट गए। वह लहर एक लाश को किनारे पर फेंक कर लौट गई।

मछुआरे उस लाश को घेरकर खड़े हो गए और उसे देखने लगे। वह किसी मर्द की लाश थी। बड़ी-बड़ी मछलियों ने काटकर उसे क्षत-विक्षत कर दिया था।

मछुआरों ने उसे और गौर से देखा।

गबरिएल !

सब लोग एकदम से सहम गए।

घुटनों तक खाकी निक्कर और सिर पर लाल रंग की नोंकदार टोपी पहने पुलिस-जवान किनारे पर आए। लाश को उन्होंने अपने कब्जे में ले लिया। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर ने उसका पोस्टमार्टम किया।

नई झोंपड़ियों से पूरब की ओर बनी सेमितेरी[1] में जहां गबरिएल ने अपने लिए कब्र खोदकर तैयार रखी थी, उसी में उसकी लाश को दफना दिया गया। ऐ इंसान ! तू मिट्टी से बना है और मिट्टी में ही समा जाता है।

---

1. सेमिट्री, ईसाई कब्रिस्तान।

तीन दिन गुजर गए। तीन दिन गुजर जाने के बाद भी मीरान पिल्लै नहीं लौटे और न उस नई झोंपड़ी की अंगीठी जली। महज दिल जल रहे थे।

पीरू समुद्र तट की नम रेत पर कलाबाजी करने लगा। मम्मात्तिलु शर्करा-कंजी का मटका उठाए समुद्र तट की एक-एक झोंपड़ी के सामने जाकर चिल्लाया।

"शर्करा-कंजी !"

मटका खाली करके मम्मात्तिलु घर में घुसा। जरा दूर बने कुएं पर जाकर हाथ-मुंह धोया।

कासिम तीनों दिन बराबर इधर-उधर भटकता रहा। वाप्पा को लगातार खोजा। कोई फायदा नहीं। निराश होकर घर लौट आया।

चौथे पहर समुद्री रेत ठंडी होने लगी। रेत पर कलाबाजी करते पीरू की नन्हीं आंखों को दूर खाकी वर्दी दिखाई दी। खाकी टोपी के अग्र भाग में लाल रंग। पीरू को अचरज-सा हुआ। साथ में डर भी लगा।

जुब्बा पहने एक आदमी और भी साथ है। बगल में छतरी। तो मुनीम आ रहा है...गांव का सबसे बड़ा शैतान !

काहे को आ रहे हैं ये लोग? पीरू भौंचक्का होकर ठिठक गया।

"वाप्पा..." पीरू ने आवाज दी।

अंगोछे से चेहरा पोंछ रहे मम्मात्तिलु ने भीतर से ही पूछा, "क्या बात है रे...?"

"इधर आकर देखिए तो..."

मम्मात्तिलु झुककर झोंपड़ी से बाहर निकला। पीरू जिस दिशा में संकेत कर रहा था, उस ओर देखा।

मुनीम, पार्वत्यकार[1] और साथ ही दो पुलिस जवान...मम्मात्तिलु की समझ में कुछ नहीं आया। उसने पासवाली झोंपड़ी की ओर देखते हुए आवाज दी, "भैया कासिम...इधर तो आओ।"

कासिम झुककर झोंपड़ी से बाहर निकला। वह भी बिना कुछ समझे पश्चिम की ओर देखने लगा। दिल की धड़कनें तेज हो गईं। ये लोग यहां क्यों आए हैं?

"ऐ..यहां सरकारी परती जमीन पर बिना इजाजत किसने झोंपड़ी बनाई है...?" एक सिपाही ने पुलिसाना रोब से पूछा।

"मैंने ही बनाई है, मालिक !"

"किसकी अनुमति से बनाई...बोल !"

"यह सरकार की परती जमीन है। हम लोग, जिनके पास अपनी जमीन या घर-बार

---

1. गांव का अधिकारी।

नहीं है, सरकारी जमीन के अलावा और कहां झोंपड़ी बना सकते हैं?"

"यह परती जमीन है...परती जमीन पर हक उस पट्टेदार का बनता है, जिसकी जमीन इससे सटी हुई है, समझे?"

"फिर तो कहीं भी नहीं बना सकते। हर परती जमीन के पास किसी न किसी पट्टेदार की जमीन तो होगी ही...जहां घास का तिनका तक न उगता हो, ऐसी जमीन पर भी अपना हक जतानेवालों की आप तरफदारी करेंगे तो हम गरीब कहां जाएंगे, कहां सोएंगे मालिक!" कासिम ने अनुनय के स्वर में पूछा।

"फालतू बातों की कोई जरूरत नहीं है। चुपचाप कल सुबह तक यहां से झोंपड़ी हटा लेना। वरना पुलिस अपना रंग दिखाएगी, समझे।"

"ऐसा कीजिए अंगत्ते[1]..." मुनीम ने कहा। फिर बोला, "अगत्ते...यह मामूली आदमी नहीं है...बड़ा इंकलाबी है।"

"यह बात है...!" पुलिसवाले ने कासिम को घूरा।

"हां, मैं इंकलाबी हूं। नाइंसाफी के खिलाफ लड़नेवाला इंकलाबी।"

"लगता है तू पुन्नप्रा-वयलार की लड़ाई में पुलिस को चकमा देकर आया है !"

"आपको ऐसा लगता है तो पकड़ लीजिए खुशी से।"

"उसका भी वक्त आ रहा है बे ! क्या जेल के सींखचे गिनने का इरादा है? अवैध झोंपड़ियां गिरा दे और यहां से दफा हो।" पुलिसवाले ने मूंछों पर ताव दिया।

पार्वत्यकार एक लंबा-चौड़ा दस्तावेज मुनीम की ओर बढ़ाते हुए बोला–

"यह सर्वे का नक्शा है। यह देखो, यह ईना पीना कूना मुदलाली का पट्टा है। इसी पट्टा-जमीन से सटी हुई है समंदर-किनारे वाली यह परती। इस जमीन पर हक सिर्फ पट्टेदार का बनता है। तहसील में जल्दी ही पट्टेदार के हक में कार्रवाई शुरू हो जाएगी। रिवेन्यू जमा करके इस जमीन का पट्टा उनके नाम कर देंगे।"

कासिम से रहा नहीं गया, "ओह, यह बात है ! जिसके पास पहले से ही काफी जमीन है, उसी को और जमीन देंगे? जिसके पास कुछ नहीं है, उसे अंगुल-भर जमीन भी नहीं देंगे?"

"बंद कर अपनी जबान" पुलिसवाला गुर्राया, "कान खोलकर सुन। कल यहां से दफा हो जाना, समझे? दोनों के दोनों। नहीं तो शामत आ जाएगी। कह दिया, हां !"

पुलिसवाले ने अपनी टोपी उतारी और फिर सिर पर रख ली।

"सरकार, नारियल..." मुनीम ने कच्चा नारियल आगे बढ़ाया, पीने के लिए।

"अभी नहीं, साइबे ![2] पार्वत्यकार ने मना किया। फिर कासिम की ओर संकेत करके

---

1. मालिक (संबोधन)।

2. मुसलमानों के लिए सम्मानसूचक संबोधन।

बोला, "अबे, शाम को थाने में आकर हुजूर से मिलना।"

कासिम कुछ नहीं बोला। दिमाग में एक साथ कई पंखों के फड़फड़ाने की आवाज। पार्वत्यकार, मुनीम और पुलिस को जाते हुए वह एकटक देखता रहा। सांसों की गति तीव्र हुई। ये लोग यहां भी हमें नहीं जीने देंगे?

"भैया..." मम्मात्तिलु ने पुकारा।

"हां..."

"लगता है, वह हमें यहां भी नहीं जीने देगा। इस समंदर के किनारे, जहां घास भी नहीं उगती।"

"जीने तो नहीं देगा।"

"तब क्या करें?"

"झोंपड़ी को गिराना नहीं है। जो भी आएगा, सामना करेंगे। इस समय हमें रहने को जगह चाहिए, एक रैनबसेरा। पकड़कर ले जाएंगे तो जेल में रहेंगे, और कोई रास्ता नहीं। सांप खदेड़ता चला जा रहा है न...?"

"खदेड़नेवाले सांप को मार डालना चाहिए।"

"जड़-मूल से काटना यही होता है।"

"अच्छा ! यह बात है..." मम्मात्तिलु थोड़ी देर चुप रहा। उसकी निगाह क्षितिज पर थी, जहां सागर और आकाश का मिलन हो रहा था। उस रेखा के पार एक देश है। उसका नाम है लंका। उस देश की राजधानी कोलंबो, और उसकी हलचल भरी सड़कें। उनमें से एक सड़क पर अपनी दुकान की कुर्सी पर बैठा 'मोटी तोंद' पर हाथ फिराता हुआ बैठा है गंजे सिर का ईना पीना कूना। रोमराजि से भरे गोरे बदन पर गोरी तोंद। उसकी नसें तन गईं। मन में हजारों भयावह तसवीरों का जुलूस। एक लंबा-सा चाकू। जलती हुई अंतड़ियां। खौलता हुआ खून।

समुद्री जल में लिपटी हुई हवा में ठंडी रेत पर लेटे हुए थे मम्मात्तिलु, पीरू और कासिम। बार-बार करवट बदलते हुए। उनके हृदय में भावनाओं की जो लू चल रही थी, उसकी तपिश से आंखों की नींद ने अपने मुलायम हाथ हटा लिए। हवा के साथ उड़ती रेत उनके कानों और नाक में घुसकर तंग कर रही थी। झोंपड़ियों में लेटी स्त्रियों के हृदय में भी भावनाजन्य जलप्रपात। उसके वेग से जमीन धंसी जा रही थी।

आधी रात के अंधेरे को चीरती मशाल की रोशनी कहीं दूर दिखाई दी। इस समय इस निर्जन स्थान पर मशाल जलाए कौन आ रहा है? गबरियेल वाले कब्रिस्तान से क्या प्रेतात्माएं निकलकर आ रही हैं? या झोंपड़ियों में सो रहे गरीबों को झुलसाकर मार डालने के लिए जल्लाद भेजे गए हैं?

"काका उठो। मशाल आ रही है।" कासिम ने मम्मात्तिलु को जगाया।

मम्मात्तिलु और पीरू उछल पड़े।

मशाल पास में आई। आनेवाले ने मशाल को जमीन पर पटककर बुझाया।

"कौन है?" मम्मात्तिलु ने पूछा।

"मैं ही हूं..."

"मीरासा काका?"

"हां।"

"इस समय..."

"सुना कि मुनीम पुलिस को बुला लाया है। रात को वह कहीं तुम लोगों को तंग तो नहीं कर रहा, यही देखने मैं इस ओर चला आया।"

"अगर वह आएगा तो काटकर समंदर में फेंक देंगे।" मम्मात्तिलु ने कहा।

"कासिम, तुम्हें पता है?" मीरासा ने पूछा।

"क्या...?"

"पुलिस लॉक-अप में ममदाजी मर गए।"

सुनकर सब लोग सिहर उठे, "सच?"

"मैयत को श्मशान में ले जाकर जला डाला।"

"यह कब हुआ?"

"पता नहीं, कब हुआ। मैं कलियिक्काविलै हाट तक गया था। वापस आते हुए सुनने में आया।"

"बेचारा, बहुत नेक इंसान था।"

"भैया, एक और बात। मन में रखना। फरीद पिल्लै ने तुम्हारे बारे में पुलिस को बताया है कि तुम इन्कलाबी हो। बेहतर होगा तुम चार-पांच दिन तक कहीं बाहर दिखाई न दो।"

"मुझे पकड़कर ले जाएंगे, यही न? ले जाने दो। वाप्पा कहां गए, कुछ पता नहीं। हमारा कोई घर-बार नहीं, संसार नहीं। मैं भी अगर चला जाऊं तो बाकी बचेंगी मेरी उम्मा और बहिन। उन दोनों को भी छाती पीट-पीटकर मर जाने दो। या तो वे दोनों घुल-घुलकर मर जाएंगी या बेसहारा होकर कहीं चली जाएंगी। इस तरह एक पूरा खानदान मिट्टी में मिल जाएगा।"

कासिम की बात सुनकर मीरासा भौंचक्का रह गया। एकदम खामोश। खामोशी भरे मन में मीरान पिल्लै का वह शानदार वजूद उभर आया, जब वे शानो-शौकत से रहते थे। सीना ताने मीरान पिल्लै का चित्र। पर्वत की तरह भव्य। याद आया जब 'चंबै' के गट्ठों से भरी लारी चीत्कार करती हुई पक्की सड़क पर दौड़ती थी। वही परिवार आज बेघर हुआ। समुद्र-तट पर बनी दो झोंपड़ियों में से एक में बेसहारा पड़ा हुआ है। यह सोचते हुए उसके दिल में आह उठने लगी। उस आह को उसने बड़ी मुश्किल से जब्त किया।

"अच्छा, मैं चलता हूं।"

मीरासा ने 'चूट्ट' मशाल को फिर सुलगाया और उसे हिला-हिलाकर और अधिक सुलगाते हुए आगे बढ़ता गया।

32

सुबह हुई और देखते-देखते चारों ओर रोशनी फैल गई।

सूरज समुद्र-तट पर उगे ऊंचे-ऊंचे नारियल वृक्षों के ऊपर तक पहुंच गया। उसकी उगली हुई गर्मी से रेत गर्म हो गई। गर्मी लगी तो रेत पर सोए तीनों जने जाग गए और भारी आंखों को मलते हुए चारों ओर देखने लगे। चौंधियानेवाली रोशनी। आंखें खुल नहीं रही थीं। तब दूसरी दिशा की ओर घूमकर बैठे। नींद पूरी न होने से आंखें बुरी तरह भारी हो रही थीं।

"अपने आप झोंपड़ी तोड़ोगे या हमें गिरवानी पड़ेंगी? बोलो, क्या इरादा है?" मुनीम की आवाज! मुड़कर देखा। मुनीम और उसके आदमी ! साथ में गांव के कुछ और लोग, तमाशबीन।

"गिराना मुमकिन नहीं है..." कासिम ने कहा।

"तो हम लोग तोड़ेंगे।"

मम्मात्तिलु झोंपड़ी में गया और एक बड़ा-सा हंसिया लेकर बाहर आया।

"तोड़कर दिखाओ !" मम्मात्तिलु ने मुनीम को ललकारा।

"तोड़ेंगे। तू क्या करेगा..."

"तेरा सिर तोड़ दूंगा..."

झोंपड़ी में औरतों के रोने की आवाज।

पीरू नीचे झुका। दोनों हाथों में रेत भर ली और उसे मुनीम की आंखों में झोंकते हुए कहा, "कुत्ते की औलाद, तूने ही हमारा घर तोड़ा था?"

मुनीम की आंखों और मुंह में रेत। उसने उसे झाड़ा। कमीज को भी झाड़ा।

"तोड़ डालो रे..." मुनीम चिल्लाया।

मुनीम का एक नौकर झोंपड़ी की ओर बढ़ा। मम्मात्तिलु हंसिया लेकर उसकी ओर झपटा। कासिम मुनीम को धुनने के लिए लपका। उसका हाथ ऊपर उठा हुआ था।

"बेटे..." कासिम ठिठक गया, जैसे बिजली का तार छू गया हो। उसका उठा हुआ हाथ ऊपर ही रह गया। उसने देखा, उम्मा झोंपड़ी से बाहर दौड़ी आ रही थी। पीछे-पीछे

राहिला।

"हमें यह झोंपड़ी भी नहीं चाहिए। ईना पीना कूना इसे भी अपनी छाती पर रख ले। राहिला को लेकर मैं कहीं भी चली जाऊंगी।"

और कदीजा तेजी से चल दी। उसके पीछे राहिला भी।

"उम्मा !" कासिम ने जोर से पुकारा।

वह नहीं रुकी।

"उम्मा !" कासिम पीछे-पीछे भागा।

यह सब देखकर मम्मात्तिलु का दिल बैठ गया। हाथ में उठा हंसिया नीचे गिर गया और वह रेत पर बैठ गया।

"ठीक है। अब तुम अपना काम करो। तोड़ डालो यह सब !" मम्मात्तिलु ने मुनीम के आदमियों से बुझी हुई आवाज में कहा। झोंपड़ी के दरवाजे पर खड़ी उसकी बीवी और लड़कियां हाथ मल रही थीं। उनकी ओर मुखातिब होकर वह बोला, "तोड़ने दो उसे, सबके सब बाहर आ जाओ।"

मम्मात्तिलु घुटनों में मुंह छिपाकर छोटे बच्चे की तरह फफक उठा। औरतों की लाल-लाल आंखों से आंसू टपकने लगे।

वाप्पा ने जो हंसिया नीचे डाल दिया था, पीरू ने उसे भागकर उठाया। उसके नन्हें हाथों में उसे उठाने की ताकत नहीं थी। फिर भी उसने हंसिया उठा ही लिया। हंसिया ऊपर उठाकर बोला—

"मैं जड़-मूल से काटूंगा !" उन नन्हीं आंखों में दावानल था, जैसे एक पूरा जंगल सांय-सांय करके जल रहा हो। आसमान को छूती हुई लपटें। बालक की कोमल जिह्वा से ऐसी वीरतापूर्ण ललकार !

मम्मात्तिलु ने झट से अपना सिर उठाया। झोंपड़ी को घूरकर देखा। उसकी आंखों की एक-एक रग में खून उतर आया और अब वह पागल कुत्ते की तरह झपटा।

"हटो यहां से..." कहते हुए उसने झोंपड़ी तोड़नेवाले मजदूरों को धकियाकर गिरा दिया। फिर पलक झपकते ही उसने स्वयं दोनों झोंपड़ियों के सारे डंडे उखाड़ फेंके। भागकर पीरू के पास पहुंचा और उसके हाथ से अपना हंसिया छीन लिया। देखते-देखते उसने झोंपड़ियों की छावन और डंडों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर उस सबको एकसाथ बांध लिया और समंदर की लहरों में फेंक दिया, "जाने दो सबको जाने दो...कुछ नहीं चाहिए।"

मम्मात्तिलु समुद्र-तट से वापस आया। मुनीम अपनी पलटन के साथ वहां से जा चुका था। तमाशबीन गांववाले भी चले गए।

"पीरू..."

"वाप्पा..."

"तूने क्या कहा था रे..?"

"जड़-मूल से काटूंगा।"

"काटेगा तू?"

"जरूर काटूंगा !"

"तुझे जवान होना चाहिए। हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी तुझे जवान करेंगे। इसके लिए मर-मरकर जिएंगे बेटे..." मम्मात्तिलु ने जैसे मन-ही-मन संकल्प लिया।

वीरान पड़ा हुआ था वह घर। भुतहा घर। उसका कोई लेनदार नहीं था। मुफ्त में देने पर भी कोई उसमें रहने को राजी नहीं। बहुत दिनों से बंद पड़ा है। लोगों का कहना है कि रात में उसके भीतर से चूड़ियों की खनक सुनाई पड़ती है। किसी युवती के कदमों की आहट और पायल की झंकार। हंसी और अट्टहास, अगले ही क्षण में सिसकियां, और फिर जोर-जोर से रोने का स्वर। नीली रोशनी। विभिन्न प्रकार के अमंगल स्वर। मारने-पीटने की आवाज, हाहाकार, 'बचाओ-बचाओ' की करुण पुकार। जब वह घर नया-नया बना था, तो एक परिवार उसमें आकर बसा। थोड़े ही दिनों में उस घर की जवान लड़की ने गले में फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। तब से वह भुतहा घर बन गया। लोग दिन में भी उस घर के पास जाने से डरते हैं।

कासिम और उसकी उम्मा किसी रैनबसेरे की तलाश में थे। गांव में किसी ने शरण नहीं दी। पास तक नहीं फटकने दिया क्योंकि मुहल्ला समिति ने पूरे परिवार को जाति-बिरादरी से बाहर निकाल दिया था। यही नहीं, उन्हें पनाह देनेवाले का भी हुक्का-पानी बंद करने का ऐलान हुआ था।

"उम्मा !" कासिम के स्वर में दृढ़ता थी।

"हूं !"

"अब खोने के लिए हमारे पास कुछ नहीं बचा। भूत भी अगर हमें मारे तो मारने दो। हम उस वीरान घर के बरामदे में पड़े रहेंगे। फिर कहीं और जगह ढूंढ लेंगे।"

"अच्छा..." दिल पर हजारों पत्थर रखकर कदीजा ने हामी भरी।

उस वीरान घर के खुले बरामदे के एक कोने में तीन ईंटें रखकर अंगीठी बनाई गई और उसी बरामदे में उन्होंने तीन-चार रातें गुजारीं। कासिम इन दिनों कहीं बाहर नहीं गया। ऐसे स्थान पर लड़की को अकेली छोड़कर जाना ठीक नहीं था। इसी जिम्मेदारी से प्रेरित होकर वह कहीं नहीं गया।

रात-दिन का भेद किए बिना इडिवण्डि काला धुआं उगलते हुए उस वीरान घर के सामने से धूल उड़ाती हुई कई बार गुजरी।

कासिम की रातों की नींद हराम हो गई। जरा-सी आंखें मूंदता तो खौफनाक नजारे देखकर उठ बैठता। कई अमंगल ध्वनियां। कासिम जागा हुआ है, इसी से बेफिक्र होकर उम्मा और राहिला झपकियां लेती रही। नींद न आए यही सोचकर कासिम कुप्पी की रोशनी में किताब खोलकर बैठ गया। धीमे से चलती हवा में कुप्पी की लौ हिलती रहती, जिससे काला धुआं उसकी नाक में घुस जाता। इसी वजह से वह बीच-बीच में नाक साफ करता रहा।

गली को घुप्प अंधकार ने निगल लिया था। ऐसे में रोशनी की दो तलवारें अंधेरे की तोंद को चीरते हुए आईं। साथ में इडिवण्डि का शोर। फिर वह उस भुतहा घर के सामने फटाक से आकर रुकी। पुलिसवाले धड़धड़ाकर उससे कूदे और उस घर को घेर लिया। यह सब पलक झपकते ही हो गया।

पक्के फर्श पर बूटों की आवाज सुनकर कदीजा और राहिला सहम कर उठीं। घबराकर बाहर देखा। कासिम ने भी पुस्तक से नजर उठाकर देखा। बंदूकों से लैस स्पेशल मलाबार पुलिस !

"अबे, उठ !" कर्कश स्वर में हुक्म हुआ।

कासिम उठा।

"हाथ में क्या है..?"

कासिम ने अपने हाथ की किताब आगे कर दी। टार्च की रोशनी में किताब का नाम साफ नजर आया–

"महावीर भगतसिंह।"

"ओह, यह बात है? ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ने के गुनाह में जो फांसी पर लटका था, उसी देशद्रोही की जीवनी ! है न?"

"हां।" कासिम ने साहस से सिर उठाया।

"मीरान पिल्लै का बेटा मुहम्मद कासिम तू ही है न?"

"हां, मैं ही हूं।"

"तू ब्रिटिश का दुश्मन है, ठीक है न?"

"हिंदुस्तान में जो ब्रिटिश राज है, उसका मैं दुश्मन हूं।"

"सुना है, जरूरत पड़ने पर, गरीबों के लिए तुम मुदलालियों पर हाथ भी उठा सकते हो। क्या यह बात सही है?"

"गरीबों को कुचलनेवाले मुदलाली हों या कोई और, उनके खिलाफ मैं लडूंगा।"

"लड़ेगा?"

"हां, लडूंगा, संघर्ष करूंगा।"

"इस समुद्र के एक बड़े चंबै-व्यापारी गबरिएल मुदलाली को मारकर समंदर में

फेंकनेवाला तू ही है न?"

इस सवाल ने कासिम को चौंका दिया। फिर भी अपना आपा खोए बिना उसने जवाब दिया—"नहीं। मैंने नहीं मारा। गबरिएल मुदलाली जरूर थे। पर कोलंबो कमीशन मुदलाली ने जिस तरह मेरे वाप्पा को कर्जदार बनाया, गबरिएल की भी सारी जायदाद धोखे से हड़प ली और उन्हें भिखारी बना दिया। गरीबी से तंग आकर वे पागलों की तरह घूमते थे और एक दिन समुद्र में डूब गए। उन्हें मैंने नहीं मारा..."

"अबे, तू जरूरत से बहुत ज्यादा बोलता है..." कासिम के गाल पर पुलिसवाले का लौहहस्त तमाचा!

"हाय, मेरा लाल ! कदीजा ने चीत्कार किया। उसका चीत्कार सुनकर गांव के कुछ लोगों ने अपने दरवाजे खोले। दरवाजों से झांककर देखा। बाहर आने का साहस किसी में नहीं था। अपने-अपने दरवाजों से तमाशा देखने लगे।

खाकी वर्दियां, हाथ में भारी बंदूकें। नीले रंग की इडिवण्डि। लोहे की उसकी जालियां।

"यह भडुआ है ही अंदर जाने लायक।" कई लोग कह रहे थे।

इसी समय इडिवण्डि किसी और को पकड़ लाने के लिए धूल उड़ाती हुई निकल गई।

कासिम के हाथों में हथकड़ी लगाई गई।

"अबे..चल !"

चलने से पहले कासिम ने उम्मा और राहिला को घूमकर देखा।

"उम्मा, रोना नहीं, हमारा गुनाह है कि हमने इस दुनिया में जन्म लिया।"

कासिम चला। उसके पीछे बंदूकों सहित चार-पांच पुलिसवाले।

मम्मात्तिलु, पीरू और मीरासा भागे आए। लेकिन पास आने का साहस उनमें भी नहीं था। कांपते हुए जरा दूर खड़े रहे।

ईना पीना कूना का दुमंजिला मकान चमचमाता हुआ खड़ा था। ऊपरी मंजिल पर टंगे लैंप की रोशनी गली में फैली थी।

"अबे, इधर..."

कासिम उस लैंप की रोशनी में खड़ा रहा।

"वयलार-पुन्नप्रा की लड़ाई में तूने ही कई पुलिसवालों की हत्या की थी..?" एक पुलिस जवान ने कासिम के बालों को पकड़कर झकझोरते हुए पूछा।

"उस संघर्ष से मेरा कोई ताल्लुक नहीं है।"

"नहीं है..?" दूसरे पुलिसवाले ने उसे जोर से एक लात जमाई। कासिम ईना पीना कूना के दुमंजिले मकान की दीवार से जा टकराया और पलभर के लिए जैसे कहीं खो गया। आहा ! इस दीवार से जानी-पहचानी गंध आ रही है, चिर-परिचित गंध ! उसके वाप्पा की देह से रिसते पसीने की गंध। वह गंध उसके नथुनों में प्रवेश कर गई। वह फिर

से अपने चेहरे को उस दीवार के पास ले गया और उसे सूंघने लगा। बचपन में वाप्पा की छाती पर अपना चेहरा रखने पर उसे जो अनुभूति होती थी, वैसी ही अब हो रही थी। सभी समुद्रों का खारापन लिए बहते आंसुओं का स्वाद। लहू की गंध। कासिम का मन नहीं भरा। वह तीसरी बार उस दीवार को सूंघने लगा। इतने में ही एक पुलिस जवान ने उसके गरेबान को पकड़कर खींचा।

"उठ रे, कुत्ते की औलाद, क्यों दीवार चाट रहा है?"

"इसलिए कि उस दीवार पर मेरे वाप्पा के पसीने की गंध है, मेरे वाप्पा जो घर छोड़कर चले गए हैं..." कहते-कहते कासिम थककर चूर हो गया। उसने चारों ओर नजर दौड़ाई।

मम्मात्तिलु...

पीरू..

मीरासा..

हाथ बांधे सभी अश्रुपूरित नयनों से खड़े देख रहे थे।

मीरासा को देखते ही कासिम को ममदाजी की दर्दनाक मौत की याद आई। मुस्कराता चेहरा, कूबड़ की वजह से उचक-उचककर चलने की अदा। निरीह और बेगुनाह इंसान। मुमकिन है, मेरा भी वही हश्र होगा, जो ममदाजी का हुआ।

उसने सोचा—धनमद और धर्मांधता ने एक साथ मिलकर जुल्म को किस तरह आजाद कर दिया है, फलस्वरूप गांवों में अत्याचार का नंगा नाच हो रहा है। उसे लगा कि अब वह भी वापस नहीं आएगा। मौत की सजा तामील होने से पहले फांसी के फंदे को शान से देखनेवाले शहीद भगत सिंह का चित्र उसने अपने मन में बिठा लिया।

"मालिक, गाड़ी में चढ़ाने से पहले मुझे अपने रिश्तेदारों से अपनी आखिरी ख्वाहिश बताने की इजाजत दें, मेहरबानी होगी..."कासिम ने प्रार्थना की।

"कौन-सी ख्वाहिश...?"

"मैं जब उनसे बताऊंगा, तो आप भी सुन सकते हैं..."

"अरे, ओ, क्या नाम है तेरा..इधर आ..." मम्मात्तिलु को पुलिसवाले ने पास बुलाया।

मम्मात्तिलु डरते हुए पास गया।

"भाई..." कासिम ने कहना शुरू किया, "मेरी उम्मा और बहन को अपनी उम्मा और बहन मानकर उनकी हिफाजत करना। अगर मैं जिंदा रहा तो एक दिन जरूर वापस आऊंगा। वरना जब भी आपकी माली हालत सुधर जाए, इस गांव की धरती पर एक शहीद-स्मारक मंडप बनवा दें। उस मंडप की दीवार पर मेरे वाप्पा, गबरिएल और हैदरूस मुदलाली के नाम लिखवा देना। इसी तरह आपके वाप्पा के नाम के साथ उन सभी चंबै-व्यापारियों के नाम लिखे होने चाहिए जो चंबै-व्यापार करते हुए डूब गए। आनेवाली पीढ़ियों को इन रक्त-पिशाचों के चुंगल से बचाने में यह मंडप सहायक रहेगा।"

इडिवण्डि फुफकार भरती हुई आई। गाड़ी के पीछेवाले पट दोनों तरफ खुले।

"अबे, चढ़ !"

कासिम ने गाड़ी में चढ़ने से पहले एक बार आंख भरकर सबको देखा।

मम्मात्तिलु..

पीरू..

मीरासा...

ऐतिहासिक वैभव से परिपूर्ण एक सुंदर गांव के बलि-पशु। अब इनके लिए कब सुबह होगी?

"पीरू.." कासिम ने हथकड़ी-लगे अपने हाथों को ऊपर उठाया।

"काका..."

पीरू ने भी अपना हाथ ऊपर उठाया और वह उठा हुआ हाथ, पैने हंसिए की तरह चमचमाता रहा !

'मैं जड़-मूल से काटूंगा...' पीरू ने मन-ही-मन जो मंत्र पढ़ा, उसके उठे हुए हाथ की उस संकेत-भाषा को कासिम ने पढ़ लिया। रात के उस प्रहर को दहला देने वाला पीरू का मौन गर्जन कासिम के कानों में गूंज उठा—मेघ-गर्जन की तरह, तोप-तर्जन की तरह।

"बस, मेरे मन को चैन मिल गया। मैं अब राहत की सांस ले रहा हूं। मेरे बाद यहां पीरू परवान चढ़ेगा। वह बढ़ेगा, ऊंचा होगा, पहाड़ों को चीरते हुए ऊंचा उठेगा। अरब सागर की तरह उमड़ेगा। उमड़-घुमड़कर आएगा।"

अर्धरात्रि के अंधेरे में गांव के कंकड़भरे रास्ते से होकर इडिवण्डि तेजी से भागने लगी। उसके पीछेवाली लाल बत्तियों के आंखों से ओझल होने तक वे तीनों वहीं खड़े उसे एकटक देखते रहे।

गांव में चक्कर काटती आंधी के शांत होने के साथ ही सुबह की अजान सुनकर सारा गांव जाग गया।

हजार साल पहले चालीस सफेद हाथियों समेत आए मालिक इब्नुद्दीन के बैठने से मिली गरमाहट को बरकरार रखनेवाले उस पत्थर ने उस दिन सुबह ही भीषण अहसास किया—उस पत्थर पर बैठने वाले किसी के भी सिर पर अब पसीना नहीं आएगा। उसकी स्याह चिकनाहट पर एक से एक जहरीले सांप सरकेंगे, फुफकारेंगे, गांव की हवा को सूंघेंगे; बेरोकटोक सड़कों और गली-कूचों में रेंगते फिरेंगे और फन फैलाकर नाचेंगे।